



शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

दूरशिक्षा और ऑनलाईन शिक्षा केंद्र

बी. ए. भाग 3 हिंदी

सत्र 5 Major Electives

विधा विशेष का अध्ययन – I

सत्र 6 Major Electives

विधा विशेष का अध्ययन – II

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के नुसार सुधारित पाठ्यक्रम
(शैक्षिक वर्ष 2026-27 से)

© **कुलसचिव, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर (महाराष्ट्र)**

प्रथम संस्करण : 2026

सभी अधिकार विश्वविद्यालय के अधीन। शिवाजी विश्वविद्यालय की अनुमति के बिना किसी भी सामग्री की नकल न करें।

प्रतियाँ : 50



प्रकाशक :

डॉ. व्ही. एन. शिंदे

कुलसचिव,

शिवाजी विश्वविद्यालय,

कोल्हापुर - 416 004.



मुद्रक :

श्री. बी. पी. पाटील

अधीक्षक,

शिवाजी विश्वविद्यालय मुद्रणालय,

कोल्हापुर-416 004.



ISBN - 978-81-68244-05-4

★ दूरशिक्षा और ऑनलाईन शिक्षा केंद्र और शिवाजी विश्वविद्यालय की जानकारी निम्नांकित पते पर मिलेगी-
शिवाजी विश्वविद्यालय, विद्यानगर, कोल्हापुर-416 004 (महाराष्ट्र)

दूरशिक्षा और ऑनलाईन शिक्षा केंद्र, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

सल्लागार समिती

प्रो. (डॉ.) आर. के. कामत

कुलगुरु,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्रो. (डॉ.) ज्योती जाधव

प्र-कुलगुरु,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्रो. (डॉ.) प्रकाश पवार

राज्यशास्त्र अधिविभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्रो. (डॉ.) एस. विद्याशंकर

कुलगुरु, केएसओयू,
मुक्तगंगोत्री, म्हैसूर, कर्नाटक-५७० ००६

डॉ. राजेंद्र कांकरिया

जी-२/१२१, इंदिरा पार्क,
चिंचवडगांव, पुणे-४११ ०३३

प्रो. (डॉ.) सीमा येवले

गीत-गोविंद, फ्लॅट नं. २, ११३९ साईक्स एक्स्टेंशन,
कोल्हापुर-४१६००१

डॉ. संजय रत्नपारखी

डी-१६, शिक्षक वसाहत, विद्यानगरी, मुंबई विश्वविद्यालय,
सांताक्रुझ (पु.) मुंबई-४०० ०९८

प्रो. (डॉ.) कविता ओझा

संगणकशास्त्र अधिविभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्रो. (डॉ.) चेतन आवटी

तंत्रज्ञान अधिविभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्रो. (डॉ.) एम. एस. देशमुख

अधिष्ठाता, मानवविज्ञान विद्याशाखा,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्रो. (डॉ.) श्रीमती व्ही. व्ही. मैदरगी

प्र. अधिष्ठाता, वाणिज्य व व्यवस्थापन विद्याशाखा,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्रो. (डॉ.) आर. व्ही. गुरव

प्र. अधिष्ठाता, विज्ञान व तंत्रज्ञान विद्याशाखा,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्रा. (डॉ.) ए. बी. साळी

प्र. अधिष्ठाता, आंतर-विद्याशाखीय अभ्यास विद्याशाखा
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

डॉ. व्ही. एन. शिंदे

कुलसचिव,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

डॉ. ए. एन. जाधव

संचालक, परीक्षा व मूल्यमापन मंडळ,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

श्रीमती सुहासिनी सरदार पाटील

वित्त व लेखा अधिकारी,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्रा. (डॉ.) पी. एस. पाटणकर (सदस्य सचिव)

संचालक, दूरशिक्षण व ऑनलाईन शिक्षण केंद्र,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

अध्यक्ष

प्रो. डॉ. साताप्पा शामराव सावंत
विलिंग्डन कॉलेज, सांगली

सदस्य

- डॉ. संग्राम यशवंत शिंदे
आमदार शशिकांत शिंदे महाविद्यालय, मेढा,
ता. जावळी, जि. सातारा.
- डॉ. भास्कर उमराव भवर
कर्मवीर हिरे आर्ट्स, सायन्स, कॉमर्स अँड एज्युकेशन
कॉलेज, गारगोटी, ता. भुदरगड, जि. कोल्हापुर.
- प्रो. (डॉ.) अशोक विठोबा बाचुळकर
आजरा महाविद्यालय, आजरा, जि. कोल्हापुर
- प्रो. (डॉ.) अनिल मारुती साळुंखे
यशवंतराव चव्हाण महाविद्यालय, करमाळा,
जि. सोलापुर - ४१३२०३
- डॉ. गजानन सुखदेव चव्हाण
श्रीमती जी. के. जी. कन्या महाविद्यालय,
जयसिंगपुर, ता. शिरोळ, जि. कोल्हापुर
- प्रो. (डॉ.) नितीन चंद्रकांत धावडे
मुधोजी कॉलेज, फलटण, जि. सातारा
- डॉ. मनिषा बाळासाहेब जाधव
आर्ट्स अँड कॉमर्स कॉलेज, ११७, शुक्रवार पेठ,
सातारा-४१५ ००२.
- प्रो. (डॉ.) वर्षारणी निवृत्ती सहदेव
श्री विजयसिंह यादव कॉलेज, पेठ वडगाव,
जि. कोल्हापुर.
- प्रो. (डॉ.) हणमंत महादेव सोहनी
सदाशिवराव मंडलिक महाविद्यालय, मुरगुड, ता. कागल,
जि. कोल्हापुर
- प्रो. (डॉ.) सिद्राम कृष्णा खोत
बळवंत कॉलेज, विटा,
जि. सांगली.
- प्रो. (डॉ.) उत्तम लक्ष्मण थोरात
आदर्श कॉलेज, विटा, जि. सांगली
- डॉ. परसराम रामजी रगडे
शंकरराव जगताप आर्ट्स अँड कॉमर्स कॉलेज, वाघोली,
ता. कोरेगाव, जि. सातारा.

अपनी बात

शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की दूरशिक्षा योजना के अंतर्गत राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 के अधीन बी. ए. भाग - 3 हिंदी विषय के छात्रों के लिए निर्मित यह अध्ययन-सामग्री उन छात्रों की शैक्षणिक आवश्यकताओं की पूर्ति के संकल्प का फलित है, जो विभिन्न कारणों से नियमित शिक्षा-व्यवस्था में प्रवेश नहीं ले पाते हैं। इसमें एक ओर विश्वविद्यालय की सामाजिक संवेदनशीलता एवं शैक्षिक उत्तरदायित्व की भावना अभिव्यक्त होती है, तो दूसरी ओर शिक्षा से वंचित छात्रों को अध्ययन-सुविधा उपलब्ध कराने की उसकी प्रतिबद्धता भी दृष्टिगोचर होती है। बी. ए. भाग - 3 के छात्र प्रस्तुत स्वयं-अध्ययन सामग्री से समुचित रूप से लाभान्वित होंगे, यह विश्वास है।

दूरशिक्षा के छात्रों का महाविद्यालयों तथा अध्यापकों से प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से नियमित संपर्क नहीं हो पाता है। उनकी इस स्थिति को ध्यान में रखते हुए अध्ययन-सामग्री को सरल, सुबोध एवं सहज भाषा में प्रस्तुत किया है। साथ ही पाठ्यक्रम, प्रश्नपत्र के स्वरूप तथा अंक-वितरण को ध्यान में रखते हुए व्यंग्य-साहित्य एवं निबंध-साहित्य से संबंधित विषय-वस्तु को आवश्यकतानुसार विस्तृत तथा सूक्ष्म रूप में प्रस्तुत करने का सफलतापूर्वक प्रयास किया है। हमें आशा ही नहीं, बल्कि विश्वास भी है कि प्रस्तुत अध्ययन-सामग्री बी. ए. भाग - 3 के छात्रों के लिए निश्चित तौर पर उपयोगी, मार्गदर्शक एवं उपादेय सिद्ध होगी।

प्रस्तुत सामग्री सामूहिक प्रयास का परिणाम है। इकाई-लेखकों ने अपनी-अपनी इकाइयों का लेखन निर्धारित समय-सीमा में पूर्ण कर इस कार्य को सार्थक बनाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। शिवाजी विश्वविद्यालय के माननीय कुलगुरु, प्र-कुलगुरु, कुलसचिव, दूरशिक्षा विभाग के संचालक तथा उनके सभी सहयोगी सदस्यों ने समय-समय पर आवश्यक मार्गदर्शन एवं सहयोग प्रदान किया। अतः इन सभी के प्रति आभार व्यक्त करना हमारा कर्तव्य है।

धन्यवाद!

— संपादक

ईकाई लेखक	घटक क्रमांक	
	सत्र-5	सत्र-6
★ डॉ. संतोष साळुंखे नाईट कॉलेज ऑफ आर्ट्स अँड कॉमर्स, इचलकरंजी, ता. हातकणंगले, जि. कोल्हापुर	1	2
★ प्रो. (डॉ.) सुनील बनसोडे तुळजाराम चतुरचंद कॉलेज, बारामती, जि. पुणे	2	-
★ प्रो. (डॉ.) नाजिम शेख श्री. विजयसिंह यादव कॉलेज, पेठवडगाव, ता. हातकणंगले, जि. कोल्हापुर	3	-
★ प्रो. (डॉ.) प्रवीणकुमार चौगुले श्रीमती कस्तुरबाई वालचंद कॉलेज ऑफ आर्ट्स अँड सायन्स, वुड हाऊस रोड, राजनेमी कैंम्पस, सांगली	4	-
★ प्रो. (डॉ.) वर्षारानी सहदेव श्री. विजयसिंह यादव कॉलेज, पेठवडगाव, ता. हातकणंगले, जि. कोल्हापुर	-	1
★ डॉ. नरसिंग एकिले शिवराज कॉलेज ऑफ आर्ट्स, कॉमर्स अँड डी. एस. कदम सायन्स कॉलेज, गडहिंगलज, ता. गडहिंगलज, जि. कोल्हापुर	-	3
★ डॉ. मच्छिंद्र कुंभार मातोश्री बयाबाई श्रीपतराव कदम कन्या महाविद्यालय, कडेगाव, ता. कडेगाव, जि. सांगली	-	4

■ संपादक ■

प्रो. (डॉ.) सुनील बनसोडे
तुळजाराम चतुरचंद कॉलेज, बारामती,
जि. पुणे

डॉ. नरसिंग एकिले
शिवराज कॉलेज ऑफ आर्ट्स, कॉमर्स अँड
डी. एस. कदम सायन्स कॉलेज, गडहिंगलज,
जि. कोल्हापुर

अनुक्रम

इकाई	पृष्ठ
सत्र-5	
1. व्यंग्य साहित्य का सामान्य परिचय	1
2. प्रेम की बिरादरी, उधार माँगना भी एक कला है, एक दीक्षांत भाषण	40
3. मेरी मौत के बाद, एक जीते हुए नेता से मुलाकत, मुख्यमंत्री का डण्डा	71
4. वोटर, भूतपूर्व प्रेमिकाओं को पत्र, विज्ञापन युग	110
सत्र-6	
1. निबंध साहित्य का सामान्य परिचय	155
2. जगत् प्रवाह, दाँत, साहित्य की महत्ता	171
3. आचरण की सभ्यता, गेहूँ बनाम गुलाब, साहित्य और जीवन	205
4. जमुना के तीरे-तीरे, पहला सफेद बाल, 'हिंदी भूषण' बापू शिवपूजन सहाय	249

हर इकाई की शुरूआत उद्देश्य से होगी, जिससे दिशा और आगे के विषय सूचित होंगे-

- (1) इकाई में क्या दिया गया है।
- (2) आपसे क्या अपेक्षित है।
- (3) विशेष इकाई के अध्ययन के उपरांत आपको किन बातों से अवगत होना अपेक्षित है।

स्वयं-अध्ययन के लिए कुछ प्रश्न दिए गए हैं, जिनके अपेक्षित उत्तरों को भी दर्ज किया है। इससे इकाई का अध्ययन सही दिशा से होगा। आपके उत्तर लिखने के पश्चात् ही स्वयं-अध्ययन के अंतर्गत दिए हुए उत्तरों को देखें। आपके द्वारा लिखे गए उत्तर (स्वाध्याय) मूल्यांकन के लिए हमारे पास भेजने की आवश्यकता नहीं है। आपका अध्ययन सही दिशा से हो, इसलिए यह अध्ययन सामग्री (Study Tool) उपयुक्त सिद्ध होगी।

इकाई 1

व्यंग्य साहित्य का सामान्य परिचय

अनुक्रम

- 1 उद्देश्य
- 2 प्रस्तावना
- 3 विषय विवेचन
 - 3.1 व्यंग्य का उद्भव
 - 3.2 व्यंग्य की परिभाषा
 - 3.3 हिंदी साहित्य में व्यंग्य की परंपरा
 - 3.4 व्यंग्य के भेद
 - 3.5 व्यंग्य लेखन का उद्देश्य
- 4 स्वयंअध्ययन के लिए प्रश्न
- 5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ
- 6 स्वयंअध्ययन प्रश्नों के उत्तर
- 7 सारांश
- 8 स्वाध्याय
- 9 क्षेत्रीय कार्य
- 10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

1 उद्देश्य :

इस इकाई के अध्ययन के उपरान्त आप-

- * हिंदी व्यंग्य साहित्य विधा के सैद्धांतिक पक्ष से परिचित होंगे।
- * हिंदी व्यंग्य साहित्य का उद्भव और उसकी परंपरा से अवगत होंगे।
- * व्यंग्य विधा के भेदों से परिचित होंगे।
- * हिंदी व्यंग्य लेखन के उद्देश्य से परिचित होंगे।

2 प्रस्तावना :

हिंदी साहित्य की आधुनिक विधाओं में व्यंग्य साहित्य बहुचर्चित और लोकप्रिय विधा मानी जाती है। समाज की विसंगतियों, असामाजिक तत्वों और बुराइयों पर साहित्य के माध्यम से भाष्य करना 'व्यंग्य' कहलाता है। प्राचीन काल से 'व्यंजक शब्द', 'व्यंग्योक्ति' के रूप में काव्यशास्त्र और काव्यग्रंथों में 'व्यंग्य' का उल्लेख मिलता है। हिंदी साहित्य में व्यंग्य विधा के उद्भव के संदर्भ में निश्चित कालखंड या उसके लेखक को बताना असंभव है। क्योंकि प्राचीन काल से 'व्यंग्य विधा' धीरे-धीरे विकसित हो रही है और आधुनिक काल में इसने स्वतंत्र गद्य विधा के रूप में अपना स्थान प्राप्त किया है। मध्यकाल में संत काव्य में 'व्यंग्य' का बराबर प्रयोग होता रहा है। लेकिन व्यंग्य विधा का वास्तविक विकास १९ वीं शताब्दी में हुआ। हिंदी व्यंग्य विधा के प्रथम चरण के प्रवर्तक भारतेन्दु हरिश्चंद्र को माना जाता है। उसके बाद द्विवेदी युग में व्यंग्य विधा ने गंभीरता से सामाजिक सुधार पर ध्यान केंद्रित किया। छायावादी युग में हिंदी व्यंग्य का विकास हुआ और वह एक स्वतंत्र विधा के रूप में स्थापित हुई। विभिन्न क्षेत्रों की विसंगतियों के आधार पर सामाजिक व्यंग्य, राजनीतिक व्यंग्य, धार्मिक व्यंग्य, सांस्कृतिक व्यंग्य, साहित्यिक व्यंग्य, आर्थिक व्यंग्य, मानवीय प्रवृत्तिपरक व्यंग्य आदि व्यंग्य प्रकार होते हैं। सामाजिक सुधार करना, समाज में जागृति निर्माण करना, मनोरंजन के साथ नैतिक शिक्षा प्रदान करना, समाज में व्याप्त आडंबर, पाखंड और अन्याय का विरोध करना, सत्य और सच्चाई को उजागर करना आदि व्यंग्य विधा के प्रमुख उद्देश्य होते हैं।

3 विषय विवेचन :

3.1 व्यंग्य का उद्भव :

हिंदी व्यंग्य का उद्भव (उत्पत्ति या प्रारंभ) कब हुआ? इस प्रश्न को लेकर विद्वानों में काफी मतभेद पाए जाते हैं। 'व्यंग्य' मूलतः एक प्रवृत्ति है और वह साहित्य के निर्माण से जुड़ी हुई है। व्यंग्य के उद्भव के संदर्भ में प्राचीन, मध्यकालीन और आधुनिक साहित्य की जानकारी लेना जरूरी है।

3.1.1 प्राचीन साहित्य :

प्राचीन साहित्य के परिप्रेक्ष्य में व्यंग्य के उद्भव पर विचार करे तो इसके बीज वेदों और प्राचीन ग्रंथों में

मिलते हैं। साथ ही प्राकृत और अपभ्रंश साहित्य में व्यंग्य के तत्त्व मिलते हैं। भारतीय काव्यशास्त्र में भी शब्द के रूप में 'व्यंजक शब्द' या अर्थ के रूप के 'व्यंग्यार्थ' का उल्लेख मिलता है। लेकिन संस्कृत के विद्वानों ने 'व्यंग्य' को स्वतंत्र विधा नहीं माना। प्राचीन काल में काव्य की एक शैली के रूप में व्यंग्य को देखा जाता था और विशेष कर 'हास्य' रस के साथ वह जुड़ा था। काव्यशास्त्र के प्राचीन ग्रंथ 'नाट्यशास्त्र' में हास्य रस के अभिन्न तत्त्व के रूप में 'व्यंग्य' की चर्चा हुई है। साथ ही आ. आनंदवर्धन के 'ध्वनि सिद्धांत' में शब्दों के पीछे छिपे हुए गूढ़ अर्थ (व्यंग्यार्थ) को व्यंग्य का आधार माना गया है। अलंकारवादी आ. भामह ने व्यंग्य को काव्यशैली के सौंदर्य के रूप में देखा है तो आचार्य कुंतक ने वक्रोक्ति में शब्द की व्यंजना शक्ति के रूप में व्यंग्य को महत्त्व दिया है। लेकिन कुछ प्राचीन विद्वानों ने हास्य, उपहास से जुड़ा होने के कारण 'व्यंग्य' को गौण माना है। लेकिन सामाजिक विसंगतियों पर भाष्य करते समय 'व्यंग्य' अनायास साहित्य से जुड़ जाता है। प्राकृत भाषा में जैन साहित्य और पाली भाषा में बौद्ध साहित्य में भी व्यंग्य विद्यमान था। साथ ही सिद्धों और नाथों के अपभ्रंश साहित्य में भी सामाजिक एवं धार्मिक विवेचन के परिप्रेक्ष्य में व्यंगोक्ति देखने मिलती है। सिद्ध कवि सरहपा ने अपभ्रंश भाषा में लिखे 'दोहा कोष' और 'चर्यापद' इन रचनाओं में धार्मिक कर्मकांड का खंडन करके वैदिक तत्त्वों की आलोचना की है।

संक्षेप में कह सकते हैं कि प्राचीन साहित्य में व्यंग्य केवल काव्य की एक शैली या अंग माना जाता था। शब्दों के व्यंजना शक्ति एवं व्यंग्यार्थ से जुड़ा तत्त्व है और मुख्य रूप से हास्य रस का अभिन्न अंग था। पाली, प्राकृत और अपभ्रंश साहित्य धार्मिक एवं सामाजिक विसंगतियों के परिप्रेक्ष्य में 'व्यंग्य' तत्त्व दिखाई देता है जिसे मध्यकाल में संत कवियों ने ग्रहण किया।

3.1.2 मध्यकालीन साहित्य :

हिंदी में मध्यकालीन साहित्य को 'भक्तिकाल' के नाम से भी पहचाना जाता है। यह कालखंड सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक दृष्टि से विसंगतियों से भरा कालखंड है। मध्यकाल में भी 'व्यंग्य' 'भक्ति साहित्य' का एक प्रभावी शस्त्र बनकर उभरा लेकिन उसे स्वतंत्र साहित्य विधा माना नहीं गया। इस कालखंड में भटके हुए समाज को सही राह दिखलाने के लिए अनेक संत कवियों ने सामाजिक विसंगतियों पर भाष्य करते हुए 'व्यंग्य' का सहारा लिया। इसका प्रभावी उदाहरण संत कबीर के दोहे हैं। भक्तिकाल के संत कबीर जैसे अनेक संतों ने अपनी संतकाव्य के माध्यम से धार्मिक पाखंड, आडंबर, अंधविश्वास, जातिव्यवस्था, वर्णव्यवस्था आदि पर लोकभाषा में व्यंग्यात्मक प्रहार किया। संत कबीर ने हिंदू और मुस्लिमों के धर्म के ठेकेदार बने पंडित, मुल्लाओं और उनके धार्मिक आडंबरों पर कठोर व्यंग्यात्मक प्रहार किया। संत कबीर ने हिंदू धर्म के पंडितों के शास्त्र ज्ञान के आडंबर पर व्यंग्य करते हुए दोहा लिखा- "पोथी पढि पढि जग मुआ, पंडित भया न कोय/ ढाई आखर प्रेम का पढ़ सो पंडित होय।" तो उसी प्रकार मुस्लिम मौलवी की खबर लेते हुए कहा, "काँकर पाथर जोरि कै, मसजिद लई बनाय/ ता चढि मुल्ला बाँग दे, क्या बहरा हुआ खुदाय।" इस तरह संत कबीर ने हिंदी व्यंग्य परंपरा की पृष्ठभूमि को ठोस बनाने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। संत रैदास ने समाज में व्याप्त जाति एवं वर्णाश्रम व्यवस्था पर व्यंग्य किया तो गुरु नानक ने धार्मिक अंधविश्वास, आडंबरों पर प्रहार किया। इस

कालखंड में व्यंग्य एक साहित्य की विशेष प्रवृत्ति के रूप में देखा जाता है। मध्यकाल में दोहा, साखी और पद जैसी काव्यशैलियों में व्यंग्य का प्रभावी प्रयोग देखने मिलता है। सरल लोकभाषा में सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक विसंगतियों पर कठोर प्रहार करना इस व्यंग्य की विशेषता थी, जिसका प्रधान उद्देश्य सामाजिक सुधार था।

3.1.3 आधुनिक साहित्य :

आधुनिक साहित्य के परिप्रेक्ष्य में 'व्यंग्य' को स्वतंत्र साहित्यिक विधा बनाने में पाश्चात्य साहित्य का बहुत बड़ा योगदान रहा है। यूरोप में हुई सामाजिक, राजनीतिक और औद्योगिक क्रांतियों का असर पूरी दुनिया पर होने लगा। इन सामाजिक एवं राजनीतिक क्रांतियों से साहित्य का प्रभावित होना स्वाभाविक था। 'व्यंग्य' का जन्म ग्रीक में हुआ और उससे प्रेरणा पाकर यह रोमन साहित्य में आया। रोमन साहित्य से 'व्यंग्य विधा' का प्रचार-प्रसार दुनिया के अन्य देशों में हुआ। ग्रीक में व्यंग्य विधा कब शुरू हुई इसका कोई प्रमाण उपलब्ध नहीं लेकिन रोमन साहित्य में व्यंग्य की एक निश्चित परंपरा देखने मिलती है। रोमन साहित्य में व्यंग्य का जन्म नाटकों में प्रचलित 'कॉमेडी' (हास-उपहास) से हुआ, जो अंग्रेजी में 'Satire' (सटायर) नाम से प्रचलित हुआ। अंग्रेजी साहित्य में सामाजिक विसंगतियों पर भाष्य करनेवाला साहित्य विशेष रूप से 'Satire' के रूप में प्रसिद्ध हुआ। हिंदी साहित्य में अंग्रेजी साहित्य के प्रभाव से 'व्यंग्य' को एक विशेष साहित्यिक विधा के रूप में प्रतिष्ठा मिलने लगी। आधुनिक कालखंड में हिंदी गद्य साहित्य के जनक भारतेन्दु हरिश्चंद्र को व्यंग्य के संस्थापक के रूप में जाना जाता है। उन्होंने अपने निबंधों, नाटकों में व्यंग्य का सटीक प्रयोग किया जिससे आगे चलकर 'व्यंग्य' हिंदी साहित्य की एक स्वतंत्र विधा बन सकी। भारतेन्दु कालीन अनेक कवि, गद्यकारों ने 'व्यंग्य' को स्वतंत्र विधा बनाने के लिए पृष्ठभूमि बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। व्यंग्य के शिखरपुरुष हरिशंकर परसाई ने अपनी प्रतिभा के बल पर 'व्यंग्य' को स्वतंत्र साहित्य विधा का दर्जा देकर उसे शीर्ष पर पहुँचाया और समकालीन व्यंग्यकार उसे निरंतर विकसित कर रहे हैं।

3.2 व्यंग्य की परिभाषा :

'व्यंग्य' को कविता, कहानी, उपन्यास की तर्ज पर एक निश्चित परिभाषा में बाँधना मुश्किल है। इसलिए विद्वानों ने 'व्यंग्य' के शाब्दिक अर्थ, उसके स्वरूप, तत्त्व, उद्देश्य आदि के आधार पर उसे परिभाषित करने का प्रयास किया है। 'व्यंग्य' की परिभाषाओं को देखने से पूर्व उसके शाब्दिक अर्थ को जानना जरूरी है। आधुनिक व्यंग्य विधा के परिप्रेक्ष्य में इसका शाब्दिक अर्थ पाश्चात्य साहित्य से ग्रहण किया है। रोमन साहित्य में मर्यादा का उल्लंघन करके प्रयुक्त होनेवाले नाटकों के लिए 'Atellan Farce' शब्द का प्रयोग किया जाता था। लैटिन भाषा में यह शब्द 'Satura' बना और अंग्रेजी साहित्य में आकर यह 'Satire' बन गया। हिंदी साहित्य में इसी 'Satire' शब्द को विकृति, व्यंग्य, व्यंग, उपहास इन चार अर्थों में ग्रहण किया गया है। लेकिन इसमें 'Satire' विधा के परिप्रेक्ष्य में हिंदी में 'व्यंग्य' यह शब्द ही सटीक है। हिंदी में 'व्यंग्य' शब्द की उत्पत्ति संस्कृत भाषा से हुई है। संस्कृत के 'अज्र' धातू में 'वि' उपसर्ग और 'ण्यत' प्रत्यय लगाने से 'व्यंग्य' शब्द बना है, जिसका

अर्थ है शब्द का व्यंजना वृत्ति द्वारा प्रकट होनेवाला गुढ़ एवं छिपा हुआ अर्थ। ‘व्यंग्य’ शब्द की उत्पत्ति के संदर्भ में माना जाता है कि इसकी उत्पत्ति गाली-गलौच से हुई होगी। उसके बाद पहला व्यंग्य व्यक्तिगत स्तर पर निर्माण हुआ और बाद में वह सामाजिक स्तर पर उभरा होगा। व्यक्तिगत या सामाजिक स्तर की विसंगतियों पर भाष्य करने के लिए प्रभावी आयुध के रूप में व्यंग्य काम करता है। विभिन्न विद्वानों की परिभाषा के द्वारा ‘व्यंग्य’ के स्वरूप और उसकी विशेषताओं को समझते हैं-

3.2.1 पाश्चात्य विद्वानों की परिभाषाएं :

* होरेस और जुवेनल (रोमन कालखंड के व्यंग्य की नींव रखनेवाले कवि) :

होरेस के अनुसार “व्यंग्य हास्यपूर्ण और हल्का हो सकता है (होराटियन), जबकि जुवेनल के अनुसार यह कठोर, गंभीर और तिरस्कारपूर्ण हो सकता है (जुवेनालियन)।”

* एनसाइक्लोपीडिया (अमेरिकन) :

“व्यंग्य गद्य या पद्य की एक ऐसी साहित्यिक रचना है जिसमें दुष्टता और अपराध का नैतिक परीक्षण करके उसे अस्वीकृत किया जाता है।”

* विदेशी व्यंग्यकार स्विफ्ट :

“व्यंग्य एक ऐसा शीशा है, जिसमें दर्शक अपने अतिरिक्त सभी के चेहरे देखता है।”

* बर्नार्ड शॉ :

“मूर्खों को प्रोत्साहन देने के बजाय हास्य द्वारा उन्हें ध्वस्त करने तथा विकृति को विनोद-भाव से न स्वीकारने वालों पर ही संसार की मुक्ति निर्भर करती है।”

* मैथ्यू हॉगर्थ :

“मनुष्य वह खतरनाक जानवर है, जिसमें मूर्खतापूर्ण कार्य करने की असीमित क्षमता है। व्यंग्य द्वारा यदि इस सत्य की अभिव्यक्ति कर दी जाती है तो वह पर्याप्त है।”

* जार्ज मेरेडिथ :

“यदि उपहास गोचर हो जाए और आपकी सहानुभूति को समाप्त कर दे, तो समझना चाहिए कि आप व्यंग्य की पकड़ में आ रहे हैं।”

* सैमुअल जॉनसन :

“व्यंग्य एक ऐसी कविता (या रचना) है, जिसमें दुष्टता या मूर्खता की निंदा की जाती है।”

* नॉथ्रॉप फ्राय :

“व्यंग्य में विडंबना (खीपू) उग्र होती है।”

3.2.2 भारतीय विद्वानों की परिभाषाएं :

* आ. हजारीप्रसाद द्विवेदी :

“व्यंग्य वह है जो कहने वाला अधोष्ठ में हँस रहा हो और सुनने वाला तिलमिला उठा हो, और फिर वह कहने वाले को जवाब देना अपने को और भी उपहासास्पद बना लेना हो जात हो।”

* डॉ. रामकुमार वर्मा :

“आक्रमण करने की दृष्टि से वस्तु स्थिति को विकृत कर उससे हास्य उत्पन्न करना ही व्यंग्य है।”

* हरिशंकर परसाई (हिंदी व्यंग्य के ‘शिखरपुरुष’) :

“व्यंग्य केवल हास्य नहीं, बल्कि समाज की विसंगतियों, पाखंड, भ्रष्टाचार और अत्याचारों के विरुद्ध एक तीखा, तार्किक और सचेत साहित्यिक प्रहार है। व्यंग्य जीवन से साक्षात्कार करता है, जीवन की आलोचना करता है।”

* व्यंग्य लेखक एवं आलोचक सुभाष चंद्र :

“व्यंग्य वह गंभीर रचना है जिसमें व्यंग्यकार विसंगति के तह में जाकर उस पर वक्रोक्ति, वागवैद्ध्य आदि भाषिक शक्तियों के माध्यम से तीखा प्रहार करता है। उसका लक्ष्य पाठक को गुदगुदाना ना होकर उससे करुणा, खीझ अथवा आक्रोश की पावती लेना होता है।”

* रवींद्रनाथ त्यागी :

“समाज की कुरीतियों का भंडाफोड़ करने का कार्य प्रमुखतः व्यंग्य द्वारा ही हो सकता है। यदि उसमें हास्य भी समाविष्ट हो जाए तो रंग और भी तेज हो जाएगा। (फिर भी) हास्य माध्यम है, व्यंग्य-लक्ष्य।”

* शरद जोशी :

“सेंस ऑफ ह्यूमर ही अन्याय, अत्याचार और निराशा के विरुद्ध होने से व्यंग्य में अभिव्यक्त होता है।”

* डॉ. बरसानेलाल चतुर्वेदी :

“आलंबन के प्रति तिरस्कार, उपेक्षा या भर्त्सना की भावना लेकर बढ़ने वाला हास्य व्यंग्य कहलाता है।”

* डॉ. धनंजय वर्मा :

“व्यंग्य एक्सरे से खींची गई वह तस्वीर है, जो ऊपर से स्वस्थ और भले-चंगे दिखने वाले आदमी और समाज के अंदरूनी क्षय और कैंसर को उभारती है।”

* आर. एस. तिलक :

“व्यंग्य शक्तिशाली लेखक के हाथों में, समय की मूर्खताओं को उभार कर उन्हें दूर करने का विचार देने वाला एक महत्वपूर्ण शास्त्र है।”

* उर्दू व्यंग्यकार गुलाम अहमद फुरकत :

“व्यंग्य का वास्तविक उद्देश्य समाज या सोसाइटी की बुराइयों, कमजोरियों और त्रुटियों को हँसी उड़ाकर पेश करना है, मगर इसमें तहजीब का दामन मजबूती से पकड़े रहने की जरूरत है, वरना व्यंग्यकार भँडेती की सीमाओं में प्रवेश कर जायेगा।”

संक्षेप में कह सकते हैं कि ‘व्यंग्य’ का अर्थ बहुत ही व्यापक और बहुआयामी है। विद्वानों ने उसे अर्थ एवं स्वरूप के स्तर पर परिभाषित किया है लेकिन इसकी सर्वमान्य एवं ठोस परिभाषा नहीं बनी है। आज व्यंग्य विधा समाज में व्याप्त हर क्षेत्र की विसंगतियों पर प्रहार करके समाज और मानव जीवन को बेहतर बनाने के लिए निरंतर कार्य कर रही है। वह मानव के व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन में व्याप्त विसंगतियों, विकृतियों, बुराइयों, पाखंड, भ्रष्टाचार आदि पर कठोर प्रहार करती है।

3.2.3 व्यंग्य की विशेषताएं :

उपरोक्त विद्वानों की परिभाषाओं पर ‘व्यंग्य’ की निम्नलिखित विशेषताएं दिखाई देती हैं-

* व्यंग्य में प्रमुख रूप से यथार्थता, विडंबना, हास, बौद्धिकता, निष्पक्षता, संवेदनशीलता, गंभीरता, विसंगतियाँ, आलोचना आदि तत्त्व महत्वपूर्ण होते हैं।

- * व्यंग्य में अप्रत्यक्ष अभिव्यक्ति महत्वपूर्ण होती है। बात को सीधे न कहकर, इशारों, संकेतों या गूढ़ अर्थों में कही जाती है।
- * व्यंग्य में व्यक्तिगत या फिर सामाजिक विसंगतियों पर कठोर प्रहार या व्यंग्यात्मक टिप्पणी की जाती, जिससे दोष स्पष्ट हो।
- * व्यंग्य में हमेशा हास्य शामिल होता है, जिससे बात को प्रभावी और रोचक बनाया जाता है।
- * व्यंग्य का मुख्य लक्ष्य समाज में व्याप्त कमियों और बुराइयों को उजागर करना होता है।
- * व्यंग्य केवल आलोचना या टिप्पणी नहीं करता बल्कि मानव और समाज में सुधार लाने का प्रयास करता है।
- * व्यंग्य की धार हमेशा तेज होती है, जो पाठक या श्रोता को गहराई से प्रभावित करती है।
- * व्यंग्य व्यक्ति एवं समाज की विसंगतियों से संबंधित होने के कारण वह यथार्थता से जुड़ा होता है।
- * व्यंग्य में हमेशा विरोधाभास (Irony) का प्रयोग होता है, जिसमें शब्दों से भिन्न और गहरा अर्थ छिपा होता है।
- * व्यंग्य भाषा हमेशा सहज, सरल और व्यंजना पूर्ण होती है जिसमें गूढ़ अर्थ निहित होता है।

संक्षेप में कह सकते हैं कि व्यंग्य एक ऐसी विधा है जो व्यक्तिगत एवं सामाजिक स्तर पर व्याप्त विभिन्न

विसंगतियों, पाखंड, आडंबर, बुराइयों, भ्रष्टाचार आदि पर हास्य के माध्यम से कठोर प्रहार करती है। समाज की बुराइयों से पर्दापाश करके समाज सुधार करना, इसका मुख्य उद्देश्य होता है।

3.3 हिंदी साहित्य में व्यंग्य की परंपरा :

हिंदी साहित्य में व्यंग्य की परंपरा बहुत सुदीर्घ और पुरानी रही है। व्यंग्य के उद्भव के संदर्भ में हमने देखा कि व्यंग्य साहित्य की जड़े प्राचीन काल के संस्कृत, प्राकृत, पाली और अपभ्रंश भाषा के साहित्य में दिखाई देती है। प्राचीन साहित्य में व्यंग्य को काव्य की एक शैली, ध्वनि (अप्रत्यक्ष अर्थ) और हास्य रस के अभिन्न अंग के रूप में स्वीकारा गया था। भक्तिकालीन संतकाव्य से ही हिंदी व्यंग्य की सशक्त परंपरा की शुरुआत मानी जा सकती है। सिद्धों और नाथों की वाणियों में सामाजिक एवं धार्मिक आडंबरों पर कठोर प्रहार किया गया था जिसे मध्यकाल में संत कबीर ने अपने दोहों में अपनाया। संत कवियों ने समाज में व्याप्त सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक विसंगतियों पर तीखी व्यंग्यात्मक टिप्पणियाँ की। लेकिन रीतिकाल में शृंगार रस और दरबारी जीवन की प्रधानता के कारण व्यंग्य की यह परंपरा शिथिल हुई। 'बिहारी सतसई' जैसे अपवाद को छोड़कर अन्य रचनाओं में व्यंग्य विशेषता दिखाई नहीं देती। हिंदी व्यंग्य परंपरा को जानने के लिए आधुनिक काल का विस्तार से अध्ययन करना जरूरी है क्योंकि व्यंग्य को स्वतंत्र विधा की मान्यता एवं विकास की दृष्टि से आधुनिक काल महत्वपूर्ण है। हिंदी व्यंग्य की परंपरा की विकास यात्रा को भारतेंदु काल, द्विवेदी काल, शुक्ल काल, हरिशंकर परसाई काल और समकालीन काल के परिप्रेक्ष्य में जानना जरूरी है। हिंदी व्यंग्य परंपरा का उपरोक्त कालखंड के परिप्रेक्ष्य में विवेचन इस प्रकार है-

3.3.1 भारतेंदु काल (1850-1900 ई.) :

हिंदी व्यंग्य की परंपरा में भारतेंदु कालखंड स्वर्णिम काल माना जाता है क्योंकि इस काल में ही 'व्यंग्य' को साहित्य की स्वतंत्र विधा के रूप में पहचान मिली। 19 वीं सदी के उत्तरार्ध में हिंदी व्यंग्य को संगठित और सशक्त बनाने का श्रेय हिंदी गद्य के जनक भारतेंदु हरिश्चंद्र को दिया जाता है। समकालीन व्यंग्य साहित्य की ठोस नींव निर्माण करने का कार्य भारतेंदु युग ने किया। इस कालखंड से हिंदी गद्य व्यंग्य का शुभारंभ हुआ था। इस कालखंड में प्रहसन और स्तोत्र शैली में सबसे अधिक व्यंग्य लिखा गया था और व्यंग्यात्मक निबंध की दृष्टि से भी यह कालखंड महत्वपूर्ण माना जाता है। भारतेंदु के साथ इस काल के प्रताप नारायण मिश्र, बालकृष्ण भट्ट, बालमुकुंद गुप्त, पंडित माधव प्रसाद मिश्र, राधा चरण गोस्वामी, श्रीनिवास दास, बद्री नारायण 'प्रेमघन' आदि की रचनाओं में व्यंग्य और मनोरंजक हास्य का प्रभावी रूप देखने मिलता है।

भारतेंदु का कालखंड अंग्रेजी शासन और पुनर्जागरण का काल था। सन 1857 की जंग की विफलताओं के बाद अंग्रेजी शासन का भारत पर दबाव एवं जुल्म बढ़ता गया। अंग्रेजी शासन काल सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक दृष्टि से विसंगतियों से भरा था। अंग्रेजों का अत्याचार, जाति व्यवस्था, धार्मिक कट्टरता, अंधविश्वास भारतेंदु काल में चरमसीमा तक पहुँच चुके थे। शिक्षा के प्रसार, छापेखाने का आविष्कार आदि के कारण समाज में जनजागृति बढ़ रही थी। अंग्रेजी सत्ता को खदेड़ने के लिए विभिन्न सामाजिक संस्था

एवं क्रांतिकारी संगठनों ने आंदोलन तीव्र किए थे। इस समय अनेक पत्र-पत्रिकाओं में व्यंग्य अभिव्यक्ति का सटीक माध्यम बना था। लेखक, क्रांतिकारी, समाजसुधारक, पत्रकार आदि साहित्य एवं पत्रकारिता के माध्यम से अंग्रेजी शासन काल में समाज में व्याप्त सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक विसंगतियों पर प्रहार करके उनका पर्दापाश किया। समाज में व्याप्त अंधविश्वास, जाति-वर्ण-वर्ग भेद, दकियानुसी रीति-रिवाज, धार्मिक रूढ़ियाँ, गरीबी, राजसत्ता का शोषण एवं दमनकारी यंत्रणा के खिलाफ अपनी लेखनी तेज की। भारतेंदु और उनके समकालीन रचनाकारों ने व्यंग्य को सामाजिक सुधारणा और जागरण का माध्यम बनाया। भारतेंदु युग में पहली बार 'व्यंग्य' को एक स्वतंत्र विधा के रूप में मान मिला। इसे केवल हास-उपहास का माध्यम न मानकर प्रभावी साहित्यिक विधा के रूप में मान्यता मिली। भारतेंदु युग के व्यंग्य का प्रधान उद्देश्य समाज सुधार और जनजागरण करना था।

भारतेंदु हरिश्चंद्र ने अपने नाटकों, निबंधों के माध्यम से ब्रिटिश सरकार के साम्राज्यवादी, शोषणमूलक और अन्यायी नीतियों पर कठोर व्यंग्य किया। अंग्रेजी कालखंड में सत्ताधारियों पर प्रत्यक्ष टिप्पणी करना संभव न होने के कारण लेखकों ने व्यंग्यात्मक शैली से अपने उद्देश्य की पूर्ति की। भारतेंदु हरिश्चंद्र ने इस कालखंड में व्यंग्य लेखन में 'स्तोत्र शैली' का आविष्कार किया था जिसकी परंपरा को आगे राधाचरण गोस्वामी ने आगे बढ़ाई। भारतेंदु ने 'अंग्रेज स्तोत्र', 'कंकड स्तोत्र' आदि व्यंग्यात्मक रचनाएं लिखी जबकि राधाचरण गोस्वामी ने इसी शैली में 'रेल्वे स्तोत्र', 'नापित स्तोत्र', 'मूषक स्तोत्र' आदि रचनाएं लिखी। इस कालखंड के अधिकांश रचनाकारों ने प्रहसन और स्तोत्र शैली में व्यंग्यात्मक रचनाएं लिखी। भारतेंदु हरिश्चंद्र ही हिंदी व्यंग्य गद्य रचनाओं के जनक माने जाते हैं। अंग्रेजों का कुशासन, धार्मिक विकृतियाँ, पश्चिमी सभ्यता का अंधानुकरण, महंगाई, भ्रष्टाचार आदि उनके व्यंग्यात्मक रचनाओं के मूल विषय थे। उनके द्वारा सन 1873 में लिखित 'वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति' हिंदी साहित्य की पहली व्यंग्य रचना मानी जाती है, जिसमें उन्होंने माँस भक्षण और मदिरा सेवन की कुप्रवृत्तियों पर व्यंग्य किया है। 'कंकड स्तोत्र' में काशी की नगरपालिका के प्रशासन की अव्यवस्था पर व्यंग्य है तो 'अंग्रेज स्तोत्र' में अंग्रेजों के असली चरित्र का व्यंग्यात्मक प्रहार है। उसका एक उदाहरण दृष्टव्य है- "खजाना तुम्हारा पेट है, लालच तुम्हारी धुधा है, सेना तुम्हारा चरण है, खिताब तुम्हारा प्रसाद है, अतएव हे विराट रूप अंग्रेज हम तुमको प्रणाम करते हैं।" (अंग्रेज-स्तोत्र रचना से उद्धृत)

'स्त्री सेवा पद्धति' इस रचना में महिलाओं की वाचाल वृत्ति और स्त्री लंपट पुरुषों का पर्दापाश किया है। साथ ही उन्होंने 'अंधेर नगरी-चौपट राजा', 'भारत दुर्दशा' आदि व्यंग्यात्मक नाटकों की रचना भी की। उनके 'अंधेर नगरी-चौपट राजा' इस नाटक के माध्यम से ब्रिटिश सरकार के नीतियों, शोषण और अन्याय पर करारा व्यंग्य किया। इस नाटक में सरकारी व्यवस्था में पनप रहे भ्रष्टाचार और मूर्खता पर तीखा व्यंग्य है। उन्होंने कुछ व्यंग्यात्मक कविताएं भी लिखी जिसमें 'बंदर सभा', 'उटू का स्यापा', 'नए जमाने की मुखरी' आदि उल्लेखनीय हैं। 'नए जमाने की मुखरी' रचना में उन्होंने अमीर खुसरो की तर्ज पर मुखरियों की शैली में तत्कालीन सामाजिक एवं राजनीतिक विसंगतियों पर व्यंग्यात्मक प्रहार किया है। साथ ही उनके 'हरिश्चंद्र मैगजीन' और 'कवि वचन सुधा' इन पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से ही व्यंग्य लेखों का शुभारंभ करके जनमत तैयार किया गया। भारतेंदु

की इन पत्रिकाओं में संपादकीय लेख में व्यंग्यात्मक टिप्पणियाँ बहुत ही प्रखर हुआ करती थी। उनके 'स्वर्ग में विचार सभा' और 'पाँचवे (चूसा) पैगंबर' विशेष प्रसिद्ध व्यंग्य लेख है। 'स्वर्ग में विचार सभा' में सामाजिक विसंगतियों पर भाष्य किया है जबकि 'चूसा पैगंबर' में धार्मिक विसंगतियों की पोल खोली गई है। इस कालखंड में 'व्यंग्य' ज्यादातर उपहास, पैरोडी या विनोद के अर्थ में अधिक प्रचलित था।

प्रतापनारायण मिश्र के मनोरंजक निबंधों ने व्यंग्य को चरम सीमा तक पहुँचाया। उनके निबंधों में सामाजिक विसंगतियों पर मनोरंजक अंदाज में तंज कसा पाया जाता है। तत्कालीन समय में अंग्रेजों की खुशामद करने की प्रवृत्ति, अंग्रेजी भाषा और विदेशी सामान के प्रति मोह की वृत्ति पर प्रतापनारायण मिश्र ने अपने निबंधों में व्यंग्य किया है। उनके 'घूरे क लत्ता बीनै', 'कनातन क डौल बाँधै', 'समझदार की मौत है', 'बात', 'मनोयोग', 'वृद्ध', 'भौ', 'होली है', 'काली कोष', 'देशी कपड़ा' आदि प्रसिद्ध व्यंग्य रचनाएं हैं। 'काली कौतुक रूपक' और 'भारत दुर्दशा' उनके प्रसिद्ध व्यंग्य रूपक नाटक हैं जिसमें सामाजिक और राजनीतिक विसंगतियों पर प्रहार किया है। वे अपनी व्यंग्य रचनाओं में आम आदमी के जीवन से जुड़े विषयों को लेते थे जिससे उनके व्यंग्य पाठक को अपने लगते थे। 'भारत दुर्दशा' व्यंग्य नाटक का एक उदाहरण - **"सर्वसु लिए जात अंग्रेज, हम केवल लेक्चर के तेज। श्रम बिन बाते का करती हैं, कहुँ टअकन गाजे गिरती है।"** यहाँ पर मिश्र ने अंग्रेजों की लूट-खसौट की वृत्ति और भारतीयों की केवल बिना श्रम के आजादी पाने की इच्छा पर व्यंग्य किया है।

भारतेंदु काल में बालकृष्ण भट्ट का नाम व्यंग्यात्मक निबंधों के लिए विशेष प्रसिद्ध रहा। इनके लगभग 1000 निबंध विविध विषयों पर प्राप्त होते हैं। उनका पहला लेख 'कलीराज की सभा' भारतेंदु की पत्रिका 'कविवचनसुधा' में प्रकाशित हुआ और वे चर्चा में आए। उन्होंने व्यंग्य की अनोखी शैली का प्रयोग किया जिसमें व्यंग्य का तीखापन कम और हास्य अधिक था। दवाइयों के नुस्खों के रूप में व्यंग्य करना इनके लेखन शैली की विशेषता थी। उन्होंने 'आँख', 'कान', 'नाक', 'वकील', 'नाम', 'बात', 'खटका', 'क्या होगा' आदि प्रसिद्ध व्यंग्य निबंध लिखे जबकि 'जैसा काम वैसा परिणाम', 'कलीराज की सभा', 'रेल का विकट खेल', 'बालविवाह नाटक', 'चंद्रसेन नाटक', 'बृहन्नला' आदि उल्लेखनीय नाटक हैं जिसमें व्यंग्यात्मक टिप्पणियाँ दिखाई देती हैं। 'बृहन्नला' नाटक में विद्यादान को व्यवसाय बनानेवाले धन के भोगी पंडितों पर व्यंग्य कसा है।

भारतेंदु युग में राधाचरण गोस्वामी भी एक महान व्यंग्य लेखक माने जाते हैं। भारतेंदु जी के बाद गोस्वामी ने ही 'स्तोत्र शैली' में व्यंग्य लेखन की परंपरा को आगे बढ़ाया। उनके व्यंग्य का उद्देश्य जनता का मनोरंजन करना था। इस कारण उनके व्यंग्य में तीखापन बहुत कम था। उन्होंने मुख्यतः राजनीतिक शोषण और सामाजिक दुराचारों पर व्यंग्य कसा है। उन्होंने 'बूढ़े मुँह मुँहासे', 'तन मन धन गुँसाई', 'यम लोग की यात्रा', 'उल्लू गाथा' आदि प्रसिद्ध व्यंग्य रचनाएं लिखीं। 'बूढ़े मुँह मुँहासे' में कामवासना की तृप्ति के लिए समाज में प्रतिष्ठित कहलाने वाले लोगों के दुराचारी वृत्ति पर व्यंग्य कसा है।

भारतेंदु युग में बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' भी एक महत्वपूर्ण रचनाकार माने जाते हैं। उन्होंने अपने समय

की बाल-विवाह, अनमेल विवाह, विधवा विवाह, वेश्यावृत्ति जैसी सामाजिक समस्याओं पर व्यंग्यात्मक लेखन किया। उनके व्यंग्यात्मक निबंध 'प्रेमघन सर्वस्व भाग-२' में संकलित हैं। साथ ही उन्होंने 'रामागमन', 'भारत सौभाग्य', 'वारांगना रहस्य', 'वैश्याविनोद' जैसे नाटक लिखे। 'वारांगना रहस्य' महानाटक में उन्होंने स्त्री लंपट और शातिर लोगों बद्माशों पर करारा व्यंग्य किया है। 'वैश्याविनोद' में उन्होंने वेश्यागमन की प्रवृत्ति पर व्यंग्यात्मक टिप्पणी की है।

संक्षेप में कह सकते हैं कि हिंदी व्यंग्य परंपरा में भारतेन्दु काल व्यंग्य विधा के बीजारोपण का कालखंड है। मूलतः व्यंग्य लेखन करने की दृष्टि से यह काल बहुत ही समस्याओं से घिरा और प्रभावी था लेकिन व्यंग्य की स्वतंत्र विधा और व्यंग्यकार के रूप में कोई रचनाकार उभरकर सामने नहीं आता। हिंदी व्यंग्य की दृष्टि से हम इसे व्यंग्य साहित्य का आदिकाल मान सकते हैं। लेकिन व्यंग्यात्मक निबंध इस काल की मौलिक उपज है। उन्होंने आनेवाले व्यंग्यकारों को प्रेरणा देने का कार्य किया। अंग्रेजी कुशासन के कारण निर्माण हुई सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक विसंगतियों पर भाष्य करना इनके व्यंग्य का मूल विषय था। जनताविरोधी नीतियों के खिलाफ इन रचनाकारों में तीव्र आक्रोश दिखाई देता है। लेकिन अंग्रेजी शासन के दमनकारी वृत्ति के कारण इस कालखंड में कोई रचनाकार समाज सुधार करनेवाले व्यंग्यकार के रूप में आगे नहीं आता है।

3.3.2 द्विवेदी काल (1900-1918 ई.) :

हिंदी व्यंग्य की परंपरा में द्वितीय चरण द्विवेदी कालखंड का आता है। आ. महावीरप्रसाद द्विवेदी के योगदान को केंद्र में रखते हुए इस काल को द्विवेदी काल कहा जाता है। भारतेन्दु युग में हिंदी व्यंग्य के उद्भव को विकास की ओर ले जाने का श्रेय द्विवेदी युग के रचनाकारों को जाता है। आ. महावीरप्रसाद द्विवेदी के अनुशासन और तत्त्वनिष्ठ नेतृत्व के कारण इस युग का व्यंग्य हास-परिहास से बाहर निकलकर गंभीर बना। आ. महावीरप्रसाद द्विवेदी के मार्गदर्शन में 'सरस्वती पत्रिका' (1903 ई.) के माध्यम से व्यंग्य लेखन को गति मिली। समाज सुधारणा, नैतिक जीवन मूल्यों का प्रचार-प्रसार और राष्ट्रीय चेतना को बढ़ावा देना इस युग के व्यंग्य का प्रधान उद्देश्य था। इसलिए अधिक गंभीर, मर्यादित और शिक्षाप्रद व्यंग्य रचनाएं लिखी जाने लगी। इस कालखंड में पत्र-पत्रिकाओं के विकास के कारण संपादकों और आलोचकों द्वारा गंभीर व्यंग्यात्मक लेखन को गति मिली। इस काल में पं. बालमुकुंद गुप्त, गोविंद नारायण मिश्र, लक्ष्मीधर वाजपेयी, चंद्रधर शमा गुलेरी, माधवप्रसाद मिश्र, अध्यापकपूर्ण सिंह, जी. पी. श्रीवास्तव आदि ने हिंदी व्यंग्य को विकसित करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

आ. महावीरप्रसाद द्विवेदी ने 'सरस्वती पत्रिका' का संपादन करते हुए हिंदी की शुद्धता और व्यंग्य को संयत रूप देने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उन्होंने समाज में व्याप्त अंधविश्वास, रूढ़ियाँ और साहित्य के क्षेत्र में चल रही अराजकता पर व्यंग्यात्मक शैली में प्रहार किया। उनके निबंधों की व्यंग्यात्मक टिप्पणियों में हास-परिहास, मनोरंजन से अधिक बौद्धिकता और उपदेशात्मकता है। उनके द्वारा अनुवाद की 'बेकन विचार रत्नावली' निबंधों के संग्रहों में व्यंग्यात्मक टिप्पणियाँ दिखाई देती हैं। 'कविता और कवि', 'प्रतिभा', 'दण्डदेव

का आत्म-निवेदन', 'म्युनिसिपैलिटी के कारनामे' आदि निबंधों में उन्होंने साहित्य क्षेत्र में फैली अराजकता पर व्यंग्यात्मक प्रहार किया है। साथ ही 'क्या हिंदी नाम की कोई भाषा ही नहीं', 'आर्य समाज का कोप' आदि लेखों में उन्होंने भाषा और समाज की समस्याओं को लेकर व्यंग्यात्मक लेखन किया है।

भारतेंदु युग के प्रसिद्ध रचनाकार बालमुकुंद गुप्त को हिंदी साहित्य के पहले 'व्यंग्य स्तंभ लेखक' माना जाता है। 'भारत पत्रिका' में उनके द्वारा लिखित प्रसिद्ध 'शिव शंभू के चिट्ठे' को हिंदी साहित्य का पहला व्यंग्य स्तंभ माना जाता है। उन्होंने अपनी व्यंग्य रचनाओं में अंग्रेजी कुप्रशासन और विशेष रूप से लॉर्ड कर्जन की नीतियों पर व्यंग्यात्मक प्रहार किया है। 'आत्माराम' भट्ट की विशेष प्रसिद्ध रचना है जिसमें उन्होंने सामाजिक, धार्मिक एवं साहित्यिक बुराइयों पर व्यंग्य किया है। मधुसूदन गोस्वामी भी इस काल के प्रसिद्ध व्यंग्यकार थे। उन्होंने राधाचरण गोस्वामी द्वारा संपादित 'भारतेंदु पत्रिका' में व्यंग्य लेखन किया। मधुसूदन जी 'ब्याज स्तुति शैली' में व्यंग्य लेखन करते थे। 'समाचार पत्र' उनकी उल्लेखनीय व्यंग्य रचना है जिसमें उन्होंने समाचार पत्र विभाग की विसंगतियों पर भाष्य किया है। गुप्त निबंधावली' के नाम से इनके कई निबंध प्रसिद्ध हुए हैं जिसमें उन्होंने ब्रिटिशों के औपनिवेशिक सरकारी की नीतियाँ, भारतीय प्रशासन की विसंगतियों पर व्यंग्य किया है।

पं. चंद्रधर शर्मा गुलेरी इस काल के विद्रोही और बौद्धिक व्यंग्य रचनाओं के लिए जाने जाते हैं। 'उसने कहा था' इस एक मात्र कहानी लेखन से वे हिंदी साहित्य जगत में अक्षय कीर्ति के लिए पात्र हुए। चंद्रधर शर्मा गुलेरी ने सामाजिक एवं साहित्यिक विसंगतियों पर व्यंग्यात्मक प्रहार किया। उनके 'कछुआ धरम', 'काशी की नींद और नुपूर' और 'मारेसि मोहि कुठाऊं' जैसे प्रसिद्ध निबंधों में धर्म, रीति-रिवाज, परंपरा के नाम पर किए जाने वाले आडंबर पर व्यंग्यात्मक टिप्पणियाँ की गई हैं।

अध्यापक सरदार पूर्णसिंह ने 'सरस्वती पत्रिका' में व्यंग्यात्मक लेख लिखे हैं। इनके व्यंग्यात्मक निबंधों में विचारात्मकता का स्तर ऊंचा था। इन्होंने बहुत कम लेखन किया लेकिन बहुत प्रभावी था। उनके 'कन्यादान', 'पवित्रता', 'अमेरिका का मस्त जोगी वाल्ट हिटमैन', 'भावनात्मक संवेदना' 'आचरण की सभ्यता', 'मजदूरी और प्रेम' और 'सच्ची वीरता' ये तीन निबंध विशेष उल्लेखनीय हैं। इसमें उन्होंने पश्चिमी सभ्यता का अंधानुकरण, सामाजिक विसंगतियाँ आदि पर विचारात्मक भाषा शैली में गंभीर व्यंग्य कसा है।

संक्षेप में कह सकते हैं कि द्विवेदी युग में हिंदी व्यंग्य गंभीर और विचारशील बना। व्यंग्य हास-परिहास, मनोरंजन के सीमित उद्देश्य बाहर निकलकर सामाजिक चेतना और परिवर्तन का सशक्त माध्यम बना। आ. महावीर प्रसाद द्विवेदी और उनके समकालीन उपरोक्त रचनाकारों ने हिंदी व्यंग्य को एक सक्षम दिशा देकर व्यंग्य साहित्य की नींव को मजबूत बनाने का कार्य किया।

3.3.3 शुक्ल काल (1919-1938 ई.):

हिंदी व्यंग्य परंपरा की दृष्टि से शुक्ल युग का योगदान बहुत सीमित और सूक्ष्म रहा है। इस कालखंड में साहित्य में छायावादी प्रवृत्ति आत्मानुभूति, प्रकृति-चित्रण और कोमल भावनाओं पर ज्यादा केंद्रित होने के

कारण व्यंग्य जैसी कठोर विधा की ओर रचनाकारों का ध्यान कम गया। शुक्ल युग में व्यंग्य लेखन कठोर और प्रत्यक्ष न होकर वह ज्यादातर सांकेतिक और भावनाप्रधान रहा। व्यंग्य के तीखेपन की जगह सुकोमल आलोचना और चिंतन की प्रवृत्ति प्रधान रही। इस कालखंड में आ. रामचंद्र शुक्ल, प्रेमचंद, बाबू गुलाब राय, पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र', शिव पूजन सहाय, लक्ष्मीकांत झाँ, बेदब बनारसी, वियोगी हरि, पदुमलाल पुत्रालाल बख्शी आदि उल्लेखनीय व्यंग्य रचनाकार माने जाते हैं।

आ. रामचंद्र शुक्ल इस काल के एक गंभीर निबंधकार और आलोचक के रूप में पहचाने जाते हैं। आ. शुक्ल ने स्वतंत्र रूप से व्यंग्य रचना नहीं लिखी लेकिन उनके निबंधों में गंभीर, विचारप्रधान और सूक्ष्म व्यंग्य का रूप दिखने मिलता है। इस दृष्टि से उनके 'चिंतामणि' इस निबंध संग्रह में संकलित 'लोभ और प्रीति', 'क्रोध', 'ईर्ष्या', 'चिंता', 'आलस्य' आदि रचनाएं विशेष उल्लेखनीय हैं। इन रचनाओं में उन्होंने मानवीय प्रवृत्ति एवं भावनाओं पर व्यंग्यात्मक टिप्पणियाँ की हैं।

प्रेमचंद एक श्रेष्ठ कहानीकार, उपन्यासकार और निबंधकार के रूप में शीर्षस्थ हैं। उनकी अधिकांश कहानियों और निबंधों में व्यंग्य शैली का प्रयोग देखने मिलता है। उन्होंने अपनी रचनाओं में आम व्यक्ति और उसके दुःखों को केंद्र में रखा। इस कारण आम आदमी के दुःख के लिए जिम्मेदार सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक आदि क्षेत्र की विसंगतियों पर उन्होंने अपनी कहानियों में व्यंग्यात्मक प्रहार किया है। उनकी 'पूँस की रात', 'कफन', 'शतरंज के खिलाड़ी' आदि कहानियों में समाज व्यवस्था पर व्यंग्य किया है। उनके 'गोदान' इस सर्वश्रेष्ठ और कालजयी उपन्यास में स्वतंत्रतापूर्व भारत की दुर्दशा और किसानों की दुर्दशा के लिए जिम्मेदार ईकाइयों पर व्यंग्य कसा है। उनके 'महाजनी सभ्यता' निबंध में भी व्यंग्यात्मक टिप्पणियाँ देखने मिलती हैं। प्रेमचंद ने सन 1936 ई. में 'प्रगतिशील लेखक संघ' की स्थापना की, जिसका उद्देश्य 'सर्व हारा वर्ग' के दुःखों के लिए जिम्मेदार व्यवस्था की काली करतूतों का पर्दापाश करना रहा है। स्वयं प्रेमचंद ने अपने 'कफन', 'नमक का दरोगा', 'पूँस की रात' आदि कहानियों और 'गोदान', 'गबन', 'रंगभूमि', 'सेवा सदन' जैसे उपन्यासों में सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक क्षेत्र की विसंगतियों पर करारा व्यंग्य किया है।

बाबू गुलाबराय भी एक प्रतिभाशाली व्यंग्य निबंधकार के रूप में पहचाने जाते हैं। उन्होंने विशेषकर समाज के सफेदपोश व्यक्तियों जैसे नेता, बीमा एजेंट, डॉक्टर, वैज्ञानिक, व्यापारी, जातिभेद करनेवाले, वकील आदि के भ्रष्ट आचरण पर व्यंग्य कसा है। गुलाबराय का व्यंग्य व्यक्ति, काल और समाज को केंद्र में रखकर किया गया है। उनकी 'ठलुआ क्लब', 'मेरी असफलताएं', 'दैनिकी का एक पृष्ठ', 'अपनी बात', 'सीमावर्ती चोर', 'प्रभुजी मेरे आँगुन चित्त न धरी', 'मेरा जीवन बोध', 'देशभक्ति और नागरिक कर्तव्य' आदि उल्लेखनीय रचनाओं में व्यंग्यात्मक पुट दिखाई देता है। सफेदपोशों के काले कारनामे, प्रशासन की धांधली, भ्रष्टाचार आदि विषयों पर व्यंग्यात्मक लेखन किया है। साथ ही माधव प्रसाद मिश्र 'रामलीला', विश्वभरनाथ शर्मा 'कौशिक' के 'दुबे जी की डायरी', 'दुबे जी की चिट्ठियाँ' आदि इस काल की महत्वपूर्ण व्यंग्यात्मक निबंध हैं।

शुक्ल युग में शिवपूजन सहाय एक व्यंग्यात्मक निबंधकार के रूप में बहुचर्चित रहे। उनके 'कुछ' शीर्षक

निबंध संकलन में उनके व्यंग्यात्मक निबंध देखने मिलते हैं। उनके 'प्रोपेगंडा प्रभु' इस निबंध में धर्म का बाजारीकरण और राजनीति के व्यावसायिकरण पर करारा व्यंग्य किया गया है। साथ ही 'मीठा-मीठा गप्प', 'कड़वा-कड़वा थू' में व्यक्ति की कंजूस प्रवृत्ति पर व्यंग्य कसा है। इनके व्यंग्यात्मक निबंधों में विनोदप्रियता अधिक थी।

लक्ष्मीकांत झाँ इस काल में प्रसिद्धि की दृष्टि से उपेक्षित रहे लेकिन इनके निबंधों में भी व्यंग्यात्मक पुट दिखाई देता है। उनके 'किफायत', 'सफर', 'नाक', 'रात का सफर', 'बंक में', 'खोई वस्तु की खोज', 'जासूसी' आदि प्रसिद्ध निबंधों में सरल और सहज व्यंग्य देखने मिलता है।

पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र' भी इस काल के प्रखर और निर्भीक व्यंग्यकार माने जाते हैं। उनकी व्यंग्यात्मक टिप्पणियों ने हिंदी व्यंग्य को साहसिकता, तेज और यथार्थवाद प्रदान किया। उनका व्यंग्य पाठकों को गुदगुदाता भी है और गंभीर विचार करने के लिए भी प्रवृत्त करता है। इस कारण उनके व्यंग्य में हास और विचाशीलता का समुचित संतुलन देखने मिलता है। उन्होंने अनेक संवेदनशील विषयों पर खुलकर और निर्भीकता से लेखन करने के कारण उनकी कई रचनाओं पर विवाद भी छिड़ा। उन्होंने समाज में फैले पाखंड, नैतिक अवमूल्यन, सामाजिक भ्रष्टा आदि पर कठोर व्यंग्य किया। उनकी 'चॉकलेट', 'अपने-अपने ख्याल', 'दोजख की आग' आदि रचनाओं में व्यंग्य का तीखापन दृष्टिगत होता है।

पदुमलाल पन्नालाल बख्शी के निबंधों में भी व्यंग्य का कुशल इस्तेमाल किया गया है। उन्होंने विशेषकर सामाजिक विसंगतियों पर व्यंग्यात्मक निबंध लिखे। 'पंचपात्र' उनका निबंध संग्रह है जिसमें 'प्रबंध पारिजात', 'अतीत स्मृति', 'कुछ यात्री', 'श्रद्धांजलि के दो फूल', 'रामलाल पंडित' आदि विशेष प्रसिद्ध हैं। शुक्ल युग में बेदब बनारसी को हास्य-व्यंग्यकार के रूप में विशेष प्रसिद्धि मिली। 'हुक्का पानी', 'मुझे याद है' 'बद अच्छा बदनाम बुरा', 'जबरदस्त का देंगा सिर पर', 'गहरेबाज', 'पेट', 'पंथ', 'नेताओं का स्कूल', 'कविता और कवि सम्मेलन', 'उधार का सौदा', 'बुरे फसे मीटिंग में' आदि हास्यप्रधान निबंधों ने काफी लोकप्रियता हासिल की। उन्होंने सामाजिक, धार्मिक क्षेत्र की विसंगतियों पर व्यंग्य कसा है। 'उधार का सौदा' में किसान की दुर्दशा के लिए जिम्मेदार वृत्तियों पर व्यंग्य किया है। तो 'बुरे फसे मीटिंग' में भाषणबाजी करने वाले राजनेताओं पर व्यंग्य कसा गया है।

संक्षेप में कह सकते हैं कि शुक्ल युग हिंदी व्यंग्य परंपरा की दृष्टि से शिथिल युग माना जा सकता है। इस कालखंड में व्यंग्य लेखन की शैली में प्रौढ़ता और गंभीरता आई। मनोरंजन के स्थान पर व्यंग्यात्मक निबंध में विचारों और चिंतन की प्रधानता रही। फिर भी इस युग में बेदब बनारसी ने हास्यव्यंग्य प्रधान निबंधों की रचना करके खूब कीर्ति हासिल की। इस कालखंड में भारतेंदु युग की तरह व्यंग्य साहित्य की मूल प्रवृत्ति नहीं रहा बल्कि साहित्य की और उसमें भी निबंध की एक शैली के रूप में उभरा।

3.3.4 शुक्लोत्तर युग (1940-1960 ई.) :

हिंदी व्यंग्य परंपरा में शुक्लोत्तर युग विशेष उल्लेखनीय रहा। इस दौरान हिंदी साहित्य में प्रगतिवादी प्रवृत्तियाँ

दृष्टिगत होती है। व्यंग्य साहित्य को नई दिशा और उद्देश्य दिया। इस युग में आर्थिक एवं राजनीतिक क्षेत्र की विसंगतियों को लेकर रचनाकारों ने व्यंग्यात्मक लेखन किया। क्योंकि प्रगतिवादी युग के रचनाकारों पर कार्ल मार्क्स के 'मार्क्सवाद' का गहरा प्रभाव था। इस कारण इनकी रचनाओं में समाज की वास्तविकता, वर्ग संघर्ष, शोषण के विभिन्न तंत्र, गरीबी, राजनीतिक विडंबना आदि पर करारा व्यंग्य देखने मिलता है। इस युग में 'सर्व हारा वर्ग' का प्रतिनिधित्व करते हुए रचनाकारों ने पूँजीपति जमींदार, मिल मालिक, राजनेता आदि पर करारा व्यंग्य किया है। इस कालखंड में सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', आ. हजारीप्रसाद द्विवेदी, यशपाल, नागार्जुन, रामवृक्ष बेनीपुरी, प्रभाकर माचवे, विद्यानाथ मिश्र आदि रचनाकारों का नाम विशेष उल्लेखनीय है।

शुक्लोत्तर युग में सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' एक प्रगतिवादी चेतना के ब्रिदोही कवि के रूप में उभरते हैं। उन्होंने 'सर्वहारा वर्ग' की दुर्दशा के लिए जिम्मेदार जमींदारी, पूँजीवादी, सामंतवादी प्रवृत्तियों, वर्ग भेद, सामाजिक विद्रुपताएं और पाखंड पर करारा व्यंग्य किया। साथ ही उन्होंने व्यक्तिगत स्तर पर भी समाज की विसंगतियों से आहत होकर अनेक व्यंग्यात्मक कविताएं लिखीं। इसमें 'कुकुरमुत्ता', 'राम की शक्ति पूजा', 'सरोज स्मृति' आदि लंबी कविताएं विशेष प्रसिद्ध रही हैं। 'कुकुरमुत्ता' इस कविता में उन्होंने वर्ग संघर्ष और विषमता पर भाष्य करते हुए पूँजीवादी व्यवस्था पर करारा व्यंग्य किया है। 'राम की शक्तिपूजा' इस कविता में उन्होंने साहित्य क्षेत्र की विसंगतियों पर सांकेतिक भाषा में व्यंग्य किया है। 'दान' कविता में उन्होंने शिक्षक का तिरस्कार करके बंदर को चने खिलानेवाले मनुष्य की प्रवृत्ति पर व्यंग्य कसा है। उनके 'बिल्लेसुर बकरिहा' और 'कुल्लीभाट' आदि व्यंग्यात्मक उपन्यास विशेष प्रसिद्ध रहे।

आ. हजारी प्रसाद द्विवेदी भी इस युग के प्रसिद्ध व्यंग्य निबंधकार माने जाते हैं। उनके 'अशोक के फूल', 'कुटज', 'कल्पकता' आदि कालजयी निबंध संग्रहों में समाज की अनेक विसंगतियों पर कठोर व्यंग्य किया गया है। उन्होंने अपने काल के नकली साहित्यकारों की भी जमकर खबर ली है। प्रकृति का मानवीकरण करके उसके द्वारा व्यंग्य करना आ. हजारी प्रसाद द्विवेदी जी के निबंधों की खासियत थी। उनके 'अपने मेरी रचना पढी' निबंध में सभ्यता के सिद्धांतों, 'नाखून क्यों बढ़ते हैं' निबंध में शस्त्र प्रेम पर कठोर और तीखा व्यंग्य किया है।

शुक्लोत्तर युग में यशपाल एक साम्यवादी विचारधारा से प्रभावित उपन्यासकार के रूप में उल्लेखनीय स्थान रखते हैं। उनकी रचनाओं में वर्गवाद और आर्थिक विसंगतियों पर व्यंग्यात्मक टिप्पणियाँ देखने मिलती हैं। उनके व्यंग्य में तीखापन था और क्रांतिकारी परिवर्तन का उद्देश्य था। उन्होंने व्यंग्य को सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तन का साधन माना। समाज व्याप्त गरीबी, शोषण के तंत्र, असमानता, पाखंड आदि पर उन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से करारा व्यंग्य किया है। राजनीतिक सत्ता, राजनेता और व्यवस्था की विसंगतियों पर उन्होंने बेलाग और निर्भीकता से व्यंग्य किया। उनके 'दादा कामरेड' उपन्यास में राजनीतिक व्यवस्था की विसंगतियों पर तीखा व्यंग्य देखने मिलता है। 'देशद्रोही' उपन्यास में समाज की विसंगतियों पर तो 'झूठा सच' उपन्यास में धार्मिक उन्माद, भारत-पाक विभाजन की राजनीति और सामाजिक विडंबनाओं पर प्रहार किया है। यशपाल ने व्यंग्य के माध्यम से क्रांतिकारी चेतना और जनवाद को मजबूत बनाने में सार्थक योगदान दिया है।

नागार्जुन एक प्रखर व्यंग्य कवि के रूप में सुपरिचित है। उन्होंने अपनी कविताओं के माध्यम से प्रगतिवाद और जनवादी चेतना को मजबूत किया। उनकी व्यंग्य कविताओं में कबीर की वाणी, भारतेन्दु की करुणा और निराला के प्रखर वक्ता का अनूठा मिश्रण है। उन्होंने हिंदी व्यंग्य परंपरा को जनवादी चेतना, राजनीति और सामाजिक यथार्थ से जोड़ने का महत्वपूर्ण कार्य किया। उनकी कविता, कहानी और उपन्यासों में राजनीतिक क्षेत्र की विसंगतियों पर प्रखर व्यंग्य देखने मिलता है। सामाजिक शोषण के विविध तंत्रों का प्रखर विरोध और संघर्ष उनके व्यंग्य की खासियत है। उनकी 'मंत्र', 'आओ रानी हम ढोएंगे पालकी', 'खाली नहीं है', 'तेरी खोपड़ी के अंदर' 'भोजपुर' 'इस गुब्बारे की छाया में', 'हजार हजार बाहों वाली', 'तीनों बंदर बापू के' आदि कविताओं में राजनीतिक और सामाजिक विडंबनाओं पर करारा व्यंग्य किया है। साथ ही उनके 'बलचनमा', 'बरगद का पेड़', 'दुःखमोचन' आदि उपन्यासों में विशेष व्यंग्यात्मक टिप्पणियाँ देखने को मिलती है।

हिंदी व्यंग्य की परंपरा में प्रगतिशील चेतना के व्यंग्यकार के रूप में रामवृक्ष बेनीपुरी का नाम उल्लेखनीय है। उनकी रचनाओं में विद्रोह, काव्यात्मकता और व्यंग्य के अनूठे मिलाप के कारण उन्हें 'कलम का जादूगर' कहा जाता है। उन्होंने आधुनिक समाज में आयी विलासिता वृत्ति, भौतिकवाद, उपभोक्तावादी मानसिकता पर करारा व्यंग्य किया है। उनके 'गेहूँ और गुलाब' निबंधसंग्रह में संकलित निबंधों में समाज की संवेदनहीनता पर करारा व्यंग्य किया है। 'गेहूँ और गुलाब' उनका प्रसिद्ध व्यंग्यात्मक निबंध है जिसमें 'गेहूँ' को भोगवाद का प्रतीक और 'गुलाब' को कला-संस्कृति का प्रतीक बनाकर आधुनिक लोगों की भौतिकवादी वृत्ति और संवेदनहीनता पर व्यंग्यात्मक भाष्य किया है। बेनीपुरी हिंदी साहित्य में रेखाचित्रकार के रूप में भी विशेष प्रसिद्ध थे। उनके 'लाल तारा', 'माटी की मूर्ते' आदि रेखाचित्रों में सामाजिक रूढ़ियों एवं राजनीतिक क्षेत्र की विसंगतियों पर करारा व्यंग्य देखने मिलता है। उन्होंने विशेषकर किसान, मजदूर और आम जनता का पक्ष लेकर इनके शोषण के लिए जिम्मेदार व्यवस्था पर प्रहार किया है। उनके 'जंजीरे और दीवारें' इस संस्मरणात्मक रचना में भी व्यंग्य देखने मिलता है।

प्रभाकर माचवे ने कविता, उपन्यास और निबंध के क्षेत्र में अपने लेखन की विशेष शैली के द्वारा नाम कमाया। उनकी रचनाओं में व्यंग्यात्मकता के साथ विचारशीलता प्रमुख थी। उन्होंने अनेक गहन और गंभीर विषयों को भी सरल और सहज भाषा में पाठकों के सामने रखा। मनोरंजन और चिंतन दोनों उनके व्यंग्यात्मक लेखन की खासियत थी। उनकी 'खरगोश के सींग', 'तेल की पकौड़ियाँ', 'एक कुत्ते की डायरी' आदि निबंध संग्रह व्यंग्य की दृष्टि से विशेष प्रसिद्ध रहे। 'आठ नंबर का जादू' इस निबंध में ढोंगी व्यापारियों की चालबाज वृत्ति पर व्यंग्य किया है। शुक्लोत्तर युग में ललित निबंधकार विद्यानिवास मिश्र भी विशेष उल्लेखनीय रचनाकार है। उन्होंने भारतेन्दुकालीन चिट्ठों की शैली के तर्ज पर 'भ्रमरानंदी चिट्ठियाँ' यह व्यंग्यात्मक रचना लिखी। इसमें उन्होंने पाश्चात्यों के अंधानुकरण की प्रवृत्ति पर व्यंग्य किया है। 'प्रभुत्व ज्वर' इस निबंध में सत्ता के मद में मस्त हुए आधुनिक शासकों पर व्यंग्य कसा है।

संक्षेप में कह सकते हैं कि शुक्लोत्तर युग व्यंग्य की दृष्टि से सक्षम कालखंड था जिसमें प्रगतिवादी विचारधारा के प्रभाव स्वरूप सामाजिक और आर्थिक क्षेत्र की विसंगतियों पर अधिकतर व्यंग्यात्मक

कटाक्ष देखने मिलता है। इस कालखंड में कविता और निबंध इन विधाओं में ज्यादातर व्यंग्य लेखन किया गया है।

3.3.5 हरिशंकर परसाई युग (1960 से 1980 ई.) :

हिंदी व्यंग्य परंपरा में स्वातंत्र्योत्तर कालखंड को अनन्यसाधारण महत्व है क्योंकि इसी कालखंड में व्यंग्य को स्वतंत्र साहित्य विधा के रूप में प्रतिष्ठा मिली। इस कालखंड में हरिशंकर परसाई ने व्यंग्य रचनाओं को गंभीर साहित्यिक विधा का दर्जा देने का क्रांतिकारी कार्य किया। इस कारण उन्हें व्यंग्य साहित्य के 'शिखरपुरुष' या 'व्यंग्य सम्राट' की उपाधि दी गई। व्यंग्य की परंपरा की दृष्टि से यह कालखंड 'हरिशंकर परसाई युग' नाम से भी जाना जाता है। इस कालखंड में परसाई के अतिरिक्त शरद जोशी, रवींद्रनाथ त्यागी, श्रीलाल शुक्ल, नरेंद्र कोहली, शंकर पुणतांबेकर, बरसानेलाल चतुर्वेदी, इंद्रनाथ मदान, केशवचंद्र शर्मा, सुदर्शन मजीठिया, काका हाथरसी, लक्ष्मीकांत वर्मा, अमृतराय जैसे प्रतिभावान व्यंग्यकारों ने इस विधा को शीर्ष तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

स्वातंत्र्योत्तर कालखंड भारत के आम नागरिकों की दृष्टि से मोहभंग का कालखंड माना जाता है। आजादी के बाद मिले 'स्वराज्य' को 'सुराज्य' बनाने का सपना टूट चुका था। देश से अंग्रेज चले गए लेकिन उनके शोषण चक्र को पूँजीवादी, जमींदार, मिल मालिक, राजनेता, भ्रष्ट प्रशासन व्यवस्था ने निरंतर शुरू रखा। समाज में अन्याय, अत्याचार, भ्रष्टाचार, धार्मिक विवाद, भ्रष्ट नेता, अवसरवादिता, भाई-भतीजावाद, पश्चिमी सभ्यता का अंधानुकरण, भौतिकता, विलासिता, हिंसा, बेरोजगारी, महंगाई, गरीबी, कुपोषण, रिश्तखोरी, कालाबाजारी, स्मगलिंग आदि विकृतियों ने भारतीय समाज को अंदर से खोखला बना दिया। स्वातंत्र्योत्तर कालखंड की इस सामाजिक एवं राजनीतिक व्यवस्था की विसंगतियों से व्यंग्य की परंपरा को अधिक मजबूत बनाने में व्यंग्य लेखकों को अनेक विषय मिले। हरिशंकर परसाई जैसे पैनी दृष्टि रखनेवाले कालजयी रचनाकारों ने परंपरा से आए व्यंग्य शैली को स्वतंत्र अस्तित्व में ढालकर उसे और अधिक सुसंगठित और मजबूत बनाया।

हिंदी व्यंग्य विधा के सम्राट हरिशंकर परसाई ने स्कूल मास्टर की नौकरी का त्याग करके सन १९५० के बाद अपना लेखन कार्य शुरू किया। उन्होंने जबलपुर से निकलनेवाली 'वसुधा' पत्रिका में सर्वप्रथम स्तंभलेखक के रूप में लिखना शुरू किया। इसके बाद उन्होंने देश की अनेक नामचीन पत्रिकाओं में स्तंभलेखन किया लेकिन वे बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। उन्होंने कहानी, निबंध, रेखाचित्र, उपन्यास, संस्मरण, स्तंभलेखन आदि विधाओं में लेखन किया जिसमें व्यंग्य शैली शीर्ष पर थी। हरिशंकर परसाई बहुत ही समाजधर्मी व्यक्ति थे। वे सामाजिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों एवं संस्थाओं से निरंतर जुड़े हुए थे। वे केंद्रीय साहित्यिक संस्था साहित्य संघ-जबलपुर के महासचिव, मध्य प्रदेश के 'शांति आंदोलन' में सहभाग, 'अखिल भारतीय विश्व शांति एवं एकता परिषद की राष्ट्रीय समिति के सदस्य, अखिल भारतीय प्रगतिशील लेखक महासंघ के अध्यक्ष, ट्रेड यूनियन और अन्य मजदूर संगठन से इनका करीबी संबंध रहा है। इस कारण समाज के सभी क्षेत्रों का उनका निरीक्षण एवं समझ बेमिसाल थी।

हरिशंकर परसाई ने व्यंग्य को मनोरंजन की परिधि से उठाकर तत्कालीन सामाजिक एवं राजनीतिक प्रश्नों से जोड़ा। उन्होंने अपने निबंधों और व्यंग्य संग्रहों के माध्यम से समाज की विसंगतियों पर तीखा प्रहार किया। उनका पूरा व्यंग्यात्मक लेखन 'परसाई रचनावली' कुल छह खंडों में संकलित है। उनकी प्रमुख व्यंग्य कृतियों में 'हँसते हैं, रोते हैं', 'तब की बात और थी', 'भूत के पाँव', 'बेईमानी की परत', 'जैसे उनके दिन फिरे', 'सुनो भाई साधो', 'पगड़डियों का जमाना', 'विकलांग श्रद्धा का दौर' 'सदाचार का ताबीज' 'ठिठुरता हुआ गणतंत्र', 'तिरछी रेखाएं', 'वैष्णव की फिसलन', 'भोलराम का जीव', 'काग भगोड़ा', 'कहत कबीर' आदि कालजयी रचनाएं मानी जाती है।

हरिशंकर परसाई ने मूल रूप से समाज, राजनीति और मानवी प्रवृत्तियों पर व्यंग्यात्मक प्रहार किया। उनके 'भोलराम का जीव' इस व्यंग्य में भ्रष्ट प्रशासन और नौकरशाही व्यवस्था की दुर्दशा पर व्यंग्य किया है। 'तब की बात और थी' में पुराने जमाने और आज के जमाने के नैतिक मूल्यों की तुलना करते हुए मूल्य झास पर व्यंग्य किया गया है। 'विकलांग श्रद्धा का दौर' में अंधविश्वास और विवेकहीनता से आस्था रखने की प्रवृत्ति पर व्यंग्य किया है। 'भाषा और राजनीति' में भाषा को लेकर राजनीति करने वालों का पर्दाफाश किया है। 'ठिठुरता हुआ गणतंत्र' इस व्यंग्य रचना में भारतीय लोकतांत्रिक व्यवस्था में लोकतंत्र के नाम पर फैली विसंगतियों पर करारा व्यंग्य किया गया है। 'परसाई रचनावली भाग-६' से उनके व्यंग्य का एक उदाहरण- **“मंत्रिमंडल बदल रहे हैं पर आदमी की हालात दिन-प्रतिदिन गिरती जाती है। ‘लाश’ तो वही है, सिर्फ कफन बदले हैं: देश को लगभग लाश मान लिया गया है और आपके बदले हुए मंत्रिमंडल केवल कफन है।”** इस प्रकार हरिशंकर परसाई ने अपने सशक्त व्यंग्य लेखन से हिंदी व्यंग्य विधा को स्वतंत्र साहित्य की विधा के रूप में मान्यता दिलाई।

परसाई युग में दूसरे सबसे ताकतवर व्यंग्यकार शरद जोशी रहे। उन्होंने भी हरिशंकर परसाई के ही बराबर व्यंग्य लेखन करके हिंदी व्यंग्य परंपरा को सुगठित एवं मजबूत बनाया। शरद जोशी सूक्ष्म एवं गंभीर व्यंग्य लेखन के लिए जाने जाते हैं। उन्होंने धर्म, राजनीतिक, सामाजिक क्षेत्र, व्यक्तिगत जीवन में फैली विसंगतियों को अपने व्यंग्य लेखन का विषय बनाया। उनके 'जीप पर सवार इल्लियाँ', 'परिक्रमा', 'किसी बहाने', 'रहा किनारे बैठ', 'तिलस्म', 'दूसरी सतह' 'मेरी श्रेष्ठ रचनाएं', 'हम भ्रष्टन के भ्रष्ट हमारे' आदि उल्लेखनीय व्यंग्य संकलन हैं। उन्होंने विशेषकर राजनीति की विसंगतियों पर जमकर व्यंग्य लेखन किया। 'प्रश्नकाल' इस रचना में संसद के प्रश्नकाल के दौरान जनता के प्रतिनिधि बनकर गए राजनेताओं की औपचारिक और निष्क्रिय वृत्ति पर व्यंग्य किया है। 'जीप पर सवार इल्लियाँ' में राजनीति में पनप रही अवसरवादिता और नेताओं की स्वार्थी प्रवृत्ति पर व्यंग्यात्मक भाष्य किया है। 'रबर की मुहर' नामक इस रचना में बिना सोचे-समझे 'रबर स्टैम्प' की तरह हर बात पर सहमति देने वाले लोगों पर व्यंग्य किया है। 'अंधो का हाथी' में सीमित ज्ञान के आधार पर बताए जाने वाले अर्ध सत्य की प्रवृत्ति पर व्यंग्य है। 'क्या हम भ्रष्ट है' इस रचना में आम आदमी की भ्रष्टाचार को लेकर दोहरी मानसिकता पर व्यंग्य कसा गया है। 'वर्मा जी चुनाव और टू टू' व्यंग्य रचना का एक उदाहरण- **“मैं मुहल्ले का कुत्ता हूँ। समाज का हूँ, इस देश का हूँ। वर्मा जी हँसे। यह बात नेता भी कहता है कि मैं समाज का हूँ, देश का हूँ। मगर**

एक सवाल और है? तुम कब समाज के और देश के हो और कब महज अपने? तुम कब भौंकते और भाषण देते हो, देश के लिए, जनता के लिए, मगर जब तुम खाते हो तो सिर्फ अपने लिए खाते हो।” स्पष्ट है कि शरद जोशी ने हरिशंकर परसाई की तरह ही राजनीति पर कठोर व्यंग्य किया। उन्होंने व्यंग्य को समाजाभिमुख बनाकर समाज एवं मानव की कमजोरियों को सामने लाया। पाठकों को गुदगुदाते हुए उन्होंने समाज की गंभीर स्थितियों से अवगत कराया है।

रवींद्रनाथ त्यागी को हिंदी व्यंग्य परंपरा में परसाई और जोशी की अगली कड़ी माना जाता है। इनमें परसाई जैसी प्रखरता और शरद जोशी जैसी व्यंग्यात्मक शैली का सामंजस्य था। इनकी रचनाएं हास्य, व्यंग्य और ललित निबंध के अनुपम मेल के कारण बेजोड़ बनी है। उनकी व्यंग्य रचनाओं में ‘खुली धूप में नाँव पर’, ‘भित्ति चित्र’, ‘मल्लिनाथ की परंपरा’, ‘कृष्णवाहन की कथा’, ‘बैठे ठाले’, ‘शोक सभा’, ‘देवदार के पेड़’, ‘ऋतु वर्णन’, ‘सुंदर कली’, ‘फूलों वाले कैक्टस’, ‘भद्र पुरुष’, ‘अतिथि-कक्ष’, ‘इस देश के लोग’, ‘पदयात्रा’, ‘पराजित पीढ़ी के नाम’, ‘आत्मलेख’, ‘मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएं’ आदि विशेष उल्लेखनीय हैं।

परसाई युग में श्रीलाल शुक्ल एक प्रतिभावान व्यंग्यकार माने जाते हैं। उन्होंने ‘राग दरबारी’ नामक उपन्यास का लेखन करके हिंदी साहित्य जगत में अक्षय कीर्ति प्राप्त की। उन्होंने अपनी व्यंग्य रचनाओं में भारतीय समाज की समस्याओं पर भाष्य किया। समाज में व्याप्त विद्रुपताओं, कुंठाओं और विषमताओं की विविध आयातों को उन्होंने अपनी रचनाओं में उद्घाटित किया है। उनकी व्यंग्य रचनाओं में ‘अंगद का पाँव’, ‘यहाँ से वहाँ’, ‘मेरी श्रेष्ठ रचनाएं’, ‘उमरावनगर में कुछ दिन’ आदि विशेष उल्लेखनीय हैं। उनके ‘राग दरबारी’ इस व्यंग्यात्मक रचना में शिवपालगंज भारत के गाँवों का प्रतिनिधि बनाकर लोकतंत्र के खोखलेपन, शिक्षा संस्था के भ्रष्टाचार, नेताओं की स्वार्थी वृत्ति, सामाजिक मूल्यों का पतन आदि पर व्यंग्यात्मक भाष्य किया है। ‘मकान’ इस व्यंग्य रचना में शहरों में मकान पाने की जद्दोजहद और सरकारी तंत्र की अव्यवस्था पर व्यंग्य है। श्रीलाल शुक्ल ने नेताओं की प्रवृत्ति पर किए व्यंग्य का एक उदाहरण- “नेताओं का काम आज क्या है, तो बोलते रहना। बहुत बोलने से लोग उसे विचारशील मानने लगते हैं।” तो साहित्यकारों के प्रति अनास्था पर व्यंग्य करते हुए वे लिखते हैं- “हमारे देश में साहित्यकार फर्शी-कालीन की तरह या तो गैर जरूरी शोभा की सामग्री है या शौकिया रौंदने की चीज, यहाँ तो उसके बारे में कुछ जानना किसी कामकाजी नागरिक के लिए और भी अनावश्यक है।” स्पष्ट है कि श्रीलाल शुक्ल बिना किसी आडंबर के सामाजिक विसंगतियों को उजागर करते हैं।

नरेंद्र कोहली भी इस काल के चर्चित व्यंग्यकार और आलोचक माने जाते हैं। उन्होंने निबंध और कहानियों के माध्यम से समाज की विसंगतियों पर व्यंग्यात्मक प्रहार किया। उनकी ‘एक और लाल तिकोन’, ‘पाँच एक्सर्ड उपन्यास’, ‘जागने का अपराध’, ‘मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचना’, ‘आधुनिक लड़की की पीड़ा’, ‘त्रासदियाँ’, ‘परेशानियाँ’ आदि रचनाएं विशेष प्रसिद्ध रही। ‘पाँच एक्सर्ड उपन्यास’ में समाज के मध्यम वर्ग के लोगों के जीवन की कुंठाओं और उनके आचरण की विसंगतियों पर व्यंग्य किया है।

शंकर पुणतांबेकर ने रोजमर्रा के जीवन की घटनाओं होने वाली धांधलियों को अपने व्यंग्य लेखन का विषय बनाया है। उन्होंने हास्य और व्यंग्य का प्रभावी इस्तेमाल करते हुए उपन्यास, लघु व्यंग्य, व्यंग्य छटा, आलोचना आदि विधाओं में व्यंग्य लेखन किया। 'रेडिमेड कपड़े', 'कैक्टस के काँटे', 'प्रेम विवाह', 'विजिट यमराज की', 'अंगूर खट्टे' 'बदनामचा' आदि विशेष व्यंग्य रचनाएं हैं। 'विजिट यमराज' इस रचना में वैद्यकीय क्षेत्र की विसंगतियाँ और भ्रष्टाचार की पोल खोली है।

डॉ. बरसाने लाल चतुर्वेदी का इस युग के व्यंग्य साहित्य में विशेष स्थान रहा है। उन्होंने सामाजिक, राजनीतिक, शैक्षिक क्षेत्र में फैली अराजकता और विसंगतियों पर व्यंग्य किया है। उनकी व्यंग्य रचनाओं में हास्य के साथ गंभीर विचारों की प्रधानता दिखाई देती है। उनकी प्रमुख व्यंग्य रचनाओं में 'भोला पंडित की बैठक, बुरे फँसे नेता और अभिनेता', 'महामति चाणक्य राजदूत बने', 'मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएं', 'पूँछ पुराण', 'टालू मिक्स्चर', 'कुल्हण से हुल्लण', 'मुसीबत है', 'चमचागिरी', 'नेताओं की नुमाइश', 'हँसी के इंजेक्शन', 'मंत्री जी के निजी सचिव की डायरी' आदि उल्लेखनीय है।

इंद्रनाथ मदान अध्यापक के रूप में कार्यरत थे, इस कारण शिक्षा क्षेत्र की विसंगतियों के बारे में उन्होंने व्यंग्यात्मक रचनाएं लिखी है। साथ ही सामाजिक अव्यवस्था, प्रशासन का भ्रष्टाचार, अंधविश्वास को लेकर भी उन्होंने भरसक व्यंग्य किया है। उनकी व्यंग्य रचनाओं में 'कुछ उथले कुछ गहरे', 'रानी और कानी', 'बहानेबाजी', 'भानुमती का पिटारा' आदि विशेष उल्लेखनीय है। स्वानुभूति के आधार पर व्यंग्य लेखन करने के कारण यथार्थता उनके व्यंग्य लेखन का विशेष गुण था।

केशवचंद्र वर्मा की व्यंग्य रचनाओं में पुरानी और नई संस्कृति की टकराहट को लेकर व्यंग्यात्मक लेखन देखने मिलता है। उन्होंने सामाजिक समस्याओं के साथ राजनीतिक और धार्मिक विसंगतियों पर भी लेखन किया है। उनकी रचनाओं में 'लोमड़ी का माँस', 'मूर्ग छाप हीरो', 'प्यासा और बेपानी के लोग', 'आधुनिक हास्य व्यंग्य', 'अफलातूनों का शहर', 'बृहन्नला का वक्तव्य', 'हड़ताली बाबू', 'विदेशी व्यंग्य रचना का अनुवाद', 'गधे की बात' आदि विशेष प्रसिद्ध है।

डॉ. सुदर्शन मजीठिया भी इस कालखंड के एक प्रमुख व्यंग्य रचनाकार माने जाते हैं। इनकी रचनाओं में संस्कृति, शिक्षा, समाज और राजनीति के क्षेत्र की विसंगतियों को प्रमुखता से विषय बनाया गया है। उनकी व्यंग्य रचनाओं में 'इंडीकेट बनाम सिंडीकेट', 'टेलीफोन की घंटी से', 'मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएं', 'डिस्को कल्चर' आदि प्रसिद्ध है। काका हाथरसी इस कालखंड के एक प्रमुख हास्य-व्यंग्य कवि माने जाते हैं। सरल और चुटील भाषा में उन्होंने सामाजिक विसंगतियों पर अपनी कविताओं के माध्यम से व्यंग्य कसा है। उनकी 'काका के कारनामे', 'हाथरसी हास्य', 'नेताजी', 'डॉक्टर और मरीज', 'शिक्षा व्यवस्था' आदि व्यंग्य रचनाएं विशेष प्रसिद्ध रही। लक्ष्मीकांत वर्मा भी इस काल के सुप्रसिद्ध निबंधकार, आलोचक और उपन्यासकार रहे हैं। उनके 'खाली कुर्सी की आत्मा', 'सफेद चेहरे', 'तीसरा प्रसंग' आदि उल्लेखनीय व्यंग्य रचना है। उन्होंने समाज, संस्कृति, शिक्षा, राजनीति आदि क्षेत्रों की विसंगतियों पर व्यंग्यात्मक निबंध लिखे हैं।

संक्षेप में कह सकते हैं कि हरिशंकर परसाई युग हिंदी व्यंग्य परंपरा में सबसे महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इस कालखंड में हिंदी व्यंग्य को स्वतंत्र साहित्य विधा के रूप में मान्यता मिली। हरिशंकर परसाई और शरद जोशी जैसे प्रतिभावान व्यंग्यकारों ने व्यंग्य साहित्य को शीर्ष तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वे अपने युग और भविष्य के व्यंग्यकारों के लिए व्यंग्य की पाठशाला बने।

3.3 समकालीन युग (1980 ई. से वर्तमान समय तक) :

हिंदी व्यंग्य के शिखर पुरुष हरिशंकर परसाई के बाद की व्यंग्य साहित्य की परंपरा को समकालीन युग कहा जाता है, जो सन 1980 से लेकर वर्तमान समय तक मानी जाती है। इस कालखंड में लतीफ घोंघी, अजात शत्रु, बालेंदु शेखर तिवारी, के. पी. सक्सेना, शेरजंग गर्ग, ज्ञान चतुर्वेदी, प्रेम जनमेजय, हरीश नवल, सुधीर दार, अशोक चक्रधर, श्रीराम ठाकुर, सुबोधकुमार श्रीवास्तव, सूर्यबाला, श्रीबाला पांडेय, यशवंत कोठारी, डॉ. संसार चंद, डॉ. आत्मनंद मिश्र, गोपाल चतुर्वेदी, डॉ. अर्चना चतुर्वेदी आदि महत्वपूर्ण व्यंग्यकारों ने व्यंग्य साहित्य की परंपरा को विकसित किया।

समकालीन व्यंग्य लेखकों में लतीफ घोंघी का नाम विशेष उल्लेखनीय है। उनके व्यंग्य रचनाओं में मधुरता और तीव्रता दोनों का संतुलन देखने मिलता है। उनकी प्रमुख व्यंग्य रचनाएं इस प्रकार हैं- ‘कुत्ते से साक्षात्कार’, ‘जूते का दर्द’, ‘खबरदार व्यंग्य’, ‘बुद्धिजीवी की चप्पलें’, ‘सड़े हुए दाँत’, ‘ज्ञान की दुकान’, ‘बुद्धिमानों से बचिये’, ‘मेरा मुख्य अतिथि हो जाना’, ‘जुगलबंदी’ आदि। इन्होंने समाज के विभिन्न क्षेत्रों के नकारात्मक व्यवस्था पर व्यंग्य किया है। संवादों के माध्यम से व्यंग्य कसना इनकी व्यंग्य रचनाओं की विशेषता है।

डॉ. बालेंदु तिवारी भी इस काल के मशहूर व्यंग्यकार और आलोचक रहे हैं। व्यंग्य विधा पर उन्होंने विशेष अनुसंधान कार्य किया है। उनकी सर्वश्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएं हैं- ‘रिसर्च गाथा’, ‘बिना यात्री की यात्रा’, ‘किरायेदार का साक्षात्कार’, ‘बानगी’, ‘व्यंग्य ही व्यंग्य’, ‘क्रिकेट कीर्तन’, ‘मेरी प्रिय व्यंग्य रचनाएं’, ‘हिंदी का स्वातंत्र्योत्तर हास्य और व्यंग्य’ आदि। उनकी व्यंग्य रचनाओं पर समकालीन सामाजिक समस्याओं का प्रभाव देखने को मिलता है।

ज्ञान चतुर्वेदी समकालीन व्यंग्यकारों में बिंदास लेखन के लिए पहचाने जाते हैं। उनकी व्यंग्य रचनाओं में हास्य बहुत ही कम है लेकिन गंभीर विषयों पर व्यंग्य अधिक है। उनके ‘नरकयात्रा’, ‘बारामासी’, ‘मरीचिका’ इन तीन व्यंग्य उपन्यासों में सामाजिक एवं राजनीतिक विसंगतियों पर करारा व्यंग्य किया है। उनकी ‘जो घर फूँके’, ‘अलग’, ‘भूगोल को समझना’, ‘मैं और बकरी’, ‘मूर्खता में ही होशियारी है’, ‘रामबाबू जी का बसंत’, ‘हिंदी में मनहूस रहने की परंपरा’ आदि व्यंग्य रचनाएं प्रमुख हैं।

व्यंग्यकार के. पी. सक्सेना का व्यंग्य साहित्य के विकास में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। उनकी ‘कोई पत्थर से’, ‘रहिमन की रेलयात्रा’, ‘नया गिरगिट’, ‘मूँछ-मूँछ की बात’, ‘लखनवी ढंग से’, ‘रमझा तोर दुलहन लूटे

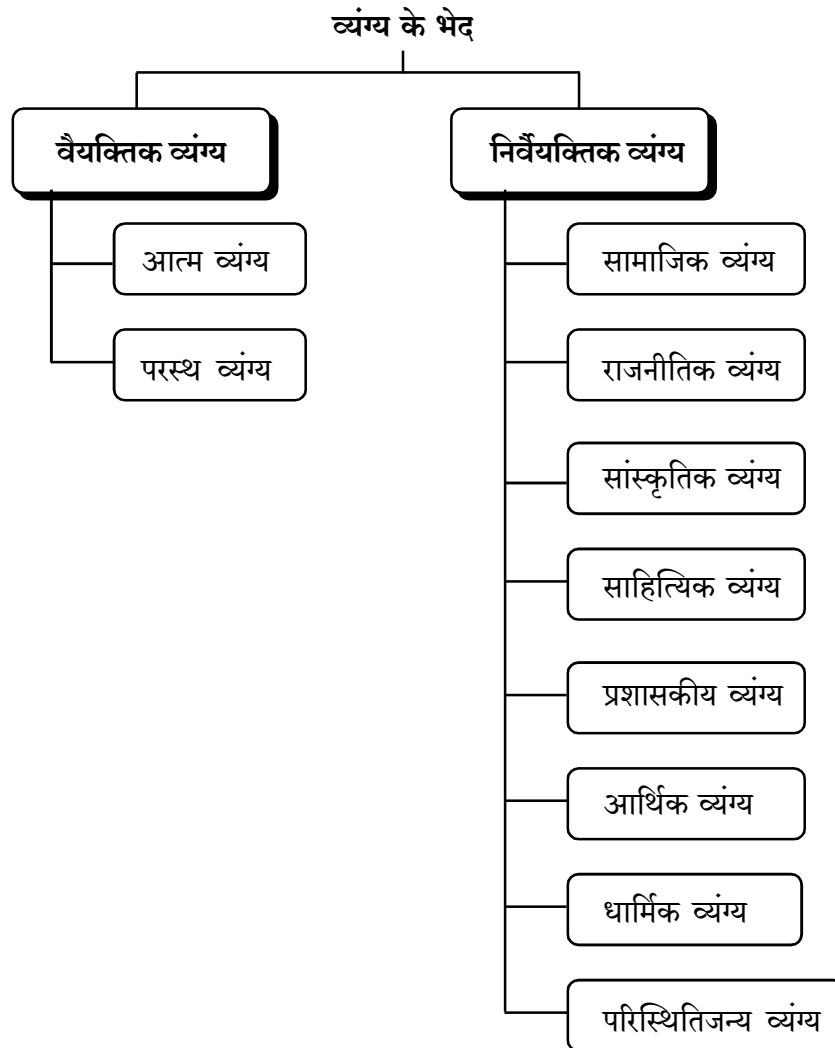
बाजार', 'बाजूबंद खुल-खुल जाए', 'तलाश फिर एक कोलंबस की', 'खुदा खुद परेशान है' आदि लोकप्रिय रचनाओं में सरकारी प्रशासन, देश के खराब हालात, क्रिकेट, साहित्य, सिनेमा आदि विषयों पर गंभीर व्यंग्य किया गया है।

डॉ. संसार चंद्र की 'सटक सीताराम', 'सोने का दाँत', 'अपनी डाली के काँटे', 'बातें ये झूठी', 'गंगा जब उल्टी बहे' आदि व्यंग्यात्मक निबंधों में समाज में दोगले चरित्र के लोग, पशु-पंछी, शराबी आदि विषयों पर व्यंग्य किया है।

अज्ञात शत्रु हास्य व्यंग्य कविताओं के लिए विख्यात है। 'मगर हमें तो सच गाना है', 'नेता गिरा रे', 'जै जै कार करो', 'कविता जिंदाबाद' आदि व्यंग्य कविताएं प्रसिद्ध हैं। व्यंग्य की गंभीरता, राष्ट्रप्रेम, सामाजिक और पारिवारिक मुद्दे इनके व्यंग्य के विषय रहे हैं। डॉ. शेरजंग गर्ग की 'बाजार से गुजरा हूँ', 'दौरा अंतर्दामी का', 'क्या हो गया कबीरों को' और 'रिश्त-विषवत' आदि व्यंग्य रचनाएं प्रमुख हैं। प्रेम जनमेजय भी समकालीन युग के विख्यात व्यंग्यकार हैं। उनके 'बेशर्ममेव जयते', 'पुलिस, पुलिस', 'मैं नहीं माखन खायो', 'आत्मा महाठगिनी', 'मेरी इक्यावन व्यंग्य रचनाएं', 'शर्म मुझको मगर क्यों आती' आदि प्रसिद्ध व्यंग्य संकलन हैं। उन्होंने परंपरागत विषयों से ज्यादा समकालीन विषयों पर व्यंग्य किया है। इसके साथ ही हरीश नवल, सुधीर दार, अशोक चक्रधर, श्रीराम ठाकुर, सुबोधकुमार श्रीवास्तव, सूर्यबाला, श्रीबाला पांडेय, यशवंत कोठारी, डॉ. संसार चंद, डॉ. आत्मनंद मिश्र, गोपाल चतुर्वेदी, डॉ. अर्चना चतुर्वेदी आदि व्यंग्यकारों के रूप में हिंदी व्यंग्य साहित्य की परंपरा अखंडित शुरू है।

3.4 व्यंग्य के भेद :

'व्यंग्य' मूलतः साहित्य के सृजन के उद्देश्य से जुड़ा रहा है। मनुष्य ने साहित्य का लेखन किसी-न-किसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए किया था। साहित्य निर्माण की भूमिका, उद्देश्य, विषय के आधार पर ही व्यंग्य के प्रकार निर्धारित होते हैं। मानवी समाज से जुड़े हर क्षेत्र की विसंगतियाँ व्यंग्य निर्माण का आधार होती हैं और इन विसंगतियों के स्तर और क्षेत्र के अनुसार ही व्यंग्य के भेद निर्माण होते हैं। व्यंग्य रचनाकारी की विचार शक्ति, लिखने का ढंग, विसंगति की गहराई, व्यापकता के आधार पर व्यंग्य के भेद निर्धारित किए जाते हैं। ऊपरी तौर पर देखने पर हमें व्यंग्य याने किसी क्षेत्र की विसंगतियाँ इतना ही समझ आता है। लेकिन उस क्षेत्र की विसंगति के अनुसार व्यंग्य की विषय-वस्तु भी बदल जाती है। इसलिए प्रायः विषय-वस्तु के आधार पर व्यंग्य के भेद देखने मिलते हैं। विख्यात व्यंग्यकार शेरजंग गर्ग व्यंग्य लेखन की प्रेरणा के आधार पर व्यंग्य के वैयक्तिक व्यंग्य और निवैयक्तिक व्यंग्य ऐसे दो भेद माने हैं। वैयक्तिक व्यंग्य के फिर दो उपभेद किए हैं- आत्म व्यंग्य और परस्थ व्यंग्य। तो निवैयक्तिक व्यंग्य के आठ उपभेद माने हैं- सामाजिक व्यंग्य, राजनीतिक व्यंग्य, सांस्कृतिक व्यंग्य, साहित्यिक व्यंग्य, प्रशासकीय व्यंग्य, आर्थिक व्यंग्य, धार्मिक व्यंग्य और परिस्थिति के नुसार (नियति) निर्माण होने वाला व्यंग्य।



व्यंग्य के उपरोक्त भेदों का संक्षिप्त विवेचन निम्नलिखित रूप में प्रस्तुत है-

3.4.1 वैयक्तिक व्यंग्य :

किसी व्यक्ति के व्यक्तिगत चरित्र, उसकी कमजोरियों, उसकी गलत आदतों और दोषों पर किए जाने वाले व्यंग्य को वैयक्तिक व्यंग्य कहा जाता है। वैयक्तिक व्यंग्य हमेशा किसी व्यक्ति विशेष पर केंद्रित होता है। हास्य के माध्यम से उसकी कमजोरियों और उसके दोषपूर्ण व्यवहार को सामने लाकर उसमें सुधार करने की दृष्टि से वैयक्तिक व्यंग्य किया जाता है। जैसे - रमेश तो सूर्यवंशी है। यहाँ पर रमेश के आलसी प्रवृत्ति और सुबह देरी से उठने की बुरी आदत पर व्यंग्य किया है। इसके दो उपभेद किए हैं-

अ) **आत्म व्यंग्य** : लेखक जब स्वयं की कमियों, कमजोरियों या आदतों को हास्य और आलोचना

से प्रस्तुत करता है तो उसे आत्म व्यंग्य कहा जाता है। जैसे- ‘मैं इतना आलसी हूँ कि काम करने से पहले ही थक जाता हूँ।’ यहाँ पर लेखक ने खुद की आदत पर हास्यव्यंग्य किया है।

ब) परस्थ व्यंग्य : लेखक जब किसी दूसरे लेखक, वक्ता या व्यक्ति विशेष की कमियों, दोषों या विसंगतियों पर हास्य एवं आलोचना के माध्यम से व्यंग्य करता है, तो उसे परस्थ व्यंग्य कहा जाता है। जैसे- हमारे नेता जी चुनाव के बाद तो ईद का चाँद हो जाते हैं। यहाँ पर लेखक ने नेता के कथनी एवं करणी की विसंगतियों पर व्यंग्य किया है।

संक्षेप में कह सकते हैं कि आत्मव्यंग्य स्वयं पर केंद्रित होता है जिसका उद्देश्य आत्मचिंतन होता है जबकि परस्थ व्यंग्य दूसरे व्यक्ति पर केंद्रित होता है जिसका उद्देश्य आलोचना होता है। आत्मव्यंग्य का प्रभाव जहाँ विनम्र होता है वहीं परस्थ व्यंग्य का प्रभाव तीव्र और कटाक्षपूर्ण होता है।

3.4.2 निर्वैयक्तिक व्यंग्य :

किसी समाज व्यवस्था, उसकी विसंगतियाँ, प्रवृत्तियों या अस्वाभाविक स्थितियों को केंद्र बनाकर किया जानेवाले व्यंग्य को निर्वैयक्तिक व्यंग्य कहा जाता है। इसमें किसी व्यक्ति विशेष को केंद्र न बनाकर समाज विशेष को केंद्र बनाया जाता है। निर्वैयक्तिक व्यंग्य का लक्ष्य एवं प्रभाव व्यापक होता है। वह समाज के विभिन्न क्षेत्रों, विचारधाराओं, प्रवृत्तियों, समस्याओं, व्यवस्था की कटु आलोचना करता है। जैसे- “सरकारी कार्यालयों में फाईलें इतनी धीमी गति से चल रही हैं कि उन्हें कछुए से कछुआ अवार्ड मिलना चाहिए।” इस उदाहरण में प्रशासकीय दफ्तरों में सरकारी कामकाज की धीमी रफ्तार पर व्यंग्य कसा गया है। विषय-वस्तु के आधार पर निर्वैयक्तिक व्यंग्य के आठ उपभेद निम्नलिखित रूप में प्रस्तुत है -

अ) सामाजिक व्यंग्य -

सामाजिक क्षेत्र की विसंगतियों, विकृतियों, बुराइयों और आड़बड़ों पर किया जानेवाला व्यंग्य सामाजिक व्यंग्य कहलाता है। समाज की अव्यवस्था को सामने लाकर उसमें सुधार करना, इसका प्रमुख उद्देश्य होता है। इसमें समाज केंद्रित विषय प्रमुख रूप से होते हैं। भ्रष्टाचार, जातिभेद, पुरुषप्रधान व्यवस्था, नारी अत्याचार, देहज, गरीबी, बेरोजगारी, प्रेम, युवक आदि सामाजिक विषयों को लेकर किया जानेवाला व्यंग्य सामाजिक व्यंग्य की श्रेणी में आता है। जैसे- “हमारे देश का आदमी नियम मान ही नहीं सकता। वह मुक्त आत्मा है। वह सड़क के बीच चलकर प्राण दे देगा, पर बायें नहीं चलेगा”। हरिशंकर परसाई के इस व्यंग्य में यातायात के नियमों का उल्लंघन करने वाले भारतीय लोगों की मानसिकता पर व्यंग्य किया है।

आ) राजनीतिक व्यंग्य -

राजनीतिक क्षेत्र की विसंगतियों पर किए जाने वाले व्यंग्य को राजनीतिक व्यंग्य कहा जाता है। इसमें राजनीति में आने वाली सत्ता की तिकड़मबाजी, षड्यंत्र, मंत्री, नेता, संसद, लोकसभा, विधानसभा, नेताओं की अवसरवादिता, भाई-भतीजावाद, गुटबाजी, भ्रष्टाचार, चुनाव, राज्य एवं केंद्र सरकार की विभिन्न समितियाँ,

सरकार की विदेश नीतियाँ आदि की विसंगतियों पर व्यंग्य किया है। व्यंग्य विधा में राजनीतिक व्यंग्य बहुत ही चर्चित और लोकप्रिय माना जाता है। इसमें राजनीति की हर प्रक्रिया एवं व्यवस्था पर व्यंग्यकार का कटाक्ष देखने को मिलता है। जैसे- “राजनीति के चरित्र में एक ही खूबी है कि उसका कोई चरित्र नहीं होता।” शरद जोशी के इस व्यंग्य में भारतीय राजनीति के चरित्रहीनता पर व्यंग्य किया है।

इ) सांस्कृतिक व्यंग्य-

देश की संस्कृति एवं उससे जुड़े तत्वों पर किया जानेवाला व्यंग्य सांस्कृतिक व्यंग्य कहलाता है। व्यंग्यकार सांस्कृतिक व्यंग में देश की प्राचीन संस्कृति, आधुनिक संस्कृति, उत्तर आधुनिक संस्कृति, वेशभूषा, कला, रीति-रिवाज, खान-पान, शिक्षा, अध्यापक, छात्र, महाविद्यालयों की आधुनिक अध्यापन पद्धति, गुरु-शिष्य परंपरा आदि को लेकर पाई जानेवाली विसंगतियों पर व्यंग्यकार भाष्य करता है। संस्कृति के नाम पर किए जाने वाले आडंबरों से पर्दापाश करना इसका प्रमुख उद्देश्य है। जैसे- “ये बैंगन घर के हैं और घर की चीज का गर्व विशेष होता है। अगर वह चीज घर में ही बनाई भी गई हो, तो निर्माण का गर्व उसमें और जुड़ जाता है।” हरिशंकर परसाई ने यहाँ पर अपने घर से निर्माण हुई चीज को लेकर लोगों के घमंड और गर्व पर व्यंग्य कसा है, जो खान-पान से जुड़ा है।

ई) साहित्यिक व्यंग्य-

साहित्य के क्षेत्र की मूल्यहीनता, अराजकता और विसंगतियों पर किया जानेवाले व्यंग्य को साहित्यिक व्यंग्य कहा जाता है। इसमें व्यंग्यकार अपने ही बिरादरी के उथले लेखक, उनके मोह, अहंकार, बिकाऊपन, नकलची साहित्यिक, पक्षपात करने वाले पत्रकार, बुद्धिजीवी, चापलुस कवि, साहित्य सम्मेलनों में गुटबाजी आदि पर व्यंग्यात्मक कटाक्ष करता है। साहित्य और साहित्यकारों से जुड़ी हर सूक्ष्म से सूक्ष्म बातों पर इसमें व्यंग्य किया जाता है। जैसे “आत्मविश्वास कई प्रकार का होता है, धन का, बल का, ज्ञान का। लेकिन मूर्खता का आत्मविश्वास सर्वोपरि होता है।” हरिशंकर परसाई के इस व्यंग्य में साहित्य क्षेत्र में मूर्ख होने के बावजूद भी साहित्य सम्मेलनों में आगे-आगे रहनेवाले मूर्ख लेखकों पर व्यंग्य कसा है।

उ) प्रशासकीय व्यंग्य-

राज्य और केंद्र सरकार के सरकारी कार्यालयों की अव्यवस्था और विसंगतियों को लेकर किया जानेवाला व्यंग्य प्रशासकीय व्यंग्य की श्रेणी में आता है। इसमें प्रशासन की धीमी कार्यपद्धति, प्रशासकीय अधिकारों का रौब, धमकियाँ, भ्रष्टाचार, दबाव तंत्र, अवसरवादिता, चापलुसी, लालच, स्वार्थ, अकखड़, रिश्तखोरी आदि को लेकर व्यंग्यकार व्यंग्यात्मक प्रहार करता है। व्यंग्य साहित्य में प्रशासकीय व्यंग्य भी बहुत चर्चित रहा है। विशेषकर पुलिस, वकील, अदालत, जिला और तहसी के सरकारी कार्यालयों के कर्मचारी और अधिकारियों पर व्यंग्यकारों ने बहुत व्यंग्य लेखन किया है। जैसे- “एक बार कचहरी चढ़ जाने के बाद सबसे बड़ा काम है, अपने ही वकील से अपनी रक्षा करना।” और “रोटी खाने से ही कोई मोटा नहीं होता, चंदा या घूस खाने से भी होता है। बेईमानी के पैसे में ही पौष्टिक तत्व बचे हैं।” हरिशंकर परसाई के इस पहले व्यंग्य में वकील द्वारा

तारीख पे तारीख लेकर अपने ग्राहक से रुपए एंटने की प्रवृत्तियों पर तो दूसरे में प्रशासकीय कार्यालयों में रिश्त खानेवालों की रिश्तखोरी पर व्यंग्य कसा है।

ऊ) आर्थिक व्यंग्य-

आर्थिक क्षेत्र से जुड़ी विसंगतियों पर आर्थिक व्यंग्य किया जाता है। इसमें प्रमुख रूप से देश की अर्थव्यवस्था और उसकी नीतियों को केंद्र में रखा जाता है। अस्थिर अर्थव्यवस्था, रूपयों का अवमूल्यन, आर्थिक विकास के खोखले आँकड़े, कालाबाजारी, जनसंख्या वृद्धि, रोटी-कपड़ा-मकान की समस्या, बेरोजगारी, रूपयों का मोह, यातायात, सरकारी अस्पताल की अव्यवस्था आदि आर्थिक क्षेत्र से जुड़े विषयों पर व्यंग्यात्मक कटाक्ष किया जाता है। जैसे- “अपनी नौकरी लगते ही देश की बेकारी की समस्या आधी समाप्त हो जाती है। शेष बचती है आधी, छोटे भाई की नौकरी लगते ही वह भी खत्म।” हरिशंकर परसाई के इस व्यंग्य में भारत की बेरोजगारी और उसे लेकर भारतीय लोगों की मानसिकता पर व्यंग्य कसा गया है।

ए) धार्मिक व्यंग्य-

धर्म और उनके संप्रदायों की विसंगतियों पर किया जानेवाला व्यंग्य धार्मिक व्यंग्य कहलाता है। इसमें धर्म के बाह्याडंबर, पाखंड, विकृतियाँ, अंधविश्वास, मंदिर-मस्जिद, पंडित-मौलवी के आडंबर, सांप्रदायिकता, जाति-वर्ण भेद, पूजा, उपासना पद्धति, धर्म का बाजार, ब्राह्मण, वर्णाश्रम व्यवस्था, धार्मिक ट्रस्ट, दर्शन-आवास को लेकर आर्थिक लूट, वहीआयपी दर्शन, धार्मिक चंदा आदि पर व्यंग्य किया जाता है। जैसे- “माला फेरत जुग भया, फिरा न मन का फेर, / कर का मनका डार दे, मन का मनका फेर।” संत कबीर के इस व्यंग्यात्मक दोहे में मनुष्य के धार्मिक आडंबर पर व्यंग्य कसा है। मनुष्य हाथों से माला फेरकर धार्मिक होने का दिखावा करता है लेकिन अंदर से उसके मन का कोई परिवर्तन नहीं होता।

ऐ) परिस्थितिजन्य व्यंग्य -

किसी विशेष स्थितियों, घटनाओं और नियति के द्वारा निर्माण होने वाले व्यंग्य को परिस्थितिजन्य व्यंग्य कहा जाता है। यह व्यंग्य किसी विशेष घटना या स्थिति के कारण निर्माण होता है। नियति, नसीब, मन के विपरीत होने वाली घटना आदि इसके केंद्र में होती है। व्यंग्यकार इस व्यंग्य का नियोजन नहीं करता बल्कि वह स्थितियों के अनुरूप होता है। व्यंग्यकार किसी विशेष स्थितियों द्वारा अप्रत्यक्ष व्यंग्यात्मक टिप्पणी द्वारा संदेश देता है। जैसे-हरिशंकर परसाई के ‘भोलाराम का जीव’ इस रचना में “एक साधारण आदमी (भोलाराम) मर जाता है, लेकिन सरकारी फाइलों में वह ‘जिंदा’ दिखाया जाता है।” यहाँ पर परसाई ने एक मृत व्यक्ति सरकारी कागजातों में जीवित होने के लिए जिम्मेदार प्रशासन की लापरवाही और भ्रष्टाचारी वृत्ति पर व्यंग्य किया है।

संक्षेप में कह सकते हैं कि व्यंग्य के स्वरूप, विषय-वस्तु और प्रस्तुति करने के ढंग के अनुसार व्यंग्य के प्रकारों का विभाजन होता है। अपने क्षेत्र की विषय-वस्तु और विसंगतियों पर उसका प्रकार बनता है जिसका उद्देश्य उस क्षेत्र की खामियों को उजागर करना और सुधार के लिए प्रेरित करना है।

3.5 व्यंग्य लेखन का उद्देश्य :

साहित्य लेखन किसी-न-किसी उद्देश्य से किया जाता है। प्रारंभ में 'कला के लिए कला' इस उद्देश्य से साहित्य का निर्माण हुआ। अर्थात् साहित्य सृजन का उद्देश्य विशेष वर्ग का मनोरंजन करने के लिए होता था। कालांतर में सामाजिक क्रांतियों और जनप्रबोधन के कारण 'कला जीवन के लिए' यह साहित्य का उद्देश्य बना। इसी कारण 'सहितस्य भावः साहित्यम्' अर्थात् सभी के हित की बात करनेवाला साहित्य होता है, यह परिभाषा रूढ़ हुई। यहाँ से साहित्य समस्त मानव कल्याण और लोकमंगलकारी भावनाओं के लिए समर्पित होकर कार्य करने लगा। व्यंग्य भी साहित्य का ही अभिन्न अंग होने के कारण यह विधा भी सोद्देश्य है। मानवी जीवन से जुड़े विसंगतियों को देखने के बाद व्यंग्यकार की पैनी नज़र व्यंग्य को तलाशती है और अभिव्यक्ति की अद्भूत कला से वह रचना के रूप में साकार होती है। व्यंग्य क्यों लिखे जाते हैं? इस प्रश्न के उत्तर के रूप में हमें उसके उद्देश्य प्राप्त होते हैं। उनका विवेचन निम्नलिखित रूप में प्रस्तुत है -

1. सामाजिक सुधार करना :

व्यंग्य लेखन मूलतः समाज की विभिन्न समस्याओं और विसंगतियों पर भाष्य करता है। जिसका प्रधान उद्देश्य हास्य के माध्यम से पाठकों को हँसाने या मनोरंजन करने तक सीमित नहीं बल्कि समाज में सुधार करना है। व्यंग्यकार समाज की किसी विसंगति, पाखंड या बुराई की जब आलोचना करता है तब पाठक उस समस्या पर विचार करने लगता है। अर्थात् पाठकों का समस्या पर सोचना ही सामाजिक सुधार की पहली सीढ़ी होती है। इस कारण व्यंग्यकार जब भी सामाजिक बुराइयों पर व्यंग्य कसता है तब वह समाज को सुधार की दिशा दिखाता है। उस सामाजिक समस्या को दूर करने के लिए व्यक्तिगत और सामाजिक रूप में सुधार करने का प्रयास किया जाता है।

2. समाज में व्याप्त विभिन्न क्षेत्रों की विसंगतियों पर प्रहार करना:

मनुष्य समाज में रहता है और समाज की विभिन्न विसंगतियों का प्रभाव भी उसके जीवन पर होता है। सजग व्यंग्यकार समाज के विभिन्न क्षेत्रों में व्याप्त विसंगतियों और बुराइयों से अपनी पैनी नज़र से तलाशता है। मनुष्य को सामाजिक बुराइयों और पाखंड के कारण किन-किन समस्याओं का सामना करना पड़ता है, इसका कट्टा-चिट्ठा व्यंग्यकार व्यंग्य लेखन से खोलता है। समाज में फैला अनाचार, कुरीतियाँ, धार्मिक आडंबर, पाखंड, भ्रष्टाचार, रिश्तखोरी, बेरोजगारी, महँगाई, अस्वच्छता, गरीबी, पर्यावरण का प्रदूषण आदि से जुड़ी विसंगतियों से एक सजग व्यंग्यकार पर्दाफाश करता है, जिससे समाज में जागरूकता आ जाए। हरिशंकर परसाई धार्मिक विसंगति पर व्यंग्य कसते हुए लिखते हैं- "चाहे कोई दार्शनिक बने, साधु बने या मौलाना बने, अगर वो लोगों को अंधेरे का डर दिखाता है, तो जरूर वो अपनी कंपनी का टॉर्च बेचना चाहता है।" इसमें परसाई ने धार्मिक क्षेत्र में अपने-अपने मतों का प्रचार करने के लिए आडंबर करके डर फैलानेवाले धर्म के ठेकेदारों पर व्यंग्य किया है।

3. समाज सुधार की चेतना जागृत करना :

व्यंग्य लेखन का प्रधान उद्देश्य समाज सुधार की चेतना जागृत करना है। समाज में फैली विभिन्न समस्या और विसंगतियों का अगर लोगों को ज्ञान ही न हो तो समाज का सुधार कभी नहीं हो सकता। व्यंग्य लेखक समाज की किसी बुराई या विसंगत के पीछे छिपे संबंधितों के स्वार्थ से पर्दापाश करते हैं। अर्थात् व्यंग्य लेखक समाज में फिल्टर की तरह काम करते हैं और समाज में सुधार की चेतना जागृत करने का प्रयास करते हैं। जैसे अगर नदियों के प्रदूषण की समस्या के लिए जिम्मेदार विसंगतियों की जानकारी अगर समाज को नहीं होगी तो नदी की सफाई केवल अनुदान राशि के प्रावधान और कागजी कार्रवाई बनकर रहेगी। जैसे- “नदी अब पाप धोने के बजाय खुद पापों का भंडार बन चुकी है।” इस व्यंग्य में नदी के प्रदूषण के लिए जिम्मेदार हम भारतीयों के धार्मिक कर्मकांड, आडंबर, पाखंड और पूँजीपतियों की लापरवाही जिम्मेदार होने की बात व्यंग्यकार करता है, जिससे समाज में जनचेतना जागृत हो सके।

4. मनोरंजन करना :

व्यंग्य लेखन मूलतः हास्य से जुड़ा होता है। व्यंग्य लेखक समाज के गंभीर मुद्दों को चुटीली, चटपटी बातों में लपेटकर पाठकों के सामने रखता है। व्यंग्य लेखन की मनोरंजक शैली के कारण पाठक उसका आनंद भी उठाता है और उसका मनोरंजन भी होता है। लेकिन केवल मनोरंजन करना व्यंग्यकार का मकसद नहीं होता बल्कि हास्य और मनोरंजन के माध्यम से वह पाठकों को गंभीर विषय तक पहुँचाकर उन्हें विचार प्रवृत्त करना होता है। आज भी अनेक पाठक मनोरंजन और विचार के संतुलन के कारण व्यंग्य विधा पढ़ना पसंद करते हैं। मनोरंजन के कारण पाठक व्यंग्य विधा से निरंतर जुड़े रहते हैं और विचारप्रवृत्त होते हैं।

5. समाज में व्याप्त आडंबर, अन्याय का विरोध करना :

व्यंग्यकार समाज में व्याप्त विभिन्न विसंगतियों के द्वारा समाज पर होने वाले अन्याय से पर्दापाश करता है। सरकारी दफ्तरों में भ्रष्टाचार, शैक्षिक संस्थानों में रिश्वतखोरी, राजनीति में स्वार्थ और अवसरवादिता, धार्मिक संप्रदायों में पाखंडी बाबा, बाह्याडंबर, कर्मकांड और अंधविश्वास आदि प्रकार की विसंगतियों पर समाज पर अन्याय होता है। इस अन्याय का विरोध करना व्यंग्य लेखन का प्रधान उद्देश्य होता है। व्यंग्य के द्वारा उपरोक्त क्षेत्रों में विसंगतियाँ निर्माण करने वाले लोगों के अन्याय का पर्दापाश किया जाता है। संत कबीर ने हिंदू और मुस्लिमों के धार्मिक आडंबर पर तीव्र व्यंग्यात्मक कटाक्ष किया है। जैसे- “पाहन पूजे हरि मिले, तो मैं पूजूं पहाड़, / ताते ये चाकी भली, पीस खाय संसार।” और “कांकर पाथर जोडि के मस्जिद लई बनाय, / ता चढि मुल्ला बांग दे, बहरा हुआ खुदाय।” इस प्रकार संत कबीर दास जी ने हिंदू-मुस्लिम धर्म के बाह्याडंबरों पर व्यंग्य किया है।

6. सत्य और सच्चाई को उजागर करना :

समाज में व्याप्त बुराइयों या विकृतियों पर सीधे हमला करने के बजाए व्यंग्य के माध्यम से सच्चाई को सामने लाना प्रभावी होता है। व्यंग्य लेखन के पीछे छिपे सत्य और सच्चाई से पाठकों को अवगत करना,

संक्षेप में कह सकते हैं कि व्यंग्य विधा भी एक सोद्देश्य साहित्य रचना है। केवल मनोरंजन करना व्यंग्य लेखन का उद्देश्य नहीं बल्कि समाज को अन्याय के खिलाफ सजग करना, सामाजिक सुधार की प्रेरणा देना, सत्य को उजागर करना, सामाजिक विसंगतियों की आलोचना करना, पाठकों को विचार मंथन के लिए प्रवृत्त करना आदि प्रमुख उद्देश्य व्यंग्य लेखन में निहित है।

(अ) निचे दिए गए प्रश्नों के विकल्पों से सही विकल्प चुनिए।

- 1) समाज की विसंगतियों, असामाजिक तत्वों और बुराइयों पर साहित्य के माध्यम से भाष्य करना क्या कहलाता है?
अ. 'व्यंग्य' ब. निबंध
क. कहानी ड. उपन्यास
- 2) हिंदी व्यंग्य विधा के प्रथम चरण के प्रवर्तक किसे माना जाता है?
अ. प्रेमचंद ब. आ. महावीरप्रसाद द्विवेदी
क. भार्तेन्दु हरिश्चंद्र ड. हरिशंकर परसाई
- 3) हिंदी व्यंग्य को स्वतंत्र साहित्य विधा के रूप में मान्यता किसने दिलाई?
अ. हरिशंकर परसाई ब. भार्तेन्दू हरिश्चंद्र
क. बरसानेलाल चतुर्वेदी ड. आ. हज़ारीप्रसाद द्विवेदी
- 4) व्यंग्यकार नॉथ्रॉप फ्राय के अनुसार व्यंग्य में क्या उग्र होती है?
अ. ग्लानि ब. गाली
क. विडंबना ड. सुंदरता
- 5) "सेंस ऑफ़ ह्यूमर ही अन्याय, अत्याचार और निराशा के विरुद्ध होने से व्यंग्य में अभिव्यक्त होता है।" यह परिभाषा किसकी है?
अ. हरिशंकर परसाई ब. शरद जोशी

ड. आ. महावीरप्रसाद द्विवेदी

अ. संत तुलसीदास

ब. संत कबीर

ड. संत सूरदास

अ. भारत दुर्दशा

ब. सतीप्रताप

ड. वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति

अ. सरस्वती

ब. मतवाला

ड. कविवचन सुधा

अ. चिंतामणि

ब. कुटुज

ड. बेकन रचनावली

अ. बाबू गुलाबराय

ब. आ. रामचंद्र शुक्ल

क. आ. हजारीप्रसाद द्विवेदी

ड. प्रेमचंद

अ. ठिठुरता गणतंत्र

ब. तेरी खोपड़ी के अंदर

क. जनयात्रा

ड. बुरे फसे मीटिंग में

अ. पूँजीवाद

ब. मार्क्सवाद

क. समाजवाद

ड. राष्ट्रवाद

- अ. भारत की राजनीति ब. भारत की संस्कृति
क. भारत की शिक्षा ड. भारत का समाज
- 14) रामवृक्ष बेनीपुरी के कौनसे व्यंग्य निबंध में आधुनिक भौतिकवादी जीवन पर व्यंग्य किया है?
अ. भोलाराम का जीव ब. तीनों बंदर बापू के
क. आठ नंबर का जादू ड. गेहूँ और गुलाब
- 15) शरद जोशी की किस व्यंग्यरचना में संसद में बैठे जनप्रतिनिधियों की निष्क्रियता पर व्यंग्य किया है?
अ. प्रश्नकाल ब. संसद
क. रोटी और नेता ड. संसद से सड़क तक

(आ) नीचे दिए गए प्रश्नों के विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

- 1) प्राचीन काल में काव्य की एक शैली के रूप में व्यंग्य ----- रस के साथ विशेष रूप से जुड़ा था।
अ. शृंगार ब. हास्य
क. करुण ड. वीर
- 2) आ. आनंदवर्धन के 'ध्वनि सिद्धांत' में शब्दों के ----- को व्यंग्य का आधार माना है।
अ. व्यंग्यार्थ ब. लक्ष्यार्थ
क. मुख्यार्थ ड. गौणार्थ
- 3) व्यंग्य साहित्य का जन्म ----- में हुआ है।
अ. रोम ब. ग्रीक
क. भारत ड. अमेरिका
- 4) अंग्रेजी साहित्य का ----- शब्द हिंदी में व्यंग्य का रूपांतर बना है।
अ. Sport ब. Sweet
क. Story ड. Satire
- 5) हिंदी में व्यंग्य के शिखरपुरुष ----- को कहा जाता है।

- अ. हरिशंकर परसाई ब. भारतेन्दु हरिश्चंद्र
क. बरसानेलाल चतुर्वेदी ड. आ. हजारीप्रसाद द्विवेदी
- 6) भारतेन्दु हरिश्चंद्र ने व्यंग्य लेखन में -----शैली का प्रारंभ किया।
अ. पत्र ब. विवेचन
क. स्तोत्र ड. मंत्र
- 7) 'कंकड स्तोत्र' इस व्यंग्य रचना में भारतेन्दु ने ----- नगरपालिका के प्रशासन की अव्यवस्था पर व्यंग्य किया है।
अ. काशी ब. हरिद्वार
क. प्रयाग ड. दिल्ली
- 8) आ. महावीर प्रसाद द्विवेदी के ----- व्यंग्य निबंध में साहित्य क्षेत्र की अराजकता पर व्यंग्य किया है।
अ. साहित्य मर्म ब. कविता और कवि
क. साहित्य कर्म ड. साहित्य दोष
- 9) आ. रामचंद्र शुक्ल के ----- निबंध संग्रह में मानवीय प्रवृत्तियों और भावनाओं पर व्यंग्यात्मक टिप्पणियाँ हैं।
अ. रस मीमांसा ब. चिंतामणि
क. हिंदी साहित्य का इतिहास ड. संत तुलसीदास
- 10) शिवपूजन सहाय के ----- व्यंग्य में धर्म का बाजारीकरण और राजनीति के व्यावसायिकरण पर व्यंग्य किया है।
अ. प्रोपेगंडा प्रभु ब. बुरे फसे मीटिंग में
क. कुत्ते से साक्षात्कार ड. कुल्लीभाट
- 11) सूर्यकांत त्रिपाठी निराला की ----- कविता में साहित्य क्षेत्र की विसंगतियों पर व्यंग्य किया है।
अ. सरोज स्मृति ब. कुकुरमुत्ता
क. राम की शक्तिपूजा ड. अनामिका
- 12) आ. हजारीप्रसाद द्विवेदी के ----- निबंध में शस्त्र प्रेम पर कठोर व्यंग्य किया गया है।

- अ. रसमीमांसा ब. नाखून क्यों बढते हैं?
- क. गेहूँ और गुलाब ड. भोलाराम का जीव
- 13) प्रभाकर माचवे के ----- व्यंग्य रचना में ढोंगी व्यापारियों पर व्यंग्य किया है।
- अ. आठ नंबर का जादू ब. भोलाराम का जीव
- क. कुरकुरमुत्ता ड. तीनों बंदर बापू के
- 14) हरिशंकर परसाई के ----- व्यंग्य रचना में भ्रष्ट प्रशासन और नौकरशाही व्यवस्था की दुर्दशा पर व्यंग्य किया है।
- अ. ठिठुरता हुआ गणतंत्र ब. भोलाराम का जीव
- क. भगत की गत ड. जीप पर सँवार ईल्लियाँ
- 15) श्रीलाल शुक्ल का ----- उपन्यास व्यंग्य के क्षेत्र में अक्षय कीर्ति का पात्र बना है।
- अ. गोदान ब. रागदरबारी
- क. कुल्लीभाट ड. इरावती
- 16) समकालीन व्यंग्यकारों में ----- बिंदास व्यंग्य लेखन के लिए सुप्रसिद्ध है।
- अ. हरिशंकर परसाई ब. भारतेन्दु हरिश्चंद्र
- क. ज्ञानदेव चतुर्वेदी ड. रामचंद्र शुक्ल
- 17) ----- यह लतीफ घोंघी की प्रसिद्ध व्यंग्य रचना है।
- अ. कूत्ते से साक्षात्कार ब. गधे से साक्षात्कार
- क. उल्लू से साक्षात्कार ड. लोमड़ी से साक्षात्कार
- 18) ----- यह व्यंग्य का भेद है।
- अ. आत्मपरक व्यंग्य ब. सामाजिक व्यंग्य
- क. राजनीतिक व्यंग्य ड. उपर्युक्त सभी
- 19) ----- यह व्यंग्य का उद्देश्य है।
- अ. समाज सुधार ब. मनोरंजन
- क. विसंगतियों पर प्रहार ड. उपर्युक्त सभी

20) नियति पर आधारित व्यंग्य को ----- कहा जाता है।

अ. परिस्थितिजन्य व्यंग्य

ब. राजनीतिक व्यंग्य

क. सामाजिक व्यंग्य

ड. सांस्कृतिक व्यंग्य

5. पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ :

- * **व्यंग्यार्थ** : किसी कथन, वाक्य या अभिव्यक्ति में शब्दार्थ की जगह उसके सांकेतिक या गूढ़ अर्थ को ग्रहण किया जाता है, तो उसे व्यंग्यार्थ कहा जाता है।
- * **आचार्य आनंदवर्धन** : नौवीं शताब्दी के संस्कृत काव्यशास्त्र के महान आचार्य है, जिन्होंने 'ध्वनि सिद्धांत' का प्रतिपादन किया। उनके प्रसिद्ध ग्रंथ 'ध्वन्यालोक' में उन्होंने काव्य का वास्तविक सौंदर्य केवल शाब्दिक अर्थ में नहीं बल्कि उसके व्यंग्यार्थ (ध्वनि) में निहित होने की बात कही।
- * **आचार्य कुंतक**: दसवीं शताब्दी के संस्कृत काव्यशास्त्र के महान आचार्य है, जिन्होंने 'वक्रोक्ति सिद्धांत' का प्रतिपादन किया। उनके प्रसिद्ध ग्रंथ 'वक्रोक्तिजीवितम' ग्रंथ में वक्रोक्ति (टेढ़ा कथन) को काव्य की आत्मा बताया गया है।
- * **सरहपा**: आठवीं शताब्दी के सिद्ध साहित्य के प्रमुख कवि और बौद्ध धर्म के साधक थे। उन्हें सहजयान परंपरा के प्रमुख आचार्य माना जाता है। उनकी प्रसिद्ध रचना 'दोहाकोश' में लोकजीवन की विसंगतियों पर व्यंग्य देखने को मिलता है।
- * **Satier (सटायर)**: अंग्रेजी साहित्य की वह शैली है जिसमें हास्य, कटाक्ष और व्यंग्य के जरिए समाज की विसंगतियों की आलोचना करना है, जो हिंदी व्यंग्य का रूपांतर बना।
- * **भारतेंदु हरिश्चंद्र** : आधुनिक हिंदी साहित्य विशेषकर गद्य के जनक माने जाते हैं। हिंदी भाषा, साहित्य और पत्रकारिता के विकास में योगदान दिया। इनका कालखंड 1850 ई. से 1885 ई. रहा है।
- * **भँडेती** : भाँड़ों (नकलची/ विदूषक) का पेशा, काम करनेवाले लोग जो ओछी/अश्लील हास-परिहास की हरकतें करते हैं।
- * **विडंबना** : जब कथन और उसके अर्थ में अंतर हो या जो होना चाहिए था, उसके उलट हो जाए, तो उसे विडंबना कहते हैं।
- * **विरोधाभास** : दो परस्पर विपरीत बातें एक साथ कही जाती हैं, लेकिन गहराई से देखने पर उनमें कोई गूढ़ सत्य छिपा होता है।
- * **प्रहसन शैली**: यह एक नाट्य शैली है जिसमें हास्य, व्यंग्य और विडंबना के माध्यम से समाज की बुराइयों पर तीखा प्रहार किया जाता है।

- * **स्तोत्र शैली:** यह वह शैली है जिसमें ईश्वर, देवी-देवताओं या किसी महान व्यक्ति की स्तुति (प्रशंसा) की जाती है।
- * **अमीर खुसरो:** मध्यकालीन (12 वीं सदी) भारत के महान सूफी कवि, संगीतकार और विद्वान थे। हिंदी-उर्दू साहित्य और भारतीय संगीत के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इन्हें 'तूतिये हिंद' (भारत का तोता) के रूप में पहचाना मिली थी। पहेलियाँ, मुकरियाँ, दोहे ओर गजलों में लोकभाषा को प्रतिष्ठा दी। तबला वाद्य और कव्वाली शैली के जनक के रूप में इन्हें पहचाना जाता है।
- * **मुकरियाँ शैली :** छोटी-छोटी रचनाएं जिसमें पहले किसी वस्तु या व्यक्ति का वर्णन किया जाता है, लेकिन अंत में कवि उससे 'मुकर' जाता है (इनकार करता है) जैसे- 'काहे को ब्याही बिदेस, पिया गए परदेस, नदिया किनारे बैठी रोऊं, अरे! यह तो पिया नहीं, कौवा है।
- * **आ. महावीरप्रसाद द्विवेदी :** आधुनिक हिंदी साहित्य (1864-1938 ई.) के प्रमुख निबंधकार, संपादक और महान आलोचक थे। उनके नाम पर ही हिंदी साहित्य के एक युग का नाम 'द्विवेदी युग' पड़ा है। 'सरस्वती' पत्रिका के माध्यम से शुद्ध हिंदी सरल और व्यावहारिक बनाने के लिए प्रयास किया। खड़ी बोली हिंदी को साहित्य में प्रतिष्ठित किया।
- * **आ. रामचंद्र शुक्ल :** हिंदी साहित्य के महान आलोचक, इतिहासकार और निबंधकार थे। उन्हें हिंदी के पहले वैज्ञानिक आलोचक माना जाता है। इनका कालखंड 1884 ई. से 1941 ई. था। 'हिंदी साहित्य का इतिहास' इनका कालजयी ग्रंथ माना जाता है।
- * **सर्वहारा वर्ग :** वह सामाजिक वर्ग जिसके पास उत्पादन के साधन (जमीन, खेती, कारखाने आदि) नहीं होते और अपनी जीविका चलाने के लिए वे मजदूरी पर निर्भर रहते हैं।
- * **निर्वैयक्तिक :** जो व्यक्तिगत या किसी व्यक्ति से संबंधित नहीं होता, वह निर्वैयक्तिक होता है। वह समूह या समाज से संबंधित होता है।
- * **परस्थ व्यंग्य :** व्यंग्यकार खुद को छोड़कर दूसरे व्यक्ति, वर्ग, संस्था या समाज की बुराइयों पर कटाक्ष करता है तब उसे परस्थ व्यंग्य कहते हैं।

6. स्वयंअध्ययन प्रश्नों के उत्तर:

- (अ)
1. अ. 'व्यंग्य'
 2. क. भारतेन्दु हरिश्चंद्र
 3. अ. हरिशंकर परसाई
 4. क. विडंबना

5. ब. शरद जोशी
6. ब. संत कबीर
7. ड. वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति
8. अ. सरस्वती
9. क. 'शिवशंभू के चिट्ठे
10. अ. बाबू गुलाबराय
11. ड. बुरे फसे मीटिंग में
12. ब. मार्क्सवाद
13. अ. भारत की राजनीति
14. ड. गेहूँ और गुलाब
15. अ. प्रश्नकाल

- (आ)
1. ब. हास्य
 2. अ. व्यंग्यार्थ
 3. ब. ग्रीक
 4. ड. Satire
 5. अ. हरिशंकर परसाई
 6. क. स्तोत्र
 7. अ. काशी
 8. ब. कविता और कवि
 9. ब. चिंतामणि
 10. अ. प्रोपेगंडा प्रभु
 11. क. राम की शक्तिपूजा
 12. ब. नाखून क्यों बढ़ते हैं?
 13. अ. आठ नंबर का जादू

14. ब. भोलाराम का जीव
15. ब. रागदरबारी
16. क. ज्ञानदेव चतुर्वेदी
17. अ. कूत्ते से साक्षात्कार
18. ड. उपर्युक्त सभी
19. ड. उपर्युक्त सभी
20. अ. परिस्थितिजन्य व्यंग्य

7. सारांश :

1. हिंदी साहित्य की आधुनिक विधाओं में व्यंग्य साहित्य बहुचर्चित और लोकप्रिय विधा मानी जाती है। समाज की विसंगतियों, असामाजिक तत्त्वों और बुराइयों पर साहित्य के माध्यम से भाष्य करना 'व्यंग्य' कहलाता है। रोमन साहित्य में मर्यादा का उल्लंघन करके प्रयुक्त होनेवाले नाटकों के लिए 'Atellan Farce' शब्द का प्रयोग किया जाता था। लैटिन भाषा में यह शब्द 'Satura' बना और अंग्रेजी साहित्य में आकर यह 'Satire' बन गया। हिंदी साहित्य में इसी 'Satire' शब्द को विकृति, व्यंग्य, व्यंग, उपहास इन चार अर्थों में ग्रहण किया गया है। लेकिन इसमें 'Satire' विधा के परिप्रेक्ष्य में हिंदी में 'व्यंग्य' यह शब्द ही सटीक है।
2. व्यंग्य का जन्म ग्रीक में हुआ। रोमन साहित्य के जरिए वह अंग्रेजी में पहुँचा और अंग्रेजी के प्रभाव से हिंदी ने उसे ग्रहण किया। व्यंग्य में प्रमुख रूप से यथार्थता, विडंबना, हास, बौद्धिकता, निष्पक्षता, संवेदनशीलता, गंभीरता, विसंगतियाँ, आलोचना आदि तत्त्व महत्वपूर्ण होते हैं।
3. प्राचीन साहित्य में व्यंग्य केवल काव्य की एक शैली या अंग माना जाता था। शब्दों के व्यंजना शक्ति एवं व्यंग्यार्थ से जुड़ा तत्त्व है और मुख्य रूप से हास्य रस का अभिन्न अंग था। पाली, प्राकृत और अपभ्रंश साहित्य धार्मिक एवं सामाजिक विसंगतियों के परिप्रेक्ष्य में 'व्यंग्य' तत्त्व दिखाई देता है जिसे मध्यकाल में संत कवियों ने ग्रहण किया।
4. मध्यकाल में भी 'व्यंग्य' 'भक्ति साहित्य' का एक प्रभावी शस्त्र बनकर उभरा लेकिन उसे स्वतंत्र साहित्य विधा माना नहीं गया। इस कालखंड में भटके हुए समाज को सही राह दिखलाने के लिए अनेक संत कवियों ने सामाजिक विसंगतियों पर भाष्य करते हुए 'व्यंग्य' का सहारा लिया। इसका प्रभावी उदाहरण संत कबीर के दोहे हैं।
5. हिंदी व्यंग्य की परंपरा भारतेन्दु युग, द्विवेदी युग, शुक्ल युग, शुक्लोत्तर युग, हरिशंकर परसाई युग और समकालीन युग के रूप में विकसित हुई है। आधुनिक कालखंड में भारतेन्दु हरिश्चंद्र को हिंदी व्यंग्य

के संस्थापक के रूप में जाना जाता है। भारतेन्दु कालीन अनेक कवि, गद्यकारों ने 'व्यंग्य' को स्वतंत्र विधा बनाने के लिए पृष्ठभूमि बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। व्यंग्य के शिखरपुरुष हरिशंकर परसाई जी ने अपनी प्रतिभा के बल पर 'व्यंग्य' को स्वतंत्र साहित्य विधा का दर्जा देकर उसे शीर्ष पर पहुँचाया और समकालीन व्यंग्यकार उसे निरंतर विकसित कर रहे हैं।

6. व्यंग्य के स्वरूप, विषय-वस्तु और प्रस्तुति करने के ढंग के अनुसार व्यंग्य के प्रकारों का विभाजन होता है। वैयक्तिक और निवैयक्तिक दो प्रमुख भेद हैं। वैयक्तिक व्यंग्य के आत्म व्यंग्य और परस्थ व्यंग्य दो उपभेद हैं। निवैयक्तिक के सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, प्रशासकीय, साहित्यिक और परिस्थितिजन्य व्यंग्य आदि आठ उपभेद माने गए हैं।
7. व्यंग्य विधा भी एक सोद्देश्य साहित्य रचना है। केवल मनोरंजन करना व्यंग्य लेखन का उद्देश्य नहीं बल्कि समाज को अन्याय के खिलाफ सजग करना, सामाजिक सुधार की प्रेरणा देना, सत्य को उजागर करना, सामाजिक विसंगतियों की आलोचना करना, पाठकों को बौद्धिक विचार मंथन के लिए प्रवृत्त करना आदि प्रमुख उद्देश्य व्यंग्य लेखन में निहित हैं।

8. स्वाध्याय :

अ) लघुत्तरी प्रश्न.

1. व्यंग्य की परिभाषा स्पष्ट कीजिए।
2. व्यंग्य की विशेषता स्पष्ट कीजिए।
3. प्राचीन कालखंड के व्यंग्य के स्वरूप को स्पष्ट कीजिए।
4. मध्यकाल के व्यंग्य के स्वरूप को स्पष्ट कीजिए।
5. आधुनिक काल के व्यंग्य के स्वरूप को स्पष्ट कीजिए।
6. व्यंग्य के भेदों की संक्षिप्त जानकारी दीजिए।
7. वैयक्तिक व्यंग्य को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।
8. राजनीतिक और सामाजिक व्यंग्य को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।
9. आर्थिक और प्रशासकीय व्यंग्य को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।
10. सांस्कृतिक और साहित्यिक व्यंग्य को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।
11. व्यंग्य के उद्देश्य का संक्षिप्त विवेचन कीजिए।

आ) दीर्घोत्तरी प्रश्न.

1. 'व्यंग्य' की परिभाषा स्पष्ट करते हुए व्यंग्य के उद्भव की पृष्ठभूमि का सविस्तर विवेचन कीजिए।

2. 'व्यंग्य' की परिभाषा देकर हिंदी व्यंग्य परंपरा का विवेचन कीजिए।
3. 'व्यंग्य' की परिभाषा देकर व्यंग्य के विभिन्न भेदों को सोदोहरण स्पष्ट कीजिए।
4. 'व्यंग्य' की परिभाषा देकर व्यंग्य के विभिन्न उद्देश्यों को स्पष्ट कीजिए।

9. क्षेत्रीय कार्य :

1. मराठी साहित्य की व्यंग्य परंपरा का अध्ययन करते हुए प्रसिद्ध व्यंग्य रचनाओं को पढ़कर समीक्षा कीजिए।
2. आपके अनुभव के आधार पर राजनीतिक और सामाजिक समस्याओं पर व्यंग्य कविता लिखने की कोशिश कीजिए।
3. समाजमाध्यमों (सोशल मीडिया) पर प्रसारित होने वाले मीम्स को आधार बनाकर व्यंग्यों का संकलन कीजिए।
4. व्यंग्य के शिखरपुरुष हरिशंकर परसाई के प्रसिद्ध व्यंग्य रचनाओं को पढ़कर कक्षा में गुट चर्चा कीजिए।

10. अतिरिक्त अध्ययन के लिए

- 1) चंदर सुभाष, (तृ.सं. 2017 ई.), हिंदी व्यंग्य का इतिहास, भावना प्रकाशन, दिल्ली-110002.
- 2) परसाई हरिशंकर, (प्र.सं.2005 ई.) परसाई रचनावली, राजकमल प्रकाशन, नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली-110002.
- 3) शुक्ल आचार्य रामचंद्र, (आठवाँ संस्करण-2012 ई.), हिंदी साहित्य का इतिहास, पहली मंजिल, दरबारी बिल्डिंग, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद (उ.प्र.)-211001.
- 4) चतुर्वेदी (डॉ.) बरसानेलाल, (प्र.सं. 2008 ई.) हिंदी साहित्य में हास्य रस, हिंदी साहित्य संसार, नई दिल्ली-110002.



इकाई 2.1 – व्यंग साहित्य

प्रेम की बिरादरी

– हरिशंकर परसाई

अनुक्रम

2.1.1 उद्देश्य

2.1.2 प्रस्तावना

2.1.3 विषय विवेचन

2.1.3.1 हरिशंकर परसाई का जीवन परिचय, व्यक्तित्व एवं कृतित्व

2.1.3.2 'प्रेम की बिरादरी' व्यंग्य का परिचय

2.1.3.3 'प्रेम की बिरादरी' व्यंग्य का कथानक

2.1.4 स्वयंअध्ययन के लिए प्रश्न

2.1.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

2.1.6 स्वयंअध्ययन प्रश्नों के उत्तर

2.1.7 सारांश

2.1.8 स्वाध्याय

2.1.9 क्षेत्रीय कार्य

2.1.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

2.1.1 उद्देश्य :

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप-

- * व्यंग्यकार हरिशंकर परसाई का जीवन परिचय, व्यक्तित्व एवं कृतित्व से परिचित होंगे।
- * हिंदी के प्रसिद्ध व्यंग्यकार के साहित्यिक दृष्टिकोण को समझ सकेंगे।
- * हिंदी व्यंग्य साहित्य में हरिशंकर परसाई के योगदान से परिचित होंगे।
- * व्यंग्य विधा रूप से परिचित होंगे।
- * प्रस्तुत व्यंग्य के माध्यम से प्रेम विवाह और अंतरजातीय विवाह के प्रति रूढ़िवादी सोच को ठुकराकर, प्रेम की पवित्रता और प्रतिष्ठा को अपनाना आवश्यक है, इस बात को समझ सकेंगे।

2.1.2 प्रस्तावना :

हरिशंकर परसाई, शरद जोशी, श्रीलाल शुक्ल, रवींद्रनाथ त्यागी, मनोहरश्याम जोशी को हिंदी व्यंग्य की पहली पीढ़ी के व्यंग्यकार माना जाता है, जिन्होंने हिंदी व्यंग्य को स्वरूप तथा सशक्त आधार प्रदान करने में अहम् भूमिका निभाई। नामवर सिंह का मानना है कि आजादी के पूर्व का भारत जानना है तो प्रेमचंद को पढ़ना चाहिए और आजादी के बाद का भारत जानना है तो हरिशंकर परसाई को पढ़ा जाना चाहिए। हरिशंकर परसाई ने 1947 ई. से लिखना प्रारंभ किया। हरिशंकर परसाई ने व्यंग्य को हिंदी साहित्य में स्वतंत्र विधा के रूप में स्थापित किया। व्यंग्य के उद्देश्य, रचना-प्रक्रिया, कथानक, शब्द, विधा, शैली आदि के स्वरूप का निर्धारण कर व्यंग्य का स्वतंत्र व्यक्तित्व निर्माण करने का काम परसाई ने किया। परसाई कहते हैं, कोई सुधर जाए तो मुझे क्या एतराज है। वैसे मैं सुधार के लिए नहीं, बदलने के लिए लिखना चाहता हूँ। उनके व्यंग्य सामाजिक, राजनीतिक, साहित्यिक, आर्थिक, धार्मिक सभी क्षेत्रों में बढ़ रही विसंगतियों पर तीखा प्रहार करते हैं। 'प्रेम बिरादरी' व्यंग्य रचना में भी विवाह को लेकर रूढ़िग्रस्त मानसिकता, दहेज-प्रथा, दिखावटी प्रवृत्ति, जाति-पाँति, प्रेम-विवाह, अंतर जातीय विवाह आदि पर करारा व्यंग्य कसा गया है।

2.1.3 विषय विवेचन :

2.1.3.1 हरिशंकर परसाई का जीवन परिचय, व्यक्तित्व एवं कृतित्व :

2.1.3.1.1 हरिशंकर परसाई का जीवन परिचय :

हरिशंकर परसाई का जन्म 22 अगस्त, 1924 ई. में जमानी, होशंगाबाद, मध्य प्रदेश में हुआ। उनके परिवार में उनकी माँ चंपाबाई, पिताजी जुमकलालू प्रसाद, तीन बहनें और एक भाई थे। परसाई भाई-बहनों में सबसे बड़े थे। परसाई जब आठवीं कक्षा में थे, उनकी माँ की मृत्यु 'प्लेग' की बीमारी के कारण हुई। माँ की मृत्यु के बाद 5-6 साल बाद उनके पिताजी की मृत्यु हुई। दो बहनें और एक भाई की जिम्मेदारी परसाई पर आ

गयी थी। उनका बचपन बहुत कठिन परिस्थितियों से गुजरा है, जिसका प्रभाव उनकी युवा अवस्था पर पड़ा है। हरिशंकर परसाई अविवाहित थे।

परसाई हरिशंकर ने प्रारंभिक शिक्षा सेमस्टार ग्लोबल स्कूल नैनी इलाहाबाद में प्राप्त की। स्नातक तक की शिक्षा मध्यप्रदेश में प्राप्त की। बाद में नागपुर विश्वविद्यालय से हिंदी में एम.ए. की उपाधि प्राप्त की। तत्पश्चात् कुछ वर्षों तक उन्होंने अध्ययन का कार्य किया। 1957 में नौकरी छोड़कर स्वतंत्र लेखन की शुरुआत की। जबलपुर से 'वसुधा' नामक पत्रिका निकाली थी। 'सारिका' पत्रिका में 'कबिरा खड़ा बाज़ार में' में लेखन कार्य किया। उस समय के अनेक पत्र-पत्रिकाओं में उनकी कहानियाँ, उपन्यास एवं निबंध-लेखन के बावजूद मुख्यतः व्यंग्यकार के रूप में विख्यात रहे।

2.1.3.1.2 हरिशंकर परसाई का व्यक्तित्व :

हरिशंकर परसाई अविवाहित थे। वे अपने भाई-बहनों की संतानों को ही अपनी संतान मानते थे। उनका रहन-सहन अत्यंत सीधा-साधा रहा है। उनके जीवन में कोई बनावटीपन नहीं था। वे अपनी कमजोरियों को स्वीकार करते हुए आगे बढ़ते रहे। उनके स्वभाव में अत्यंत स्पष्टता रही है। उनको बचपन से ही दिखाऊ सहानुभूति से नफरत थी। परसाई अपने जीवन में धीरज को महत्वपूर्ण मानते थे। उनका स्वभाव बहुत ही बेफिक्र था। साथ ही बहुत ही भावुक एवं संवेदनशील स्वभाव के आदमी थे। उनका स्वभाव अत्यंत निर्भीक था। उन्होंने मार्क्सवादी विचारों को अपनाया था। वे अपने जीवन में शुद्ध रूप से धर्मनिरपेक्ष आदमी थे। उनके व्यक्तित्व पर कबीर के विचारों का बहुत प्रभाव दिखाई देता है। उनके लेखन में सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक पाखंड, सामाजिक विसंगतियों पर निर्भीक रूप से व्यंग्य मिलते हैं। परसाई का मानना था कि देश का निर्माण नवयुवकों के ही हाथ में रहता है, इसलिए वे हमेशा नवयुवकों को मार्गदर्शन करते रहते थे।

2.1.3.1.3 हरिशंकर परसाई का कृतित्व :

परसाई ने बाल्यावस्था में ही लेखन में रुचि लेना प्रारंभ कर दिया था। उनका व्यंग्य फलक बहुत विशाल है। जीवन के हर क्षेत्र की विसंगति पर उनकी दृष्टि गई है। परसाई ने निबंध, कहानी और उपन्यास तीनों ही विधाओं का सार्थक उपयोग किया है। उन्हें श्रेष्ठ व्यंग्य सम्राट का दर्जा दिया जाता है। परसाई ने आम आदमी पर, आम आदमी की भाषा में लेखन किया है। उनकी व्यंग्य भाषा सरल, सहज, उर्दू और अंग्रेजी के अलावा देशज भाषा के शब्द भंडार से भरी हुई है।

✱ हरिशंकर परसाई की प्रमुख रचनाएँ –

1) हास्य-व्यंग्य संकलन :

विकलांग श्रद्धा का दौर, सदाचार का तावीज, बेईमानी की परत, तब की बात और थी, शिकायत मुझे भी है, ठिठुरता हुआ गणतंत्र, वैष्णव की फिसलन, पगड़ण्डियों का जमाना, निठल्ले की कहानी, सुनो भाई साधो, और अंत में, भूत के पाँव पीछे आदि।

2) निबंध संग्रह :

अपनी-अपनी बीमारी, आवारा भीड़ के खतरे, ऐसा भी सोचा जाता है, काग भगोडा, तुलसीदास चंदन घिसैं, प्रेमचंद के फटे जूते, माटी कहे कुम्हार से, हम एक उम्र के वाकिफ हैं आदि।

3) उपन्यास :

रानी नागफनी की कहानी, तट की खोज, ज्वाला और जल ।

4) कहानी संग्रह :

हँसते हैं रोते हैं, जैसे उनके दिन फिरे, भोलाराम का जीव ।

* पुरस्कार :

1. परसाई को 1982 ई. में 'विकलांग श्रद्धा का दौर' रचना के लिए साहित्य अकादमी का पुरस्कार मिला।
2. सन 1957 में उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ का शिखर सम्मान मिला।

* मृत्यु :

परसाई का निधन 10 अगस्त, 1995 ई. को जबलपुर में हुआ था।

2.1.3.2 'प्रेम की बिरादरी' व्यंग्य का परिचय :

हरिशंकर परसाई द्वारा लिखित 'प्रेम की बिरादरी' एक व्यंग्य कहानी है। यह व्यंग्य कहानी 'अपनी-अपनी बीमारी' पुस्तक में संकलित है। साथ ही परसाई रचनावली भाग तीन में भी संग्रहित है। इस कहानी में प्रेम के विभिन्न रूपों को अनोखे ढंग से चित्रित किया है। कहानी के प्रथम भाग में पति-पत्नी के संबंध को प्रेम की बिरादरी के रूप में प्रस्तुत किया है। दूसरे में प्रेम विवाह की चर्चा की है तथा तीसरे भाग में अंतरजातीय विवाह पद्धति का व्यंग्यात्मक परिचय दिया है। जाति, वर्ग एवं धर्म के भेदभाव एवं सामाजिक गलत मान्यताओं से मानवीय भावनाएं श्रेष्ठ होती है, यह इस कहानी का मुख्य विषय है।

2.1.3.3 'प्रेम की बिरादरी' व्यंग्य कहानी का कथानक :

इस व्यंग्य के प्रथम भाग में परसाई ने ऐसे लोगों का चित्रण किया है, जो कलंत-चर्चा में व्यस्त रहते हैं, खुद को पवित्र मानते हैं और धार्मिकता का ढोंग रचते हैं। परसाई कहते हैं ऐसे लोग अपनी शादी जाति की लड़की के साथ परंपरागत पद्धति से करते हैं। इनकी पत्नी सात जन्मों में किसी दूसरे पुरुष को नहीं देखती है। इन्होंने अपनी लड़की के लिए लड़का और लड़के के लिए लड़की खुद पसंद की, दहेज की लेन-देन की और परंपरागत पद्धति से शादी करवा दी। उनका सब कुछ पवित्र है, प्रापटी है, फुरसत होने के कारण दूसरों की कलंत चर्चा में समय काटते हैं, फिर भी समय बचता है तो मूँछ के सफेद बाल उखाड़ते हैं और बर्तन बेचनेवाली की राह देखते हैं।

परसाई का मानना है कि पवित्रता का मुँह दूसरों की अपवित्रता के गंदे पानी से धुलने पर ही उजला होता है। इस लिए वे अपवित्रता का जल अपने लौटे में लिए फिरते हैं जिससे अपवित्रता का मुँह उजला कर सके। जैसे कि वे पिछले दिनों 2 लड़कियों के भागने, 3 स्त्रियों के गर्भपात, 4 की अंतरजातीय विवाह एवं 2 पतिव्रताओं के प्रणय-प्रसंग बता चुके हैं। साथ ही हमेशा कलंत चर्चा करते हैं, जैसे कि अमुक साहब की लड़की ने भागकर इलाहाबाद में जाकर शादी कर ली। उन्हें लगता है कि बुरा जमाना आ गया है और सामाजिक पतन तेजी से बढ़ रहा है। परंतु परसाई कहते हैं कि वे बुरा जमाना आने से दुःखी नहीं, तो सुखी है क्योंकि उन्हें लगता है कि इतने बुरे जमाने में भी वे अच्छे हैं, वे सामूहिक पतन में भी निजी गौरव महसूस करेंगे।

लेखक ने पुराण का उदाहरण देकर कहा है कि हमारे देश में अच्छी शादियाँ लड़की भगाकर हुई है। जैसे कि कृष्ण ने रूक्मिणी और अर्जुन ने कृष्ण की बहन सुभद्रा का हरण किया था। पुराण की बात निकली तो वे सँभलकर बोले कि भगवान कृष्ण की बात अलग है। लेखक का उत्तर था कि भगवान अगर औरत भगाए तो वह बात भजन में आ जाती है। साधारण आदमी ऐसा करें तो वह काम अनैतिक हो जाता है। यदि लड़की अपनी मर्जी से घर से निकल गई और मर्जी से शादी कर ली, इसमें क्या हर्ज है? इस पर उनका उत्तर था कि रीति, नीति, परंपरा और विश्वास का पालन करना चाहिए, उस पर लड़का-लड़की अलग जाति के हैं। लेखक ने कहा कि मनुष्य जाति के तो है न? अपने यहाँ तो भीम ने हिडिम्बा से शादी की है, मतलब मनुष्येतर जाति में। घर से भागकर शादी करने की घटनाएं बढ़ती ही जा रही हैं। 24-25 साल के लड़के-लड़की को भारत की सरकार बनाने का अधिकार तो मिल चुका है पर अपने जीवन-साथी बनाने का अधिकार नहीं मिला।

दूसरे प्रसंग में लेखक कहते हैं कि भागकर शादी करने की घटनाएं दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही हैं। इससे दो तरह की चिट्ठियाँ पेटेंट हो गई है। चिट्ठी नं. 1 में सुनीता नामक लड़की अपने पिताजी से चिट्ठी लिखकर कहती है कि उन्होंने रमेश से वैदिक रीति के अनुसार शादी कर ली है, वह अच्छे हैं, चिंता करने की आवश्यकता नहीं है, आशा करती हैं कि माता-पिताजी उन्हें माफ कर देंगे।

चिट्ठी नं. 2 में विनीता नामक लड़की अपने पूर्व प्रेमी रमेश को चिट्ठी लिखकर कहती हैं कि वह अपने माता, पिता की इच्छा के विरुद्ध जाकर रमेश से शादी नहीं कर सकती, रमेश उसे माफ कर दे तथा वह अन्य लड़की से शादी कर, सुख में रहें। यदि रमेश दुखी रहेगा तो उसे भी अपने जीवन में सुख नहीं मिलेगा क्योंकि हृदय से तो वह रमेश की है। चार-पाँच सालों के बाद यदि मुलाकात होती भी है वह अपने बेटे पप्पू से कहेंगी कि बेटा मामाजी (रमेश) को नमस्ते करें। कई बार तो ऐसा होता है कि लड़की जब भागकर शादी कर लेती है तो माँ-बाप कहते हैं कि उसकी लड़की उनके लिए मर चुकी है। लेकिन कुछ महीने बाद वही लड़की चाय लेकर आ जाती है। उस पर तर्क दिया जाता है कि आखिर लड़की ही है। लेखक सोचते हैं कि जो आखिर में लड़की है वह शुरू में लड़की क्यों न थी?

परसाई माता-पिता की भावनाओं को जानते हैं। विश्वास और परंपर के टूटने से बड़ा दर्द होता है। जब

शेरपा तेनसिंह गौरीशंकर की चोटी पर होकर आये तो किसी ने पूछा कि क्या वहाँ शंकर भगवान है? तो उन्होंने कहा कि उसे नहीं दिखे। उनके विश्वास को ठेंस पहुँचती है, क्योंकि उन्हें भी पता है कि शंकर भगवान वहाँ नहीं है, पर एक विश्वास हृदय में लिए हैं कि शंकरजी हैं, वे ओढ़रदानी है। कभी कोई संकट उन पर आएगा, तो वे आकर उन्हें उबार लेंगे। लेखक कहते हैं कि झूठे विश्वास का भी बड़ा बल होता है और उससे टूटने का भी सुख नहीं दुःख होता है।

लेखक ने विश्वास और परंपरा का और एक उदाहरण दिया है। एक सज्जन की लड़की दूसरी जाति के लड़के से शादी करना चाहती थी, जो कि एक अच्छी, ऊंची नौकरी पर था। लेकिन यहाँ माँ-बाप का जातिप्रथा के शाश्वतता में विश्वास आड़े आ गया। माता-पिता ने लड़की की शादी अपनी ही जाति के एक लड़के से कर दी, जो कि कम तो कमाता ही था, अपनी पत्नी को पीटता भी था। इस पर लड़की के पिता का उत्तर था कि इतना तो संतोष है कि जाति वाले से पिट रही है।

परसाई हरिशंकर कहते हैं, कि आखिर ये हमारे लोग किस परंपरा और आदर्श को मान रहे हैं? राम मर्यादा पुरुषोत्तम और सीता महासती है, इनसे श्रेष्ठ स्त्री-पुरुष की कल्पना और ऐसे अच्छे विवाह की कल्पना इस समाज में नहीं है। तुलसीदास कहते हैं कि पुष्पवाटिका में 'कंकण किंकिणि नूपुर' की ध्वनि सुनकर राम को लगता है कि मदन ने दुन्दुभि दे दी है, मतलब राम का मन सीता पर आ गया है। राम और सीता का विवाह-पूर्व प्रेम भी हो गया और फिर विवाह भी हो गया। इस मामले में आज जिन मूल्यों को माना जा रहा है, उनको देखकर लेखक को लगता है कि तुलसीदास ने लिखा है, उसके विपरित हुआ होगा। जैसे कि राम ने लक्ष्मण से पूछा कि कंकण किंकिणी और नूपुर की ध्वनि किसकी है? क्या जनक अपनी ही बिरादरी के हैं? तो लक्ष्मण ने उत्तर दिया होगा कि जे. के. सिंह अपनी ही बिरादरी के हैं। इसी कारण ही सीता को देखकर राम का मन डोल उठा, यदि सीता दूसरी बिरादरी की होती तो उनका मन डोल नहीं उठता। मतलब यह है कि प्रेम की बिरादरी की प्रथा आज की न होकर बहुत पुरानी परंपरा है।

वर्तमान के लड़कें-लड़कियों से कहा जाए कि प्रेम की जाति है, जैसे कि एक हिंदू प्रेम है, एक मुसलमान प्रेम हैं, एक ब्राह्मण प्रेम है, एक ठाकुर प्रेम है, एक अग्रवाल प्रेम है। हमारे देश में जावेद आलम किसी जयंती गुहा से शादी कर लेता है, तो सारे देश में दंगा हो जाता है। इन सबको देखते हुए, भविष्य में तरुण-तरुणी एक-दूसरे की जाति पूछकर ही प्रेम करेंगे। लोग कहते हैं कि आखिर स्थायी मूल्य और शाश्वत परंपरा भी तो कोई चीज है। परंतु हमारे देश में मूर्खता शाश्वत और अमर है, वह मरकर भी जीवित हो जाती है। जब लेखक लड़के-लड़की से पूछते हैं कि वैदिक रीति यहाँ भी है, फिर तुम लोग भागकर, दूसरी जगह जाकर वैदिक रीति से शादी करते हो, यहाँ क्यों नहीं? वे कहते हैं- यहाँ माता-पिता बाधा डालते हैं। मतलब ये तरुण क्रांति करेंगे परंतु यथास्थिति की नज़र बचाकर। कलंत-चर्चा करनेवाले सज्जन का मानना था कि हम बुजुर्गों के जीवन-भर के अनुभव का भी तो कोई महत्त्व है। लेखक का भी मानना है कि अनुभव का महत्त्व है परंतु अनुभव से किसी ने क्या सीखा, यह भी महत्त्वपूर्ण है। अगर किसी 50-60 साल के अनुभव से सिर्फ यह सीखा हो कि सबसे दबना चाहिए तो उस अनुभव पर शक हो सकता है। किसी दूसरे ने इतने ही सालों के अनुभव से शायद

8. 'प्रेम की बिरादरी' व्यंग्य कहानी पुस्तक में संकलित है।
 अ. अपनी-अपनी बीमारी ब. काग भगोडा
 क. हँसते हैं रोते हैं ड. जैसे उनके दिन फिरे
9. 'प्रेम की बिरादरी' व्यंग्य कहानी के लेखक है।
 अ. शरद जोशी ब. हरिशंकर परसाई
 क. लतीफ घोंघी ड. मोहन राकेश
10. 'प्रेम की बिरादरी' व्यंग्य कहानी में के विभिन्न रूपों को चित्रित किया गया है।
 अ. प्रेम ब. दुख
 क. क्रोध ड. माया

2.1.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ :

- * कलंत चर्चा – दूसरों की निंदा, गपशप ।
- * हाज्मा – पाचन क्रिया या पाचन शक्ति
- * हिडिम्बा – महाभारत काल की एक राक्षसी (असुर) थी, जो बाद में पांडव में भीम की पत्नी और घटोत्कच की माता बनी।
- * मजमून – विषय, मुख्य अर्थ ।
- * वैदिक रीति – विवाह संस्कार, वेदों के मंत्रों, यज्ञ और अग्नि को साक्षी मानकर संपन्न होता है।
- * शेरपा तेनसिंह – एक प्रसिद्ध नेपाली- भारतीय पर्वतारोही थे, जो माऊंट एवरेस्ट के शिखर पर पहुँचने वाले पहले इंसान बने।
- * मदन – प्रेम का देवता या कामदेव
- * बिरादरी – जाति आधारित संकुचित समाज ।
- * दुन्दुभी – चमड़े से मढा ताल वाद्य यंत्र है, जो एक बड़ा नगाड़ा या ढोल जैसा होता है।
- * गौरी शंकर – प्राचीन भारत का एक प्रमुख हिमालय में स्थित गौरी शंकर पर्वत।
- * पुरुषोत्तम – पुरुषों में उत्तम या सर्वश्रेष्ठ पुरुष धर्म, नैतिकता और उच्च आदर्शों का पालन करनेवाला।
- * केचुए – मिट्टी में रहने वाला एक लंबा, नलीनुमा और खंडित कीड़ा है।

- * कन्फेस – विश्वास, हामी (खात्री)
- * तुलसीदास – हिंदी साहित्य के भक्तिकाल के रामभक्त कवि थे, जिनकी 'रामचरितमानस' रचना विख्यात है।
- * पुष्पवाटिका – फूलवारी, उपवन, उद्यान ।
- * कंकण किंकिणि नूपुर – 'रामचरितमानस' में तुलसीदास द्वारा वर्णित सीता के आभूषणों की मधुर झंकार का वर्णन (कंकण – हाथों के कंगन, किंकिणि – कमर की करधनी, नूपुर – पैरों की पायल)
- * महासती सीता – रामायण की केंद्रीय पात्र और आदर्श, भारतीय नारी का प्रतीक है।

2.1.6 स्वयंअध्ययन प्रश्नों के उत्तर :

- | | |
|----------------------|-------------------------|
| 1. (अ) १९४७ ई. | 2. ब. १९२४ ई. |
| 3. (ब) मध्य प्रदेश | 4. (ब) चंपाबाई |
| ५. (ब) प्लेग | 6. (ब) साहित्य अकादमी |
| 7. (अ) जबलपुर | 8. (अ) अपनी-अपनी बीमारी |
| 9. (ब) हरिशंकर परसाई | 10. (अ) प्रेम |

2.1.7 सारांश :

1. हरिशंकर परसाई को हिंदी व्यंग्य साहित्य की पहली पीढ़ी के व्यंग्यकार माना जाता है, जिन्होंने हिंदी व्यंग्य साहित्य को स्वरूप तथा सशक्त आधार प्रदान करने में अहम भूमिका निभाई।
2. हरिशंकर परसाई ने व्यंग्य को हिंदी साहित्य में स्वतंत्र विधा के रूप में स्थापित किया।
3. हरिशंकर परसाई के व्यंग्य सामाजिक, राजनीतिक, साहित्यिक, धार्मिक सभी क्षेत्रों में बढ रही विसंगतियों पर तीखा प्रहार करते हैं।
4. हरिशंकर परसाई का बाल्यकाल आर्थिक विवंचना, अभावग्रस्त एवं संघर्षशील रहा है।
5. हरिशंकर परसाई का जीवन बहुत ही सीधा-साधा, भावुक, संवेदनशील, स्पष्टवक्ता, बेफिक्र, धर्मनिरपेक्ष, मार्क्सवादी विचारों से प्रेरित रहा है।
6. हरिशंकर परसाई के श्रेष्ठ व्यंग्य निबंध, व्यंग्य कहानियाँ तथा व्यंग्य उपन्यास के कारण उन्हें व्यंग्य सम्राट का दर्जा मिलता रहा है।
7. 'प्रेम बिरादरी' कहानी समाज में प्रेम को लेकर व्याप्त पारंपरिक, संकीर्ण और रूढ़िवादी मानसिकता पर करारा प्रहार करती है।

8. यह कहानी समाज की खोखली नैतिकता और दिखावे पर चोट करती है।
9. प्रेम एक पवित्र भावना है, जिसे जाति, धर्म या वर्ग के भेदभाव पर तोला नहीं जाता।
10. यह कहानी एक मध्यवर्गीय परिवार और समाज की मानसिकता को दर्शाती है।
11. यह कहानी समाज में व्याप्त जातिवाद और रूढ़िवादी सोच का पर्दापाश करती है और सच्चा प्रेम जाति, धर्म और सामाजिक बंधनों से ऊपर है।
12. यह कहानी भारत में प्रेम विवाह और पारंपरिक जाति आधारित विवाहों के बीच संघर्ष को दर्शाती है।
13. इस कहानी के द्वारा दिखाया गया है कि माता-पिता अपने बच्चों के प्रेम विवाह को अस्वीकार करते हैं लेकिन बाद में मजबूरी या भावनिक तौर पर स्वीकार भी कर लेते हैं।
14. अंत में परसाई पाठकों के सामने प्रश्न रखते हैं कि 24-25 साल का युवक, जिसे सरकार चुनने का अधिकार है, वह अपना जीवन साथी चुनने के लिए घर से भागने को क्यों मजबूर है?

2.1.8 स्वाध्याय :

(अ) लघुत्तरी प्रश्न :

1. हरिशंकर परसाई का जीवन परिचय दीजिए।
2. हरिशंकर परसाई को व्यक्तित्व का परिचय दीजिए।
3. हरिशंकर परसाई को कृतित्व का परिचय दीजिए।
4. 'प्रेम बिरादरी' के शीर्षक की सार्थकता को स्पष्ट कीजिए।
5. 'प्रेम बिरादरी' कहानी का उद्देश्य लिखिए।

(आ) दीर्घोत्तरी प्रश्न :

1. हरिशंकर परसाई का जीवन, व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दीजिए।
2. 'प्रेम बिरादरी' व्यंग्य कहानी की समीक्षा कीजिए।
3. 'प्रेम बिरादरी' व्यंग्य कहानी का कथानक लिखिए।
4. 'प्रेम बिरादरी' के माध्यम से भारतीय समाज में व्याप्त जातिवाद, दकियानूसी परंपराओं और प्रेम के प्रति संकीर्ण दृष्टिकोण पर गहरी चोट की है, स्पष्ट कीजिए।

2.1.9 क्षेत्रीय कार्य :

1. 'प्रेम की बिरादरी' कहानी का मराठी में अनुवाद करें।

2. हरिशंकर परसाई के व्यंग्य साहित्य की तुलना मराठी के लेखक सुभाष भेंडे के साहित्य से करें।
3. प्रेम विवाह, अंतरजातीय विवाह, विवाह और गलत रूढ़िवादी मान्यताएं आदि विषयों पर निबंध लिखने का प्रयास करें।

2.1.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए :

1. परसाई हरिशंकर, अपनी-अपनी बीमारी, दिल्ली, राजकमल प्रकाशन-110003
2. गायकवाड सुचिता, हरिशंकर परसाई कृत 'ठिठुरता हुआ गणतंत्र', कानपुर, विनय प्रकाशन-208021
3. कमल कुलश्रेष्ठ (संपा.), आजकल (पत्रिका), अगस्त-2024, दिल्ली, आजकल प्रकाशन-110003
4. आनंद मधूसुदन (संपा.), नया ज्ञानोदय, जुलाई-सितंबर-2023, नई दिल्ली, भारतीय ज्ञानपीठ-110003
5. परसाई हरिशंकर, परसाई रचनावली, भाग-३, नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन- 110003



2.2 उधार माँगना भी एक कला है

– डॉ. बरसाने लाल चतुर्वेदी

अनुक्रम

2.2.1 उद्देश्य

2.2.2 प्रस्तावना

2.2.3 विषय विवेचन

2.2.3.1 डॉ. बरसाने लाल चतुर्वेदी का जीवन परिचय, व्यक्तित्व एवं कृतित्व

2.2.3.2 'उधार माँगना भी एक कला है' व्यंग्य का परिचय

2.2.3.3 'उधार माँगना भी एक कला है' व्यंग्य का कथानक

2.2.4 स्वयंअध्ययन के लिए प्रश्न

2.2.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

2.2.6 स्वयंअध्ययन प्रश्नों के उत्तर

2.2.7 सारांश

2.2.8 स्वाध्याय

2.2.9 क्षेत्रीय कार्य

2.2.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

२.२.१ उद्देश्य

इस व्यंग्य रचना को पढ़ने के बाद आप,

- * हास्य-व्यंग्यकार डॉ. बरसानेलाल चतुर्वेदी के जीवन, व्यक्तित्व एवं कृतित्व से परिचित होंगे।
- * डॉ. बरसानेलाल चतुर्वेदी जी के साहित्यिक दृष्टिकोण को जान पाएंगे।
- * हिंदी व्यंग्य साहित्य में डॉ. चतुर्वेदी के योगदान को समझ सकेंगे।
- * 'उधार माँगना भी एक कला है' इस व्यंग्य रचना में अभिव्यक्त हास्य-विनोद के साथ सामाजिक विसंगतियों से परिचित होंगे।
- * 'उधार माँगना भी एक कला है' इस व्यंग्य रचना में उधार माँगने वाले लोगों की खुशामद करना, खिलाना-पिलाना, उधारी देते समय भूलने का बहाना करना आदि प्रवृत्तियों से परिचित होंगे।

२.२.२ प्रस्तावना :

डॉ. बरसानेलाल चतुर्वेदी का साहित्यिक लेखन 1940 ई. से माना जाता है। वे सन 1945 को अपने निबंध संग्रह 'मिस्टर खोए खोए' से हास्य-व्यंग्यकार के रूप में सुपरिचित हुए। इसके बाद निरंतर छह दशकों तक वे हिंदी साहित्य का लेखन करते रहे। उन्होंने व्यंग्यात्मक निबंध के साथ कविता, आलोचना और शोध कार्य से पाठकों को प्रभावित किया। हास्य के साथ-साथ उन्होंने समाज की सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक विसंगतियों पर उद्घाटित करके समाज को जागृत करने का कार्य किया। डॉ. बरसानेलाल चतुर्वेदी लिखित 'उधार माँगना भी एक कला है' इस व्यंग्य रचना में उन्होंने उधार माँगने वाले लोगों की प्रवृत्ति पर व्यंग्यात्मक प्रहार किया है। सहज एवं सरल भाषा शैली में उन्होंने उधार माँगते समय लोगों की शालीन एवं मधुर प्रवृत्ति, अवसवादिता, भावकुता का कलात्मक ढोंग, उधार वापस करने का अनोखा विश्वास आदि कलाओं पर मार्मिक व्यंग्य किया है। यह व्यंग्य रचना उधार माँगने वाले सफेदपोश लोगों पर प्रहार करती है।

2.2.3 विषय विवेचन :

2.2.3.1 डॉ. बरसाने लाल चतुर्वेदी का जीवन परिचय, व्यक्तित्व एवं कृतित्व :

2.2.3.1.1 डॉ. बरसाने लाल चतुर्वेदी का जीवन परिचय :

डॉ. बरसाने लाल चतुर्वेदी का जन्म 20 अगस्त, 1920 ई. को उत्तर प्रदेश के मथुरा 'बरसना' गाँव के एक विद्वान ब्राह्मण परिवार में हुआ। उनके पिताजी का नाम पं. जगन्नाथ चतुर्वेदी और माताजी का नाम चंदादेवी है। उनकी प्रारंभिक शिक्षा घर पर ही पारंपारिक ब्राह्मण परिवेश में मथुरा में हुई। उनके वैवाहिक जीवन की जानकारी नहीं मिलती है लेकिन उनके एक पुत्र सत्येंद्र चतुर्वेदी होने का उल्लेख मिलता है। उन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से हिंदी साहित्य में एम.ए. और पीएच.डी. की उच्च शिक्षा हासिल की। पीएच.डी. शोध-कार्य के लिए उन्होंने 'हिंदी साहित्य में हास्य रस' इस विषय का चयन किया था। उसके बाद उन्होंने इसी विश्वविद्यालय

से 'आधुनिक काव्य में व्यंग्य' इस विषय पर डी.लिट् उपाधि के लिए शोध-कार्य किया। शिक्षा पूर्ण करने के बाद वे दिल्ली के किरोडीमल कॉलेज में हिंदी के विभागाध्यक्ष रहे। अध्यापन के साथ-साथ उन्होंने हिंदी साहित्य सृजन का कार्य भी किया। हिंदी साहित्य में उनके योगदान के लिए उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा सम्मानित किया गया। दिल्ली सरकार ने उन्हें 'हिंदी अकादमी सम्मान' दिया। साहित्य और शिक्षा के उच्चतम योगदान के लिए भारत सरकार ने सन 1989 को 'पद्मश्री पुरस्कार' से उन्हें सम्मानित किया।

2.2.3.1.2 डॉ. बरसाने लाल चतुर्वेदी का व्यक्तित्व :

डॉ. बरसाने लाल चतुर्वेदी का व्यक्तित्व बहुआयामी था। उनमें विद्वत्ता, सरलता और तीक्ष्ण कटाक्ष का अद्भुत संगम था। डॉ. चतुर्वेदी ने हास्य रस के शास्त्रीय पक्ष पर भी तीखा व्यंग्य किया। ब्रज संस्कृति के प्रति उनका अत्यधिक लगाव रहा है। उनकी रचनाओं में ब्रजभाषा की मिठास हमेशा रहती थी। उनकी हास्य-व्यंग्य रचनाओं में अभिव्यक्त विचारधारा पर संत कबीर और भारतेन्दु हरिश्चंद्र के विचारों का गहरा प्रभाव रहा है। वे महात्मा गांधी के सत्य और अहिंसा के विचारों से भी प्रभावित रहे। इसकारण उनकी रचनाओं में रूढ़िवादिता, सामाजिक बुराइयों पर प्रहार है और आदर्शवादी समाज की स्थापना करने की सोच रखते हैं। डॉ. चतुर्वेदी मानवीय जीवन व्यवहार के सूक्ष्म चित्ते थे। मनुष्य के आचरण की सूक्ष्म निरीक्षण और जानकारी रखते थे। इसी कारण उनकी व्यंग्य रचनाओं के शीर्षक भी मनुष्य के दैनिक कामकाजों पर आधारित हैं।

2.2.3.1.3 डॉ. बरसाने लाल चतुर्वेदी का कृतित्व :

डॉ. बरसाने लाल चतुर्वेदी स्वतंत्रतापूर्व कालखंड के एक उल्लेखनीय हास्य-व्यंग्यकार के रूप में पहचाने जाते हैं। उन्होंने अपने लेखन की शुरुआत सन 1940 से की और उसके बाद लगातार छह दशकों तक वे लिखते रहे। उन्होंने अपनी मातृभाषा ब्रज में हिंदी व्यंग्य लेखन किया और हास्य-व्यंग्य परंपरा की नींव रखने का कार्य किया। 'मिस्टर खोए खोए' इस व्यंग्य निबंध-संग्रह से उन्हें हिंदी साहित्य में पहचान मिली और वे एक प्रतिष्ठित लेखक के रूप में स्थापित हुए। उन्होंने अपने संपूर्ण जीवन काल में निबंध, कविता, आलोचना, शोध-कार्य आदि विधाओं में ४० ग्रंथों की रचना की। उनकी 'अंग्रेजी प्रेम' कविता भी काफी चर्चा में रही। अनुवादक, शास्त्रीय आलोचक के रूप में भी उन्होंने उल्लेखनीय योगदान दिया। उनकी रचनाएं इस प्रकार हैं-

* हास्य-व्यंग्य निबंध और गद्य संग्रह -

- | | | |
|------------------------------|----------------------------|-------------------------------|
| 1. भोलाराम पंडित की बैठक | 2. मिस्टर चोखेलाल | 3. मिस्टर खोए खोए |
| 4. चाणक्य के चले | 5. चौबेजी की डायरी | 6. चमचागिरी |
| 7. हाथी के पंख | 8. चाटुकारिता कला है | 9. श्री मुक्तानंद जी से मिलिए |
| 10. बारात की बात | 11. अभिनंदन ग्रंथ | 12. हास्य निबंध संग्रह |
| 13. गंगा मैया से साक्षात्कार | 14. उधार माँगना भी कला है। | |

*** कविता- संग्रह-**

1. बुरे फँसे
2. मुसीबत है
3. कुल्हड़ से हुल्हड़
4. अंग्रेजी प्रेम आदि।

*** शोध-कार्य -**

1. हिंदी साहित्य में हास्य रस
2. आधुनिक काव्य में व्यंग्य
3. भारतीय हास्य व्यंग्य कोश आदि।

2.2.3.2 'उधार माँगना भी एक कला है' व्यंग्य का परिचय :

डॉ. बरसाने लाल चतुर्वेदी लिखित 'उधार माँगना भी एक कला है' यह एक हास्य-व्यंग्यात्मक रचना है। इसमें उन्होंने 'उधार माँगने' जैसी एक छोटी-सी बात को विषय बनाकर मनुष्य के स्वभाव की विसंगतियों और उसकी प्रवृत्तियों को सटिकता से स्पष्ट किया है। इस रचना में आम आदमी से लेकर धनवान व्यक्ति भी कभी-न-कभी उधार माँगते हैं और उधार माँगते समय किए जाने वाले बहानों का व्यंग्यात्मक वर्णन इसमें आया है। उधार माँगने वाले लोगों को लेखक ने 'उधार संप्रदाय' से जोड़ते हुए उनके बेहयाई, ढोंगबाजी आदि पर मार्मिक टिप्पणी की है। उधार देने वाले व्यक्ति की खुशामद करना, चाय पिलाकार पटाना, उधार लेते समय और वापस देते समय बहानेबाजी करना आदि प्रवृत्तियों पर डॉ. चतुर्वेदी ने व्यंग्यात्मक कटाक्ष किया है।

2.2.3.3 'उधार माँगना भी एक कला है' व्यंग्य का कथानक :

डॉ. बरसाने लाल चतुर्वेदी व्यंग्य साहित्य में मौलिक सृजक के रूप में अपनी पहचान बनाए हुए हैं। 'उधार माँगना भी एक कला है' यह व्यंग्य रचना उनके उत्तम व्यंग्य रचनाओं में से एक है। जीवन को कलात्मक दृष्टि से देखनेवाले चतुर्वेदी हर काम में पारखी नज़र रखते हैं। कोई भी काम हो लेकिन वह कलापूर्ण तरीके से करने पर उसकी आधी खामियाँ दूर हो जाती है। फिर वह उधार माँगने का काम हो या फिर प्रेम करना। सज्जन और होशियार लोग इस कला का इस्तेमाल कैसे करते हैं? इसका विवरण विवेच्य व्यंग्य रचना में आया है।

डॉ. चतुर्वेदी बताते हैं कि उधार माँगनेवाला व्यक्ति अपना काम कितनी सफाई और चालाकी से करता है। 'हर्दी लगे न फिटकरी रंग चोखा हो जाए' इस कहावत का प्रयोग करके वह कहते हैं कि उधार माँगने वाले व्यक्ति अपना कुछ गंवाए बिना ही अपना काम बिना किसी तामझाम के पूरा करता है। उधार देने वाले व्यक्ति की खुशामदी करो, उसे चाय पिलाओ, खाना खिलाओ, उसकी हर तरफ से प्रशंसा, स्तुति करने से उसका दिल पसीज जाता है और वह उधार माँगने वाले के प्रति सौम्य बनता है। खुशामदी से खुश होकर वह उधार दे देता है।

उधारी माँगते समय की जानेवाली चापलूसी को डॉ. चतुर्वेदी ने विभिन्न उदाहरणों से समझाया है। लेखक और उनका एक मित्र मखनलाल के बीच की 'एक रुपये' की उधारी मनुष्यता के अनेक रंग पाठकों को दिखाती है। उधार, ऋण एवं कर्ज यह सारी बातें जो हम कौनसे कारणों से लेते हैं, उनकी जरूरत बहुत आवश्यक है। ऋण लेकर मौज करना, मनुष्यों में अधिक पैमाने में पाई जाती है। लेखक लिखते हैं, 'ऋणं कृत्वा घृतापिवेत'

जैसे घी, मलाई जैसे अनमोल वस्तुएं जरूरत के हिसाब से इस्तेमाल करनी चाहिए, वैसे ही ऋण का इस्तेमाल करना चाहिए। लेकिन ऋण माँगकर लोग उसे मनमानी ढंग से खर्च करते हैं और लौटाने के समय दूर-दूर भागते हैं। वे दर्जी का उदाहरण देकर समझाते हैं कि कपड़े सिलाकर उसकी उधारी देने से बचने के लिए उस दुकानदार के दुकान के सामने जाना बंद करना। कभी वह मिल जाए तो वही घिसा-पिटासा उत्तर देना, 'भाई अभी पगार नहीं मिला।' यह तो हर भारतीयों का आँखों देखा उदाहरण है।

उधार माँगने की चतुराई ने उधारी देने वाले को इतना बदमाश और मोटी चमड़ी का व्यक्ति बनने पर विवश कर दिया है। उधारी चुकानेवाला व्यक्ति चेकबुक और बैंक का पासबुक भी अपने पास रखता है। कभी कबार उसको माँगनेवालों के ऊपर रौब जमाकर चेक देता है। यह उसका उस समय बचने का तरीका है। वह चेक बैंक में विडोल ही नहीं होता है। वापस उधार देनेवाले व्यक्ति को फँसाया जाता है। यहाँ बड़े-बड़े अफसर उधार माँगने से नहीं कतराते। उधारी लौटाने का तो सवाल ही पैदा नहीं होता है। क्योंकि वह बड़ा अधिकारी उसके शिष्टाचार के अधिन रहकर उधार देनेवाला बड़ा बुरा फँसता है। उधारी लौटाने के अनेक बहाने होते हैं। उनके पैसे, उधार की वस्तु या कोई भी चीज यह फुसलाकर लेने के बाद वापस करते समय 'क्या आपका रूपया लेकर भाग जाऊंगा' जैसे वक्तव्य करने से नहीं चकते हैं।

डॉ. बरसाने लाल चतुर्वेदी इन सभी उद्धरणों, वक्तव्यों को 'उधार संप्रदाय' से जोड़ते हैं। गरीब आदमी हो या अफसर उधार माँगने से लेकर उसे वापस देने तक की प्रक्रिया में इन उद्धरणों का इस्तेमाल करते हैं। उधार लेते समय दिखाई जाने वाली चतुराई उधार वापस करते समय धिनौनी और विकृत बन जाती है। यह एक लघु व्यंग्य रचना है लेकिन इसका आशय बहुत गहरा है। ऊपरी तौर पर देखे तो उधार माँगना एक मामूली बात लगती है लेकिन यही बात मनुष्य-मनुष्य में नफरत की दीवार खड़ी कर देती है। यह एक महामारी है। यह आधुनिक समय में अधिक इर्ष्या का स्रोत बन गई है। ये बातें एक हिंसक समाज की नींव होने का संदेश डॉ. बरसाने लाल चतुर्वेदी इस व्यंग्य रचना के माध्यम से देते हैं। यह रचना एवं उसका संदेश आज भी प्रासंगिक लगता है। वे समाज की शुद्धीकरण पर विचार करते हुए नज़र आते हैं। डॉ. चतुर्वेदी ने रोजमर्रा के जीवन के उदाहरण, कहावतों और सुभाषितों के जरिए इस व्यंग्य रचना की प्रभावात्मकता को बढ़ाया है।

2.2.4 स्वयंअध्ययन के लिए प्रश्न :

1. डॉ. बरसानेलाल चतुर्वेदी ने सन में लिखना प्रारंभ किया।
अ. 1947 ई.
ब. 1952 ई.
क. 1940 ई.
ड. 1956 ई.
2. डॉ. बरसानेलाल चतुर्वेदी का जन्म 20 अगस्त ई. में हुआ।
अ. 1920
ब. 1924
क. 1929
ड. 1930

3. डॉ. बरसानेलाल चतुर्वेदी का जन्म में हुआ।
अ. दिल्ली
ब. जबलपुर
क. पटना
ड. मथुरा
4. डॉ. बरसानेलाल चतुर्वेदी की माता का नाम था।
अ. गंगाबाई
ब. चंदा देवी
क. राधादेवी
ड. पार्वती देवी
5. डॉ. बरसानेलाल चतुर्वेदी की उच्च शिक्षा विश्वविद्यालय से पूरी हुई।
अ. बनारस हिंदू
ब. आगरा
क. दिल्ली
ड. मौलाना आझाद
6. डॉ. बरसानेलाल चतुर्वेदी ने डी. लिट उपाधि हेतु विषय पर शोध-कार्य किया।
अ. आधुनिक काव्य में व्यंग्य
ब. व्यंग्य का इतिहास
क. संस्कृत काव्य में व्यंग्य
ड. व्यंग्य कविता
7. डॉ. बरसानेलाल चतुर्वेदी को साहित्य और शिक्षा क्षेत्र के उल्लेखनीय कार्य के लिए भारत सरकार ने सन 1999 को पुरस्कार देकर सम्मानित किया।
अ. ज्ञानपीठ
ब. सारस्वत सम्मान
क. साहित्य अकादमी
ड. पद्मश्री
8. 'उधार माँगना भी एक कला है' इस व्यंग्य रचना के लेखक है।
अ. हरिशंकर परसाई
ब. बरसाने लाल चतुर्वेदी
क. सुभाष चंद्र
ड. बरसाने लाल द्विवेदी
9. 'उधार लेकर भूल जाओ वरना आप हर पल में रहोगे।
अ. खुशी
ब. गम
क. तनाव
ड. गुस्से
10. 'क्या आपका लेकर मैं भाग जाऊंगा' यह उधार माँगनेवालों को एक प्रसिद्ध हथियार है।
अ. सोना
ब. रुपया
क. बंगला
ड. गाड़ी

2.2.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ :

- * **स्थितप्रज्ञ** : जिसकी बुद्धि स्थिर हो चुकी हो, स्थिर बुद्धिमत्तावाला व्यक्ति।
- * **ऋण कृत्वा घृतापिवेत** : यह वाक्यांश 'चार्वाक दर्शन' का सिद्धांत है। जिसका अर्थ है, जब तक जियो, सुख से जियो, चाहे उधार लेकर ही घी पीना पड़े।
- * **बजट** : एक निश्चित समय आमतौर पर एक वर्ष के लिए अनुमानित आय और व्यय का पूरा लेखा-जोखा। वित्तीय योजना।
- * **उधार संप्रदाय** : एक ऐसी विचारधारा या समूह जिसके सिद्धांत और विचार मौलिक नहीं हैं, बल्कि दूसरों से लिए गए या नकल किए गए हैं।
- * **हर्दीं लगे न फिटकरी, रंग चोखा हो जाए** : बिना किसी खर्च या विशेष मेहनत के काम का बहुत अच्छा बन जाना।
- * **बिनु गुरू के ज्ञान न होई** : गुरू के बिना ज्ञान प्राप्त नहीं होता है।
- * **लोहे को तब पिटो जब वह गर्त हो** : जब परिस्थितियाँ आपके पक्ष में हो, तभी निर्णय लेना चाहिए।
- * **का बरखा जब कृषी सुखाने?** : जब खेती पूरी तरह सूख गई हो तब वर्षा होने का कोई लाभ नहीं है।
- * **पेनिसिलीन का इंजेक्शन** : कड़वा लेकिन असरदार इलाज, कठिन परिस्थितियों में दिए गए सख्त जरूरी समाधान।
- * **शागिर्दी** : यह फारसी मूल का शब्द है, जिसका मतलब है शिष्यता।

2.2.6 स्वयंअध्ययन प्रश्नों के उत्तर :

- | | |
|----------------|--------------------------------|
| 1. क. 1940 ई. | 2. अ. 1920 |
| 3. ड. मथुरा | 4. ब. चंदा देवी |
| 5. ब. आगरा | 6. अ. आधुनिक काव्य में व्यंग्य |
| 7. ड. पद्मश्री | 8. ब. बरसाने लाल चतुर्वेदी |
| 9. क. तनाव | 10. ब. रुपया |

2.2.7 सारांश :

1. स्वातंत्र्यपूर्व कालखंड के एक मुर्धन्य हास्य-व्यंग्यकार के रूप में डॉ. बरसाने लाल चतुर्वेदी का नाम सुपरिचित है।

2. डॉ. बरसाने लाल चतुर्वेदी ने हिंदी हास्य-व्यंग्य की नींव रखने का कार्य किया।
3. डॉ. बरसाने लाल चतुर्वेदी जीवन को कलात्मक नजरिए से देखते हैं।
4. डॉ. बरसाने लाल चतुर्वेदी ने आम इंसान से लेकर अफसरों तक के जीवन के दैनिक क्रियाकलापों को अपने हास्य-व्यंग्य का विषय बनाया है।
5. डॉ. बरसाने लाल चतुर्वेदी ने सामाजिक, शैक्षिक, राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, क्षेत्रों में व्याप्त विसंगतियों पर गद्य और पद्य में हास्य-व्यंग्य रचना लिखी है।
6. उन्होंने 'आधुनिक काव्य में व्यंग्य' इस विषय पर डी.लिट. उपाधि हासिल की है।
7. उनके व्यंग्य साहित्य पर संत कबीर, भारतेन्दु और महात्मा गांधी के विचारों का प्रभाव अधिक है।
8. 'उधार माँगना भी एक कला है' हास्य-व्यंग्य रचना में उधार माँगने वाले लोगों की प्रवृत्तियों का पर्दापाश किया है। लेखक ने उन्हें 'उधार संप्रदाय' से जोड़ते हुए उनके बेहयाई, ढोंगबाजी आदि पर मार्मिक टिप्पणी करते हैं।
9. यह हास्य-व्यंग्य रचना, समाज में फैली खोखले मनुष्यों के दिखावे तथा अनैतिक व्यवहार पर करारा प्रहार करता है।
10. दूसरों से उधार माँगकर उसका इस्तेमाल अपनी मौज करने के लिए करने की प्रवृत्ति को लेखक ने उजागर किया है।
11. 'उधार माँगना भी एक कला है' यह हास्य-व्यंग्य रचना आज भी प्रासंगिक लगती है।
12. लेखक ने इसमें वाक्यांश, मुहावरे आदि का मार्मिक एवं यथार्थवादी प्रयोग किया है जो उधारी की समस्या पर व्यंग्यात्मक प्रहार करती है।

2.2.8 स्वाध्याय :

अ) लघुत्तरी प्रश्न :

1. डॉ. बरसाने लाल चतुर्वेदी का जीवन परिचय दीजिए।
2. डॉ. बरसाने लाल चतुर्वेदी के व्यक्तित्व का परिचय दीजिए।
3. डॉ. बरसाने लाल चतुर्वेदी के कृतित्व का परिचय दीजिए।
4. 'उधार माँगना भी एक कला है' के शीर्षक की सार्थकता को स्पष्ट कीजिए।
5. 'उधार माँगना भी एक कला है' हास्य-व्यंग्य निबंध का उद्देश्य लिखिए।

ब) दीर्घोत्तरी पत्र :

1. डॉ. बरसाने लाल चतुर्वेदी के जीवन, व्यक्तित्व और कृतित्व का परिचय दीजिए।
2. 'उधार माँगना भी एक कला है' हास्य-व्यंग्य निबंध की समीक्षा कीजिए।
3. 'उधार माँगना भी एक कला है' हास्य-व्यंग्य निबंध का कथानक लिखिए।
4. 'उधार माँगना भी एक कला है' हास्य-व्यंग्य निबंध भारतीय समाज की फिजूलखर्ची प्रवृत्ति पर गहरी चोट करता है, स्पष्ट कीजिए।

2.2.9 क्षेत्रीय कार्य :

1. 'उधार माँगना भी एक कला है' इस हास्य व्यंग्य लेख का मराठी में अनुवाद करें।
2. डॉ. बरसाने लाल चतुर्वेदी के हास्य-व्यंग्य साहित्य की तुलना मराठी के लेखक सतीश आलेकर के साहित्य से करें।
3. 'उधार माँगना भी एक समस्या', 'कर्ज का दलदल', 'उधार एक मीठा जहर', 'आज का उधार, कल की मुसीबत', 'रिश्तों की बलि चढ़ाता उधार', 'धन गया सो गया, मित्र भी साथ गया' आदि विषयों पर निबंध लेखन का प्रयास करें।

2.2.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए :

1. चतुर्वेदी बरसाने लाल, हिंदी व्यंग्य, बिजनौर, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली - 246701
2. चतुर्वेदी बरसाने लाल, हास्य व्यंग्य के शिखर पुरुष, नई दिल्ली, किताब घर प्रकाशन-111002



2.3 एक दीक्षांत भाषण

– रवींद्रनाथ त्यागी

अनुक्रम

2.3.1 उद्देश्य

2.3.2 प्रस्तावना

2.3.3 विषय विवेचन

2.3.3.1 रवींद्रनाथ त्यागी का जीवन परिचय, व्यक्तित्व एवं कृतित्व

2.3.3.2 'एक दीक्षांत भाषण' व्यंग्य का परिचय

2.3.3.3 'एक दीक्षांत भाषण' व्यंग्य का कथानक

2.3.4 स्वयंअध्ययन के लिए प्रश्न

2.3.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

2.3.6 स्वयंअध्ययन प्रश्नों के उत्तर

2.3.7 सारांश

2.3.8 स्वाध्याय

2.3.9 क्षेत्रीय कार्य

2.3.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

2.3.1 उद्देश्य :

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप,

- * व्यंग्यकार रवींद्रनाथ त्यागी का जीवन परिचय, व्यक्तित्व एवं कृतित्व से परिचित होंगे।
- * हिंदी के प्रसिद्ध व्यंग्यकार के साहित्यिक दृष्टिकोण को समझ सकेंगे।
- * हिंदी व्यंग्य साहित्य में रवींद्रनाथ त्यागी के योगदान से परिचित होंगे।
- * व्यंग्य विधा रूप में रवींद्रनाथ त्यागी के स्थान से परिचित होंगे।
- * प्रस्तुत व्यंग्य के माध्यम से देश के युवा पीढ़ी में रोजगार के प्रति जागरूकता, भारतीय संस्कृति का संवर्धन, स्त्री का सम्मान करना, देश के कामकाज एवं प्रशासनिक व्यवस्था पर चुटकीला व्यंग्य, युवा वर्ग का देश के विकास में योगदान आदि बिंदुओं से परिचित होंगे।

2.3.2 प्रस्तावना :

हिंदी साहित्य में व्यंग्य एक सम्मानित विधा के रूप में स्थापित है। प्रसिद्ध भारतीय व्यंग्यकार एवं लेखक के रूप में रवींद्रनाथ त्यागी का नाम अग्रणी है। व्यंग्य को साहित्य के रूप में ढालने का काम श्रीलाल शुक्ल, हरिशंकर परसाई, विद्यानिवास मिश्र, कुबेरनाथ राय, इंद्रनाथ मदान, शरद जोशी एवं रवींद्रनाथ त्यागी को दिया जाता है। त्यागी का मानना है कि लेखक का कृतित्व ही उसका सच्चा सम्मान है। पाठकों द्वारा मिले हुए सम्मान से ही लेखक को प्रेरणा मिलती है। रवींद्रनाथ त्यागी के विचार में सामाजिक बुराइयों को उजागर करने के लिए व्यंग्य ही सर्वोत्तम साधन है तथा उसमें हास्य भी मिल जाए तो उसका प्रभाव अधिक प्रखर हो उठता है। पुष्पपाल सिंह कहते हैं, रवींद्रनाथ त्यागी के हास्य व्यंग्यों में लाठी से बाँसुरी बजाने की अप्रतिम कला दिखती है। रवींद्रनाथ त्यागी के व्यंग्य की सीमा बहुत विस्तृत है तथा उनकी अध्ययनशीलता अनुपम है। इसलिए उन्होंने डायरी, पत्र, यात्रा वर्णन, लघुकथा, संस्मरण, आत्मकथा, उपन्यास, शोध तथा आलोचना जैसी अनेक गद्य विधाओं को समृद्ध किया है। उनका व्यंग्य उन परिस्थितियों पर तीखी चोट करता है, जो मानव जीवन को संकटग्रस्त बनाती हैं। वे सामाजिक विसंगतियों, नैतिक पतन और मानवीय मूल्यों के न्हास को उजागर करते हैं। इस प्रकार उनका साहित्य समाज को जागरूक करने और सुधार की दिशा में प्रेरित करने का कार्य करता है।

2.3.3 विषय विवेचन :

2.3.3.1 रवींद्रनाथ त्यागी का जीवन परिचय, व्यक्तित्व एवं कृतित्व :

2.3 3.1.1 रवींद्रनाथ त्यागी का जीवन परिचय :

रवींद्रनाथ त्यागी का जन्म 1 सितंबर, 1931 ई. को कस्बा नहतौर, जिला बिजनौर (उत्तर प्रदेश) में हुआ। उनकी माता का नाम चमेली देवी तथा पिता का नाम पं. मुरारीदत्त शर्मा था। बचपन में ही उन्होंने संघर्ष और

कठिन परिस्थितियों का अनुभव किया। गरीबी के कारण उन्हें अनेक सुख-सुविधाओं से वंचित रहना पड़ा। अभावग्रस्त जीवन में उन्हें जीवन के यथार्थ से जल्द ही परिचित करा दिया। घर की गरीबी, पिता का कट्टर आर्यसमाजी होना, परिस्थिति से जूझती विवश माता के कारण उनका बचपन अभावग्रस्त रहा। त्यागी के पिता का परिवार के प्रति कोई लगाव न था। उनके दादाजी का नाम पं. चंदन सिंह था। रवींद्रनाथ त्यागी के पिता पं. मुरारीदत्त शर्मा बच्चों को सुसंस्कारित करने के कर्तव्य से मुखर गए थे। बचपन में ही लाहौर भाग गए थे। पं. मुरारीदत्त शर्मा आर चमेली देवी को त्यागी समेत कुल 12 बच्चे थे। उनमें से केवल रवींद्रनाथ और उनकी बड़ी बहन 'प्रेम' जीवित रहे। माँ चमेली देवी संवेदनशील, भावुक, साध्वी तथा श्रद्धालु थी। रवींद्रनाथ की परवरीश में उनकी माँ का सर्वोपरि योगदान था। त्यागी को अपने छः छोटे और तीन बड़े भाई-बहनों की देखभाल का जिम्मा बचपन में ही उठाना पड़ा। उनके दो भाई-बहन को मृत्यु के बाद कफन तक नसीब नहीं हुआ। रवींद्र त्यागी अपनी बड़ी बहन 'प्रेम' से बहुत स्नेह करते थे। एक छोटी बहन 'शारदा' स्कूल की फीस के लिए दिन-रात सूत कातती थी। किताबें, कपड़े, रोटी और फीस का इंतजाम करना बहत मुश्किल था। इस तरह रवींद्रनाथ त्यागी का बचपन आर्थिक तंगी और अभावों के बीच गुजरा।

रवींद्रनाथ की आरंभिक पढ़ाई संस्कृत में हुई। पाँच मिल की दूरी पर एक नदी को पार करके उन्हें पाठशाला जाना पड़ता था। उन्हें बचपन में संस्कृत विषय के प्रति गहरी रुचि रही। प्रधानाध्यापक रामचरण सिंह की कृपा से उनकी प्राथमिक शिक्षा का क्रम निरंतर रह सका। उन्होंने मेहनत-मजदूरी करके अपनी पढ़ाई जारी रखी। सन 1952 में प्रथम श्रेणी में इंटर की परीक्षा उत्तीर्ण हुए। इसके बाद इलाहाबाद विश्वविद्यालय से बी.ए. की उपाधि प्रथम श्रेणी में प्राप्त की। 1954 में प्रयाग विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र विषय में एम. ए. की उपाधि स्वर्ण पदक के साथ प्राप्त की। उसके बाद 1955 में उन्होंने अखिल भारतीय सेवा प्रतियोगिता परीक्षा प्राप्त करके 'इंडियन डिफेंस एकाउंट्स' का पद प्राप्त किया। 24 जून, 1955 में रवींद्रनाथ त्यागी ने श्रीमती शारदा के साथ विवाह किया। तब शारदा की उम्र सोलह साल थी। उन्हें एक पुत्र अशोक और बेटी इंदू दो संताने हैं। दोनों संतानें शादी करके अपने-अपने जीवन में सफल हुए हैं।

2.3 3.1.2 रवींद्रनाथ त्यागी का व्यक्तित्व :

रवींद्रनाथ त्यागी हास्य व्यंग्यकार थे। उनके व्यक्तित्व के दो पहलू सामने आते हैं। त्यागी का व्यक्तित्व अंतर्मुखी है। किसी व्यक्ति से पहचान होने के बाद आत्मीयता से उनका व्यक्तित्व सामने आता है। बहिर्मुखी व्यक्तित्व के रवींद्रनाथ त्यागी ठाठ-बाट से रहते हैं। केंद्र सरकार के लेखापाल विभाग के वरिष्ठ अधिकारी होने के कारण वे लंबा ओवरकोट, मोजे-जूते, मोटे फ्रेम का चष्मा और उन की टोपी पहनते थे। उनका व्यक्तित्व सादगीपूर्ण लेकिन आकर्षक है। सफल हास्य-व्यंग्यकार होने का अहंकार उनमें नहीं है। पारदर्शी व्यक्तित्व के साथ निष्कपट हास्य उनके चेहरे पर झलकता है। किताबें पढ़ना और उनका संकलन करना उनका शौक है। पढ़ने के लिए किताब माँगना और किसी को पढ़ने के लिए किताब देना उन्हें पसंद नहीं है। आजीवन वे अपने निजी जीवन में और कार्यालयीन जीवन में ईमानदार रहे। उनकी याददाश्त बहुत तेज है। लेखन के लिए निरंतर एक जगह बैठना उन्हें अच्छा लगता है। वे किताबों के नाम, लेखक, प्रकाशक और उनके अनुच्छेदों को अपनी

तेज याददाश्त से सहज बताते हैं। निर्भिकता, स्पष्टवादीता और निष्पक्षता उनके व्यक्तित्व की विशेषता है। उनकी अनेक रचनाओं की आलोचकों ने प्रशंसा की है। उन्होंने अपनी जीवन के दुःखों, अभावग्रस्तता को कमजोरी नहीं बनाया बल्कि अपने साहित्य में वे उसे 'हास्य वरदान' के रूप में पेश करते हैं। अपने विनम्र स्वभाव के कारण ही वे व्यंग्य साहित्य में हरिशंकर परसाई को अग्रस्थान देते हैं। उसके बाद शरद जोशी, श्रीलाल शुक्ल और बाद में अपना नाम लेते हैं।

रवींद्रनाथ त्यागी बहुज्ञाता है। उन्होंने संस्कृत, मराठी, उर्दू और अंग्रेजी भाषाओं में प्रवीणता हासिल की है। काव्यशास्त्र समेत अनेक विषयों का उन्हें अच्छा ज्ञान है। अनुवाद के माध्यम से उन्होंने बंगला और मैथिली भाषा के अच्छे ग्रंथों को पढ़कर अपनी ज्ञानवृद्धि की। तुलसीदास, प्रेमचंद उनके प्रिय साहित्यकार रहे हैं। शेक्सपियर के नाटकों को पढ़कर उनमें संगीत के प्रति प्रेम निर्माण हुआ। उन्हें नौटंकी, लोकनृत्यों के प्रति विशेष लगाव है। सिनेमा देखना, सुंदर हस्ताक्षरों में पोस्टकार्ड लिखना, इतिहास, दर्शनशास्त्र की किताबें पढ़ना, यात्राएं करना उन्हें पसंद है। ऐसे बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी रवींद्रनाथ का निधन 4 सितंबर, 2004 ई. को देहरादून, उत्तरांचल में हुआ।

2.3 3.1.3 रवींद्रनाथ त्यागी का कृतित्व :

रवींद्रनाथ त्यागी हिंदी साहित्य जगत में कवि और हास्य-व्यंग्य लेखक के रूप में मशहूर है। उन्होंने 34 हास्य-व्यंग्य रचना, 3 उपन्यास, 8 कविता संग्रह, 4 बाल-साहित्य, 1 उर्दू-हिंदी हास्यव्यंग्य संग्रह और 2 हिंदी-उर्दू हास्य व्यंग्य संग्रह लिखे हैं। उनकी रचनाओं का संक्षिप्त परिचय इसप्रकार है-

- * **हास्य-व्यंग्य रचनाएं** - 'खुली धूप में नाव पर', 'मल्लिनाथ की परंपरा', 'भित्ति चित्र', 'कृष्णवाहन की कथा', 'देवदार के पेड़', 'शोकसभा', 'अतिथि कथ', 'सुंदर कली', 'फूलों के कैक्टस', 'ऋतुवर्णन', 'भद्र-पुरुष', 'इस देश के लोग', 'पदयात्रा', 'आत्मलेखन पराजित पीढ़ि के नाम', 'प्रसंगवश', 'विषकन्या', 'गणतंत्र की शोभायात्रा', 'इतिहास का शव', 'भाद्रपद की साँझ', 'लाल-पीले फूल', 'देश विदेश की कथा', 'चंपाकली', 'बादलों के गाँव' आदि।
- * **उपन्यास** - 'अपूर्ण कथा', 'रास-लीला' आदि।
- * **काव्य-संग्रह** - 'खुले और हरे पत्ते', 'कल्पवृक्ष', 'आदिम राग', 'आखिरकार सलीब से नाव तक', 'अंतिम वसंत', 'कृष्णपक्ष की पूर्णिमा', 'पीले-पालवाली बुढ़ी नाव' आदि।
- * **बाल-साहित्य** - 'मास्टर भोलाराम', 'हमार मास्टर साहब', 'खेलगाँव', 'सुंदरबन' आदि।
- * उर्दू हिंदी हास्य-व्यंग्य (1978 ई.)
- * हिंदी- उर्दू हास्य-व्यंग्य (1991 ई.)

2.3.3.2 'एक दीक्षांत भाषण' व्यंग्य का परिचय :

रवींद्रनाथ त्यागी हिंदी व्यंग्यकारों की शीर्ष श्रेणी में शामिल है। रवींद्रनाथ त्यागी द्वारा लिखित 'एक दीक्षांत भाषण' एक व्यंग्य कहानी है। इस कहानी में उपाधिप्राप्त युवक-युवतियों को देश के विकास के लिए योगदान देने का आवाहन किया है। एक विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह में किए गए भाषण के माध्यम से व्यंग्यकार रवींद्रनाथ त्यागी ने राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं प्रशासनिक विसंगतियों पर करारा व्यंग्य किया है। उन्होंने इस व्यंग्य कहानी के माध्यम से प्रशासकीय कार्यालयों में पनपती कामचोरी, भाई-भतीजावाद, राजनेताओं के भ्रष्टाचार, अधिकारियों की तानाशाही, सरकारी कार्य प्रणाली की लापरवाही आदि का यथार्थ वर्णन किया है। रवींद्रनाथ त्यागी देश के युवाओं को उनकी ताकत और ऊर्जा को राजनेताओं के पीछे खत्म करने के बजाए देश एवं समाज की उन्नति में लगाने का संदेश देते हैं। वे युवक-युवतियों को संस्कारपूर्ण जीवन जीने, वैवाहिक जीवन में सम्मान देने, सामंजस्य और सहयोग रखने, दकियानुसी रीति-रिवाज और धार्मिक कर्मकांडों से दूर रहने की सीख देते हैं।

2.3.3.3 'एक दीक्षांत भाषण' व्यंग्य का कथानक :

'एक दीक्षांत भाषण' इस व्यंग्य कहानी का प्रारंभ लेखक द्वारा एक विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह में किए गए भाषण से होता है। वे उपाधिप्राप्त युवक-युवतियों को सुनकर भविष्य निर्माण करते हुए देश के विकास में योगदान देने की अपील भाषण से करते हैं। उन्हें आश्चर्य होता है कि शिक्षा संस्थानों के वार्षिक समारोह में छात्रों से ज्यादा पुलिस सिपाहियों की संख्या अधिक होती है। शिक्षा संस्थानों में पनप रही गुंडागर्दी की ओर लेखक इशारा करते हुए कहते हैं कि युवकों में राजनीति के प्रति बढ़ती रुचि और अंधभक्ति से विश्वविद्यालय और शिक्षा संस्थानों के परिसर भी अपराध के अड्डे बन रहे हैं। असामाजिक तत्वों के उपद्रव के कारण ही शिक्षा संस्थानों में पुलिस सिपाहियों को आना पड़ रहा है ताकि छात्रों के गुटों में मार-पीट या खून-खराबा न हो सके। आज देश की अनेक शिक्षण संस्थाएं केवल दिखावटी और प्रदर्शन वृत्ति को बढ़ावा दे रही हैं। अध्ययन-अध्यापन से ज्यादा शिक्षा संस्थानें बड़ी-बड़ी इमारतें, आकर्षक फर्नीचर, रसायनशाला, बड़े-बड़े कार्यालय, ग्रंथालय आदि का दिखावा करके छात्रों को अपनी ओर आकर्षित कर रहे हैं। इस संदर्भ में वे स्कॉटलैण्ड की रानी 'मेरी' का उदाहरण देते हैं, जिसे कुछ कागजातों के आधार पर फाँसी की सजा दी गई थी।

रवींद्रनाथ त्यागी के अनुसार यह सच है कि अधिकांश विद्यार्थी सालभर कक्षा में उपस्थित नहीं रहते, कुछ छात्र परीक्षाओं में भी नहीं बैठते। फिर भी छात्रों को प्रथम, द्वितीय और तृतीय श्रेणी दी जाती है। उन्हें दी जा रही श्रेणियों के वर्गीकरण का आधार क्या है? फिर भी उन्हें डिग्री प्राप्त हो रही है। पहले समाज में शोषक और शोषित ये दो वर्ग थे। जमींदार शोषक वर्ग के प्रतिनिधि और किसान, मजदूर शोषित वर्ग के थे। यह समाजव्यवस्था समाजमान्य थी। लेकिन शिक्षा व्यवस्था में योग्य-अयोग्य छात्रों का परीक्षण किए बगैर ही डिग्री बाँटना कहाँ का न्याय है? यह समाजवाद के लिए बहुत ही अशोभनीय कृत्य है। लॉर्ड मेकॉले शायद

यह जानते होंगे कि शिक्षा व्यवस्था में छात्रों को उपद्रव मचाने से रोकने के लिए पुलिस सिपाहियों की आवश्यकता निर्माण हो सकती है।

रवींद्रनाथ त्यागी छात्रों को उनके उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएं देते हैं। लड़कियों को वैवाहिक जीवन में परस्पर सामंजस्य, एक-दूसरे का सहयोग करने और सम्मान करने की सलाह देते हैं। मनु का उदाहरण देते हुए कहते हैं कि मनु दूसरों की माता-बहनों का सम्मान करने के लिए प्रेरणा देते हैं। समाज में भी प्रेम, भाईचारे, परस्पर सहयोग, अपनेपन की भावना रखना ही समाजवाद है, यह नीतिपरक उपदेश देते हैं।

रवींद्रनाथ जी आगे कहते हैं कि लड़कों ने हमेशा देश एवं समाज की उन्नति के लिए रचनात्मक और सृजनात्मक कार्य करने में रुचि लेनी चाहिए। वे युवाओं को सुझाव देते हैं कि सरकारी बसों को जलाना, रेल की पटरी उखाड़ना, डाकखाने लूटना ऐसे हिंसक कार्यों के लिए उनका जीवन व्यर्थ न गंवाए। स्वार्थी नेता चाहे इसके लिए उन्हें कितना भी क्यों न उकसाए उनकी बातों को अनेदखा करना चाहिए। ये लोग केवल अपने स्वार्थ के लिए युवाओं का इस्तेमाल करते हैं। अखबारों में अपना नाम और फोटो आने के लिए दिखावा करते रहते हैं। राजनेता हमेशा विकास कार्यों के शुभारंभ और उसकी फोटों खिंचाने के लिए आगे रहते हैं। युवाओं ने ऐसे धूर्त और स्वार्थी राजनेताओं से दूर रहकर अपने भविष्य को बेहतर बनाने और देश हित में कार्य करने का संदेश रवींद्र त्यागी देते हैं। भारत की सांस्कृतिक विरासत और उनके आदर्शों का पालन करना, उनकी रक्षा एवं संवर्धन करना जरूरी है। लेकिन धर्म के कर्मकांड और अंधविश्वास को त्यागने की सीख भी वे देते हैं।

रवींद्रनाथ त्यागी छात्रों को दो वर्गों में विभाजित करते हैं, पहला वर्ग परिश्रमी छात्रों का है जो राजपत्रित अधिकारी, वकील, डॉक्टर, शिक्षक बनेंगे। वे सांसारिक जीवन में खुशहाल रहेंगे। दूसरा वर्ग उन छात्रों का है जिसमें दबू, कायर, चरित्रहीन छात्र आते हैं, जो समाज के साथ गद्दारी करेंगे, उन्हें कोई नहीं बदल सकता।

रवींद्रनाथ त्यागी अपने महाविद्यालयीन अध्यापन के दिनों को याद करते हुए कहते कि उन दिनों छात्रों में सभ्यता, शिष्टाचार कूट-कूटकर भरा था। गरीबी और तमाम संकटों के बावजूद भी छात्रों में अध्ययन के प्रति गहरी निष्ठा और लगाव था। वे विनयशील इतने थे कि चपरासी से लेकर अध्यापकों तक प्रणाम करते थे। सभी लड़कियों के साथ मर्यादापूर्ण और सम्मानजनक व्यवहार करना, उनके नैतिकता का हिस्सा था।

लेखक यह विश्वास के साथ कहते हैं कि पढ़ाई के पश्चात उन्होंने समाजहित, जनसेवा, देश के प्रति अपना कर्तव्य की जिम्मेदारी भी निभाई है। स्वयं के काबिलियत पर घर, परिवार, गाड़ी आदि भौतिक सुविधाएं भी प्राप्त की है। उन्हें विश्वास है कि सभी छात्र उनसे भी ज्यादा सम्मान और प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे। लेखक छात्रों को प्रगतिपथ पर आगे बढ़ने के लिए हार्दिक शुभकामनाएं देकर हँसते हुए कहते हैं, आप इस भाषण के बाद टमाटर और अंडों की बौछार न करें। मेरे भाषण समाप्ति के बाद शाकाहारी शिक्षकों के ऊपर टमाटर और मांसाहारी शिक्षकों के ऊपर अंडों की बरसात कर सकते हो। कार्यक्रम के अंत में वे कहते हैं कि मेरा उद्देश्य किसी के

दिल को ठेंस पहुँचाना नहीं है बल्कि सभी के दिलों में परिवर्तन की चेतना निर्माण करना है। आगे हास्य-व्यंग्यपूर्ण बात करते हुए कहते हैं मुझे शराब की दुकान के उद्घाटन पर भी भाषण देने के लिए जाना है। वे छात्रों से सविनय आवाहन करते हैं कि वे छात्रों की सेवा के लिए हमेशा उपस्थित रहेंगे। संयोजकों को दीक्षांत समारोह में आमंत्रित करने के लिए धन्यवाद देते हैं। सृष्टिकर्ता के प्रति सम्मान व्यक्त करके देश की एकता अखंडित रखने की प्रार्थना करके अपने भाषण से विराम लेते हैं।

2.3.4 स्वयंअध्ययन के लिए प्रश्न :

1. रवींद्रनाथ त्यागी का जन्म को हुआ।
 अ. 1 अगस्त, 1930 ब. 1 सितंबर, 1931
 क. 1 अक्तूबर, 1930 ड. 1 मई, 1931
2. रवींद्रनाथ त्यागी सेंट्रल गव्हर्नमेंट में पद पर कार्यरत थे।
 अ. लिपिक ब. जूनियर ऑफिसर
 क. सिनियर ऑफिसर ड. रोकड़िया
3. रवींद्रनाथ त्यागी के पिता का नाम था।
 अ. पं. तेजनाथ शर्मा ब. पं. ब्रिजनाथ शर्मा
 क. पं. देवदत्त शर्मा ड. पं. मुरारी दत्त शर्मा
4. रवींद्रनाथ त्यागी के माता का नाम था।
 अ. शर्मिला देवी ब. निरूपा देवी
 क. चमेली देवी ड. शांता देवी
5. रवींद्र त्यागी ने विश्वविद्यालय से बी.ए. की परीक्षा उपाधि प्राप्त की थी।
 अ. बनारस हिंदू ब. दिल्ली
 क. मुंबई ड. इलाहाबाद
6. रवींद्रनाथ त्यागी की बड़ी बहन का नाम था।
 अ. सुशीला ब. प्रेमलता
 क. सुगंधा ड. प्रेम
7. 'एक दीक्षांत भाषण' यह की रचना है।

- अ. शरतचंद्र जोशी ब. हरिशंकर परसाई
क. रवींद्रनाथ त्यागी ड. श्रीलाल शुक्ल
8. 'खुली धूप में नाव पर' यह की रचना है।
अ. रवींद्रनाथ त्यागी ब. श्रीलाल शुक्ल
क. हरिशंकर परसाई ड. लतीफ घोंघी
9. 'एक दीक्षांत भाषण' में रवींद्रनाथ त्यागी प्रमुख रूप से को संबोधित करते हैं।
अ. विद्यार्थियों ब. पर्यवेक्षकों
क. अध्यापकों ड. चपरासियों
10. नाटक पढ़कर रवींद्रनाथ त्यागी को संगीत में रुचि निर्माण हुई।
अ. इलियट ब. क्रोचे
क. शेक्सपियर ड. होमर

2.3.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ :

- * भूतपूर्व – गत, प्राचीन
- * दीक्षांत समारोह – विश्वविद्यालय अथवा शैक्षिक, धार्मिक संस्थान द्वारा आयोजित वार्षिक समारोह।
- * बटैलियन – पलटन
- * उपाधि – विशेष लक्षण, पदवी
- * समाजवाद – एक आर्थिक और राजनीतिक विचारधारा है। जिसमें पूँजीपतियों के निजी अधिकार के बजाए उत्पादन के संधानों जैसे कारखाने, जमीन, बैंक पर समाज या राज्य का सामूहिक अधिकार या नियंत्रण का समर्थन किया है।
- * साम्यवादी – एक आर्थिक और राजनीतिक विचारधारा है, जिसमें वर्गहीन और राज्यविहीन समाज की स्थापना करके निजी संपत्ति का विकेंद्रीकरण करके धन और संसाधनों का समान वितरण करने का समर्थन किया है।
- * लॉर्ड मँकाले – ब्रिटिश निबंधकार, इतिहासकार, राजनीतिज्ञ, शिक्षाशास्त्री थे। भारत में अंग्रेजी शिक्षा पद्धति का प्रारंभ करने का श्रेय इन्हें दिया जाता है।
- * भविष्यद्रष्टा – भविष्य वक्ता, जो भविष्य देखता है।

- * ताजी राते हिंद का मसौदा – भारतीय दंड संहिता।
- * भार्या – पत्नी, जोरू, बीवी।
- * परिधि – वलय, घेरा।
- * विधिवत – नियम और कानून के अनुरूप।
- * संहार – नाश, विध्वंस
- * विदेशी मुद्रा – परकीय चलन ।
- * सनातन – जिसका न आदि है न अंत, पुरातन परंपरानुसार चला आता हुआ।
- * विभीषण – अत्यंत भीषण, देशद्रोही
- * कुंजिया – चाबियाँ, तालियाँ, वह उपकरण जिससे ताला खुलता है।
- * समिष्टाहारी – जो निरामिष भोजी और मांस खाता हो, शाकाहारी और मांसाहारी भोजन करनेवाला।
- * कुटीर व्यवसाय – छोटा व्यवसाय, लघु व्यवसाय।

2.3.6 स्वयंअध्ययन प्रश्नों के उत्तर :

- | | |
|-----------------------------|--------------------------|
| 1. ब – 1 सितंबर, 1931 ई. | 2. क – सिनियर ऑफिसर |
| 3. ड – पं. मुरारीदत्त शर्मा | 4. क – चमेली देवी |
| 5. ड – इलाहाबाद | 6. ड – प्रेम |
| 7. क – रवींद्रनाथ त्यागी | 8. अ – रवींद्रनाथ त्यागी |
| 9. अ – विद्यार्थियों | 10. क – शेक्सपियर |

2.3.7 सारांश :

1. रवींद्रनाथ त्यागी हास्य-व्यंग्य निबंधकारों में सर्वश्रेष्ठ स्थान रखते हैं। रवींद्रनाथ त्यागी की दृष्टि समाज, राष्ट्र और जीवन के सूक्ष्म पहलुओं को स्पर्श करती है।
2. अपनी रचनाओं में सामान्य जीवन की छोटी-छोटी विसंगतियों को प्रकाश में लाते हैं। उनके व्यंग्य का उद्देश्य सिर्फ हास्य या मनोरंजन करना नहीं है तो सामाजिक एवं मानवी जीवन के अवमूल्यन पर करारा व्यंग्य करना है।
3. रवींद्रनाथ त्यागी का प्रारंभिक जीवन अभावों से भरा था। उन्होंने मेहनत-मजदूरी करके अपनी शिक्षा प्राप्त करके केंद्रीय लेखापाल विभाग के उच्च अधिकारी बने। वे बेहद सरल, सीधे, हँसमुख एवं

आकर्ष व्यक्तित्व के धनी थे। संवेदना, स्पष्टवादिता, समावादी विचारों के समर्थक उनके व्यक्तित्व के गुण थे।

4. 'एक दीक्षांत भाषण' इस हास्य-व्यंग्य कहानी के माध्यम से उन्होंने सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक क्षेत्र की विसंगतियों को उजागर किया है।
5. विवेच्य व्यंग्य कहानी में शिक्षा संस्थानों और विद्यार्थियों में पनप रहे असामाजिक तत्वों पर व्यंग्य करते हुए विद्यार्थियों को देश हित और समाज हित के लिए सहयोग देने की अपील करते हैं। शिक्षा क्षेत्र की अध्यापन, परीक्षा, छात्रों के वार्षिक मूल्यांकन पद्धति पर कटाक्ष डालते हैं।
6. राजनीति और राजनेताओं की असली चेहरे से वाकिफ करते हुए छात्रों ने दोनों से दूर रहकर अपना भविष्य बेहतर करने के लिए प्रयास करने का संदेश देते हैं।
7. भारतीय संस्कृति की विरासत का सम्मान करते हुए धर्म के कर्मकांड और अंधविश्वासों से दूर रहने को कहते हैं। भारतीय विवाह संस्कार की मार्मिक चिकित्सा करके युवक-युवतियों को वैवाहिक जीवन में परस्पर सामंजस्य, सहयोग और सम्मान करने का संदेश देते हैं।

2.3.8 स्वाध्याय :

अ) लघुत्तरी प्रश्न :

1. रवींद्रनाथ त्यागी का जीवन परिचय दीजिए।
2. रवींद्रनाथ त्यागी के व्यक्तित्व का परिचय दीजिए।
3. रवींद्रनाथ त्यागी के कृतित्व का परिचय दीजिए।
3. 'एक दीक्षांत भाषण' व्यंग्य-कहानी का उद्देश्य लिखिए।

आ) दीर्घोत्तरी प्रश्न :

1. रवींद्रनाथ त्यागी का जीवन, व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दीजिए।
2. 'एक दीक्षांत भाषण' व्यंग्य निबंध का कथानक लिखिए।
3. 'एक दीक्षांत भाषण' व्यंग्य समाज के युवाओं को जाग्रत करने का एक सफल प्रयत्न है, इस कथन को स्पष्ट कीजिए।

2.3.9 क्षेत्रीय कार्य :

1. 'एक दीक्षांत भाषण' व्यंग्य कहानी का मराठी में अनुवाद कीजिए।
2. 'आज का युवक : दशा और दिशा', 'समाज माध्यामों में उलझती युवा पीढ़ी', 'भारत की युवाओं के सामने चुनौतियाँ' इन विषय पर निबंध लेखन कीजिए।

3. 'भारत की शिक्षा व्यवस्था और युवा' इस विषय पर पथनाट्य तैयार करके उसका महाविद्यालय में मंचन कीजिए।

2.3.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए :

1. त्यागी रवींद्रनाथ, मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएँ, दिल्ली, ज्ञानभारती प्रकाशन।
2. त्यागी रवींद्रनाथ, शेष अवशेष, नई दिल्ली, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन।
3. त्यागी रवींद्रनाथ, प्रतिनिधि व्यंग्य, नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन।



3.4 मेरी मौत के बाद

– लतीफ़ घोंघी

अनुक्रम

3.4.1 उद्देश्य

3.4.2 प्रस्तावना

3.4.3 विषय विवेचन

3.4.3.1 लतीफ़ घोंघी का जीवन परिचय, व्यक्तित्व एवं कृतित्व

3.4.3.2 'मेरी मौत के बाद' व्यंग्य का परिचय

3.4.3.3 'मेरी मौत के बाद' व्यंग्य का कथानक

3.4.4 स्वयंअध्ययन के लिए प्रश्न

3.4.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

3.4.6 स्वयंअध्ययन प्रश्नों के उत्तर

3.4.7 सारांश

3.4.8 स्वाध्याय

3.4.9 क्षेत्रीय कार्य

3.4.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

3.4.1 उद्देश्य :

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप,

- * हास्य-व्यंग्यकार लतीफ़ घोंघी के जीवन परिचय, व्यक्तित्व और कृतित्व से परिचित होंगे।
- * समकालीन हिंदी व्यंग्यकारों में लतीफ़ घोंघी के व्यंग्य साहित्य के महत्त्व को जान सकेंगे।
- * लतीफ़ घोंघी के व्यंग्य साहित्य की विशेषताओं से परिचित होंगे।
- * लतीफ़ घोंघी की मशहूर व्यंग्य रचना 'मेरी मौत के बाद' के आशय से परिचित होंगे।
- * 'मेरी मौत के बाद' इस व्यंग्य रचना के माध्यम से मृत्यु के बाद भारतीय समाज की संवेदनहीनता, रिश्तेदारों, पड़ोसियों, परिचितों द्वारा दुःख का दिखावा, शोक सभाओं की औपचारिकता, शिक्षा क्षेत्र, समाचार पत्रों, साहित्य के क्षेत्र में आदि विसंगतियों को जान सकेंगे।

3.4.2 प्रस्तावना :

आधुनिक हिंदी व्यंग्य साहित्यकारों में लतीफ़ घोंघी का नाम विशेष उल्लेखनीय है। हिंदी में हरिशंकर परसाई के बाद व्यंग्य साहित्य को विपन्नावस्था से बाहर निकालकर उसे फिर से स्थापित करने में लतीफ़ घोंघी, रवींद्रनाथ त्यागी, के. पी. सक्सेना आदि आधुनिक व्यंग्यकारों का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। तीनों ने अपने विपुल हास्य-व्यंग्य रचनाओं से पाठकों का बेशुमार मनोरंजन भी किया और पूरे साहस के साथ समाज की विसंगतियों का पर्दाफाश भी किया। छत्तीसगढ़ के महासमुंद के निवास लतीफ़ घोंघी ने सन 1961 में अपनी पहली हास्य-व्यंग्य रचना 'गडगड़ाहट' से लिखना शुरू किया। उसके बाद उन्होंने 33 व्यंग्य-संग्रहों का लेखन किया। अपनी व्यंग्य रचनाओं में इन्होंने राजनीति, प्रशासन, सरकारी तंत्र और सामाजिक पाखंड के कारण आम व्यक्ति पर होने वाले अत्याचारों का पर्दाफाश किया है। व्यंग्य की आक्रमता से ज्यादा उनकी रचनाओं में मृदु कचोट होती है। इनकी व्यंग्य-रचनाओं में समाज में व्याप्त तमाम विकृतियों का गहराई के साथ वर्णन आता है। लतीफ़ घोंघी ने समाज का सूक्ष्म निरीक्षण और अपनी अनुभूति की सच्चाई पर अपनी व्यंग्य रचनाओं को लिखा है, इस कारण उसमें आम आदमी की पीड़ा का यथार्थ दर्शन होता है। सन 1974 में लिखे 'मृतक से क्षमा याचना सहित' इस व्यंग्य-संग्रह में 'मेरी मौत के बाद' यह व्यंग्य रचना संकलित है। इस व्यंग्य रचना में व्यक्ति की मृत्यु के बाद भारतीय समाज द्वारा संवेदना के दिखावटी व्यवहार पर व्यंग्य किया है।

3.4.3 विषय विवेचन :

3.4.3.1 लतीफ़ घोंघी का जीवन परिचय, व्यक्तित्व एवं कृतित्व :

3.4.3.1.1 लतीफ़ घोंघी का जीवन परिचय :

हिंदी के मशहूर हास्य-व्यंग्यकार लतीफ़ घोंघी का जन्म 28 सितंबर, 1935 ई. में छत्तीसगढ़ के महासमुंद जिले में एक सामान्य मुस्लिम परिवार में हुआ। उनका नाम अब्दुल करीम रखा था लेकिन घर में उन्हें

सब लतीफ नाम से पुकारते थे। उनके पिताजी का नाम उसमान और माताजी का नाम हुरबाई था। उनके पिताजी को सभी लोग आदर से दादा कहते थे। उनके पिताजी ठेकेदारी और पत्थर की खदानों में काम करते थे। साथ ही ईंट बनाने का भी काम करते थे। दस साल की उम्र में ही उनकी माताजी का देहांत हुआ। पिताजी ने फातमाबाई से दूसरी शादी की इस कारण वे मातृप्रेम से वंचित नहीं रहे। लतीफ अपनी माता-पिता की एकलौती संतान होने के कारण उनका बचपन बड़े लाड़-दुलार में बीता। बचपन से ही वे मृदु स्वभाव के थे।

उनकी प्राथमिक शिक्षा बेलसोंडा प्राथमिक पाठशाला से पूरी हुई। उसके बाद सन 1953 में उन्होंने महासमुंद में हायरसेकंडरी की परीक्षा उत्तीर्ण की। उसके बाद आर्थिक कठिनाई के कारण घोंघी जी चाहकर भी कॉलेज में पढ़ाई नहीं कर सके। उसके बाद उन्होंने अपने पिता की ठेकेदारी के काम में मदद करते-करते स्वयं अध्ययन कर अजमेर बोर्ड से इंटरमीडिएट की परीक्षा सन 1955 में उत्तीर्ण की। उसके बाद सागर विश्वविद्यालय से प्राइवेट छात्र के रूप में 1957 ई. में बी. ए. की डिग्री प्राप्त की। उसके बाद विधि महाविद्यालय-रायपुर में लॉ के लिए प्रवेश लिया। उसके साथ होम्यौपैथिक डिप्लोमा के लिए प्रवेश लेकर विशेष श्रेणी के साथ गुणवत्ता सूची में मध्यप्रदेश में दूसरा स्थान प्राप्त किया।

लतीफ घोंघी की अठारह वर्ष की आयु में श्रीमती जिनाबाई से शादी हुई। वह अशिक्षित थी लेकिन एक अच्छी गृहिणी और पति परायण पत्नी थी। लतीफ को एक लड़का और नौ लड़कियाँ ऐसे कुल दस संतानें थी। लतीफ ने अपने जीवन में पिताजी के पत्थर, ईंट की ठेकेदारी में मदद करने से काम की शुरुआत की थी। बाद में उन्होंने दर्जी काम, अध्यापक, फोटोग्राफी, भिलाई स्टील प्लांट में अप्पर डिविजन क्लर्क, वकालत, साहित्य लेखन आदि क्षेत्रों में काम किया। लेकिन वे नोकरी और साहित्य लेखन में स्थिर होकर 40 वर्षों तक काम करते रहे।

3.4.3.1.2 लतीफ घोंघी का व्यक्तित्व :

लतीफ घोंघी बचपन से ही कोमल स्वभाव के व्यक्ति रहे हैं। अपनी माता-पिता की एकलौती संतान होने के कारण उन्हें बचपन में खेलने-कूदने के लिए भाई-बहनों का साथ नहीं मिला, जिससे वे अंतर्मुख व्यक्तित्व के बने। वे बहुत ही कम बोलते हैं। उसमें बहुत ही संयम है। वे किसी भी बात पर जल्द प्रतिक्रिया नहीं देते, इसलिए हिंदी साहित्य में उनके दोस्त उन्हें 'मौनी व्यंग्यकार' कहकर पुकारते थे। लतीफ घोंघी इतने बड़े व्यंग्यकार होने के बावजूद भी उनमें घमंड, ईर्ष्या या महत्त्वाकांक्षा नज़र नहीं आती। वे बहुत ही विनम्र व्यक्ति हैं। उन्हें समाज के दिन-दलित, दुःखी और कमजोर वर्ग के प्रति गहरी संवेदना है। वे बेहद ही उदारशील व्यक्ति थे जो अपनी कमाई का रोजाना 115 रुपए का हिस्सा गरीबों के लिए बाँट देते थे। उनमें दूसरों के प्रति आदर भाव रहता था। उनके घर आने वाले व्यक्ति की वे बड़े ही आदर भाव से खातिरदारी करते थे। वे अपने वकालत हो या अध्यापकी पेशे में हमेशा स्वाभिमानी और ईमानदार रहे हैं। निरंतर परिश्रम के कारण ही वे अपने नौकरी, व्यवसाय को संभालते हुए साहित्य की सेवा कर सके। वे बहुत अनुशासन प्रिय व्यक्ति थे और उनकी दिनचर्या समय के अनुसार तय होती थी। वे धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति थे और मुस्लिम धर्म के प्रति उनमें आस्था थी और वे हिंदु मंदिरों में भी भगवान के दर्शन के लिए जाते थे। इस प्रकार वे उदारमतवादी और प्रगतिशील विचारधारा

के व्यक्ति थे। उनमें कलाओं के प्रति प्रेम था। फोटोग्राफी करना, सिनेमा देखना, नए फैशन डिजाइन के कपड़े बनाना, हार्मोनियम बजाना आदि उन्हें पसंद था। इस प्रकार लतीफ घोंघी का व्यक्तित्व बहुआयामी था।

3.4.3.1.3 लतीफ घोंघी का कृतित्व :

लतीफ घोंघी कलाओं से प्रेम करने वाले बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी थे। साहित्य लेखन की प्रेरणा उन्हें अपने दोस्त श्रीकृष्ण अग्रवाल से मिली। जो रायपुर की अदालत में वकालत करते थे। वकालत के साथ वे लिखते थे जिसका प्रभाव लतीफ घोंघी पर पड़ा। सन 1961 में आगरा की हास्य-पत्रिका 'नौक-झोंक' में उनकी 'गड़गड़ाहट' नामक पहली व्यंग्य-रचना प्रकाशित हुई और उसके बाद वे निरंतर लिखते रहे। उनके 33 व्यंग्य-संग्रह हैं जिसमें 500 से अधिक व्यंग्य रचनाएं शामिल हैं। उनकी संक्षिप्त जानकारी निम्नलिखित रूप में प्रस्तुत है -

* लतीफ घोंघी की व्यंग्य रचनाएं :

- | | |
|---|---|
| 1. तिकोने चेहरे (हास्य-उपन्यास 1964 ई.) | 2. उड़ते उल्लू के पंख (1968 ई.) |
| 3. मृतक से क्षमा याचना (1974 ई.) | 4. बीमार न होने का दुःख (1977 ई.) |
| 5. तीसरे बंदर की कथा (1977 ई.) | 6. संकटलाल जिंदाबाद (1978 ई.) |
| 7. मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएं 1978 ई.) | 8. बब्बू मियाँ कब्रिस्तान में (1979 ई.) |
| 9. किस्सा दाढ़ी का (1980 ई.) | 10. जूते का दर्द (1983 ई.) |
| 11. सोने का अंडा (1984 ई.) | 12. चोरी न होने का दुःख (1984 ई.) |
| 13. मुर्दानामा (1984 ई.) | 14. मेरी मौत के बाद (1984 ई.) |
| 15. बुद्धिजीवी की चप्पलें (1985 ई.) | 16. बधाइयों के देश में (1986 ई.) |
| 17. लॉटरी का टिकट (1986 ई.) | 18. व्यंग्य की जुगलबंदी (1987 ई.) |
| 19. सड़े हुए दाँत (1987 ई.) | 20. क्षमा करना हम, दुःखी है (1987 ई.) |
| 21. ज्ञान की दुकान (1988 ई.) | 22. बुद्धिमानों से बचिए (1988 ई.) |
| 23. मेरा मुख्य अतिथि होना (1989 ई.) | 24. ईमानदार की गोलियाँ (1990 ई.) |
| 25. मेरी प्रिय व्यंग्य रचनाएं (1991 ई.) | 26. नीर-क्षीर (1992 ई.) |
| 27. टूटी टाँग पर चिंतन (1992 ई.) | 28. व्यंग्य चिरतमब (1993 ई.) |
| 29. मंत्री हो जाने का सपना (1994 ई.) | 30. यत्र-तत्र (1995 ई.) |
| 31. मुर्गी चोर की कथा (1996 ई.) | 32. आदरणीय जी की कथा (1999 ई.) |

33. बतरस (2000 ई.) ।

इन व्यंग्य रचनाओं के साथ उन्होंने कुछ कविताएँ भी लिखी। उनकी अधिकांश कविताएँ और गजल तत्कालीन साहित्यिक पत्रिका में छपी थी। इसमें 'राष्ट्रधर्म', 'आकाश की चिमनियों के धुएं', 'पहली बारीश', 'कॉफी' आदि उल्लेखनीय कविता हैं...

*** पुरस्कार :**

लतीफ़ घोषी को उल्लेखनीय साहित्यिक योगदान के लिए विभिन्न साहित्यिक सम्मान प्राप्त हुए वह इस प्रकार है-

1. सन 1991 ई. में 'सृजनश्री सम्मान' से सम्मानित किया गया था। यह पहला पुरस्कार उन्हें व्यंग्यकार शंकर पुणतांबेकर के हाथों से दिया गया।
2. लखनऊ, उ.प्र. की अट्टहास हास्य-व्यंग्य पत्रिका की ओर से अट्टहास शिखर सम्मान - 2001 ई.
3. हिंदी भवन की ओर से सातवाँ 'व्यंग्य श्री सम्मान-2003 ई.
4. दिल्ली से 'अक्षर आदित्य सम्मान' आदि।

*** मृत्यु :**

हिंदी के प्रसिद्ध व्यंग्यकार लतीफ़ घोषी का निधन दिल का दौरा पड़ने के कारण २४ मई, २००५ ई. को महासमुंद (छत्तीसगढ़) में हुआ।

3.4.3.2 'मेरी मौत के बाद' व्यंग्य का परिचय :

हिंदी के आधुनिक व्यंग्यकार लतीफ़ घोषी लिखित 'मेरी मौत के बाद' यह व्यंग्य रचना उनके 'मृतक से क्षमा याचना' (1974 ई.) इस व्यंग्य-संग्रह में संकलित है। इस व्यंग्य रचना में लेखक ने किसी व्यक्ति के मृत्यु के बाद श्मशान में लोगों द्वारा किए जाने वाले पांखड़ पर व्यंग्य किया है। इस व्यंग्य में उन्होंने अपने मौत की कल्पना करते हुए एक शिक्षक के असहाय जीवन, उसके मन की पीड़ा और उसकी मृत्यु के बाद समाज की दिखावटी संवेदना पर मार्मिक व्यंग्य किया है। साथ ही इस व्यंग्य में शिक्षा क्षेत्र की दुरावस्था, साहित्यकारों, आलोचकों, समाचार पत्रों, शोक सभा आदि की विसंगतियों पर व्यंग्य किया है। भारतीय समाज की यह विडंबना रही है कि जीते जी यहाँ इंसान की कद्र की नहीं जाती लेकिन उसकी मौत के बाद संवेदना जताने का ढोंग किया जाता है। श्मशान में रिश्तेदार, पड़ोसी और परिचित लोग झूठे आँसू बहाने और दिखावटी संवेदना दिखाते हैं। मृत्यु के बाद की शवयात्रा या शोक सभाओं में लोग केवल अर्थहीन औपचारिकता निभाते हैं। लेखक ने प्रथम पुरुष शैली में अपने मन की आँखों से स्कूल के अध्यापक की मृत्यु के बाद हेडमास्टर, सहयोगी शिक्षकों की प्रतिक्रियाओं और उनके आचरण पर इसमें करारा व्यंग्य किया है।

3.4.3.3 'मेरी मौत के बाद' व्यंग्य का कथानक :

'मेरी मौत के बाद' इस व्यंग्य रचना में व्यंग्यकार लतीफ घोंघी ने अपनी मौत की कल्पना करके उसका लेखन किया है। लतीफ घोंघी जीवन के प्रारंभिक समय में एक सरकारी स्कूल में शिक्षक के रूप में नौकरी करते थे। इस कारण शिक्षा क्षेत्र के माहौल से बखूबी परिचित थे। उन्होंने एक शिक्षक की मौत की कल्पना करके मनुष्य के स्वार्थी प्रवृत्ति पर व्यंग्य किया है। इसी व्यंग्य में वे साहित्य, शिक्षा, पत्रकारिता, शोक सभा, रिश्तेदारी आदि की विसंगतियों पर मार्मिक व्यंग्य करते हैं।

लतीफ घोंघी कहते हैं कि आधुनिक जीवन में मनुष्य बहुत स्वार्थी हो चुका है। हमारे परिवार के रिश्ते भी अर्थ केंद्रित हो चुके हैं। 'मेरी मौत के बाद' व्यंग्य रचना में एक अध्यापक की मौत हो जाती है तो उसके परिवार के सदस्य, रिश्तेदार, पड़ोसी और स्कूल के शिक्षक की दिखावटी संवेदना पर व्यंग्य करते हैं। इसमें उनकी पत्नी, स्कूल का हेडमास्टर, मौलाना सैफुद्दीन और उनकी मोटी लड़की, धोबी, मकान मालिक, दुकानदार, स्कूल के अन्य अध्यापक गण, सौ-डेढ़-सौ छात्र आदि अध्यापक की मौत पर नकली आँसू बहाते हैं। सभी लोक किसी-न-किसी स्वार्थ के कारण उनकी अंतिम यात्रा (जनाजे) में शामिल हुए हैं। वे कहते हैं कि सबसे पहले मेरी पत्नी बहुत रोई और कुछ देर बाद सामान्य होकर उसने पानी पिया। अपनी आदत के अनुसार उसने मेरे कपड़ों की जेबे तलाशी। मेरे एक कपड़े के जेब में मेरी बैंक की पासबुक थी। उसने बैंक की पासबुक खोलकर देखा। उसमें बैंक का ब्याज जोड़कर कुल पाँच रुपये चालीस पैसे ही जमा थे। उसे जैसे ही यह पता चला वह जोर से दहाड़ मारकर फिर से बेहोश हो गई और लोगों को लगा कि उसे मेरे जाने का दुःख बर्दाश्त नहीं हुआ है।

लेखक आगे कहते हैं कि मेरी मौत की खबर सुनकर सबसे पहले हमारे स्कूल के हेडमास्टर मेरे घर पहुँचे। वे घर आकर खूब रोये। लेकिन यह रोना मेरे प्रेमवश नहीं था बल्कि मैंने उनसे सौ रुपए उधार ले रखे थे। अब मेरे जाने के बाद वह सौ रुपए भी डूब गए, इसी दुःख के कारण वह रो रहे थे और लोग उसे संवेदनशील व्यक्ति समझ रहे थे। मास्टर जी मौलाना सैफुद्दीन की लड़की को अंग्रेजी साहित्य पढ़ाते थे। वह बहुत मोटी थी। मोटी होने के बावजूद मास्टर जी उसे अंग्रेजी का प्रसिद्ध नाटक जूलियस सीजर पढ़ा रहे थे। इस कारण वह मास्टर जी से स्नेह करती थी और इसी कारण वह मास्टर जी के जनाजे में पहुँची थी। उसके साथ उसके पिताजी मौलाना सैफुद्दीन भी आए थे। वे ऊपर से तो दुःखी होने का नाटक कर रहे थे लेकिन अंदर-ही-अंदर खुशी से उछल रहे थे। क्योंकि अब उन्हें मास्टर जी को अपनी बेटी के ट्यूशन की एक माह की फीस देनी नहीं पड़ेगी।

मास्टर जी के जनाजे में बहुत से लोग शामिल हुए थे लेकिन सभी को अब औपचारिक रस्मे पूरी होने का इंतजार था। क्योंकि ये काम निपटाकर अपने-अपने घर जाने की प्रतीक्षा में थे। जनाजे में शामिल हुए लोगों में से एक व्यक्ति ने कहा कि ये खुदा, मरने के बाद किसी को इतना भारी मत करना कि दूसरों को तकलीफ हो जाए। अर्थात् मास्टर जी का जनाजा वजन में भारी था और उसे उठाने में लोगों को परेशानी हो रही थी। जनाजे में मास्टर साहब के सौ-डेढ़-सौ विद्यार्थी भी शामिल हुए थे। वे जनाजे के पीछे एक जुलूस की तरह

चल रहे थे। इन सभी विद्यार्थियों को मास्टर साहब एक्स्ट्रा क्लास के लिए बुलाया करते थे। इन विद्यार्थियों का मास्टर जी के प्रति स्नेह या आदर नहीं था बल्कि मास्टर जी की मौत के बाद अब एक्स्ट्रा क्लास का झंझट खत्म होने की खुशी की वह प्रतिक्रिया ही थी। लेखक को लगता है कि शिक्षा विभाग का जनाजा किसी राजनीतिक जनाजे से कम नहीं होता।

‘मेरे मौत के बाद’ इस व्यंग्य रचना में मास्टर जी की मौत के बाद सभी अपनी संवेदना व्यक्त करने आते हैं लेकिन यह मास्टर जब जीवित थे तो कोई उनकी परेशानी को समझता नहीं। उनकी तनखाह केवल २०५ रुपये थी जिसमें घर का गुजारा करना मुश्किल होता था। अपने परिवार की आर्थिक जरूरतों को पूरा करने के लिए उन्हें अपने हेडमास्टर और दुकानदार से हमेशा उधार लेना पड़ता था। घर-गृहस्थी में आर्थिक सहायता हो इसलिए वे स्कूल के बाद घर पर ट्यूशन भी लेते थे। इतनी कम तनखाह होने के कारण वे कभी-भी अपनी पत्नी की जरूरतों को पूरा नहीं कर सके और इसी कारण उनकी पत्नी को, उनकी जेबे टटोलने की आदत लगी थी। मरते समय उनके बैंक में केवल पाँच रुपए चालीस पैसे थे जो भारतीय अध्यापकों की दुरावस्था को ही दर्शाती है। लेखक घोषी कहते हैं कि, ‘मरने के बाद नेक इंसान के चेहरे पर खुदा का नूर बरसता है लेकिन मुझे इस बात का शक था कि जिंदगी भर दो सौ पाँच रुपया कमानेवाले मास्टर के चेहरे पर मौत के बाद कभी खुदा का नूर बरस सकता है।’ अर्थात् भारतीय शिक्षकों की स्थिति बहुत ही शोचनीय है।

लेखक घोषी ने इस व्यंग्य रचना में साहित्यकारों और आलोचकों की प्रवृत्तियों का भी वर्णन किया है। मास्टर जी के महौल्ले में जनाब इनायती अली ‘जख्मी’ नाम के हिंदी कवि थे। लोग उनकी कविताओं को पसंद नहीं करते थे फिर भी वे लोगों को जबरन अपनी कविता सुनाते थे। मास्टर साहब जी जब भी कवि जनाब इनायती अली को देखते तो उनकी कविताओं से घबराकर घर में ही छिप जाते थे। लेकिन अब मृत्यु के बाद उनका कोई बस चलने वाला नहीं था। अब उन्हें उनकी कविताएं सुनने के सिवाय दूसरा विकल्प ही नहीं था। लेखक घोषी ने आगे हिंदी के प्रकाशकों और आलोचकों की प्रवृत्तियों पर व्यंग्य कसा है। वे कहते हैं कि कवि हो या व्यंग्य लेखक हमेशा प्रकाशक और आलोचकों के बीच फँस जाता है। मास्टर साहब बताते हैं कि जनाब इनायती अली ‘जख्मी’ जी की कविता जब भी किसी साप्ताहिक पत्रिका में छपने के लिए जाती तो उन्हें सधन्यवाद वापस भेज दिया जाता था। मास्टर जी कहते हैं कि अब मेरी कब्र के पड़ोस में ही डॉ. जफरअली हैदरी कब्र में लेटे हुए हैं। वे हिंदी के बहुत बड़े आलोचक और ‘प्रगतिशील’ साप्ताहिक के संपादक थे। वे हमेशा कवि इनायत अली की कविताओं को छापने से इंकार करते थे क्योंकि उन्हें यह कविता छापने योग्य नहीं लगती थी। मास्टर जी की कब्र अब इन कवि और आलोचकों के बीच में ही है जिससे उन्हें डर है कि वे अब उन्हें रात में एक घंटा भी सोने नहीं देंगे।

मास्टर जी आगे कहते हैं कि मेरी कब्र के बाजू में ही एक शिक्षा अधिकारी भी कब्र में लेटे हुए हैं। हाल ही में उन्होंने कुएं में कूदकर खुदकुशी की थी। उन्होंने आत्महत्या क्यों की इसका कारण किसी को मालूम नहीं था। लेकिन लोगों ने अफवाह फैलाई थी कि मास्टरों के तबादलों में की गई गड़बड़ी के कारण उन्हें गिरफ्तार किया जानेवाला था। रिश्तखोरी के आरोप और गिरफ्तारी से सामाजिक इज्जत खाक में मिल जाएगी, इसी डर

से उन्होंने खुदकुशी की है, ऐसी चर्चा लोगों में थी। लेकिन शिक्षा विभाग को इससे कोई लेना-देना नहीं था, न उन्हें उस शिक्षा अधिकारी की मौत के प्रति संवेदना थी। वे इस घटना को एक खुदकुशी की औपचारिक घटना से देखते हैं और दूसरे ही दिन डी.एस.ई. द्वारा एक काबिल और ट्रेंड मास्टर की नियुक्ति उसके स्थान पर की जाती है।

मास्टर जी आगे बताते हैं कि समाज में पत्रकारिता की अपनी एक बहुत बड़ी जिम्मेदारी है। लोकतंत्र के चौथे स्तंभ के रूप में लोगों के हितों, अधिकारों की रक्षा करना उसका मकसद है। लेकिन समाचार पत्र भी आज कल केवल सनसनीखेज तमाशा करने में ही अपने कार्य की धन्यता मान रहे हैं। किसी भी खबर को मिर्च-मसाला लगाकर भूनाने में ही वे खुद को धन्य मानते हैं। मास्टर जी की देहांत की खबर को भी ये अखबार वाले मिर्च-मसाला लगाकर छापते हैं। मास्टर जी की मौत के बाद दूसरे दिन अखबार में खबर थी कि, 'पिछले रविवार को हृदय-गति रूक जाने से श्री. लतीफ घोंघी का देहावसान हो गया। उनकी शव-यात्रा में विद्यार्थी की संख्या अधिक थी, वे अपने पीछे पाँच रुपये प्राविडेंट फण्ड और खूबसूरत बीवी छोड़ गये हैं।' इस तरह मास्टर साहब समाचार पत्रों पर व्यंग्य करते हैं।

मास्टर जी अंत में उनकी मृत्यु के बाद आयोजित शोक सभा की औपचारिकता पर भी व्यंग्य करते हैं। शोक सभा में अक्सर मरनेवाले व्यक्ति से जुड़ा व्यक्ति अपनी यादों को बहुत ही भावनाशील आवाज और लहजे में व्यक्त करते हैं। लेकिन मास्टर जी की शोक सभा में बहुत से लोग कुछ बढ़ा-चढ़ाकर ही यादें व्यक्त कर रहे थे। जीते-जी जिन्होंने कभी हालत भी नहीं पूछे वे भी शोक सभा में बढ़-चढ़कर बोल रहे थे। स्कूल के हेडमास्टर शोक सभा में मास्टर जी की मौत पर अफसोस जताते हुए उनका जीवन उनके लिए, स्कूल के लिए और विद्यार्थियों को कितना महत्वपूर्ण होने की बात कहते हैं। नई पीढ़ी के प्रगतिशील विकास के लिए उन्हें अभी और जीवन मिलना चाहिए था। उनके जाने से हमारी जो क्षति हुई हो उसकी पूर्ति करना असंभव है। परमात्मा उनकी आत्मा को शांति प्रदान करें। इस प्रकार शोक सभा में लोग औपचारिक श्रद्धांजलि देकर अपने-अपने घर चले जाते हैं।

3.4.4 स्वयंअध्ययन के लिए प्रश्न :

अ) निम्नलिखित प्रश्नों के सही विकल्प चुनिए ।

1. 'मेरी मौत के बाद' इस व्यंग्य रचना के लेखक कौन है?
 अ. लतीफ घोंगी
 ब. शरद जोशी
 क. रवींद्र सक्सेना
 ड. डॉ. सुदर्शन मजीठिया
2. 'मेरी मौत के बाद' यह व्यंग्य-रचना लतीफ घोंघी के कौनसे व्यंग्य-संग्रह में शामिल है?
 अ. यत्र-तत्र
 ब. मृतक से क्षमा याचना
 क. बतरस
 ड. व्यंग्य चरितम्

- आ) निम्नलिखित प्रश्नों के सही विकल्प चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

- 79

- क. रोमियो और जूलियट ड. मैकबेथ
6. मास्टर जी की कविताओं से डरकर घर में छिप जाते थे।
- अ. जनाब सागर साहब ब. जनाब फारूक
- क. जनाब इनायती अली ड. जनाब बशीर बद्र
7. कवि जनाब इनायती अली अपने नाम के साथ उपनाम लगाते थे।
- अ. घायल ब. जख्मी
- क. शायर ड. दिलबर
8. मास्टर जी के कब्र के पास आलोचक की कब्र थी।
- अ. इनायती अली ब. मौलान सफुद्दीन
- क. जनाब सागर ड. डॉ. जफरअली हैदरी
9. डॉ. जफरअली हैदरी साप्ताहिक के संपादक थे।
- अ. प्रगतिशील ब. नया ज्ञान
- क. अट्टाहस ड. झरोखे
10. समाचार पत्रों में मास्टर जी की मौत के बाद उन्होंने पत्नी को रुपये प्रोविडेंट फंड छोड़ने की खबर आई थी।
- अ. 5 ब. 1000
- क. 10 ड. 100

3.4.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ :

- * **मौलाना** : इस्लाम में विद्वानों, शिक्षकों और धर्मशास्त्रियों के प्रति सम्मान व्यक्त करने के लिए उन्हें मौलाना कहा जाता है।
- * **जूलियस सीजर** : अंग्रेजी नाटककार विलियम शेक्सपियर द्वारा लिखा एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक और राजनीतिक पृष्ठभूमि पर आधारित नाटक है। इसमें प्राचीन रोम के तानाशाह जूलियस सीजर की हत्या, उसके दोस्त ब्रूटस द्वारा विश्वासघात करने और उसके बाद हुए भयानक गृहयुद्ध का मार्मिक वर्णन किया है।
- * **जनाजा** : शव, अर्थाँ या कफन में लिपटी हुई लाश होता है। इस्लाम में मृतक के शरीर को एक संदूक (ताबूत) में रखकर दफनाने के लिए ले जाया जाता है, उसे जनाजा कहते हैं।

- * **तनखाह** : वेतन, पगार, मेहनताना।
- * **नूर** : प्रकाश, रोशनी, चमक ।
- * **कब्र** : वह गड्ढा या जगह जहाँ किसी मृतक के शरीर को दफनाया जाता है। इस्लाम में इसे कब्र या मज़ार भी कहते हैं।
- * **तबादला** : किसी कर्मचारी या अधिकारी को एक स्थान, पद या विभाग से हटाकर दूसरे स्थान पर नियुक्त करना।
- * **डी. एस. ई.** : डिस्ट्रीक सुपरीटेंडेंट ऑफ एज्यूकेशन का संक्षिप्त रूप है, जिसे हिंदी में जिला शिक्षा अधिकारी कहते हैं।
- * **हृदय गति रूकना** : दिल का दौरा पड़ना, जिसे अंग्रेजी में हार्ट अटैक कहा जाता है।
- * **प्राविडेंट फंड** : यह सरकारी कर्मचारियों की बचत योजना होती है, जिसमें जमा रुपए कर्मचारी को सेवानिवृत्ति के बाद दिए जाते हैं।
- * **शोक सभा** : किसी के मृत्यु के बाद उस व्यक्ति को श्रद्धांजलि देने के लिए आयोजित सभा को शोक सभा कहते हैं। इसमें मृतक के व्यक्तित्व, कार्य के संदर्भ में परिचित, रिश्तेदार अपनी यादें साझा करते हैं।

3.4.6 स्वयंअध्ययन प्रश्नों के उत्तर :

अ) वस्तुनिष्ठ प्रश्न के उत्तर :

- | | |
|------------------|---------------------------|
| 1. अ. लतीफ घोंघी | 2. ब. मृतक से क्षमा याचना |
| 3. क. गड़गड़ाहट | 4. अ. अध्यापक |
| 5. क. लतीफ घोंघी | |

आ) वस्तुनिष्ठ प्रश्न के उत्तर :

- | | |
|-------------------|------------------------|
| 1. क. २०५ | 2. अ. ५ रुपये ४० पैसे |
| 3. ब. जेबे टटोलने | 4. ड. १०० |
| 5. अ. जूलियस सीजर | 6. क. जनाब इनायती अली |
| 7. ब. जख्मी | 8. ड. डॉ. जफरअली हैदरी |
| 9. अ. प्रगतिशील | 10. अ. 5 |

3.4.7 सारांश :

1. हिंदी में हरिशंकर परसाई के बाद व्यंग्य साहित्य को विपन्नावस्था से बहार निकालकर उसे फिर से

स्थापित करने में लतीफ़ घोंघी, रवींद्रनाथ त्यागी, के. पी. सक्सेना आदि आधुनिक व्यंग्यकारों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

2. छत्तीसगढ़ के महासमुंद के निवासी लतीफ़ घोंघी ने सन 1961 में अपनी पहली हास्य-व्यंग्य रचना 'गडगड़ाहट' से उन्होंने लिखना शुरू किया। उसके बाद उन्होंने 34 व्यंग्य-संग्रहों का लेखन किया।
3. लतीफ़ घोंघी की व्यंग्य रचनाओं में राजनीति, प्रशासन, सरकारी तंत्र और सामाजिक पाखंड के कारण आम व्यक्ति पर होने वाले अत्याचारों का पर्दापाश होता है। व्यंग्य की आक्रमता से ज्यादा उनकी रचनाओं में मद्द कचोट होती है।
4. हिंदी के आधुनिक व्यंग्यकार लतीफ़ घोंघी लिखित 'मेरी मौत के बाद' यह व्यंग्य रचना उनके 'मृतक से क्षमा याचना' (1974 ई.) इस व्यंग्य-संग्रह में संकलित है। इसमें लेखक ने प्रथम पुरुष शैली में अपनी ही मौत की कल्पना करके स्कूल के अध्यापक की मृत्यु के बाद पत्नी, पड़ोसी, हेडमास्टर, सहयोगी शिक्षकों की प्रतिक्रियाओं और उनके आचरण पर करारा व्यंग्य किया है।
5. 'मेरी मौत के बाद' व्यंग्य रचना में कवि जनाब इनायती अली, संपादक एवं आलोचक डॉ. जफरअली हैदरी के माध्यम से साहित्य क्षेत्र की विसंगतियों का पर्दापाश किया है। कवि के द्वारा प्रतिभाहीन कवि और आलोचक के जरिए घमंडी साहित्य समीक्षकों की प्रवृत्तियों पर व्यंग्य कसा है।
6. उन्होंने मास्टर जी की दयनीय हालत के द्वारा भारतीय अध्यापकों के आर्थिक संकट और शिक्षा अधिकारी की खुदकुशी द्वारा शिक्षा क्षेत्र की विसंगतियों पर भी करारा व्यंग्य किया है।
7. मास्टर जी की मौत की खबर को सनसनीखेज बनाने में अपनी मर्यादा का उल्लंघन करने वाले पत्रकार और उनकी मिर्च-मसालावाली पत्रकारिता पर भी लतीफ़ घोंघी करारा व्यंग्य कसते हैं।
8. अंत में मास्टर जी की मौत के बाद आयोजित शोक सभा में लोगों की औपचारिक संवेदना, दिखावटी आँसू बहाना, यादों को बढ़ा-चढ़ाकर बताना आदि पर भी यह व्यंग्य रचना कठोर प्रहार करते हुए भारतीय लोगों की दिखावटी और अवसरवादी प्रवृत्ति पर व्यंग्य करती है।

3.1.8 स्वाध्याय :

अ) लघुत्तरी प्रश्न।

1. लतीफ़ घोंघी का जीवन परिचय लिखिए।
2. लतीफ़ घोंघी के कृतित्व का परिचय दीजिए।
3. लतीफ़ घोंघी के व्यक्तित्व का परिचय दीजिए।
4. 'मेरी मौत के बाद' व्यंग्य का उद्देश्य लिखिए।

5. 'मेरी मौत के बाद' व्यंग्य रचना में साहित्यिक व्यंग्य का विवेचन कीजिए।
6. 'मेरी मौत के बाद' व्यंग्य रचना में शैक्षिक व्यंग्य का विवेचन कीजिए।
7. 'मेरी मौत के बाद' व्यंग्य रचना में पत्रकारिता पर किए गए व्यंग्य का विवेचन कीजिए।
8. 'मेरी मौत के बाद' व्यंग्य रचना में शोक सभा पर किए गए व्यंग्य का विवेचन कीजिए।

आ) दीर्घोत्तरी प्रश्न।

1. लतीफ़ घोषी का जीवन परिचय देकर उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व को स्पष्ट कीजिए।
2. 'मेरी मौत के बाद' व्यंग्य रचना की कथावस्तु अपने शब्दों में लिखिए।
3. 'मेरी मौत के बाद' व्यंग्य रचना भारतीय शिक्षा व्यवस्था, साहित्य क्षेत्र और पत्रकारिता क्षेत्र पर करारा व्यंग्य करती है, स्पष्ट कीजिए।
4. 'मेरी मौत के बाद' व्यंग्य रचना में मास्टर जी की मृत्यु के बाद क्या-क्या होता है? स्पष्ट कीजिए।

3.4.9 क्षेत्रीय कार्य :

1. 'मेरी मौत के बाद' व्यंग्य रचना पर नुक्कड़ नाटक बनाकर उसे महाविद्यालय में पेश कीजिए।
2. 'मेरी मौत के बाद' व्यंग्य रचना का मराठी में अनुवाद कीजिए।
3. 'भारतीय अध्यापकों की दुर्दशा', 'भारतीय शिक्षा व्यवस्था की दुर्दशा' इस विषय पर निबंध लिखिए।
4. भारत के शिक्षकों की दुरावस्था पर कविता लिखने का प्रयास कीजिए।

3.4.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए :

1. चंदर सुभाष, हिंदी व्यंग्य का इतिहास, (सं. 2027), नई दिल्ली, भावना प्रकाशन ।
2. पाठक, स्नेहलता (डॉ.), व्यंग्य शिल्पी : लतीफ़ घोषी', (सं. 1995 ई.), कानपुर, श्याम प्रकाशन, फिल्म कॉलोनी-302003
3. वैद्य भगवान 'प्रखर', अमरकृति और बतासा 51 व्यंग्य रचनाएं, (सं. 2023 ई.) नई दिल्ली, डायमंड बुक्स पब्लिकेशन।



3.5 एक जीते हुए नेता से मुलाकात

– श्रीलाल शुक्ल

अनुक्रम

3.5.1 उद्देश्य

3.5.2 प्रस्तावना

3.5.3 विषय विवेचन

3.5.3.1 श्रीलाल शुक्ल का जीवन परिचय, व्यक्तित्व एवं कृतित्व

3.5.3.2 'एक जीते हुए नेता से मुलाकात' व्यंग्य का परिचय

3.5.3.3 'एक जीते हुए नेता से मुलाकात' व्यंग्य का कथानक

3.5.4 स्वयंअध्ययन के लिए प्रश्न

3.5.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

3.5.6 स्वयंअध्ययन प्रश्नों के उत्तर

3.5.7 सारांश

3.5.8 स्वाध्याय

3.5.9 क्षेत्रीय कार्य

3.5.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

3.5.1 उद्देश्य :

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप,

- * व्यंग्यकार श्रीलाल शुक्ल के जीवन परिचय, उनके व्यक्तित्व और कृतित्व से परिचित होंगे।
- * व्यंग्यकार श्रीलाल शुक्ल के व्यंग्य के साहित्यिक महत्त्व को जान सकेंगे।
- * हिंदी व्यंग्य साहित्य में श्रीलाल शुक्ल के योगदान से परिचित होंगे।
- * प्रस्तुत व्यंग्य के माध्यम से सामाजिक एवं राजनीतिक विसंगतियों से परिचित होंगे।
- * प्रस्तुत व्यंग्य के माध्यम से भारतीय राजनेताओं की स्वार्थी वृत्ति, अवसरवादिता, दिखावटीपन, भ्रष्टाचारियों से अवगत होंगे और देश की राजनीति में देशभक्त, जनता की समस्याओं को जाननेवाले, समाज हितैषी नेता की जरूरत होती है, इस बात को समझेंगे।

3.5.2 प्रस्तावना :

स्वातंत्र्योत्तर कालखंड के हिंदी व्यंग्य साहित्य में श्रीलाल शुक्ल का नाम विशेष आदर के साथ लिया जाता है। 'राग दरबारी' (1968 ई.) इस व्यंग्यात्मक उपन्यास ने उन्हें कालजयी प्रसिद्धि दिलाई है। भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में राजनीतिक और सामाजिक विसंगतियों पर बेबाकी व्यंग्यात्मक आघात करने के लिए 'राग दरबारी' उपन्यास हिंदी साहित्य में मिल का पत्थर माना जाता है। श्रीलाल शुक्ल ने हिंदी व्यंग्य साहित्य को हास्य तक सीमित न रखकर व्यवस्था की नाकामी, सामाजिक पतन और राजनीतिक पाखंड का पर्दापाश करने का सशक्त माध्यम बनाया। उनके लेखन में व्यंग्य की गहराई है, जो केवल व्यक्ति को नहीं बल्कि पूरी व्यवस्था पर प्रहार करती है। उनकी भाषा बहुत सहज, सरल और व्यंग्योक्तियों से भरपूर होती है। लोकभाषा के शब्दों, मुहावरों और प्रतीकों का सटीक प्रयोग उनकी रचनाओं में देखने मिलता है। 'एक जीते हुए नेता से मुलाकात' इस व्यंग्य रचना में एक नेता के माध्यम से भारतीय राजनीति और जनता की अवसरवादी वृत्ति का पर्दापाश किया है। इस व्यंग्य रचना के माध्यम से राजनीतिक क्षेत्र की विसंगतियाँ, राजनेता का भ्रष्ट और अवसरवादी चरित्र, नेता की भाषणबाजी, वादों और घोषणाओं की झूठी तसल्ली, चुनाव के बाद जनता को भूल जाना, स्वार्थ से अपनी तरक्की करना आदि प्रवृत्तियों पर श्रीलाल शुक्ल ने कठोर प्रहार किया है।

3.5.3 विषय विवेचन :

3.5.3.1 श्रीलाल शुक्ल का जीवन परिचय, व्यक्तित्व एवं कृतित्व :

3.5.3.1.1 श्रीलाल शुक्ल का जीवन परिचय :

स्वातंत्र्योत्तर हिंदी साहित्य के लोकप्रिय व्यंग्यकार श्रीलाल शुक्ल का जन्म 31 दिसंबर, 1925 ई. को उत्तर प्रदेश के लखनऊ जिले में स्थित अतरौली गाँव में हुआ। उनका परिवार बहुत ही सुसंस्कृत था। उनके दादाजी का नाम पं. गदाधर शुक्ल था, जो संस्कृत, उर्दू और फारसी भाषा के विद्वान थे। उन्हें संगीत और कसरत

के प्रति विशेष प्रेम था। उनके पिता पं. ब्रजकिशोर शुक्ल किसान थे लेकिन उन्हें भी संस्कृत, हिंदी और उर्दू का व्यावहारिक ज्ञान था। इस कारण बचपन में ही श्रीलाल शुक्ल का संस्कृत लिखने और बोलने का अभ्यास हुआ था। उन्हें बचपन से ही साहित्य के प्रति विशेष प्रेम था। किताबें पढ़ना और कविता लिखना उन्होंने बहुत कम आयु में शुरू किया था। श्रीलाल शुक्ल की माताजी को भी हिंदी और गणित का अच्छा ज्ञान था। इससे श्रीलाल शुक्ल की प्रारंभिक शिक्षा घर पर और माध्यमिक शिक्षा मोहनलालगंज कस्बे में हुई। इंटरमीडिएट की पढ़ाई कानपुर के कान्यकुब्ज कॉलेज से पूरी की। सन 1945 में इलाहाबाद विश्वविद्यालय से बी.ए. और लखनऊ विश्वविद्यालय में एम. ए. की उपाधि प्राप्त की।

उसके बाद उन्होंने कानून की पढ़ाई के लिए प्रवेश लिया लेकिन घर की आर्थिक स्थिति नाजूक होने के कारण वह पढ़ाई पूरी नहीं कर पाए। कान्यकुब्ज इंटर कॉलेज में अधिव्याख्याता के रूप में उन्होंने नौकरी शुरू की। तब कानपुर के एक सुसंस्कृत परिवार की बेटी गिरजा देवी से 1948 ई. में उनका विवाह हुआ। उन्हें चार संतानें हुईं, जिनमें तीन लड़कियाँ और एक बेटा था। सन 1949 को उनका चयन राज्य नागरी सेवा परीक्षा में हुआ। अपनी कड़ी मेहनत के दम पर वे पदोन्नति के जरिए आई.ए.एस. अधिकारी बने। 30 जून, 1983 ई. को वे उत्तर प्रदेश के राज्य प्रशासनिक सेवा से सेवा निवृत्त हुए। अपने प्रशासकीय कामों की व्यस्तता के बावजूद वे हिंदी साहित्य की सेवा करते रहे। हिंदी साहित्य के व्यंग्य लेखन में भी उन्होंने अपना शीर्ष स्थान प्राप्त किया।

3.5.3.1.2 श्रीलाल शुक्ल का व्यक्तित्व :

श्रीलाल शुक्ल का व्यक्तित्व बहुआयामी था। बचपन से ही उनपर सुसंस्कार होने के कारण एक सुलझे हुए, मेहनती, सत्य निष्ठ व्यक्ति के रूप में उनकी ख्याति रही। बचपन से ही उन्होंने गरीबी का सामना किया था इस कारण उनके व्यक्तित्व में एक जुझारूपन और संघर्ष करने की अद्भुत क्षमता दिखाई देती है। उन्हें अपने दादाजी, माता-पिता और बड़े भाई के प्रति अगाध श्रद्धा थी और अपने पत्नी, बच्चों से बहुत प्रेम था। प्रशासकीय कार्य करते समय वे एक अनुशासनप्रिय, कर्तव्यदक्ष और ईमानदार अधिकारी के रूप में पहचाने जाते थे। समाज के प्रति सहृदय और संवेदनशील होने के कारण ही वे हिंदी साहित्य को अनमोल रचनाएं दे सके। बचपन से ही उन्हें कविता लिखने और पढ़ने का शौक था। बाल आयु से ही वे कवि सम्मेलनों में जाने के अभ्यस्त थे। वे बेहद मिलनसार व्यक्ति थे। साहित्य क्षेत्र के साथ-साथ प्रशासकीय क्षेत्र में भी उनके बहुत से मित्र थे और उनमें वे एक जिंदादिल व्यक्ति के रूप में मशहूर थे। प्रशासन में काम करने के कारण राजनीति और समाज के विभिन्न क्षेत्रों की विसंगतियाँ उनकी पैनी दृष्टि से छूट नहीं सकी। समाज के प्रति सहृदयता के कारण ही उन्होंने अपनी व्यंग्य रचनाओं में भ्रष्ट व्यवस्था पर करारा व्यंग्य किया है। उनका व्यक्तित्व जमीन से जुड़ा था, विशेषकर वे गाँव की मिट्टी से जुड़े हुए थे। इस कारण स्वातंत्र्योत्तर भारत के ग्रामीण परिवेश की विसंगतियों पर उन्होंने बेबाक टिप्पणियाँ की, जिससे उनके साहसी, निष्पक्ष और सजग व्यक्तित्व का परिचय मिलता है।

3.5.3.1.3 श्रीलाल शुक्ल का कृतित्व :

श्रीलाल शुक्ल को माध्यमिक कक्षाओं से ही लेखन का शौक था। उन्होंने हिंदी साहित्य लेखन की

शुरुआत सन 1957 से की थी। उनकी अनेक कविताएं 'ज्ञानोदय', 'धर्मयुग', 'कल्पना' जैसी तत्कालीन दर्जन भर मशहूर साहित्यिक पत्रिकाओं में छपकर आती थी। श्रीलाल शुक्ल को सही पहचान उनके व्यंग्यात्मक उपन्यास और व्यंग्य रचनाओं से मिली है। उन्होंने अपने जीवन में 10 उपन्यास, 4 कहानीसंग्रह, 2 आलोचनात्मक ग्रंथ, 2 संस्मरण और 10 व्यंग्य संग्रह लिखे। उनके कृतित्व का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है-

*** श्रीलाल शुक्ल की रचनाएं :**

अ) उपन्यास :

- | | |
|---|--------------------------------|
| 1. सूनी घाटी का सूरज (1957 ई.) | 2. अज्ञातवास (1962 ई.) |
| 3. राग दरबारी (1968 ई.) | 4. आदमी का जहर (1972 ई.) |
| 5. सीमाएं टूटती है (1973 ई.) | 6. मकान (1976 ई.) |
| 7. पहला पड़ाव (1987 ई.) | 8. विश्रामपुर का संत (1999 ई.) |
| 9. बब्बर सिंह और उसके साथी (बाल- उपन्यास 1999 ई.) | |
| 10. राग विराग (2001 ई.) | |

ब) कहानी संग्रह :

- | | |
|------------------------------|---------------------------------------|
| 1. यह घर मेरा नहीं (1979 ई.) | 2. सुरक्षा और अन्य कहानियाँ (1991 ई.) |
| 3. इस उम्र में (2003 ई.) | 4. दस प्रतिनिधि कहानियाँ (2003 ई.) |

क) आलोचना :

1. अज्ञेय : कुछ राग और कुछ रंग (1999 ई.)
2. भगवतीचरण वर्मा: अर्पित मेरी भावना (1974 ई.)

ड) संस्मरण :

- | | |
|-------------------------------|-----------------------------------|
| 1. मेरे साक्षात्कार (2002 ई.) | 2. कुछ साहित्य चर्चा भी (2008 ई.) |
|-------------------------------|-----------------------------------|

ई) व्यंग्य संग्रह :

- | | |
|--|-----------------------------------|
| 1. अंगद का पाँव (1958 ई.) | 2. यहाँ से वहाँ (1970 ई.) |
| 3. मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएं (1979 ई.) | 4. उमरावनगर में कुछ दिन (1986 ई.) |
| 5. कुछ जमीन में कुछ हवा में (1990 ई.) | 6. आओ बैठ ले कुछ देर (1995 ई.) |
| 7. अगली शताब्दी का शहर (1996 ई.) | 8. जहालत के पचास साल (2003 ई.) |

9. खबरों की जुगाली (2005 ई.)

10. हिंदी हास्य व्यंग्य संकलन (1997 ई.)

*** श्रीलाल शुक्ल मिले उल्लेखनीय पुरस्कार :**

साहित्य के क्षेत्र में दिए उल्लेखनीय योगदान की दखल लेकर उन्हें अनेक राज्य, राष्ट्रीय स्तर के सर्वोच्च पुरस्कारों से सम्मानित किया है। उनकी जानकारी इस प्रकार है-

1. समग्र साहित्य के लिए 2011 को साहित्य का सर्वोच्च ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित
2. साहित्य और संस्कृति के योगदान के लिए पद्म भूषण सम्मान- 2008 ई.
3. उत्तर प्रदेश सरकार से 'यश भारती सम्मान' 2005 ई.
4. 'विश्रामपुर का संत' उपन्यास के लिए 'व्यास सम्मान-1999 ई.'
5. मध्य प्रदेश सरकार से 'मैथिलीशरण गुप्त सम्मान' -1997 ई.
6. उ.प्र. हिंदी संस्थान से 'साहित्य भूषण सम्मान' 1988 ई.
7. 'रागदरबारी' उपन्यास के लिए 1969 ई. का साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मान।

*** मृत्यु :**

हिंदी साहित्य में बेजोड़ व्यंग्य रचना देनेवाले श्रीलाल शुक्ल की मृत्यु 28 अक्तूबर, 2011 ई. को हुई।

3.5.3.2 'एक जीते हुए नेता से मुलाकात' व्यंग्य का परिचय :

हिंदी के वरिष्ठ व्यंग्यकार श्रीलाल शुक्ल लिखित 'एक जीते हुए नेता से मुलाकात' समकालीन राजनीति, राजनेता और अवसरवादी जनता के चरित्र को उजागर करने वाला हास्य-व्यंग्य है। यह व्यंग्य रचना शुक्ल जी के 'उमरावनगर में कुछ दिन' (1986 ई.) इस व्यंग्य-संग्रह में संकलित है। इसमें श्रीलाल शुक्ल ने एक जीते हुए नेता के अवसरवादी और स्वार्थी चरित्र का पर्दाफाश किया है। नेता चंद लोगों के काम गैरकानूनी तरीके से कराके खुद को समाज का उद्धारकर्ता समझते हैं। समाज की बुनियादी जरूरतों के लिए आवश्यक विकास कामों की ओर अनदेखी करके अपनी स्वार्थ पूर्ति करने लगते हैं। राजनेताओं के खोखले वादें, चुनाव जीतने के बाद खुद के विकास में लगे रहना, चुनाव के बाद जनता से किए वादे भूल जाना और केवल समाज कल्याण का दिखावा करके खुद को अच्छा नेता साबित करने की कवायद को इस व्यंग्य में सटीकता से चित्रित किया है।

3.5.3.3 'एक जीते हुए नेता से मुलाकात' व्यंग्य का कथानक :

'एक जीते हुए नेता से मुलाकात' इस व्यंग्य की शुरुआत 'हारे हुए नेता' और 'जीते हुए नेता' की तुलना से होती है। हारे हुए नेता नरक में चले जाते हैं और जीते हुए नेता स्वर्ग का अनुभव लेने को तैयार हो जाते

हैं। लेखक जिस जीते हुए नेता से मुलाकात करते हैं वह 56 साल का है लेकिन उसमें युवाओं सा जोश है। उसका सैंकड़ों युवा संगठन, छात्र संगठनों पर प्रभाव देख लेखक उसे 'युवातुर्क' कहते हैं। वह इतना बातूनी है कि लोग अब उसे विचारशील समझने लगे हैं। वह जो भी बोलता है जनता के लिए एक विचार बन जाता है। जब कभी भी उसे मोटर छोड़ जनता के साथ चलने का मौका मिलता है, तो वह इतना तेज चलता है कि लोगों के दिमाग में साक्षात महात्मा गांधी की छवि निर्माण हो जाती। लेकिन कुछ लोगों को उसकी तेज रफ्तार पॉकेटमार की लगती। मंत्री बनने के बाद नेता जी की यही तेज रफ्तार रहेगी तो देश का विकास भी तेज गति से होगा। लेकिन अफसोस की बात कि वह मंत्री नहीं बना। उसकी जगह उसके एक जिगरी दोस्त को मंत्री पद मिला।

मंत्री पद मिलने के बाद वह अपनी असली चरित्र में आ गया। अब वह केवल बाबाओं और ज्योतिषियों से ही मिलता है। धीरे-धीरे वह परिपक्व मंत्री बनकर गतिशील नेता से रौबदार मंत्री बन गया है। मंत्री बनने के बाद उसकी हैसियत इतनी ऊंची बनी कि अब उसका घर मकान नहीं, बंगला कहलाया जाता है। दिन-रात उसके बंगले के बाहर या बंगले के बरामदे (पोर्टिका) में लोगों की भीड़ लगी रहती है। उसकी शोहरत इतनी फैली है कि उसे मिलने के लिए न सिफारिश की जरूरत है न रिश्त देनी पड़ती है। आप में अगर भीड़ को पार करने की ताकत है तो आप उनसे मिल सकते हैं। लोगों के काम करते समय वह सही-गलत का फैसला नहीं करता। भगवान श्रीकृष्ण के गीता में कहे गए 'कर्म सिद्धांत' को आधार बनाकर केवल कर्म करते रहता है। वह दूसरों के काम दूसरों से ही करवाकर अपने मंत्री होने की हैसियत को बनाए रखता है।

लेखक एक बार उस मंत्री से मिलने के लिए उनके बंगले में पहुँचे, तो उनके फाटक से ही लोगों की भीड़ लगी हुई थी। कुछ लोग फाटक से सटे आम के पेड़ की टहनियों पर बैठे थे। गाँव-देहात से आए कुछ लोग सड़क पर ही अंगोछा बिछाकर बैठे थे। मंत्री जी बंगले के बरामदे (पोर्टिका) में रखी तीन कुर्सियों में से बीच की कुर्सी पर पैर फलाए बैठे थे और नाई उनकी हजामत बना रहा था। उनके आस पास दो क्लर्क कुछ रजिस्टर लेकर बैठे हुए थे। बीच-बीच में उन्हें फोन आने के कारण नाई के काम में रूकावट आ रही थी। लेखक को पोर्टिका के एक कोने में खड़ा देख मंत्री जी ने उन्हें बैठने के लिए कहा और नाई को जल्द-जल्द बिना रूके हजामत का काम पूरा करने की हिदायत दी। हजामत बनाते हुए ही मंत्री जी ने एक व्यक्ति से काम पूछा। तो उसने कहा कि, 'मंत्री जी से कहकर भूरेलाल का तबादला करवाना है।' मंत्री जी कहते हैं कि 'देखो, भूरेलाल का तबादला तो हो जाएगा लेकिन भूरेलाल ऊंचे दर्जे का हरामी है। कौन लगता है तुम्हारा?' तो वह व्यक्ति कहता है कि वह मेरा ही बेटा है। तब मंत्री जी अपने लहजे को संभालते हुए नसीहत देते हैं कि उसे सही रास्ते पर चलने को कहो, नहीं तो एक दिन वह बर्बाद हो जाएगा। तुम घर जाओ, तुम्हारा काम हो जाएगा। वहाँ का क्लर्क इस काम को अपने रजिस्टर में लिखवा लेता है।

दूसरा एक व्यक्ति काम बताता है कि बैजनाथ को नौकरी लगवा दो। उस पर मंत्री नाराज होकर कहते हैं कि मैं बस तुम लोगों को चपरासी या क्लर्क की नौकरी दिलाने ही बैठा हूँ। कुछ बड़ा काम हो तो कहो? तो वह व्यक्ति कहता है कि अगर चपरासी की नौकरी लगवाना आपको छोटी बात लगती है तो हमारे बैजनाथ

को किसी जिले का कलेक्टर बनाओ या एम्बैसिडर बनाओ। इस पर मंत्री कहता है कि आप लोगों का यूँ ही आशीर्वाद मिलेगा तो कलेक्टर और एम्बैसिडर की भी नियुक्ति करवा दूँगा। अब उठते-उठते मंत्री जी लेखक को काम पूछते हैं तो लेखक एक चिट्ठी मंत्री जी की ओर बढ़ाते हैं। उसे बिना पढ़े ही मंत्री कहते हैं कि 'फियाट चाहिए न? कोई बात नहीं एलाट करा दूँगा। लेखक कहते हैं कि 'फियाट नहीं चाहिए' तो मंत्री कहता है, 'तो क्या स्कूटर चाहिए? दिला दूँगा लेकिन इसके लिए छह महीने की प्रतीक्षा करनी होगी। आप हमारे मुंशी जी के पास अपना आवेदन पत्र छोड़कर जाए।

लेखक भीड़ को पार करके मंत्री जी के पास जाकर बताते हैं कि 'मेरे गाँव के अस्पताल में दो साल से कोई डॉक्टर नहीं है। किसी की तैनाती करनी है।' इस पर मंत्री जी कहते हैं कि क्या तुम जाना चाहते हो। तुम्हें ही तैनात करता हूँ। लेखक बताते हैं कि मैं डॉक्टर नहीं हूँ। तो मंत्री कहते हैं तो तुम्हारे लड़के को, भतीजे को, जिसको कहो उसे नियुक्त कराता हूँ। इनमें से भी कोई डॉक्टर नहीं है। हमें कोई भी एक डॉक्टर वहाँ चाहिए। तब मंत्री बहुत गुस्साते हैं और कहते हैं कि मुझे तो आपका काम ही समझ नहीं आ रहा है। आप हमारे मुंशी जी से मिलकर अपना काम रजिस्टर में लिखवा देना।

इतने में बंगले से मंत्री जी की पत्नी की चिल्लाने की आवाज आती है। बंगले में घूम रहे सभी लोग पोर्टिका और मैदान में जमा हो जाते हैं। मंत्री जी की पत्नी सभी को भेड़ों की तरह भगाती हुई बाहर निकालती है। नेताजी अंदर जाकर मामला सँभालते हुए कहते हैं कि लोग मेरे घर में बाथरूम तक चले जाते हैं और यह बेचारी इनको भगाने में दिनभर लगी रहती है। वह अपनी पत्नी को तसल्ली देते हैं कि दो मिनट में सभी का काम निपटाकर सभी को बंगले से बाहर निकाल देंगे। इतने में बरामदे में खड़े हुए एक प्राध्यापक महोदय अंग्रेजी में कहते हैं कि कितने अफसोस की बात है कि इसे मंत्री मंडल में नहीं लिया गया है। वहाँ इसकी गतिशीलता और क्रियाशीलता (डाइनेमिज्म) का कोई मुकाबला न कर पाता।

संक्षेप में कह सकते हैं कि श्रीलाल शुक्ल ने इस व्यंग्य रचना में भारतीय राजनीति के खोखले और दिखावटीपन की प्रवृत्ति पर व्यंग्य किया है। चुनाव जितने के बाद अवसरवादी नेता हमेशा अपनी स्वार्थपूर्ति करके बंगले-गाड़ियाँ बनाते हैं। खुद जनता के पास जाकर उनकी मुसीबतें हल करने के बजाए उन्हें ही अपने बंगले पर बुलाकर बड़ी-बड़ी बातें करके खुद को अन्नदाता या मसीहा मान लेते हैं। रोटी, कपड़ा, मकान, स्वास्थ्य, रोजगार जैसी बुनियादी विकास कामों की ओर अनदेखी करके नौकरी, तबादले, सिफारिशों में अटकर खुद को बाहुबली मानते हैं और अपना काम निकलने के बाद उसी जनता को भेड़-बकरियों की तरह घर से बाहर निकाल देते हैं।

3.5.4 स्वयंअध्ययन के लिए प्रश्न :

(अ) निम्नलिखित प्रश्नों के सही विकल्प चुनिए ।

1. 'एक जीते हुए नेता से मुलाकात' यह व्यंग-रचना किस व्यंग्य-संग्रह में संकलित है?

अ. अंगद का पाँव

ब. उमरावनगर में कुछ दिन

- क. खबरों की जुगाली ड. यहाँ से वहाँ
2. 'एक जीते हुए नेता से मुलाकात' इस व्यंग्य में नेता की ऊर्जा देकर लेखक उसे कौनसी उपाधि देते हैं?
- अ. बाहुबली ब. अन्नदाता
- क. युवातुर्क ड. मसीहा
3. 'एक जीते हुए नेता से मुलाकात' इस व्यंग्य में नेता की उम्र कितनी है?
- अ. ६६ ब. ५६
- क. ४६ ड. ३६
4. नेताजी किसको ऊँचे दर्जे का हरामी कहते हैं?
- अ. भूरेलाल को ब. प्यारेलाल को
- क. बैजनाथ को ड. शंभूनाथ को
5. श्रीलाल शुक्ल को किस व्यंग्यात्मक उपन्यास के लिए कालजयी प्रसिद्धि मिली है।
- अ. अंगद का पाँव ब. सूनी घाटी का सूरज
- क. राग दरबारी ड. मकान

(आ) निम्नलिखित प्रश्नों के सही विकल्प चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए ।

1. 'एक जीते हुए नेता से मुलाकात' इस व्यंग्य रचना के लेखक है।
- अ. श्रीलाल शुक्ल ब. शरद जोशी
- क. हरिशंकर परसाई ड. लतीफ घोषी
2. श्रीलाल शुक्ल को साहित्यिक योगदान के लिए सन 2011 को यह सर्वोच्च पुरस्कार मिला है।
- अ. व्यास सम्मान ब. साहित्य अकादमी
- क. ज्ञानपीठ ड. पद्म भूषण
3. लेखक नेताजी के पास अपने गाँव में की तैनाती की अर्जी लेकर गए थे।
- अ. डॉक्टर ब. अध्यापक
- क. पोस्टमन ड. चपरासी

- * **अंगोछा** : शरीर, हाथ या मुँह पोंछने के लिए उपयोग किया जाने वाला एक छोटा, पतला, सूती कपड़ा है।
- * **दरखास्त** : प्रार्थना, निवेदन, आवेदन या अर्जी ।
- * **एम्बैसिडर** : राजदूत, एक उच्च स्तरीय राजनयिक।
- * **डाइनेमिज्म** : गतिशील, सक्रिय, ऊर्जावान या लगातार बदलने वाला।
- * **गीता का कर्मसिद्धांत** : 'भगवद् गीता' यह हिंदू धर्म का पवित्र धर्म ग्रंथ है। इसके अठराहवें अध्याय में 'गीता' अर्थात् भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को गीता बताई है। इसमें कर्म सिद्धांत का उल्लेख है, जिसके अनुसार कर्म करना मनुष्य का स्वभाव है। मनुष्य का निष्काम कर्म अर्थात् किसी भी फल की इच्छा किए बिना कर्म करते रहना चाहिए। मनुष्य का अधिकार केवल अपने कर्तव्य पालन पर है उसके परिणाम या फल पर नहीं है।

3.5.6 स्वयंअध्ययन प्रश्नों के उत्तर :

प्र. (अ) के उत्तर :

- | | |
|----------------------------|------------------|
| 1. ब. उमरावनगर में कुछ दिन | 2. क. युवातुर्क |
| 3. ब. ५६ | 4. अ. भूरेलाल को |
| 5. क. राग दरबारी | |

प्र. (आ) के उत्तर :

- | | |
|-----------------------|---------------------|
| 1. अ. श्रीलाल शुक्ल | 2. क. ज्ञानपीठ |
| 3. अ. डॉक्टर | 4. ब. बैजनाथ |
| 5. अ. राजनीति और नेता | 6. क. महात्मा गांधी |
| 7. अ. पॉकेटमार | |

3.5.7 सारांश :

1. स्वातंत्र्योत्तर हिंदी व्यंग्य और कथा साहित्य में श्रीलाल शुक्ल का नाम विशेष उल्लेखनीय है। उन्होंने अपने व्यंग्य रचनाओं के माध्यम से भारत के ग्रामीण जीवन में व्याप्त सामाजिक, राजनीतिक विसंगतियों पर तीखा व्यंग्य कसा है। उनकी व्यंग्य दृष्टि किसी व्यक्ति पर नहीं बल्कि समूचे तंत्र की अव्यवस्था और पाखंड की पोल खोलती है।
2. श्रीलाल शुक्ल बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं। उन्होंने हिंदी साहित्य में उपन्यास, कहानी, आलोचना, संस्मरण, व्यंग्य-संग्रह आदि में अपनी सृजनात्मक प्रतिभा को दिखाया है। उनके 10 व्यंग्य-संग्रह

प्रकाशित हुए हैं। उन्हें 'राग दरबारी' इस व्यंग्यात्मक उपन्यास के लिए कालजयी कीर्ति प्राप्त हुई है। साहित्य क्षेत्र के उल्लेखनीय योगदान के लिए उन्हें ज्ञानपीठ, साहित्य अकादमी, पद्मभूषण, व्यास सम्मान समेत दर्जनभर पुरस्कार मिले हैं।

3. 'एक जीते हुए नेता से मुलाकात' यह व्यंग्य-रचना उनके 'उमरावनगर में कुछ दिन' (1986 ई.) इस व्यंग्य-संग्रह में संकलित है। श्रीलाल शुक्ल ने इस व्यंग्य रचना में भारतीय राजनीति के खोखले और दिखावटीपन की प्रवृत्ति पर व्यंग्य किया है।
4. चुनाव जितने के बाद अवसरवादी नेता हमेशा अपनी स्वार्थपूर्ति करके बंगले-गाड़ियाँ बनाते हैं। खुद जनता के पास जाकर उनकी मुसीबतें हल करने के बजाए उन्हें ही अपने बंगले पर बुलाकर बड़ी-बड़ी बातें करके खुद को अन्नदाता या मसीहा मान लेते हैं।
5. रोटी, कपड़ा, मकान, स्वास्थ्य, रोजगार जैसी बुनियादी विकास कामों की ओर अनदेखी करके नौकरी, तबादले, सिफारिशों में अटकर खुद को बाहुबली मानते हैं और अपना काम निकलने के बाद उसी जनता को भेड़-बकरियों की तरह घर से बाहर निकाल देते हैं।

3.5.8 स्वाध्याय :

अ. लघुत्तरी प्रश्न।

1. श्रीलाल शुक्ल का जीवन परिचय लिखिए।
2. श्रीलाल शुक्ल के कृतित्व का परिचय लिखिए।
3. श्रीलाल शुक्ल के व्यक्तित्व का परिचय दीजिए।
4. 'एक जीते हुए नेता से मुलाकात' व्यंग्य का उद्देश्य लिखिए।

आ. दीर्घोत्तरी प्रश्न :

1. श्रीलाल शुक्ल के जीवन परिचय, व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दीजिए।
2. 'एक जीते हुए नेता से मुलाकात' व्यंग्य रचना की कथावस्तु अपने शब्दों में लिखिए।
3. 'एक जीते हुए नेता से मुलाकात' व्यंग्य रचना भारतीय राजनीति और नेताओं के मुँह पर करारा तमाचा है, इसे स्पष्ट कीजिए।

3.5.9 क्षेत्रीय कार्य :

1. 'एक जीते हुए नेता से मुलाकात' व्यंग्य रचना पर नुक्कड़ नाटक बनाकर उसे महाविद्यालय में पेश कीजिए।
2. 'एक जीते हुए नेता से मुलाकात' व्यंग्य रचना का मराठी में अनुवाद कीजिए।

3. 'भारतीय राजनीति की दशा और दिशा' इस विषय पर निबंध लिखिए।
4. 'एक जीते हुए नेता से मुलाकात' व्यंग्य रचना पर आधारित एक व्यंग्य कविता लिखिए।

3.5.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए :

1. चंदर सुभाष, हिंदी व्यंग्य का इतिहास, (सं. 2027), नई दिल्ली, भावना प्रकाशन।
2. पटेल कमलेशकुमार (डॉ.), स्वातंत्र्योत्तर हिंदी व्यंग्य साहित्य और व्यंग्यकार श्रीलाल शुक्ल, (सं.2004 ई.), कानपुर (उ.प्रदेश), चिंतन प्रकाशन।
3. द्विवेदी नीरज कुमार (डॉ.), श्रीलाल शुक्ल सर्जनात्मक व्यंग्यकार, (सं.2020 ई.), नई दिल्ली-नमन प्रकाशन, 110002.



3.6 मुख्यमंत्री का डण्डा

– डॉ. सुदर्शन मजीठिया

अनुक्रम

3.6.1 उद्देश्य

3.6.2 प्रस्तावना

3.6.3 विषय विवेचन

3.6.3.1 डॉ. सुदर्शन मजीठिया का जीवन परिचय, व्यक्तित्व एवं कृतित्व

3.6.3.2 'मुख्यमंत्री का डण्डा' व्यंग्य का परिचय

3.6.3.3 'मुख्यमंत्री का डण्डा' व्यंग्य का कथानक

3.6.4 स्वयंअध्ययन के लिए प्रश्न

3.6.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

3.6.6 स्वयंअध्ययन प्रश्नों के उत्तर

3.6.7 सारांश

3.6.8 स्वाध्याय

3.6.9 क्षेत्रीय कार्य

3.6.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

3.6.1 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप,

- * डॉ. सुदर्शन मजीठिया के जीवन परिचय, व्यक्तित्व और कृतित्व को जानेंगे।
- * समकालीन हिंदी व्यंग्य साहित्य में डॉ. सुदर्शन मजीठिया के व्यंग्य साहित्य के महत्त्व को समझ सकेंगे।
- * 'मुख्यमंत्री का डण्डा' व्यंग्य रचना की कथावस्तु एवं आशय से परिचित होंगे।
- * 'मुख्यमंत्री का डण्डा' व्यंग्य रचना के माध्यम से भारतीय राजनीति की विसंगतियाँ, भ्रष्ट नेताओं की प्रवृत्ति, राजनेता और प्रशासकीय यंत्रणा की मिलीभगत से भ्रष्टाचार, भ्रष्टाचारी पुलिस यंत्रणा, लोकतांत्रिक एवं संवैधानिक संस्थाओं का गैर इस्तेमाल, जनता के पैसों पर राजनेताओं की मनमानी आदि समस्याओं से अवगत होंगे।

3.6.2 प्रस्तावना :

समकालीन हिंदी व्यंग्य रचनाकारों में डॉ. सुदर्शन मजीठिया जी का नाम विशेष उल्लेखनीय है। भारत के पश्चिमी क्षेत्र (पंजाब) में जन्में और महाराष्ट्र के विदर्भ, गुजरात के सौराष्ट्र में अपना जीवन बीताने वाले डॉ. सुदर्शन मजीठिया की व्यंग्य रचनाओं में स्वातंत्र्योत्तर भारत का परिवेश सजीवता के साथ साकार हुआ है। उन्होंने अपने आठ व्यंग्य-संग्रहों के माध्यम से जीवन के विविध क्षेत्रों की गहराई से पड़ताल की है। हास्य की शिष्टता और व्यंग्य की मिठास उनकी रचनाओं की विशेषता रही है। उन्होंने विशेषकर भारतीय राजनीति, समाज, शिक्षा क्षेत्र के प्रतिनिधि, धर्म के ठेकेदारों के विसंगत आचरण के कारण अपने व्यंग्य का विषय बनाया है। अन्य व्यंग्य रचनाकारों की भाँति डॉ. सुदर्शन मजीठिया के व्यंग्य में गहराई और जीवन की व्यापकता झलकती है। उनके 'मुख्यमंत्री का डण्डा' इस व्यंग्य-संग्रह में संकलित शीर्षक रचना का विवेचन इस इकाई में किया जाएगा। 'मुख्यमंत्री का डण्डा' यह व्यंग्य रचना में मुख्यमंत्री ज्वालाप्रसाद और उनके डण्डे के खो जाने की कहानी को विषय बनाया है। इस व्यंग्य रचना के माध्यम से डॉ. मजीठिया ने भारतीय राजनीति की विसंगतियाँ, राजनेताओं की स्वार्थवृत्ति, जनता के रूपयों पर खुद के स्वार्थ की पूर्ति, संवैधानिक संस्थाओं का खुद के विकास के लिए इस्तेमाल, प्रशासनिक भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी, पुलिस का भ्रष्टाचार आदि पर्दापाश किया है।

3.6.3 विषय विवेचन

3.6.3.1 डॉ. सुदर्शन मजीठिया का जीवन परिचय, व्यक्तित्व एवं कृतित्व :

3.6.3.1.1 डॉ. सुदर्शन मजीठिया का जीवन परिचय :

डॉ. सुदर्शन मजीठिया का जन्म 25 जुलाई, 1931 ई. में पंजाब के अमृतसर जिले में स्थित मजीठा गाँव के एक किसान परिवार में हुआ। उनके पिताजी का नाम महेंद्रसिंह और माताजी का नाम हरपालकौर था। उनके पिताजी पढ़े-लिखे और धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। उन्होंने बी.एस्सी. तक पढ़ाई की थी और मध्यप्रदेश के

वित्त विभाग से एक अधिकारी के रूप में सेवा निवृत्त हुए थे। उनके मजीठा गाँव के कारण ही सुदर्शनजी के उपनाम के साथ मजीठिया नाम जुड़ा है। लेकिन बाद में उनके पिताजी ने नौकरी के कारण सन 1936 को पंजाब छोड़ा और वे महाराष्ट्र की उपराजधानी नागपुर में आकर बसे। उन्होंने गोकुल पेठ में अपना घर बनवाया और जिसके कारण सुदर्शन मजीठिया का प्रारंभिक जीवन नागपुर में बीता। उनकी माताजी जमींदार परिवार से थी और हँसमुख और विनोदप्रिय स्वभाव की थी। ऐसे सुशिक्षित, खुशहाल और संपन्न परिवार में सुदर्शनसिंह का बचपन बीता।

उनकी प्राथमिक शिक्षा नगरपालिका की हिंदी माध्यम पाठशाला में पूरी हुई। उसके बाद श्रीराम स्कूल से हिंदी माध्यम में आठवीं की परीक्षा उत्तीर्ण की। अपने अध्यापन के जीवन में सुदर्शन जी बहुत ही शरारती छात्र हुआ करते थे। कॉपियों में चित्र बनाना उन्हें अच्छा लगता था। बाद में धर्मपेठ हाईस्कूल से अंग्रेजी माध्यम में मैट्रिक की परीक्षा पास की। स्कूली जीवन से ही चित्रकला के प्रति गहरी रुचि होने के कारण उन्होंने मैट्रिक के बाद नागपुर के स्कूल ऑफ आर्ट में प्रवेश लिया और मुंबई की एलीमेंटरी तथा इंटर-मीडिएट की परीक्षाएं पास की। उन्होंने लैन्डस्केप चित्रों में महारत हासिल करके कई पुरस्कार जीते। आगे नागपुर के हिस्लोप कॉलेज से बी.ए. और मारिस कॉलेज से एम. ए. की डिग्रियाँ हासिल की। बी.ए. और एम.ए. के दौरान आचार्य विनय मोहन शर्मा से हिंदी का ज्ञान प्राप्त करने के कारण उनमें बचपन से ही हिंदी लेखन की जो रुचि थी वह बढ़ गई। हिंदी के प्रति गहरी रुचि निर्माण होने के कारण ही उन्होंने भविष्य में नागपुर विश्वविद्यालय में विनय मोहन शर्मा के निर्देशन में पंजाबी और हिंदी के मध्यकालीन संतों की वाणी पर तुलनात्मक शोध-कार्य करके पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की। सन 1986 में 'स्वातंत्र्योत्तर रंगधर्मी हिंदी नाटक' विषय पर डी.लिट्. की उपाधि प्राप्त की।

उसके बाद वे हिंदी अध्यापन और लेखन से जुड़े रहे। उनकी नौकरी का अकादमी स्तर बहुत ऊँचा रहा। उन्होंने 1956 ई. में सौराष्ट्र लोकसेवा आयोग की परीक्षा देकर भावनगर सरकारी महाविद्यालय में प्राध्यापक के रूप में नियुक्त हुए। उसके बाद 1966-67 में धर्मेन्द्रसिंह कॉलेज-राजकोट में हिंदी अध्यापन का काम किया। उसके बाद सन 1979 से 1989 तक शामलदास कॉलेज, भावनगर में कॉलेज के प्रोफेसर बने। उसके बाद भावनगर विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के अध्यक्ष बने। उसके बाद युजीसी रेमीरेटसब के प्रोफेसर रहे और 1984 ई. को भावनगर विश्वविद्यालय के कार्यकारी कुलपति भी रहे। उनके निर्देशन में चार विद्यार्थियों ने पीएच.डी. का शोध-कार्य सफलतापूर्वक पूरा किया है। उनका विवाह 26 जून, 1959 ई. को कृष्णाजी के साथ संपन्न हुआ। कृष्णाजी शामलदास कॉलेज में हिंदी विभाग में अध्यापन का काम करती थी। इस कारण सुदर्शन जी को हिंदी साहित्य लेखन की विशेष प्रेरणा पत्नी से मिलती रही। डॉ. सुदर्शन मजीठिया को एक बेटा है, जिसका नाम अपूर्व मजीठिया है जो अपने क्षेत्र में सफल है।

3.6.3.1.2 डॉ. सुदर्शन मजीठिया का व्यक्तित्व :

डॉ. सुदर्शन मजीठिया एक सफल व्यंग्यकार, चित्रकार, इतिहास के विद्वान, नाटक-एकांकीकार, संपादक, भाषाविज्ञान के समीक्षक आदि बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी है। उनका बचपन एक खुशहाल और

विनोदप्रिय परिवार में बीता था। इस कारण उनका व्यक्तित्व भी स्वच्छंदी और विनोदप्रिय रहा है। उनका बाहरी व्यक्तित्व हमेशा हँसमुख था और वे कभी गंभीर मुद्रा में दिखाई नहीं देते थे। वे व्यक्ति की स्वतंत्रता के समर्थक थे। उनका बाह्य व्यक्तित्व भले ही विनोदप्रिय रहा, वे गंभीर दिखाई नहीं देते थे लेकिन अंदर से समाज के प्रति संवेदनशील और भावनाओं से भरे थे। इस कारण अपनी रचनाओं में वे गंभीर से गंभीर विषयों को भी बहुत ही संयम और सहजता से हास्य-व्यंग्यात्मक ढंग में प्रस्तुत करते थे। कभी-भी मौन की साधना में वे अंदर-ही-अंदर किसी गंभीर विषय पर चिंतन करते पाए जाते थे। तब वे बाहर से भावना-शून्य और भीतर से संवेदनशील बने रहना, उनके व्यक्तित्व की विशेषता थी। वे अनेक भाषा को जानते-समझते थे इस कारण उन्होंने पंजाबी, हिंदी, मराठी, गुजराती और अंग्रेजी साहित्य को गहराई से पढ़ा। उनको हिंदू धर्म के रामायण और महाभारत ग्रंथों और उसके तत्त्वज्ञान ने गहराई से प्रभावित किया। उन्होंने अंग्रेजी में शेक्सपियर, बर्नार्ड शो, डॉन किहाटो, जेम्स थोरन, कार्ल मार्क्स, टोलस्टोय, गौकी जैसे प्रतिभावान लेखकों को पढ़ा। मराठी में पु. ल. देशपांडे का साहित्य उन्होंने विशेष प्रिय था। गुजराती में ज्योतिंद्र देव, बकुल त्रिपाठी, विनोद भट्ट और तारक मेहता का व्यंग्य प्रिय रहा। इस प्रकार डॉ. सुदर्शन मजीठिया एक उच्च शिक्षित, अनुशासन प्रिय, बहुभाषा विद्व, गंभीर अध्येता, बाहर से हँसमुख और भीतर से संवेदनशील व्यक्तित्व के थे।

3.6.3.1.3 डॉ. सुदर्शन मजीठिया का कृतित्व :

डॉ. सुदर्शन मजीठिया को बचपन से ही हिंदी लेखन में रुचि थी। उन्होंने पंद्रह वर्ष के आयु से लिखना शुरू किया था। घर का स्वच्छंदी माहौल और माता-पिता के प्रोत्साहन के कारण व्यंग्यात्मक लेखन के गुण विरासत से मिले थे। किशोर आयु में ही उन्होंने कविता, कहानी और नाटकों का लेखन किया था। किशोरावस्था में उन्होंने रणजीतसिंह के जीवन पर एक नाटक लिखा था और एक डाकू की दानवीरता पर उपन्यास लिखा था। उसके बाद नेताजी पालकर, बाजीराव पेशवा आदि के जीवन पर आधारित मराठों का इतिहास भी लिखा था। हिंदी साहित्य में उन्होंने 1960 ई. से व्यंग्य लेखन करने की शुरुआत की। उनकी रचनाओं का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है-

अ. उपन्यास :

1. तोपों के साये में (1960 ई.)
2. 'लोहे की लाशें' (1969 ई.)
3. 'उखड़ी हुई आँधी' (1969 ई.)
4. शकुंतला की डायरी (1980 ई.)
5. कागजी सुलतान (1983 ई.) आदि।

आ. व्यंग्य संग्रह :

1. इंडिकेट बनाम सिडिकेट (1970 ई.)
2. मुख्यमंत्री का डण्डा (1974 ई.)
3. कुछ इधर की कुछ उधर की (1976 ई.)
4. मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएं (1983 ई.)
5. डिस्को कल्चर (1985 ई.)
6. 'इक्कीसवीं सदी' (1988 ई.)

7. पब्लिक सेक्टर का सांड (1989 ई.) 8. अस्मिता का चंदन (1991 ई.)

इ. व्यंग्य एकांकी संग्रह : चौराहा, देश के लिए और पिरामिड आदि।

ई. निबंध लेखन : ग्यारह निबंध (1968 ई.) और समकालीन हिंदी व्यंग्य एक परिदृश्य (1989 ई.)

उ. फूटकर रचनाएं : 'सूखे पत्ते' (1956 ई.), 'तुर्की हिंदोस्तानी निगाहों में' (1972 ई.),
'इकाइयाँ परछाइयाँ' (1970 ई.), 'गुजरात डाइरेक्टरी' (१९७१ ई.) आदि।

3.6.3.2 'मुख्यमंत्री का डण्डा' व्यंग्य का परिचय :

हिंदी के समकालीन व्यंग्यकारों में डॉ. सुदर्शन मजीठिया का नाम विशेष उल्लेखनीय है। उनके 'मुख्यमंत्री का डण्डा' (१९७० ई.) इस व्यंग्य संग्रह में शीर्षक रचना 'मुख्यमंत्री का डण्डा' एक चर्चित व्यंग्य रचना है। इसमें डॉ. मजीठिया ने भारतीय राजनीति की अवसरवादिता, भ्रष्ट नेताओं की कालाबाजारी, प्रशासन का भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी, संवैधानिक संस्थाओं का गैर इस्तेमाल आदि पर करारा व्यंग्य किया है। इस व्यंग्य रचना में पोंगा राज्य के मुख्यमंत्री ज्वालाप्रसाद और उनके डण्डे के खो जाने की घटना को कथावस्तु का विषय बनाया है। पोंगा राज्य और मुख्यमंत्री का डण्डा इन दो प्रतीकों के माध्यम से लेखक ने भारतीय राजनीति के कुरूप चेहरे को सबके सामने उजागर किया है। मुख्यमंत्री का डण्डा असल में राजनेताओं द्वारा भारतीय जनता एवं प्रशासकीय व्यवस्था पर धौंस जमाने का प्रतीक है, जिसके माध्यम से राजनेता अपनी स्वार्थपूर्ति करते हैं। इस व्यंग्य रचना के माध्यम से भारत के राजनेता, राजनीतिक व्यवस्था और प्रशासकीय यंत्रणा की नाकामी पर व्यंग्य कसा है।

3.6.3.3 'मुख्यमंत्री का डण्डा' व्यंग्य का कथानक :

'मुख्यमंत्री का डण्डा' व्यंग्य रचना के कथानक की शुरुआत पोंगा राज्य के मुख्यमंत्री ज्वालाप्रसाद जी के डण्डा के वर्णन से होती है। मुख्यमंत्री का डण्डा चंदन का है, उसकी मूँठ चांदी की है और उस पर सुंदर नक्काशी की गई है। उसकी लंबाई 18 इंच है और उसका वजन 335 ग्रॅम है। पोंगा राज्य के मुख्यमंत्री बनने के बाद ज्वालाप्रसाद जी की महत्त्वकांक्षा बहुत बढ़ गई है और उनके आँखों के सामने हमेशा पं. जवाहरलाल नेहरू और उनका अंतर्राष्ट्रीय रूतबा घूमता रहता है। उन्होंने इस राज्य की गरीब, निरक्षर जनता से सम्मान प्राप्त करना हो तो उन्हें सबसे पहले अपने व्यक्तित्व में परिवर्तन करना होगा। इसलिए वे अपनी वेशभूषा बदलते हैं। धोती-कुर्ता बदलकर चूड़ीदार-पायजामा पहनने लगते हैं। अपनी पहले की टोपी की साईज आधी इंच ऊंची कर लेते हैं। काले रंग की अचकन बनवा लेते हैं लेकिन उनके शरीर के भैंसे जैसे काले रंग पर उसकी शोभा दिख नहीं रही थी। उन्होंने अपने बंबई रिटन दर्जी से आधुनिक फैशन की टाईट अचकन बनवाई थी। घर के सदस्यों से भी इस काली और शरीर से चिपकी हुई अचकन के लिए विशेष प्रतिक्रिया न मिलने पर उन्होंने हल्के रंग की दूसरी अचकन सिलवाई। मुख्यमंत्री बनने के बाद ज्वालाप्रसाद अपने शरीर के काले रंग के कारण न्यून भाव से भर जाते हैं। वे सोचने लगते हैं कि भगवान कृष्ण जी भी शाम रंग के थे फिर भी उन पर सोलह सहस्र गोपिकाएं प्रेम करती थी और मैं एक हूँ जिसे कोई आँख उठाकर भी नहीं देखता। भगवान राम जी के जीवन का स्वर्णिम

काल सीता मैया को छूड़ने में ही चला गया और कृष्ण भगवान की सोलह हजार गोपियों में से एक भी रावण का कोई वंशज या पूर्वज भगा न सका।

मुख्यमंत्री ज्वालाप्रसाद की बदली हुई वेशभूषा में अब अचनक में गुलाब का एक फूल खोसने और हाथ में एक डण्डा लेने की कसर बाकी रही थी। ज्वालाप्रसाद ने जब यह कसर पूरी करके आईने में अपना रूप देखा तो अपने व्यक्तित्व को अद्वितीय पाया। पोंगा राज्य के बच्चे उन्हें नेहरू चाचा कहे, इसलिए उन्होंने बच्चों से स्नेह करने का विचार बनाया। बच्चों से प्रेम पाने के लिए वे अपनी अचनक की जेब में पिपरमिंट की गोलियाँ और कुछ बिस्कुट रखना शुरू करते हैं। लेकिन बार-बार खाने की आदत से मजबूर ज्वालाप्रसाद बच्चों के नाम पर खुद ही पिपरमिंट की गोलियाँ और बिस्कुट चट कर जाते थे। मुख्यमंत्री साहब जहाँ भी जाते साथ में डण्डा लेकर जाते। मंच पर भाषण देते समय वह बीच-बीच में अपनी दूसरी हथेली पर डण्डा मारते। इससे कई बार उनकी हथेली जख्मी हो जाती और उनकी पत्नी को कई बार हथेली की मालिश भी करनी पड़ी थी।

एक बार दो अक्टूबर को गांधी जयंती के अवसर पर मुख्यमंत्री साहब को जवाहर मैदान पर भाषण देने का खयाल मन में आया। वास्तविक जवाहर मैदान का असली नाम 'गंधड़िया मैदान' था क्योंकि वहाँ सालभर गंधे घास चरते रहते थे। तो उन्होंने काँग्रेस कमिटी की बैठक बुलाई और जवाहर मैदान पर भाषण का आयोजन रखने का प्रस्ताव मंजूर कराया। इस प्रस्ताव के बाद रातो-रात उस मैदान की सफाई करके उसका नाम 'जवाहर मैदान' कर दिया था। लेकिन लोगों को 'जवाहर मैदान' और 'गंधड़िया मैदान' का अंतर समझने के लिए अपने दिमाग पर जोर देना पड़ा। मुख्यमंत्री का भाषण होगा इसलिए मैदान में लाखों की भीड़ होगी, ऐसी उम्मीद थी। लेकिन भाषण के पूर्व ही मुख्यमंत्री जी का मुड ऑफ हो गया। वहाँ पर लाखों की भीड़ होने के हिसाब से सभा का ताम-झाँम कराया गया था। महिलाओं के लिए विशेष बैठक व्यवस्था की गई थी। उनकी सुरक्षा के लिए पुलिस तैनात किए गए थे लेकिन महिलाओं की संख्या तो न के बराबर थी। श्रोता के नाम पर दो-चार चोर-उच्चके ही घूम रहे थे। आवारा कुत्ते भी मैदान में घूँस कर मुख्यमंत्री ज्वालाप्रसाद से अनभिज्ञ रहकर अपने टूर्नामेंट में व्यस्त थे। ज्वालाप्रसाद ने महिला विभाग की ओर देखा भी नहीं क्यों कि उन्हें अपनी नैतिकता पर शक था और इससे लोग पत्थरबाजी करेंगे, ऐसा डर भी था।

सभा के लिए लोगों की भीड़ न होने के कारण मुख्यमंत्री साहब ने जी.डी. एस.पी. पर अपना गुस्सा उतारा। जनसंपर्क अधिकारी को डाँटते हुए अंग्रेजी में पूछा, 'कांट यू प्रोड्यूस मोर पब्लिक फोर मी।' अंग्रेजी के प्रकांड पंडित हिंदी अखबारों के उपस्थित पत्रकारों ने इस अंग्रेजी स्टेटमेंट को हिंदी में अनुवाद करके दूसरे दिन अखबार में बहुत बड़ा कवरेज दिया। मुख्यमंत्री महोदय ने सूचना एवं प्रसार मंत्रालय से पूछा, 'क्या तुम मेरे लिए अधिक लोग पैदा नहीं कर सकते? एक दूसरे नेता ने भी इसी शहर में अपने अंग्रेजी ज्ञान का प्रदर्शन करते हुए एक बार कहा था, 'हमारी संस्कृति मूल कृषि संस्कृति है। अवर कल्चर इज अग्रीकल्चर।' भाषण के बाद ज्वालाप्रसाद गुस्से में राजधानी दिल्ली चले गए। लेकिन इस दौड़-धूप में मुख्यमंत्री साहब का डण्डा कहीं खो गया।

अपना डण्डा गायब हुआ देख ज्वालाप्रसाद आग-बबूला हो गए। डण्डे की याद उन्हें बार-बार सताने लगी। फुरसत के समय में डण्डे को घूमाना, उसे सूँघना और गालों पर रगड़ना उन्हें याद आने लगा। डण्डा चंदन

का होने के कारण उनके हाथ भी हमेशा सुगंधित रहते थे। इस डण्डे की बदौलत ही वे परदेशी महेमानों के सामने अपनी भारतीय संस्कृति का बखान कर सकते थे। यह डण्डा उनके लिए किसी जादू की छड़ी से कम नहीं था। भाषणों के समय वे किसी योद्धा की तरह इस डण्डे का इस्तेमाल करते थे। कुलमिलाकर यह डण्डा उनके व्यक्तित्व का अभिन्न अंग ही बन गया था। डण्डा खो जाने के गम में मुख्यमंत्री साहब ने दो दिन से खाना तक नहीं खाया। उन्हें हैरानी हुई कि अपने ही निर्वाचन क्षेत्र में भाषण के दौरान उनके ही मतदाताओं ने उनका डण्डा चुराया। डण्डे की चोरी करके उनके मतदाताओं ने मानो उन्हें धोखा दिया है। वैसे तो वे चुनाव के बाद पहली बार ही अपने निर्वाचन क्षेत्र में आए और अपने मतदाताओं से मिल रहे थे। पहले भाषण में ही उनका डण्डा गायब हुआ था। मुख्यमंत्री गुस्से में कहते हैं कि मैं अपने जीवन में अमेरिका-यूरोप घूमकर आया लेकिन डण्डे की चोरी नहीं हुई और ये साला हिंदुस्तान जहाँ पर चोरी-बदमाशी लोगों के नसों में भरी है। इस देश को तो हिटलर के कोड़े ही सुधार सकते हैं।

दूसरे ही दिन मुख्यमंत्री ज्वालाप्रसाद ने सचिवालय की बैठक बुलाई। असल में उन्हें अपने डण्डे की तलाश करनी थी लेकिन वे लोगों के गिरते जीवन मूल्य और नैतिकता पर विचार करने के लिए बैठक लेने का बहाना बनाते हैं। मुख्यमंत्री साहब इस बैठक में डण्डे की खोज के लिए सरकारी-गैरसरकारी स्तर पर क्या प्रयास किए गए, इसकी जानकारी लेते हैं। दो दिन के बाद भी डण्डे की जानकारी न मिलने से वे क्रोधित हो जाते हैं। मुख्यमंत्री के पार्टी के सभी कार्यकर्ता और क्षेत्र की पुलिस डण्डे की गहराई से तलाश कर रही थी। लेकिन सफलता न मिलने के कारण बार-बार मुख्यमंत्री की गालियाँ सुननी पड़ रही थी। बाद में दिल्ली से एक सी. आई. डी. अधिकारी को इस काम पर तैनात किया जाता है। सी.आई.डी. ने पहले पार्टी के सभी कार्यकर्ताओं से पूछताछ की तो सभी ने डण्डा मुख्यमंत्री साहब घर में ही कहीं भूले होंगे, ऐसा कहा। सी.आई.डी. ने भाषण सुनने आए क्षेत्र के सभी लोगों के घर जाकर तलाशी लेने का सुझाव दिया। लेकिन उन लोगों की पहचान करना मुश्किल था। लगभग एक हफ्ते तक पुलिस उस क्षेत्र की छानबीन करती रही इसलिए वहाँ के गुंडे-बदमाश वहाँ से दूसरे क्षेत्र में भाग गए थे। पुलिस दल ने डण्डा तलाशने की पूरी कोशिश की लेकिन सफलता नहीं मिली। आखिरकार परेशान होकर मुख्यमंत्री साहब ने आदेश निकाला कि अगर सात दिनों में उनका डण्डा नहीं मिला तो उस क्षेत्र के सभी सरकारी कर्मचारियों को नौकरी से निकाल दिया जाएगा या उनपर सख्त कार्यवाही की जाएगी।

मुख्यमंत्री साहब का आदेश मिलते ही दूसरे दिन 35 अधिकारी, 40 क्लर्क, 50 चपरासी समेत सभी पुलिस कॉन्स्टेबलों के नाम मौखिक संदेश आया था। सात दिनों में डण्डा न मिलने पर हर किसी का तबादला होगा, या पूछताछ होगी या उनकी वेतनवृद्धि रोकी जाएगी। उनके अपराध के अनुसार दंड दिया जाएगा। सभी सरकारी मुलाजिमों को भगवान की याद आने लगी। वे चाहते थे कि भगवान अवतार लेकर मुख्यमंत्री साहब का डण्डा खोजने में उनकी सहायता करे। चुनाव क्षेत्र के भक्तों को अब अपनी भक्ति पर ही शक होने लगा।

डण्डा चंदन का था और उसकी मूँठ चांदी की थी, इस कारण वह कीमती था। मंत्री के सचिव ने डी.एस.पी. से मिलकर एक योजना बनाई। पार्टी के एक अन्य मंत्री ने सुझाया कि वैसा ही एक नया डण्डा बनाकर मुख्यमंत्री साहब को भेज दिया जाए। खर्च पर जब प्रश्न उठा तो अपनी सुरक्षा हेतु सभी ने अपने जेब से उसका प्रबंध करने

और बाद में किसी सरकारी योजना में समायोजित करने का फैसला किया। उसी रात एक भरोसेमंद व्यक्ति को डण्डा लाने मुंबई भेजा जाता है। वह व्यक्ति वैसा ही एक डण्डा लेकर वापस आता है। यह नया डण्डा बनाने के लिए कुल 522 रुपए 60 पैसे खर्च हुए थे। योजना को सफल बनाने वाले तीनों अधिकारियों ने खुशी से मुख्यमंत्री साहब का डण्डा मिलने का ऐलान किया। जिस चोर ने डण्डा चोरी किया था, उसे भी राजधानी लाने की बात फैलाई। डी.एस.पी. ने बड़े ही गर्व के साथ आई.जी. के हाथों उस डण्डे को मुख्यमंत्री के पास पहुँचाया।

डण्डा खो जाने के कारण मुख्यमंत्री साहब हमेशा अपनी मातृभाषा में गाली-गलौच करके अपने भाषिक ज्ञान का प्रदर्शन करते रहते थे। वे पहले कथावाचक होने के कारण उन्हें संस्कृत का ज्ञान था। अपने अनेक भाषणों और लेखों के द्वारा उन्होंने पोंगा राज्य की भाषा सीधी शौरसैनी-अपभ्रंश और पोंगा अपभ्रंश से निकली है, जिसके चिन्ह ऋग्वेद में मिलने की पुष्टि की थी। भाषा के किसी विद्वान ने इस पर आपत्ति नहीं जताई थी। उल्टे पोंगा राज्य से पोंगा भाषा के विद्वान ईरान भेजे गए थे तो उन्होंने पाया कि आवेस्ता में पोंगा के लक्षण मिलने की बात कही और किसी भाषाशास्त्री ने इसका विरोध नहीं किया।

भाषा के जंजाल से उभरकर जब मुख्यमंत्री को आई.जी. से खबर मिली कि, सर डण्डा मिल गया है। ज्वालाप्रसाद इस खबर से उछल पड़ते हैं लेकिन डण्डे को देखते ही उनकी हवा निकल जाती है। डण्डे को देखकर वे गहरे असमंजस में पड़ जाते हैं। वे डण्डे को बार-बार घूमा-फिराकर देखने लगते हैं। आई.जी. ने उनका ध्यान भटकाने के लिए बीच में ही कहा, सर बहुत मेहनत करनी पड़ी। आई.जी. ने डण्डा की खोजबीन की कार्यवाही का पूरा विवरण बताया। मुख्यमंत्री ने बिना उत्तेजित हुए आई.जी. से कहा, 'डण्डा ठीक है। कल मिलना। मुख्यमंत्री साहब की इस सपाट प्रतिक्रिया से पुलिस अधिकारी मुँह बनाकर लौट आते हैं। मुख्यमंत्री साहब अपनी पत्नी को डण्डा दिखाते हैं। तब पत्नी गौर से डण्डे को देखकर कहती है, ये आपका डण्डा नहीं है। ये तो पुराने डण्डे से भी काफी कीमती और अच्छा डण्डा है। इसकी चाँदी की मूँठ पर नक्काशी का काम तो पहले डण्डे से कई ज्यादा अच्छा है। मुख्यमंत्री जी को वह डण्डा अपने पास रखने और खोजने वाले अधिकारियों को सरकारी पुरस्कार देने की सलाह देती है।

मुख्यमंत्री कहते हैं कि वे इस खोज से बेहद खुश हैं, और आई.जी. ने एक आदमी को भी डण्डे की चोरी में गिरफ्तार किया है। लेकिन उनकी पत्नी बेगुनाह का पाप सिर पर लेने से मना करके उसे छोड़ने को कहती है। इसमें पाप कैसा? उल्टे उस आदमी का ही फायदा है। मुझे गोपनीय सूत्रों से सूचना मिली है कि वह मेरे ही चुनाव क्षेत्र का एक पागल भिखारी है। वह खुद को बदमाश कहलाता है। कम्यूनिस्टों से पैसे लेकर एक बार मुझे उसने गालियाँ दी थी। तब उसे पाँच दिन जेल में रखा था। अब की बार पुलिस उसे जेल में रखने का रोजाना पाँच रुपये दे रही है। वह भिखारी खुद ही गिरफ्तारी के लिए पुलिस के पास आया था। इससे पुलिस का भी काम होता है और भिखारी का भी गुजारा हो जाता है। पूरा पुलिस दल इसी युक्तियों पर चलता है और इस डण्डे की खोज भी ऐसी ही किसी युक्ति से हुई है।

पोंगा राज्य के मुख्यमंत्री सोच-विचार के बाद डण्डे को अपने पास रखने का फैसला करते हैं। इस फैसले से उन्हें अध्यात्मिक शांति मिलती है। पूजा करते समय वे बार-बार भगवान को धन्यवाद देते हैं। एक समय था

- अ. भुवनेश्वरनाथ ब. महावीरप्रसाद
क. ज्वालाप्रसाद ड. भानुप्रताप
3. डण्डे की चोरी से गुस्साए मुख्यमंत्री साहब के मतानुसार चोर-बदमाशों को किसके कोड़े ठीक कर सकते हैं?
- अ. हिटलर के ब. औरंगजेब के
क. चंगेजखान के ड. महंमद गोरी के
4. मुख्यमंत्री साहब के गांधी जयंती के भाषण के प्रस्ताव के कारण गधेड़िया मैदान का नाम बदलकर क्या रखा जाता है?
- अ. गांधी मैदान ब. क्रांति मैदान
क. जवाहर मैदान ड. कीर्ति मैदान
5. पोंगा राज्य के भाषा विद्वानों को ईरान जाने पर कौनसी भाषा में पोंगा भाषा के लक्षण दिखे?
- अ. मंदारिनी ब. आवेस्ता
क. अंग्रेजी ड. लैटिन

आ) निम्नलिखित प्रश्नों के सही विकल्प चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

1. मुख्यमंत्री का डण्डा की लकड़ी से बना था।
अ. सागवान ब. चंदन
क. आम ड. नीम
2. मुख्यमंत्री के डण्डे की लंबाई इंच की थी।
अ. 15 ब. 16
क. 17 ड. 18
3. मुख्यमंत्री के डण्डे की मूँठ धातु से बनी थी।
अ. सोने ब. चाँदी
क. पितल ड. तांबा
4. मुख्यमंत्री के डण्डे का वजन था।
अ. 335 ग्रॅम ब. 350 ग्रॅम

- * **कुकुरमुत्ता** : सफेद रेशदार जाल का 'कवक' (Fungus) परिवार की छतरी के आकार का हिस्सा होता है। ये न तो पौधे हैं न जीव जंतु। लोग इसे सब्जी बनाने के लिए इस्तेमाल करते हैं, जो मशरूम नाम से भी जाना जाता है।
- * **हिटलर** : एडोल्फ हिटलर (1889-1995 ई.) जर्मनी का एक क्रूर तानाशाह और नाजी पार्टी का नेता था। उसे 60 लाख यहूदियों और लाखों अन्य लोगों के भयानक नरसंहार का मुख्य दोषी माना जाता है। उसकी विस्तारवादी और नस्लवादी विचारधारा के कारण ही द्वितीय विश्वयुद्ध (1939-1945) शुरू हुआ था।
- * **ट्रंक कॉल** : एक लंबी दूरी से किया गया टेलीफोन कॉल है। अधिकतर विदेशों से इस प्रकार के कॉल किए जाते हैं जिसके दर स्थानीय कॉल की तुलना में ज्यादा होते हैं।
- * **इन्क्रिमेंट** : वृद्धि, बढ़ोतरी या इजाफा। यह शब्द ज्यादातर नौकरी में वेतनवृद्धि के लिए ज्यादा इस्तेमाल होता है।
- * **ऋग्वेद** : सनातन धर्म का सबसे प्राचीन और महत्वपूर्ण ग्रंथ है। यह वैदिक संस्कृत में लिखा गया दुनिया के सबसे पुराने धार्मिक साहित्य में से एक है। इसमें कुल 10 अध्याय और 1028 सूक्तों में 10,600 श्लोक शामिल हैं। इसकी रचना ईसा पूर्व 1500 से 1000 के बीच हुई। कबीलाई समाज की संरचना, ग्रामीण जीवन, ब्रह्मांड की उत्पत्ति और निर्गुण ब्रह्म के संबंध में दार्शनिक विचार का वर्णन है।
- * **पशोपश** : दुविधा या असमंजस की स्थिति। सही-गलत का फैसला लेने में कठिनाई की स्थिति।
- * **टेंपेरी सुल्तान** : अस्थायी राजा, अस्थायी सत्ताधीश ।
- * **महावीर चक्र** : भारत का दूसरा सबसे बड़ा सैन्य वीरता पुरस्कार है।
- * **विशेष सेवा मेडल** : भारतीय सशस्त्र दलों का एक प्रतिष्ठित शांतिकालीन सैन्य सम्मान है।
- * **सी.आई. डी.** : क्राइम इन्वेस्टिगेशन डिपार्टमेंट जिसे हिंदी में अपराध जाँच विभाग कहा जाता है। यह राज्य पुलिस की एक प्रमुख जाँच शाखा होती है, जिसे महत्वपूर्ण केस की छानबीन की जिम्मेदारी दी जाती है।

3.6.6 स्वयंअध्ययन प्रश्नों के उत्तर :

अ) वस्तुनिष्ठ के उत्तर :

- | | |
|---------------------------|--------------------|
| 1. ब. डॉ. सुदर्शन मजीठिया | 2. क. ज्वालाप्रसाद |
| 3. अ. हिटलर के | 4. क. जवाहर मैदान |
| 5. ब. आवेस्ता | |

आ) वस्तुनिष्ठ के उत्तर :

- | | |
|-----------------------|-----------------------|
| 1. ब. चंदन | 2. ड. 18 |
| 3. ब. चाँदी | 4. अ. 335 ग्रॅम |
| 5. ब. 522 रुपए | 6. अ. पोंगा |
| 7. ब. 2 हजार 765 रुपए | 8. क. 2 हजार 345 रुपए |
| 9. अ. महावीर चक्र | 10. ब. कम्यूनिस्टों |

3.6.7 सारांश :

1. डॉ. सुदर्शन मजीठिया एक सफल व्यंग्यकार, चित्रकार, इतिहास के विद्वान, नाटक-एकांकीकार, संपादक, भाषाविज्ञान के समीक्षक आदि बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी हैं।
2. समकालीन हिंदी व्यंग्य साहित्य में डॉ. सुदर्शन मजीठिया का नाम विशेष उल्लेखनीय है। पंजाब में जन्मे लेकिन महाराष्ट्र के विदर्भ और गुजरात के सौराष्ट्र में जीवन बीताने वाले डॉ. मजीठिया की व्यंग्य रचनाओं में भारतीय परिवेश में व्याप्त सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक और शैक्षिक क्षेत्र की विसंगतियाँ प्रमुख रूप से दिखने मिलती हैं।
3. डॉ. सुदर्शन मजीठिया की रचनाओं में व्यंग्य की गहराई और व्यापकता मिलती है, जो हास्य के साथ पाठकों को समाज की गंभीर समस्याओं पर विचार करने के लिए प्रवृत्त करती है।
4. 'मुख्यमंत्री का डण्डा' इस व्यंग्य रचना में भारतीय राजनीतिक व्यवस्था और स्वार्थी राजनेताओं की अवसरवादी प्रवृत्ति पर व्यंग्य कसा है।
5. 'मुख्यमंत्री का डण्डा' व्यंग्य रचना में मुख्यमंत्री ज्वालाप्रसाद और उनके डण्डे के खो जाने की कहानी को विषय बनाया है।
6. डॉ. मजीठिया ने भारतीय राजनीति की विसंगतियाँ, राजनेताओं की स्वार्थवृत्ति, जनता के रूपयों पर खुद के स्वार्थ की पूर्ति, संवैधानिक संस्थाओं का खुद के विकास के लिए इस्तेमाल, प्रशासनिक भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी, पुलिस का भ्रष्टाचार आदि का पर्दाफाश किया है।
7. डॉ. सुदर्शन मजीठिया ने पोंगा राज्य, मुख्यमंत्री का डण्डा इन प्रतीकों के माध्यम से भारतीय राजनीति की विसंगतियों का पर्दाफाश किया है। 'पोंगा' इस शब्द का वास्तविक अर्थ मूर्ख ऐसा होता है। 'मुख्यमंत्री का डण्डा' भारतीय राजनीति में नेताओं की धौंस का प्रतीक है, जो अपना स्वार्थ पूरा करने के लिए पूरी लोकतांत्रिक व्यवस्था को काम पर लगा देते हैं।
8. राजनेता अपनी निजी जरूरतों और स्वार्थों के लिए पुलिस, सी.आई.डी., सूचना एवं प्रसारण विभाग, जनसंपर्क अधिकारी, प्रशासकीय सरकारी विभाग के कर्मचारी आदि संवैधानिक संस्थाओं का इस्तेमाल करते हैं।

9. प्रशासकीय अधिकारी भी अपनी नौकरी बचाने के लिए भ्रष्ट नीतियों के द्वारा जनता के रुपयों का इस्तेमाल करके राजनेताओं की सेवा करके खुद की तरक्की करते हैं।
10. पागल भिखारी अंधी और स्वार्थी जनता का प्रतीक है जो राजनेता और प्रशासन के भ्रष्टाचार को बढ़ावा देने के लिए मदद करती है।

3.6.8 स्वाध्याय :

अ. लघुत्तरी प्रश्न।

1. डॉ. सुदर्शन मजीठिया का जीवन परिचय लिखिए।
2. डॉ. सुदर्शन मजीठिया का कृतित्व लिखिए।
3. डॉ. सुदर्शन मजीठिया के व्यक्तित्व का परिचय लिखिए।
4. 'मुख्यमंत्री का डण्डा' व्यंग्य का उद्देश्य लिखिए।

आ. दीर्घोत्तरी प्रश्न :

1. डॉ. सुदर्शन मजीठिया के जीवन परिचय, व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दीजिए।
2. 'मुख्यमंत्री का डण्डा' व्यंग्य रचना की कथावस्तु अपने शब्दों में लिखिए।
3. 'मुख्यमंत्री का डण्डा' व्यंग्य रचना में अभिव्यक्ति व्यंग्य को स्पष्ट कीजिए।

3.6.9 क्षेत्रीय कार्य :

1. 'मुख्यमंत्री का डण्डा' व्यंग्य रचना का मराठी में अनुवाद कीजिए।
2. 'मुख्यमंत्री का डण्डा' व्यंग्य रचना को आधार बनाकर महाविद्यालय के सांस्कृतिक कार्यक्रम में नाटक प्रस्तुत कीजिए।
3. 'मुख्यमंत्री का डण्डा' व्यंग्य रचना पर आधारित एक व्यंग्य कविता लिखिए।
4. मराठी में राजनेताओं पर लिखे गई हास्य-व्यंग्य रचनाओं को पढ़कर, उस पर कक्षा में चर्चा कीजिए।

3.6.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए :

1. चंदर सुभाष, हिंदी व्यंग्य का इतिहास, (सं. 2017), नई दिल्ली, भावना प्रकाशन।
2. सोलंकी भगवानसिंह (डॉ.), सुदर्शन मजीठिया के साहित्य में व्यंग्य, (सं.2012 ई.), हंसपुरम्, कानपुर, चिंतन प्रकाशन-208021



4.7. वोटर

– अमृतराय

अनुक्रम

- 4.7.1 उद्देश्य
- 4.7.2 प्रस्तावना
- 4.7.3 विषय विवेचन
 - 4.7.3.1 अमृतराय का जीवन एवं कृतित्व परिचय
 - 4.7.3.2 'वोटर' व्यंग्य का परिचय
 - 4.7.3.3 'वोटर' व्यंग्य का कथानक
- 4.7.4 स्वयंअध्ययन के लिए प्रश्न
- 4.7.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ
- 4.7.6 स्वयंअध्ययन के प्रश्नों के उत्तर
- 4.7.7 सारांश
- 4.7.8 स्वाध्याय
- 4.7.9 क्षेत्रीय कार्य
- 4.7.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

4.7.1 उद्देश्य :

प्रस्तुत व्यंग्य के अध्ययन के बाद आप -

- 1) व्यंग्यकार अमृतराय से परिचित होंगे।
- 2) अमृतराय की व्यंग्य-शैली से अवगत होंगे।
- 3) लोकतंत्र में 'वोटर' की केंद्रीय भूमिका और उसके महत्त्व को समझ सकेंगे।
- 4) राजनीति की विडंबनाओं और नेताओं की स्वार्थपरता का विश्लेषण कर सकेंगे।
- 5) चुनावी प्रक्रिया में नैतिक मूल्यों के अधःपतन और वोट के व्यापारीकरण पर गहन चिंतन कर सकेंगे।
- 6) एक जिम्मेदार नागरिक के रूप में अपने मताधिकार के सही उपयोग के प्रति जागरूक होंगे।

4.7.2 प्रस्तावना :

'वोटर' अमृतराय की एक प्रभावशाली व्यंग्य-रचना है, जो भारतीय लोकतंत्र की वास्तविक स्थिति को उजागर करती है। प्रस्तुत व्यंग्य लोकतंत्र में वोटर की भूमिका और उसकी विडंबनाओं पर आधारित है। व्यंग्यकार वोटर को लोकतंत्र का आधार मानते हैं, क्योंकि उसके बिना लोकतंत्र चल ही नहीं सकता। इसमें वोटर को लोकतंत्र की आधारशिला बताते हुए उसकी तुलना 'मोटर' से की गई है, जो पूरे तंत्र को गति देती है। व्यंग्यकार ने चुनाव के समय वोटर को मिलने वाले अस्थायी सम्मान और बाद में उसकी उपेक्षा पर तीखा कटाक्ष किया है। प्रस्तुत व्यंग्य के माध्यम से नेताओं की अवसरवादी प्रवृत्ति और वोटरों को लुभाने की प्रवृत्ति को उजागर किया है। साथ ही, बदलते समय में वोटर की स्वार्थपूर्ण मानसिकता को भी दर्शाया गया है। यह व्यंग्य-रचना लोकतंत्र में बढ़ती भ्रष्ट प्रवृत्तियों और मूल्यों के पतन की ओर संकेत करती है। अंततः यह पाठक को सोचने पर मजबूर करती है कि लोकतंत्र की सफलता के लिए वोटर और नेतृत्व, दोनों का जागरूक, जिम्मेदार और ईमानदार होना नितांत आवश्यक है।

4.7.3 विषय विवेचन :

4.7.3.1 अमृतराय का जीवन परिचय :

'अमृतराय' साहित्य के क्षेत्र में एक जाना-माना नाम है, जिसने साहित्य में गद्य की प्रायः सभी विधाओं को स्पर्श किया है और अपने भाव-जगत को कलम के माध्यम से उजागर किया है। वे हिंदी साहित्य के बहुआयामी रचनाकार, जीवनीकार, आलोचक, व्यंग्यकार और अनुवादक हैं। प्रगतिशील साहित्यकारों में अमृतराय महत्त्वपूर्ण स्थान रखते हैं। वे केवल एक साहित्यकार ही नहीं, बल्कि हिंदी साहित्य की परंपरा और आधुनिकता के बीच सेतु के रूप में भी जाने जाते हैं। अमृतराय का जन्म 15 अगस्त, 1921 को कानपुर (उत्तर प्रदेश) में हुआ। वे हिंदी के महान कथाकार मुंशी प्रेमचंद के छोटे पुत्र थे। उनके परिवार का वातावरण पूरी तरह साहित्यिक था, जिससे बचपन से ही उनमें लेखन, अध्ययन और सामाजिक चिंतन की प्रवृत्ति विकसित हुई। अंग्रेज़ी, बांग्ला और हिंदी तीनों भाषाओं पर उनका समान अधिकार था। अमृतराय का विवाह सुभद्रा कुमारी

चौहान की बेटी सुधा चौहान से हुआ था। स्वतंत्रता आंदोलन के समय वे राष्ट्रीय चेतना से प्रभावित हुए और सामाजिक सरोकारों को अपनी रचनाओं का केंद्र बनाया। उन्हें कई बार जेल जाना पड़ा। उनका साहित्य न केवल साहित्यिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि सामाजिक और ऐतिहासिक चेतना का भी दर्पण है। उनके साहित्य में सामाजिक यथार्थ, मध्यमवर्गीय जीवन, संघर्ष और मानवीय संबंधों का सजीव चित्रण मिलता है, साथ ही साहित्य, समाज और राजनीति के प्रति स्पष्ट और तार्किक दृष्टिकोण मिलता है। उन्होंने हिंदी साहित्य के विकास, प्रवृत्तियों और रचनाकारों पर महत्वपूर्ण टिप्पणियाँ की हैं। उनकी भाषा सरल, प्रभावशाली और यथार्थपरक है। उनकी रचनाओं में मंत्रित कर देने वाली भाषा ने उनकी अनुभूतियों का श्रृंगार किया है। एक सफल व्यंग्यकार के रूप में व्यंग्य की जीवितता को बर्करार रखने के लिए गतिशील और स्फटिक भाषा की आवश्यकता होती है। अतः 'अमृतराय' इस क्षेत्र के सफल हस्ताक्षर हैं। उनकी रचनाओं में एक वक्र हल्की-सी मुस्कराहट प्रदान करने की क्षमता है और यही व्यंग्य की सफलता है, जिसमें अमृतराय खरे उतरे हैं। साथ ही एक सफल अनुवादक के रूप में उन्होंने विश्व साहित्य की अनेक महत्वपूर्ण कृतियों का हिंदी में अनुवाद किया है। उन्होंने 'हंस' तथा 'नई कहानी' आदि विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं का संपादन किया और पत्रकारिता के माध्यम से सामाजिक व साहित्यिक मुद्दों को उठाया।

अमृतराय का जीवन संघर्षपूर्ण भी रहा। पिता की मृत्यु के बाद उन्हें आर्थिक और पारिवारिक जिम्मेदारियाँ निभानी पड़ीं। इसके बावजूद उन्होंने साहित्य साधना को जारी रखा। उन्होंने पत्रकारिता और संपादन कार्य भी किया, जिससे उनकी वैचारिक दृष्टि और व्यापक हुई। 14 अगस्त, 1996 को प्रयागराज में उनका देहावसान हुआ, परंतु उनका साहित्य आज भी प्रासंगिक है।

प्रमुख कृतियाँ :

- उपन्यास** : 'बीज, नागफनी का देश', 'जंगल', 'धुआँ'।
- कहानी-संग्रह** : 'कस्बे का एक दिन', 'गीली मिट्टी', 'भोर से पहले', 'सरगम', 'तिरंगा कफन'।
- नाटक** : 'चिन्दियों की एक झालर', 'शताब्दी', 'हमलोग'।
- जीवनी** : 'कलम का सिपाही'।
- आलोचना** : 'नई समीक्षा', 'विचारधारा और साहित्य', 'प्रेमचन्द की प्रासंगिकता'।
- अनुवाद** : रवीन्द्रनाथ ठाकुर, शेक्सपियर, ब्रेख्त, जूलियस फूचिक, आस्ट्रोवस्की, हार्वर्ड फ़ास्ट जैसे विश्वचर्चित लेखकों की महत्वपूर्ण कृतियों का हिंदी में अनुवाद। 'अग्निदीक्षा', 'आदिविद्रोही', 'खौफ की परछाइयाँ', 'फाँसी के तख्ते से', 'समरगाथा', 'हैमलेट' 'रवीन्द्रनाथ के निबन्ध'।
- संपादन** : 'हंस', 'नई कहानी'।
- सम्मान** : 1. अमृतराय को 'प्रेमचन्द : कलम का सिपाही' के लिए 1963 में 'साहित्य अकादेमी

पुरस्कार', 2. 1971 में 'सोवियतलैंड नेहरू पुरस्कार' से सम्मानित, 3. हावर्ड फ़ास्ट के उपन्यास 'स्पार्टाकस' के अनुवाद 'आदिविद्रोही' के लिए भारत सरकार द्वारा 'सर्वश्रेष्ठ अनुवाद पुरस्कार', 4. उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान द्वारा 'भारत भारती पुरस्कार' से भी वे सम्मानित।

4.7.3.2 'वोटर' व्यंग्य का परिचय :

'वोटर' प्रसिद्ध व्यंग्यकार अमृतराय की एक सशक्त व्यंग्य रचना है, जिसमें उन्होंने भारतीय लोकतंत्र की वास्तविक स्थिति और उसमें वोटर की भूमिका को तीखे लेकिन हास्यपूर्ण ढंग से प्रस्तुत किया है। प्रस्तुत व्यंग्य में अमृतराय ने लोकतंत्र की वास्तविकता को उजागर किया है। यह व्यंग्य राजनीति और समाज की उन विसंगतियों को उजागर करता है, जो चुनावी समय में विशेष रूप से दिखाई देती हैं। व्यंग्य में व्यंग्यकार ने वोटर को लोकतंत्र का आधार बताया है। उनके अनुसार, जैसे मोटर के बिना सवारी नहीं चल सकती, वैसे ही वोटर के बिना लोकतंत्र असंभव है। इसलिए वोटर को लोकतंत्र की 'मोटर' कहा गया है। व्यंग्यात्मक शैली में वे दर्शाते हैं कि चुनाव के समय वोटर का महत्त्व अचानक बहुत बढ़ जाता है। नेता और उम्मीदवार उसे खुश करने के लिए तरह-तरह के प्रलोभन देते हैं और उसकी पूजा करने लगते हैं। उस समय वोटर को देवता या 'ब्रह्म' के समान माना जाता है। किन्तु यह सम्मान स्थायी नहीं होता। चुनाव समाप्त होते ही वही वोटर उपेक्षित और असहाय हो जाता है। इस प्रकार अमृतराय ने लोकतंत्र की विडंबना को उजागर किया है कि जो व्यक्ति सबसे महत्त्वपूर्ण है, वही सबसे अधिक उपेक्षित भी है।

प्रस्तुत व्यंग्य का मूल भाव यह है कि लोकतंत्र में वोटर को सर्वोच्च माना जाता है, परंतु वास्तविकता में उसका सम्मान केवल चुनाव के समय तक ही सीमित रहता है। व्यंग्यकार ने हास्य और व्यंग्य के माध्यम से नेताओं की अवसरवादिता, वोटर की स्थिति और चुनावी तंत्र की विडंबनाओं को उजागर किया है। इस व्यंग्य का उद्देश्य केवल हास्य उत्पन्न करना नहीं, बल्कि समाज को जागरूक करना है। व्यंग्यकार प्रस्तुत व्यंग्य के माध्यम से यह संदेश देते हैं कि वोटर को अपने अधिकार और कर्तव्य समझने चाहिए तथा लोकतंत्र को मजबूत बनाने में सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए।

4.7.3.3 'वोटर' व्यंग्य का कथानक :

अमृतराय की व्यंग्य-रचना 'वोटर' का कथानक भारतीय लोकतंत्र की वास्तविकता को गहराई से उजागर करता है। व्यंग्यकार ने शुरुआत में ही वोटर और लोकतंत्र के संबंध को अत्यंत प्रभावशाली उपमा के माध्यम से स्पष्ट किया है। वे वोटर और लोकतंत्र के संबंध की तुलना मोटर और सवार से करते हैं। वे कहते हैं कि जैसे मोटर अपने सवार को लेकर चलती है, उसी प्रकार लोकतंत्र भी वोटर पर आधारित होकर चलता है। यदि वोटर न हो, तो लोकतंत्र निष्क्रिय हो जाएगा। इस प्रकार वोटर को लोकतंत्र की 'मोटर' बताया गया है, जो पूरे तंत्र को गति प्रदान करता है।

वोटर को केंद्र मानकर ही राजनीति चलती है। अमृतराय वोटर की महिमा का वर्णन करते हुए उसे केंद्र

बिंदु के रूप में स्थापित करते हैं। समाज के सभी धनी, बुद्धिजीवी, नेता वर्ग, सब उसी के चारों ओर घूमते हैं। राजनीतिक विचारधाराएँ, जैसे रूढ़िवादी विचारधारा वाले दक्षिणपंथी और प्रगतिशील तथा समाजवादी विचारधारा वाले वामपंथी भी वोटर को केंद्र में रखकर ही अपनी पहचान बनाते हैं। व्यंग्यकार यहाँ व्यंग्य करते हैं कि वास्तव में इन विचारधाराओं का कोई स्वतंत्र अस्तित्व नहीं, वे केवल वोटर के इर्द-गिर्द ही घूमती हैं।

कुल मिलाकर लोकतंत्र एवं राजनीति के केंद्र में वोटर ही होता है। सब रास्ते वहीं से फूटते हैं और घूम-फिर-कर वहीं पर खत्म होते हैं। व्यंग्यकार आगे बढ़कर वोटर को 'ब्रह्म' के समान बताते हैं। तभी तो उसके यहाँ भक्तों की लाईन लगी रहती है। एक के चले जाने पर दूसरा आता है और दूसरे के जाने पर तीसरा। इसका तात्पर्य यह है कि लोकतंत्र में वोटर ही सर्वोच्च है और सब कुछ उसी पर निर्भर करता है। वे व्यंग्य कसते हुए कहते हैं कि चुनाव के समय वोटर का भाग्य चमक उठता है। चुनाव के समय नेता वोटर के घर-घर जाकर उसे खुश करने का प्रयास करते हैं। वे उसके सामने माला, मिठाई, शराब, धन आदि भेंट स्वरूप प्रस्तुत करते हैं। यह स्थिति ऐसी प्रतीत होती है मानो किसी देवता की पूजा हो रही हो। व्यंग्यकार तो सच्चाई बयान करते हुए यहाँ तक लिखते हैं कि वोटर तो ब्रह्म से भी बड़ा होता है। लेकिन यह सम्मान केवल कुछ दिनों के लिए होता है। व्यंग्यकार इस अतिशयोक्ति के माध्यम से नेताओं की अवसरवादी प्रवृत्ति और वोटर को लुभाने की प्रवृत्ति पर कटाक्ष करते हैं।

चुनाव के समय वोटर की स्थिति अत्यंत विशेष हो जाती है। नेता उसके दर्शन के लिए व्याकुल रहते हैं और उसके सामने विनम्र बने रहते हैं। इस समय विधायक और भावी विधायक पागलों की तरह अपने वोटरों के दर्शन हेतु पीछले पाँच वर्ष एवं आगे आनेवाले पाँच वर्षों के लिए व्याकुल रहते हैं। व्यंग्यकार इसे 'भाग्यचक्र' कहते हैं। व्यंग्यकार सोचते हैं कि इन दिनों में वोटर घूरे यानी कूड़े के ढेर से भी अधिक भाग्यशाली होता है। लोककथाओं में कहा जाता है कि घूरे के भी दिन बारह साल में एक बार बदलते हैं, यानी उसे भी कभी अच्छा समय मिलता है। लेकिन वोटर के दिन तो हर पाँच साल में आते हैं, जब चुनाव होते हैं। हालाँकि यह 'अच्छे दिन' बहुत थोड़े समय यानी सिर्फ चुनाव के समय (पाँच दिन या कुछ कम-अधिक) के लिए होते हैं। उस दौरान वोटर की बहुत अहमियत बढ़ जाती है। नेता और उम्मीदवार उसे खुश करने की पूरी कोशिश करते हैं, उसकी खूब खातिरदारी करते हैं, वादे करते हैं, मान-सम्मान देते हैं। व्यंग्यकार ने तुलना करते हुए कहा है कि उस समय वोटर की स्थिति इतनी खास हो जाती है कि शादी के दूल्हे से भी ज्यादा उसकी इज्जत होती है, जैसे बारात में दूल्हे का बहुत मान होता है, उससे भी ज्यादा वोटर को महत्त्व दिया जाता है।

वह अपने घर के दरवाजे पर कूसी या खटिया पर आराम से बैठा रहता है और नेता उसके पास आकर प्रणाम करते हैं। इसके बाद व्यंग्यकार लोकतंत्र की एक और विडंबना को उजागर करते हैं। वे कहते हैं कि चुनाव के समय समाज के विभिन्न वर्ग, यहाँ तक कि कवि भी, वोटर को खुश करने के लिए सक्रिय हो जाते हैं। अर्थात् चुनाव के इन्हीं दिनों कवियों को काम मिलता है और साथ ही खाने-पीने का इंतजाम भी हो जाता है। और व्यंग्यकार व्यंग्य कसते हुए यहाँ कहते हैं कि कवि की काव्य-प्रतिभा अभी अकेलेपन और बोडरम के रेगिस्तानों में भटक रही है, यानी उसकी रचनाएँ वास्तविक जीवन और समाज से कटकर केवल कल्पनाओं, निजी

भावनाओं या निरर्थक विषयों में उलझी हुई हैं। यहाँ व्यंग्यकार का व्यंग्यात्मक सुझाव है कि यदि कवि इस तरह के अकेलेपन और निरर्थक भटकाव को छोड़ दे, तो उसकी काव्य-प्रतिभा कुछ ऐसा साहित्य रच सकती है, जो सच में समाज के लिए उपयोगी हो और जिसमें समाज, लोगों और वास्तविक समस्याओं के प्रति सच्ची प्रतिबद्धता दिखाई दे। इससे यह संकेत मिलता है कि पूरे समाज में चुनाव एक अवसर बन जाता है, जहाँ हर कोई किसी न किसी रूप में लाभ उठाने की कोशिश करता है। अमृतराय आगे कहते हैं कि हमें कभी नहीं भूलना चाहिए कि हमारा देश दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र है और यह लोकतंत्र वोटर रूपी कछुए की पीठ पर टिका हुआ है। यहाँ कछुए का अर्थ यह है कि जैसे कछुआ धीरे-धीरे चलता है, वैसे ही आम जनता (वोटर) साधारण, शांत और सहनशील होती है, लेकिन उसी के सहारे पूरा लोकतंत्र टिका रहता है। इस लोकतंत्र को मजबूत बनाना सबसे अधिक समाजोपयोगी कार्य है। यानी यदि हम लोकतांत्रिक व्यवस्था को सही दिशा में ले जाएँ, उसे ईमानदारी और मजबूती दें, तो इससे बढ़कर समाज के लिए कोई बड़ा काम नहीं हो सकता। अंत में व्यंग्यकार स्पष्ट करते हैं कि वोटर ही 'जनता जनार्दन' का दूसरा नाम है। इसलिए उसके प्रति समर्पण और सच्ची प्रतिबद्धता ही सबसे बड़ी प्रतिबद्धता है। यानी नेताओं और समाज के सभी लोगों का कर्तव्य है कि वे वोटर के हितों, समस्याओं और जरूरतों को सर्वोपरि रखें।

व्यंग्यकार का कथन है कि हमारी प्रगति जिस दिशा में बढ़ रही है, उसके संकेत पहले से ही दिखाई दे रहे हैं, जैसे कि कहावत है 'पूत के पाँव पालने में ही दिख जाते हैं', अर्थात् भविष्य की झलक शुरुआत में ही मिल जाती है। हमारे देश में वोटर को इतना महत्त्व दिया जाता है कि उसकी तुलना भगवान शंकर की 'बटिया' (पूजा में रखे प्रतीक) से की गई है, जिस पर हर आने-जाने वाला जल चढ़ाता है। इसी तरह चुनाव के समय हर नेता या व्यक्ति मतदाता को खुश करने, उसकी पूजा करने और उसे लुभाने में लगा रहता है। इससे अमृतराय व्यंग्य करते हुए यह कहना चाहते हैं कि भारत, जो एक धार्मिक प्रवृत्ति वाला देश है, अब लोकतंत्र को भी उसी तरह पूजने लगा है, पर यह पूजा वास्तविक सम्मान से अधिक स्वार्थ और दिखावे पर आधारित है। इस प्रकार भारत लोकतंत्र की एक नई, विडंबनापूर्ण परिभाषा प्रस्तुत कर रहा है, जहाँ वोटर को केवल चुनाव के समय अत्यधिक महत्त्व दिया जाता है।

लोकतांत्रिक व्यवस्था की कमजोरियों और विकृतियों को व्यंग्यात्मकता के साथ उजागर करते हुए व्यंग्यकार आगे कहते हैं कि आज का मतदाता भी कम चालाक नहीं रह गया है। वह भी अब चालाक एवं स्वार्थी हो गया है और वह स्वयं भी अब इस व्यवस्था का हिस्सा बनकर अन्य चीजों की तरह अपने वोट को बेचने की कला सीख चुका है। यानी लोकतंत्र में जहाँ वोट एक जिम्मेदारी और अधिकार होना चाहिए, वहाँ वह खरीद-फरोख्त की वस्तु बन गया है। आगे व्यंग्यकार व्यंग्य करते हुए कहते हैं कि इस तरह भारत जैसे बड़े लोकतांत्रिक देश में लोकतंत्र के कुछ नए आयाम जुड़ गए हैं, अर्थात् ऐसी विचित्र और भ्रष्ट प्रवृत्तियाँ, जो दुनिया में कहीं और देखने को नहीं मिलतीं। जिस गलत दिशा में हमारा लोकतंत्र आगे बढ़ रहा है, उसे और भी अधिक व्यवस्थित बनाने के लिए यह कल्पना की जा रही है कि जैसे ही चुनाव शुरू हों, वैसे ही वोटों का भी एक सट्टा बाजार खुल जाए। इस बाजार में वोट भी सोना-चाँदी, रूई या तिलहन जैसी वस्तुओं की तरह

खरीदे-बेचे जाएँ और उनके दाम लगातार घटते-बढ़ते रहें, जिन पर सटोरियों की नजर बनी रहे। यहाँ व्यंग्यकार का उद्देश्य यह दिखाना है कि लोकतंत्र में वोट, जो एक महत्वपूर्ण अधिकार और जिम्मेदारी है, उसे लोग वस्तु की तरह खरीदने-बेचने लगे हैं। इस स्थिति पर कटाक्ष करते हुए वे यह संकेत देते हैं कि अगर यही चलता रहा, तो वोटों का भी खुला व्यापार होने लगेगा। अर्थात् वे लोकतंत्र में बढ़ती भ्रष्ट प्रवृत्तियों, जैसे वोटों की खरीद-फरोख्त और स्वार्थ की आलोचना कर यह जताने की कोशिश में हैं कि यह प्रवृत्ति लोकतंत्र के मूल आदर्शों के विपरीत है। लेकिन इस पर कुछ लोग आपत्ति करते हैं कि सट्टा बाजार तो पूँजीपतियों से जुड़ा होता है और हम बड़े पूँजीपतियों के दुश्मन हैं तो फिर उनका रास्ता हम नहीं अपनाएँगे। इसलिए उनकी समझ में होता है कि उसके बजाय समाजवादी तरीका अपनाया जाए, यानी वोटों के टिकट लॉटरी की दुकानों पर बेचे जाएँ, फिर तो किसी को शिकायत का मौका नहीं मिलेगा। अतः उनका मानना होता है कि यह सुझाव तो बुरा नहीं है, क्योंकि अब तो गाँव-गाँव, गली-गली लॉटरी की दुकानें हो गई हैं, उन तक सभी की पहुँच है, वोट के टिकट भी मजे से वहीं पर बिका करें, इससे अच्छी बात और क्या हो सकती है। अमृतराय यहाँ व्यंग्य कसते हुए दिखाना चाहते हैं कि लोकतंत्र की पवित्र प्रक्रिया किस तरह मज़ाक और व्यापार में बदलती जा रही है। अंत में लोकतंत्र की गिरती हुई असल स्थिति पर कटाक्ष कर वे कहते हैं कि अभी दोनों ही प्रस्तावों पर विचार हो रहा है और किसी निश्चय पर पहुँचने में थोड़ा समय लगेगा, लेकिन जब इन प्रस्तावों में से किसी एक को मंजूरी मिल जाएगी, तब वह दिन संसार के लोकतंत्रों के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में अंकित किया जाएगा। अतः अमृतराय यहाँ यह स्पष्ट करना चाहते हैं कि लोकतंत्र में वोटर और वोट दोनों का महत्व घटकर स्वार्थ, भ्रष्टाचार और व्यापार तक सीमित हो गया है, जो लोकतंत्र के मूल आदर्शों के विपरीत है।

आगे चुनावी राजनीति और वोटर की बदलती प्रवृत्ति पर प्रकाश डालते हुए व्यंग्यकार लिखते हैं कि इस सबके बीच समय ने वोटर को और भी अधिक चालाक और स्वार्थी बना दिया होगा। वैसे ही वह अच्छा खासा चिकना घड़ा बन चुका है, अर्थात् उस पर किसी बात का असर नहीं होता। वह सभी से मुस्कराकर बात करता है, किसी को मना नहीं करता, लेकिन वास्तव में किसी के प्रति प्रतिबद्ध भी नहीं होता। वोटर बहुत बड़ा दानी बनकर, बिना कुछ दिए ही ऐसा व्यवहार करता है मानो उसने अपना सबकुछ दे दिया हो, सबको यह विश्वास दिला देता है कि वह उसी को वोट देगा। इस तरह हर वोटार्थी (चुनाव लड़नेवाला उम्मीदवार) उसका गुणगान करते हुए यह सोचकर निश्चिंता से घर लौटता है कि उसे उस वोटर का पक्का वोट मिल गया है।

यानी अब समय बदल गया है, वोटर भी अब पूरी तरह समझदार और व्यवहारिक हो गया है, यानी वह लोकतंत्र की असली चाल समझ चुका है। अब न तो वोटर सीधे कुछ कहता है और न ही वोटार्थी (चुनाव लड़नेवाला उम्मीदवार), लेकिन दोनों ही एक-दूसरे की मंशा अच्छी तरह जानते हैं, इस क्षणभंगुर संसार में कोई किसी का नहीं है। दोनों यह समझते हैं कि उनका यह सुखदाई मेल-जोल केवल दो घड़ी का है यानी चुनाव तक ही सीमित है। चुनाव के बाद न नेता मतदाता को याद रखेगा, न मतदाता नेता से कोई लगाव रखेगा। इसीलिए व्यंग्यकार 'आज नकद, कल उधार' वाली कहावत के माध्यम से बताते हैं कि वोटर अब पहले ही लाभ चाहता है, जैसे पैसा, सुविधा या कोई अन्य फायदा और उसके बाद ही वोट देने की बात करता है। अर्थात्

यहाँ व्यंग्यकार स्पष्ट रूप से जताना चाहते हैं कि लोकतंत्र में अब आदर्शों और कर्तव्य की भावना कम हो गई है और उसकी जगह स्वार्थ तथा लेन-देन ने ले ली है।

व्यंग्यकार 'एक तरह से अच्छा भी है' कहते हुए व्यंग्य कसते हुए लिखते हैं कि चुनाव के समय में ही इस पुण्यभूमि में नेताओं को जनता को खुश करने के लिए कई विकास कार्य करने पड़ते हैं। इसी कारण चुनाव से पहले सड़कों का निर्माण होता है, नए स्कूल-कॉलेज और अस्पताल खोले जाते हैं तथा नलकूप लगाए जाते हैं, अर्थात् जनता के लिए सुविधाएँ बढ़ाई जाती हैं। लेकिन यह 'अच्छाई' दरअसल एक घोर व्यंग्य है। क्योंकि ये सारे काम केवल चुनाव तक ही सीमित रहते हैं। चुनाव खत्म होते ही वही वोटर, जिसे पहले बहुत महत्व दिया जाता था और जिसे 'लोकतंत्र की मोटर' यानी सबसे महत्वपूर्ण शक्ति माना जाता था, वह 'लोकतंत्र का गधा' बन जाता है, अर्थात् उसकी उपेक्षा होने लगती है, उसकी कोई कद्र नहीं रहती और उसे नजरअंदाज कर दिया जाता है। अतः चुनाव के समय किए जाने वाले विकास कार्य वास्तविक सेवा भाव से नहीं, बल्कि वोट पाने के स्वार्थ से किए जाते हैं। चुनाव के बाद नेताओं का रवैया बदल जाता है और जनता को भुला दिया जाता है।

इस प्रकार 'वोटर' व्यंग्य के माध्यम से अमृतराय ने लोकतंत्र की विडंबनाओं, नेताओं की स्वार्थपरता और वोटर की बदलती मानसिकता का सशक्त और व्यंग्यपूर्ण चित्र प्रस्तुत किया है। प्रस्तुत व्यंग्य-रचना पाठक को सोचने पर विवश करती है कि लोकतंत्र की सफलता के लिए वोटर और नेता दोनों को अपनी जिम्मेदारियों को समझना चाहिए।

4.7.4 स्वयंअध्ययन के लिए प्रश्न

अ) नीचे दिए गए विकल्पों में से उचित विकल्प चुनकर प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

- 1) 'वोटर' किस विधा की रचना है?
 - अ) कहानी
 - ब) एकांकी
 - क) रेखाचित्र
 - ड) व्यंग्य
- 2) 'वोटर' व्यंग्य के व्यंग्यकार कौन हैं?
 - अ) अमृतराय
 - ब) हरिशंकर परसाई
 - क) मोहन राकेश
 - ड) शरद जोशी
- 3) वोटर और लोकतंत्र के संबंध को किस उपमा के माध्यम से स्पष्ट किया है?
 - अ) शिक्षक और छात्र
 - ब) राजा और प्रजा
 - क) किसान और खेत
 - ड) मोटर और सवार

- 118

12) व्यंग्यकार के अनुसार चुनाव के समय विकास कार्य क्यों होते हैं?

- अ) देश के विकास के लिए ब) वोट पाने के स्वार्थ से
क) नियमों के कारण ड) जनता की सेवा के लिए

13) व्यंग्य के अंत में वोटर को किस रूप में दिखाया गया है?

- अ) सेवक ब) नेता
क) शिक्षक ड) लोकतंत्र का गधा

आ) नीचे दिए गए पर्यायों में से उचित पर्याय चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

1. लोकतंत्र ----- पर आधारित है।

- अ) वोटर ब) नेता
क) मंत्री ड) अधिकारी

2. 'वोटर' व्यंग्य-रचना के व्यंग्यकार ----- हैं।

- अ) शरद जोशी ब) हरिशंकर परसाई
क) मोहन राकेश ड) अमृतराय

3. चुनाव के समय नेता वोटर को ----- देने जाते हैं।

- अ) आदेश ब) सजा
क) उपहार ड) दंड

4. वोटर को व्यंग्यकार ने ----- के समान बताया है।

- अ) देवता ब) पशु
क) दानव ड) वृक्ष

5. चुनाव के बाद वोटर ----- बन जाता है।

- अ) अधिकारी ब) मंत्री
क) राजा ड) गधा

6. लोकतंत्र को चलाने वाली 'मोटर' ----- को कहा गया है।

- अ) नेता ब) वोटर

- 5) दक्षिणपंथ - पारंपरिक और रूढ़िवादी विचारों को मानने वाली विचारधारा
- 6) पूँजीपति - धन और पूँजी रखने वाला व्यक्ति
- 7) अपरम्पार - जिसकी कोई सीमा न हो
- 8) धनी-धोरी - धनवान और प्रभावशाली लोग
- 9) ब्रह्म - सर्वोच्च सत्ता (यहाँ वोटर की महत्ता दर्शाने हेतु)
- 10) भाग्यचक्र - समय-समय पर बदलने वाली स्थिति
- 11) घूरा - कूड़े का ढेर
- 12) शंकर जी की बटिया - हर कोई जिस पर दिखावे के लिए जल चढ़ाता है (वोटर की औपचारिक पूजा)
- 13) चघड़ - चालाक, होशियार
- 14) गुर - कला
- 15) सट्टा बाजार - ऐसी व्यवस्था जहाँ किसी वस्तु के भविष्य के मूल्य पर दाँव लगाया जाता है
- 16) वोटार्थी - चुनाव में लड़नेवाला उम्मीदवार
- 17) शुचिता - पवित्रता या ईमानदारी
- 18) कटाक्ष - व्यंग्यपूर्ण टिप्पणी
- 19) ताँता - लगातार लगी हुई भीड़ या श्रृंखला
- 20) खुसट - बूढ़ा और चिड़चिड़ा (व्यंग्यात्मक अर्थ में)
- 21) कछुए की पीठ - धीमी लेकिन मजबूत नींव (जनता का प्रतीक)
- 22) प्रतिबद्धता - किसी कार्य के प्रति निष्ठा
- 23) सरगर्मियाँ - हलचल, गतिविधियाँ
- 24) माँज-घिसकर - अनुभव से परिपक्व या निखरा हुआ
- 25) चिकना घड़ा - जिस पर किसी बात का असर न हो
- 26) आज नकद, कल उधार - पहले लाभ, फिर समर्थन (स्वार्थी मानसिकता)
- 27) लोकतंत्र का गदहा - चुनाव के बाद उपेक्षित वोटर

4.7.6 स्वयंअध्ययन के प्रश्नों के उत्तर :

अ)

- | | | |
|---------------------------------|----------------------|------------------------------------|
| 1) व्यंग्य | 2) अमृतराय | 3) मोटर और सवार |
| 4) देवता | 5) ब्रह्म | 6) उपेक्षित |
| 7) उपहार देते हुए वादे करते हैं | 8) स्वार्थी और चालाक | 9) उस पर किसी बात का असर नहीं होता |
| 10) वोट का व्यापार होना | 11) वोटर की मानसिकता | 12) वोट पाने के स्वार्थ से |
| 13) लोकतंत्र का गधा | | |

आ)

- | | | |
|-----------|------------|-----------|
| 1) वोटर | 2) अमृतराय | 3) उपहार |
| 4) देवता | 5) गधा | 6) वोटर |
| 7) नेता | 8) दूल्हे | 9) जनता |
| 10) चालाक | 11) चिकना | 12) बटिया |

4.7.7 सारांश :

- 1) अमृतराय की व्यंग्य-रचना 'वोटर' भारतीय लोकतंत्र की वास्तविकताओं, उसकी विडंबनाओं और उसमें व्याप्त स्वार्थपरक प्रवृत्तियों को तीखे लेकिन रोचक ढंग से प्रस्तुत करती है।
- 2) इस व्यंग्य में व्यंग्यकार ने वोटर को लोकतंत्र का केंद्र बताया है। वह कहते हैं कि जैसे मोटर अपने सवार को चलाती है, वैसे ही लोकतंत्र वोटर पर आधारित होता है, अर्थात् वोटर ही उसकी मूल शक्ति है। चुनाव के समय वोटर का महत्त्व अत्यधिक बढ़ जाता है। नेता उसे खुश करने के लिए तरह-तरह के वादे, उपहार और सम्मान देते हैं, मानो वह कोई देवता हो। लेकिन यह सम्मान केवल चुनाव तक सीमित रहता है।
- 3) व्यंग्यकार अमृतराय प्रस्तुत व्यंग्य में व्यंग्यपूर्वक दर्शाते हैं कि चुनाव के दौरान समाज के सभी वर्ग यानी नेता, बुद्धिजीवी, यहाँ तक कि कवि भी, वोटर को रिझाने में लग जाते हैं। इस समय वोटर की स्थिति बहुत विशेष होती है, परंतु चुनाव खत्म होते ही वही वोटर उपेक्षित हो जाता है, उसकी समस्याओं पर कोई ध्यान नहीं देता।
- 4) अमृतराय यह भी बताते हैं कि अब वोटर भी पहले जैसा भोला नहीं रहा, बल्कि वह भी स्वार्थी और व्यवहारिक हो गया है। वह अपने वोट का लाभ उठाने की कोशिश करता है और सभी चुनाव लड़नेवाले उम्मीदवारों से मीठी बातें करके अपना फायदा साधता है। यानी वोटर भी धीरे-धीरे इस

व्यवस्था का हिस्सा बन जाता है और अपने वोट का मूल्य समझने के बजाय उसे बेचने लगता है। इस प्रकार वोट और लोकतंत्र दोनों ही कहीं न कहीं लेन-देन और स्वार्थ का माध्यम बनते जा रहे हैं।

- 5) व्यंग्यकार ने वोटों की खरीद-फरोख्त और लोकतंत्र के बाजारीकरण की कल्पना करके उसकी गिरती हुई स्थिति पर तीखा कटाक्ष किया है। साथ ही यह भी दिखाया है कि चुनाव के समय होने वाले विकास कार्य भी वास्तविक सेवा भावना से नहीं, बल्कि वोट पाने के उद्देश्य से किए जाते हैं।
- 6) अंततः प्रस्तुत व्यंग्य लोकतंत्र की कमजोरियों को उजागर करता है और यह संदेश देता है कि लोकतंत्र की सफलता के लिए वोटर और नेता दोनों को अपनी जिम्मेदारियों को ईमानदारी से समझना और निभाना चाहिए।

4.7.8 स्वाध्याय :

अ) लघुत्तरी प्रश्न.

- 1) अमृतराय का जीवन परिचय लिखिए।
- 2) अमृतराय का कृतित्व परिचय लिखिए।
- 3) 'वोटर' व्यंग्य का परिचय दीजिए।
- 4) 'वोटर' व्यंग्य का उद्देश्य लिखिए।

आ) दीर्घोत्तरी प्रश्न -

- 1) 'वोटर' व्यंग्य का कथानक लिखिए।
- 2) अमृतराय के 'वोटर' व्यंग्य में भारतीय लोकतंत्र की वास्तविक स्थिति का किस प्रकार चित्रण किया है? विस्तार से विवेचन कीजिए।
- 3) चुनाव के समय वोटर की बढ़ती महत्ता और चुनाव के बाद उसकी उपेक्षा को व्यंग्यकार ने किस प्रकार प्रस्तुत किया है? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

इ) ससंदर्भ व्याख्या के लिए प्रश्न -

- 1) "वोटर की महिमा अपरम्पार है। उसके दाएँ-बाएँ समाज के बड़े से बड़े धनी-धोरी और ज्ञानी-गुनी लोग चक्कर काटते हैं। जो उसके दाएँ रहते हैं उन्हें दक्षिणपंथी और जो बाएँ रहते हैं उन्हें वामपंथी कहा जाता है। यानी वे जो भी हैं, वोटर को केन्द्र मानकर हैं।"
- 2) "इस दृष्टि से वोटर साक्षात् ब्रह्म है। उससे अलग, उससे बाहर कहीं कुछ नहीं है। जभी तो उसके यहाँ भक्तों का ताँता लगा रहता है ... सबके हाथ में फूलों की माला होती है और दारू की बोतल।"

अक्सर लोग मिठाई का थाल लेकर भी पहुँचते हैं, और जो कुलीन हैं वे कंबल और चाँदी-सोने की अशर्फियाँ चढ़ाते हैं- भाँति-भाँति के नैवेद्य उस ब्रह्म के चरणों में जिसका नाम वोटर है।”

- 3) “वोटर निश्चय ही घूरे से अधिक भाग्यशाली होता है क्योंकि घूरे के दिन तो बारह बरस पर फिरते सुने गए हैं जब कि वोटर के दिन पाँच बरस पर ही फिर आते हैं, भले पाँच दिन के लिए ही क्यों न हो।”
- 4) “हमें यह कभी न भूलना चाहिए कि हमारा देश संसार का सबसे बड़ा लोकतंत्र है जो इसी वोटर नामक कछुए की पीठ पर खड़ा है।”
- 5) “हमारे यहाँ जिस प्रकार वोटर को शंकर जी की बटिया के समान पूजा जाता है, जिस प्रकार हर कोई जो उधर से गुजरता है, उस पर एक लोटा जल छिड़कना अपना धर्म समझता है, उससे सिद्ध है कि अपनी यह प्राचीन धर्मप्राण भारतभूमि संसार को लोकतंत्र की एक नई परिभाषा देने जा रही है।”
- 6) “अब वह भी बहुत चघड़ हो गया है और दूसरी सब चीजों की तरह अपने वोट बेचने का गुर भी सीख गया है। हम और भी व्यवस्थित ढंग से प्रगति कर सकें इस ख्याल से इधर यह भी सोचा जाने लगा है कि चुनाव की सरगर्मियाँ शुरू होते ही वोटों का भी तो एक सट्टा बाजार चालू हो जाया करे।”
- 7) “उनकी समझ में ज्यादा अच्छा और समाजवादी रास्ता यह होगा कि वोट के टिकट भी लाटरी की दुकानों पर बिका करें, फिर किसी को शिकायत का मौका न होगा। बात बुरी नहीं है क्योंकि अब तो गाँव-गाँव, गली-गली लाटरी की दुकानें हो गई हैं, उन तक सभी की पहुँच है, वोट के टिकट भी मजे से वहीं पर बिका करें, इससे अच्छी बात और क्या हो सकती है।”
- 8) “वोटर भी लोकतंत्र की भाषा समझने लगा है। मुँह से कोई कुछ नहीं कहता लेकिन वोटार्थी भी जानता है और वोटर भी कि इस क्षणभंगुर संसार में कोई किसी का नहीं - अपना यह जो कुछ सुखदाई मिलन आज हो रहा है वह भी दो घड़ी का है, फिर हम कहाँ तुम कहाँ।”
- 9) “चुनाव के अगले रोज तो वही वोटर, जो अभी कल तक लोकतन्त्र की मोटर था, लोकतंत्र का गदहा बन जाता है।”

4.7.9 क्षेत्रीय कार्य :

- 1) अपने क्षेत्र के अलग-अलग आयु, वर्ग और शिक्षा स्तर के वोटर्स का साक्षात्कार लें और असल वास्तविकता पर रिपोर्ट तैयार करें।
- 2) अपने चुनाव क्षेत्र के पिछले चुनाव के घोषणापत्र और वर्तमान वास्तविक स्थिति का तुलनात्मक अध्ययन कर निबंध लिखने का प्रयास करें।

- 3) अपने क्षेत्र के चुनाव समय में नेताओं के चुनावी प्रचार एवं अन्य गतिविधियों का प्रत्यक्ष अवलोकन कर रिपोर्ट तैयार करें।
- 4) 'वोटर' व्यंग्य का मराठी में अनुवाद कीजिए।

4.7.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए :

- 1) अमृतराय. (2003). श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएँ. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
- 2) हरिशंकर परसाई. (2010). मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएँ. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
- 3) शरद जोशी. (2008). प्रतिनिधि व्यंग्य रचनाएँ. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन।
- 4) राजकिशोर. (2015). भारतीय लोकतंत्र के प्रश्न. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन।



4.8 भूतपूर्व प्रेमिकाओं को पत्र

– शरद जोशी

अनुक्रम

4.8.1 उद्देश्य

4.8.2 प्रस्तावना

4.8.3 विषय विवेचन

4.8.3.1 शरद जोशी का जीवन एवं कृतित्व परिचय

4.8.3.2 'भूतपूर्व प्रेमिकाओं को पत्र' व्यंग्य का परिचय

4.8.3.3 'भूतपूर्व प्रेमिकाओं को पत्र' व्यंग्य का कथानक

4.8.4 स्वयंअध्ययन के लिए प्रश्न

4.8.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

4.8.6 स्वयंअध्ययन के प्रश्नों के उत्तर

4.8.7 सारांश

4.8.8 स्वाध्याय

4.8.9 क्षेत्रीय कार्य

4.8.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

4.8.1 उद्देश्य :

प्रस्तुत व्यंग्य के अध्ययन के बाद आप -

- 1) व्यंग्यकार शरद जोशी के जीवन परिचय एवं कृतित्व से परिचित होंगे।
- 2) शरद जोशी की व्यंग्य-शैली से अवगत होंगे।
- 3) प्रेम में लिप्त अवसरवादिता एवं स्वार्थपरता के कारण उत्पन्न दुष्परिणामों की विवशता को बेहद सटीक व्यंग्य के माध्यम को जान सकेंगे।
- 4) यौवन के मधुर एवं लुभावने प्रेम-प्रसंगों एवं किस्सों को महसूस कर सकेंगे।
- 5) समय रहते यौवन में प्रेम के सही मायने जानते हुए, स्वार्थाधता में केवल फायदे के लिए रिश्ते न बनाते हुए, मन की चंचलता को त्याग कर, भविष्य की चिंता करेंगे, तो आगे पछताने की नौबत नहीं आएगी, इस सत्य और सीख से रूबरू होंगे।

4.8.2 प्रस्तावना :

हर इंसान के जीवन में अपने यौवन और प्रेम के दिन बेहद खूबसूरत और लुभावने होते हैं, जिसमें वह इश्क-मिजाजी में मदमस्त रहता है। प्रस्तुत व्यंग्य में भी शरद जोशी ने अपने पहले प्रेम से लेकर तीसरे प्रेम तक के दिलचस्प किस्सों को अपनी अनोखी व्यंग्यात्मक अदा में बयान किया है। व्यंग्यकार की तीनों प्रेमिकाएँ अपने पतियों के साथ अपने ससुराल चली जाती हैं और व्यंग्यकार अपनी कम आय वाली संपादक की नौकरी, अपने बाल-बच्चों वाले परिवार और आर्थिक तंगी को लेकर जीने के लिए विवश है। भूतपूर्व प्रेमिकाओं को लिखे प्रस्तुत व्यंग्य-पत्र में वे अपनी भूतपूर्व प्रेमिकाओं से दिली शिकायत करते नजर आते हैं, अपनी भड़ास निकालते दिखाई देते हैं। जवानी का प्रेम और फिर आगे जीवन का कठोर यथार्थ तथा प्रेम और गरीबी के द्वंद्व को व्यक्तिगत तौर से सहज और अनोखे व्यंग्य के सहारे सामने रखने का प्रयास यहाँ व्यंग्यकार ने किया है। उन्होंने जवानी के दिन प्रेम के पीछे दौड़ते जाया किए और नतीजा आगे जीवन की कटु यथार्थता से दयनीयता का सामना उन्हें करना पड़ा और फिर आर्थिक विपन्नावस्था से तंग आकर अपनी ही भूतपूर्व प्रेमिकाओं से उन्हें भीख की गुहार, दरखास्त लगाने की नौबत का सामना करना पड़ा। अपनी इसी पेचीदा स्थिति को व्यंग्यकार ने इस गहरे व्यंग्य के माध्यम से अभिव्यक्ति दी है। अतः प्रस्तुत व्यंग्य में प्रेम के चिरंतन उदात्तता के भाव की कमी, केवल व्यक्तिगत निजी फायदे, स्वार्थाधता को देखते हुए रिश्तों में बदलाव, क्षणिक प्रेम को वरियता और रिश्तों में दार, दोनों तरफ से प्रेम की उदात्तता को निभाए जाने पर ही असल जिंदगी में खुशहाली आ सकेगी आदि बातों को उजागर किया गया है। ।

4.8.3 विषय विवेचन :

4.8.3.1 शरद जोशी का जीवन परिचय :

प्रबुद्ध, स्वतंत्र और बेबाक पत्रकार एवं व्यंग्यकार शरद जोशी का जन्म 21 मई, 1931 को मध्य प्रदेश

के उज्जैन में हुआ। हरिशंकर परसाई के बाद शरद जोशी महत्वपूर्ण व्यंग्य-लेखक के रूप में प्रसिद्ध रहे हैं। आपका व्यंग्य-साहित्य ऊपर से हँसी मजाक करता है, लेकिन अंदर से मर्म पर गहरी चोट करते हुए सोचने के लिए मजबूर कर देता है। वे श्रोताओं के समक्ष अपने व्यंग्य पढ़कर सुनाते थे और दाद पाते थे। चीनी में लिप्त दवा की गोली की तरह शरद जोशी का व्यंग्य ऊपर से हँसाता है, पर जरा ध्यान से समझें तो भीतर तक छेद देता है। शरद जोशी ने समसामयिक, सामाजिक, राजनीतिक और साहित्यिक सभी विषयों पर मृदु व्यंग्य लिखकर अपना विशिष्ट योगदान दिया है। समाज और देश के हर कोने से उन्होंने विषय उठाए हैं और उस पर गहरा, करारा और मार्मिक प्रहार किया है। उन्होंने हिंदी में व्यंग्य-विधि को शिल्प की सर्वाधिक कलात्मकता और सौन्दर्य प्रदान किया है। कभी-कभी उनका सुप्त कवि भी व्यंग्य के क्षेत्र में उभरा है। वैसे व्यंग्य के क्षेत्र में वे प्रयोगवादी भी रहे हैं। पुरानी कथ्य शैली को नया आयाम उन्होंने ही दिया है। उन्होंने हिन्दी व्यंग्य-विधा को सर्वाधिक कलात्मक सौन्दर्य प्रदान किया है। उनका व्यंग्य हास्य के गंदले जल में न खोकर पाठक के मन में एक चुभन पैदा करता है। समसामयिक घटनाओं में व्याप्त विसंगतियों को सार्थकता के साथ प्रस्तुत करने का श्रेय शरद जोशी को दिया जाता है। हिन्दी व्यंग्य को नई दिशा और अर्थवत्ता प्रदान करनेवाले वे एक महत्वपूर्ण व्यंग्यकार माने जाते हैं। वस्तुतः शरद जोशी इस क्षेत्र के एक नामांकित हस्ताक्षर हैं। पत्रकारिता, आकाशवाणी और सरकारी नौकरी के बाद उन्होंने लेखन को ही अपना जीवन बना लिया। 5 सितंबर, 1991 को उनका देहावसान हुआ।

प्रमुख कृतियाँ :

- नाटक** : 'अंधों का हाथी', 'एक था गधा उर्फ अलादाद खाँ' तथा 'अंधायुग क्रिकेट का'।
- व्यंग्य-रचनाएँ** : 'परिक्रमा', 'किसी बहाने', 'जीप पर सवार झल्लियाँ', 'रहा किनारे बैठ', 'तिलस्म', 'पिछले दिनों', 'मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य-रचनाएँ', 'यथा संभव', 'दूसरी सतह', 'हम भ्रष्टन के भ्रष्ट हमारे' आदि।
- संपादन** : 'दैनिक मध्य देश', भोपाल, 'नवलेखन मासिक', भोपाल, 'हिन्दी एक्सप्रेस', मुंबई आदि।
- फिल्म-लेखन** : 'क्षितिज', 'छोटी सी बात', 'दिल है कि मानता नहीं' आदि।
- दूरदर्शन धारावाहिक** : 'देवी जी', 'यह जो है जिंदगी', 'विक्रम और बेताल', 'वाह जनाब', 'ये दुनिया गजब की' आदि।
- पुरस्कार** : 'पद्मश्री', भारत सरकार से सम्मानित।

4.8.3.2 'भूतपूर्व प्रेमिकाओं को पत्र' व्यंग्य का परिचय :

'भूतपूर्व प्रेमिकाओं को पत्र' व्यंग्य का समूचा व्यंग्य एक युवक द्वारा अपनी पूर्व प्रेमिका को लिखे गए पत्र के रूप में प्रस्तुत होता है। प्रस्तुत व्यंग्य के माध्यम से आत्मकथात्मक शैली में व्यंग्यकार एक प्रेम में टूटे-बिखरे प्रेमी युवक की हैसियत से अपने पुराने प्रेम को याद करते हुए समाज और समय के बदलाव पर व्यंग्य

करते हैं। समय के साथ परिस्थितियाँ बदलती हैं। तीनों प्रेमिकाएँ व्यावहारिक और महत्वाकांक्षी हो जाती हैं, जबकि युवक भावनाओं में उलझा रह जाता है। अंततः प्रेमिकाएँ उसे छोड़कर एक अधिक सफल और स्थिर जीवन वाले व्यक्तियों के साथ जीवन बसा लेती हैं। इससे युवक को गहरा मानसिक आघात पहुँचता है। इसके बाद युवक अपने जीवन के संघर्षों का सामना करता है, उसे नौकरी और आर्थिक कठिनाइयों से जूझना पड़ता है। बाद में नायक प्रेम और जीवन के प्रति एक व्यंग्यात्मक दृष्टिकोण अपनाता है। वह मानता है कि प्रेम स्थायी नहीं होता, बल्कि यह एक 'व्यवस्था' है जो बार-बार बदल सकती है। वह स्वीकार करता है कि प्रेम की पीड़ा गहरी होती है, लेकिन गरीबी की पीड़ा उससे भी अधिक कष्टदायक है। वह अपने अनुभवों के आधार पर यह निष्कर्ष निकालता है कि आधुनिक समाज में प्रेम भी स्वार्थ, अवसर और व्यावहारिकता से प्रभावित हो गया है।

4.8.3.3 'भूतपूर्व प्रेमिकाओं को पत्र' व्यंग्य का कथानक :

प्रस्तुत व्यंग्य में व्यंग्यकार, एक टूटे-बिखरे प्रेमी के रूप में एक काल्पनिक पत्र के माध्यम से अपनी भूतपूर्व प्रेमिकाओं को संबोधित करते हैं। यह पत्र केवल व्यक्तिगत स्मृतियों का वर्णन नहीं करता, बल्कि इसके माध्यम से व्यंग्यकार समाज में प्रेम संबंधों की बदलती प्रकृति पर कटाक्ष करते हैं। आज विश्वासार्हता, क्षणिकता एवं उपभोक्तावादिता की दृष्टि से प्रेम की उदात्तता बाधित होती हुई नजर आती है और यह इस समय की बहुत बड़ी गहन विवंचना बनती जा रही है, इस बात को व्यंग्य के अपने अनोखे पैने अंदाज में शरद जोशी ने प्रस्तुत व्यंग्य के माध्यम से अभिव्यक्ति दी है। व्यंग्य की शुरुआत 'देवियों, माताओं और बहनों' जैसे संबोधन से होती है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि अब वह प्रेमी अपनी पूर्व प्रेमिकाओं को प्रेमिका नहीं, बल्कि एक दूर के सामाजिक रिश्ते के रूप में देखता है। अतः प्रेमी कहता है कि वे सब कोमल मीठे शब्द, जिनका उपयोग वह प्रति मिनट दस की रफ्तार से नदी-किनारों और पार्क की बेंचों पर प्रेमिकाओं के लिए करता था, उनके विवाह की शहनाइयों के साथ गायब हो गए। अब वह उन्हें रिश्ते की दूरी एवं मर्यादा से केवल 'माता' एवं 'बहन' कहकर अभिहित कर सकता है। आगे व्यंग्य कसते हुए व्यंग्यकार बयान करते हैं कि गोरखनाथ ने जैसे भर्तृहरी को सन्यासी बना दिया और भर्तृहरी की प्रेमिका पिंगला को माता, उसी प्रकार से वक्त ने प्रेमी को सन्यासी एवं सभी तीनों प्रेमिकाओं को माता बना दिया है। कसमें तो बहुत सारी की थीं, लेकिन आत्महत्या न करते हुए दोनों अपने-अपने रास्ते जिंदगी को जीने में व्यस्त हो गए।

प्रेमी के सारे प्रेमपत्रों को चूल्हे में झोंक प्रेमिकाओं ने अपने पति के लिए चाय बनाई और प्रेमी ने पत्रों में लिखी हुई बातों को कहानियों में उपयोग कर पैसा कमाया। एक-दूसरे को दिए 'साथ मरेंगे, साथ जिएँगे' के वे वचन किसी राजनीतिक पार्टी के चुनाव घोषणा पत्र के किए गए वायदों की तरह दोनों ने भुला दिए। जिन तीनों से दोनों के दिल आर-पार हुए थे, वक्त के सर्जन ने ऑपरेशन कर उनको निकाल दिया। और प्रेमिका की आँखें, जो अपने ज़माने में तीनों का कारखाना रही थीं, अब शांत और बुझी हुई रहने लगीं, मानो उनका लाइसेंस छिन गया। प्रेमी की आँखों पर अब मायनस पाँच का चश्मा लग गया है, यानी अब प्रेमी और प्रेमिका के प्रेम

के सभी डिब्बें खाली हो गए, सभी बजने वाली बाँसुरियाँ बिक गई और इश्क का झंडा, जो दोनों ने वादों की डोर से खींचकर ऊपर चढ़ाया था, उसे पुत्र-जन्म के बिगुल बजने के साथ नीचे उतारा गया।

प्रेमी अपनी पहली भूतपूर्व प्रेमिका कुंतला, जिसका असल नाम शकुंतला है, लेकिन कहीं उसके सनकी पति को इस बारे में पता न चले इस डर से वह उसे कुंतला के नाम से ही अभिहित करते हुए पत्र को आगे बढ़ाते हुए लिखता है कि जब वह 'प्रेम' शब्द के असल मायने भी नहीं जानता था और पत्र-लेखन सिर्फ एक अभ्यास के तौर पर वह करता था, तब कुंतला उसके जीवन में आई थी। यानी युवा प्रेमी और कुंतला दोनों भी अभी प्रेम इस संवेदना से अंजान थे, अबोध थे तब से प्रेमी ने दोनों के बीच प्रेम की नींव डाली थी। घर की देहरी पर बैठा युवा प्रेमी मुगल साम्राज्य के पतन के कारण रटता और कुंतला सामने नल पर घड़े भरती या रस्सियाँ कूदने का खेल खेलती। उस प्रेम के प्रति की अबोधता में भी प्रेमी ने अपनी प्रतिभा के बल पर उसे आँखें मिलाने एवं लजाने को सिखाया था। उनके प्रेम की मासूम शुरूआत में दरवाज़े के पीछे छिपकर कुंतला ने पहली बार कोमल निगाहों से युवा प्रेमी को ही देखा था। ताश की गड्डी छीनने के बहाने उसने उसका हाथ पहली बार पकड़ा था और गाल नोचने के लिए उन्हें पहली बार छुआ था। अबोध अवस्था में भी उन दिनों दोनों के बीच जो गुज़रा था, वह किसी घटिया फिल्म से कम नहीं था, पर फिर भी अपने-आपमें बॉक्स ऑफिस था। युवा प्रेमी ने ही उसे यौवन का अहसास दिलाया था। उसने ही कुंतला को आईने का मतलब समझाया, उसकी वजह से उसने दो चोटियाँ कीं और रिबन बाँधे थे। यानी युवा प्रेमी ने ही उसे प्यार का एहसास दिलाया था और सजना-सँवरना भी सिखाया था। उसने उसे ज्योमेट्री सिखाते वक्त प्रेम में तर्क और बराबरी की बात समझाने के लिए बताया था कि यदि दो त्रिभुजों की भुजाएँ बराबर हों तो कोण भी बराबर रहते हैं और सिद्ध भी कर दिखाया था। पर वह गलत था। बाद में कुंतला के पिताजी ने प्रेमी को समझाया कि अगर दहेज बराबर हो तो कोण भी बराबर हो जाते हैं और भुजाएँ भी बराबर हो जाती हैं। युवा प्रेमी उसके सामने खड़ा होकर ताकता रहा और वह अन्य किसी के प्रभाव में आकर्षित होकर ब्याह करके चली भी गई।

कुंतला अपने पति के साथ ब्याह करके चल दी तो युवा प्रेमी उसकी याद में कविताएँ करने लगा, शायद उसे लगा कि अपने बयाने दर्द-दिल की कविताएँ छपेंगी, तो वह पढ़ेगी और एहसास में रोएगी। पर ऐसा कुछ तो होने से रहा, उल्टा वे सभी कविताएँ सम्पादक के अभिवादन व खेद सहित लौट आईं। अब व्यंग्यकार की दृष्टि से इसका कारण था कि उन दिनों हिंदी साहित्य छायावाद छोड़ चुका था और मायावाद में फँस चुका था, तो फिर उन विरह-गीतों को कौन पूछता! आगे पत्र में प्रेमी बयान करता है कि वह पुराना वक्त अब बीत गया। अब वक्त के कारण कुंतला की उम्र भी बढ़ गई है! प्रेमी व्यंग्यात्मक ढंग से आगे कहता है कि जिन होंठों के अचुंबित रहने का रिकार्ड युवा प्रेमी ने पहली बार तोड़ा था, उन पर उसके पातिव्रत्य की आज ऐसी लिपस्टिक लगी है, जैसे उसकी कविता की कॉपी पर धूल की तहें। यानी वक्त के साथ घर-गृहस्थी को ढोते उसकी उम्र भी काफी बढ़ चुकी है और तो वह बेहद मोटी तक हो गई है, साथ ही उसकी पीठ में दर्द रहने लगा है। आज जब अपने बच्चों को स्कूल और अपने ठेकेदार पति को पुल का निर्माण देखने खाना कर कुंतला सोफे पर लेटी यह पत्रिका पढ़ेगी, तो प्रेमी उससे पूछना चाहता है कि क्या उसे याद है ओ ठेकेदारनी कि, कभी एक पुल बनाने

का, दो किनारे जोड़ने का ठेका उसने भी लिया था। और फिर आगे वह कहता है कि कभी याद आए तो 'रतन' फिल्म के पुराने गानों का रिकार्ड सुन लिया करो, जिन्हें कभी वह उसे सुनाते हुए गाती थी।

आगे फिर युवा प्रेमी के जीवन में दुसरे प्यार के रूप में नलिनी आती है। प्रथम वर्ष कला के छब्बीस लड़कियों में वह युवा प्रेमी को अलग ही नज़र आती थी। सारी क्लास उसकी दीवानी थी, पर युवा प्रेमी छात्र-सभा के लिए कक्षा का प्रतिनिधि चुना गया था, अतः वह प्रतिनिधि रूप से उस पर मरता था। कॉलेज के लम्बे आम के वृक्षों वाले रास्ते पर उसकी साइकिल के पीछे साइकिल चलाना, कक्षा में ऐसे कोण पर बैठना, जहाँ से उसका साईड लुक चेहरा आँखों को भाए, ध्यान आकर्षित करने के लिए प्रोफेसर से उल्टे-सीधे प्रश्न करना, बस-स्टॉप पर उसकी राह देखना, किताब माँगना आदि सब तरीके आजमाकर युवा प्रेमी ने उसे बता दिया कि वह उसके प्रेम के लिए बेहद उतावला है। बड़ी मुश्किलों के बाद उसने युवा प्रेमी को देख मुस्कराना मंजूर किया और जब पहली बार उसने उसके साथ चाय पी, वह दिन बिल्कुल ऐतिहासिक था। वैसे वह सब चालें जानती थीं, जिनसे लड़के लड़ू की तरह चक्कर खाते हैं और युवा प्रेमी कहानी-उपन्यासों में पढ़े सारे दाँव-पेंच उस पर आजमाने की कोशिश में था। पर इस मामले में वह हदसे ज्यादा व्यावहारिक थी। युवा प्रेमी जीवन-साथी को खुद से तलाशने के लिए प्रेम करता था और वह उसे केवल आशिक बने रहने तक ही उलझाए थी। वह तो सदैव अपने सौंदर्य का प्रदर्शन किया करती थी, और उसके प्रेम को एक सर्टीफिकेट की तरह कमरे में टाँकर खुश थी। अपनी सहेलियों को शान से बताती थीं कि हम पर भी लोग कुर्बान हैं। युवा प्रेमी की उम्मीदवारी ने उसके अहं की तुष्टि की। इसलिए जब युवा प्रेमी रात-भर जागकर उसके लिए नोट्स बनाता था, वह कोई पिकचर देखती रहती थी। वह अपने पिताजी के पैसों से साड़ियाँ खरीदतीं और युवा प्रेमी अपने पिताजी के पैसों से उसके लिए किताबें खरीदता था। उसने हर बार युवा प्रेमी से बिल चुकवाया और निश्चिंतता से घूमती रही। उसने उसे प्रेम के बदले नौकरी करना सिखा दिया। प्रेमी अब सोचता है कि वह अगर उसी लगन से पढ़ता तो फर्स्ट क्लास आता और उसे कहीं बड़ी नौकरी आराम से मिल जाती। उसे जल्द ही समझ आया कि वह उसे आदर्श प्रेमी की जगह आदर्श नौकर बनाने की कगार पर थी।

युवा प्रेमी ने तुरंत उससे दूरी बना दी और उसके मायने उसने बिल्कुल ठीक किया, क्योंकि उसका नलिनी के बारे में ऐसा मानना था कि अगर कहीं उसकी शादी नलिनी से हो जाती तो आज उसका भी हाल उसके बेचारे प्रोफेसर पति जैसा होता। बेचारा उसका प्रोफेसर पति दिन-भर ट्यूशन करता है, रात को जागकर नोट्स लिखता है, विश्वविद्यालयों के 'हेड ऑफ दि डिपार्टमेंट्स' की खुशामद करता है कि कापियाँ जाँचने को मिल जाएँ और अपनी किताब कोर्स में लगाने के लिए दौड़-धूप करता है। युवा प्रेमी की नजर में, जिस प्रकार नलिनी ने उसे अपने वश में कर रखा है, अगर उसी प्रकार वह प्रेमी युवा पर हावी हो जाती तो वह कहीं का नहीं रहता। आज वह नलिनी के पति होने की कल्पना से काँप उठता है, हालाँकि पहले वह इस सोच में था कि वह उसे मिल जाए तो सुखों की लॉटरी खुल जाए, लेकिन आज उसके सामने की सच्चाई बिल्कुल विपरित ही थी। नलिनी का यह प्रेम सिर्फ युवा प्रेमी तक ही सीमित नहीं था, तो उसने एक क्रिकेट-खिलाड़ी को भी खूब बुद्ध बनाया था। वह बेचारा तो अनजाने ही उसके प्रेम के पिच पर रन करता रहा और एक दिन वह उसका भी स्टंप उखाड़कर चली गई।

युवा प्रेमी को उसके कुछ ही समय की प्रेमिका नलिनी ने अच्छा-खासा बता दिया कि शेरो-शायरी का प्रेम से कोई सम्बंध नहीं। शेरो-शायरी में जो प्रेम को लेकर कसमों-वादों की, प्रेम में मर-मिटने या प्रेम जिंदगी में एक ही बार होने की बातें होती हैं, उनका असल में प्रेम से कोई संबंध नहीं ऐसा युवा प्रेमी का ग्रह हो गया। उसका मानना था कि यह एक बनी-बनाई व्यवस्था है और इसमें कोई व्यवधान भी आए तो निराश होने की कोई आवश्यकता नहीं। क्योंकि वास्तविक प्रेम जीवन में एक बार ही नहीं, बार-बार तथा हर बार होता है। इंसान को कोशिश नहीं छोड़नी चाहिए। एक दफ्तर में नौकरी न मिले तो उम्मीदवार हताश नहीं होता, वह दूसरी जगह एप्लाई कर देता है। और प्रेमी के इसी नेक विचार से नलिनी के दफ्तर से अपना आवेदन हटा कर उसने चंद्रा झा के दफ्तर में लगा दिया। उसका यहाँ तक भी नेक मानना था कि वहाँ भी आवेदन मंजूर न होता तो वह कहीं और आवेदन कर देता। लड़कियों का एक ही फार्मूला और उसे समझ न पाने की उलझन में उनके प्रेम में शिकार होते लड़कों की विभीषिका पर युवा प्रेमी अपने कुछ गहन विचारों को प्रस्तुति देता है कि, 'एक शहर में गुच्छा-गुच्छा सुंदर लड़कियाँ होती हैं। हर लड़की एक फार्मूले की जिंदगी जीती है। चुस्त कपड़े, कान में बाली, लटें, धीरे-धीरे चलना और उड़ती नज़र से देखना, घुटनों पर हाथ बाँध बैठना, सब एक-सा है। सभी जगह लड़कियाँ एक ही फार्मूले पर चलती हैं, पर फिर भी लड़के उसे समझ नहीं पाते और हर एक को अलग देखते हैं। यही फार्मूले गालिब के ज़माने में भी चलते होंगे और कालिदास के भी। वास्तव में हम एक फार्मूले से उलझ जाते हैं और प्रेम की महामारी के शिकार होते हैं।'

अतः युवा प्रेमी अपने नेक खयालों के चलते प्रेम में कोशिश को न छोड़ते हुए, अपनी तिसरी प्रेमिका चंद्रा झा पर डोरें डालना शुरू कर देता है। चंद्रा झा ने प्रेम की संवेदनाओं से ओत-प्रोत रवींद्र ठाकुर का साहित्य पढ़ा था, इसलिए वह चार ही दिनों में समझ गई कि युवा प्रेमी उसपर लट्टू है। अब मिलना-जुलना हो गया तो युवा प्रेमी उसे सबसे पहले मॉडर्न बनाता है, यानी अज्ञेय को पढ़ाता है, 'गुनाहों का देवता' की प्रति भेंट करता है, कृश्चंदर की मीठी-मीठी बातों में उलझाता है, अमृता प्रीतम की कविताएँ सुनाता है, बच्चन को कवि-सम्मेलन में बुलवाता है, 'तार सप्तक' पर बहस करता है और इलाहाबादी पत्रिकाओं की फाइल सौंपकर कहता है - 'चंद्रा रानी, छायावाद का चक्कर छोड़ और प्रयोगवाद में आ, क्या खयाल है मेरे विषय में। हिंदी का भविष्य मेरी जेब में है और तेरा वर्तमान मेरे हृदय में।' अब युवा प्रेमी ने नलिनीदेवी का खयाल छोड़ चंद्रादेवी की ओर प्रेम के कदम बढ़ा दिए थे। नलिनीदेवी जब टेबल-टेनिस खेलती थीं, ठीक उसी वक्त युवा प्रेमी लाइब्रेरी की सीढ़ियों पर चंद्रा से बात करता रहता था और नलिनीदेवी ने महसूस किया कि युवा प्रेमी ने एकाएक उसके पीछे साइकिल चलाना छोड़, चंद्रा के साथ सिटी-बस से जाने लगा है।

युवा प्रेमी को अंतिम क्लासिक तिसरा प्रेम चंद्रादेवी से हुआ। लेकिन आज जब वह इस पत्र में माताओं, बहनों और देवियों की आवाज़ लगा रहा है, तो उसमें चंद्रादेवी को जोड़ते हुए उसे बड़ी पीड़ा हो रही है। चंद्रादेवी के बारे में उसका खयाल है कि उस जैसी लड़की का जन्म सिर्फ प्रेम के लिए ही होता है। ऐसी लड़कियाँ प्रेम को एक पीड़ा की तरह ग्रहण करने की आदी होती हैं। जब भी वह मिलती, शिकायत करती मिलती, जैसे कि, 'देर से क्यों आए', 'आज मैंने यह साड़ी पहनी तुमने कुछ कहा भी नहीं', 'आज हम हिंदी क्लास से बाहर आ रही थीं तो देखा नहीं मेरी तरफ और सीधे चले गए' वगैरह।

चंद्रादेवी से प्रेम में हर क्षण परीक्षा में बैठने जैसा था। प्रतिदिन मार्क्स मिलते थे और युवा प्रेमी फेल होता था। व्यंग्यकार ने यहाँ युवा प्रेमी द्वारा व्यंग्य कसा है कि चंद्रादेवी ने युवा प्रेमी से उन दिनों बड़ा साहित्य रचवाया। उसको लूटा और हिंदी साहित्य समृद्ध किया। अगर युवा प्रेमी उससे नहीं मिलता, तो हिंदी का पिछला दशक कैसा सूना-सूना रहता! प्रतिदिन डाक आती, प्रतिदिन कार्ड डाले जाते। युवा प्रेमी के अनुसार चंद्रा के घर का वह ऊपर का कमरा प्रेम और साहित्य, दोनों के इतिहास में महत्व रखता है। वहीं पर युवा प्रेमी ने आँसू बहाए और उसने दर्द की कविताएँ लिखीं। वहीं दरवाज़े से टिककर नए साहित्य के गूढ़ प्रश्न सुलझाए और उँगलियाँ उलझाईं। वहीं पर उन दोनों ने दुष्प्रवृत्तियों को कोसा और एक-दूसरे को चाहा। वहीं पर चंद्रा ऊपर उठी, उसने आगे के कदमों को थामा और युवा प्रेमी खिड़की से नीचे गिरा, यानी वह वैसे का वैसा वहीं रह गया, नीचे गिरा दिया गया। चंद्रा अपने चाचा की मदद से स्कॉलरशिप ले विदेश चल दीं और युवा प्रेमी सह-सम्पादक हो गया एक दैनिक अखबार में। कुछ दिनों बाद युवा प्रेमी को चंद्रा के पत्र कम मिलने लगे। फिर उसे ज्ञात हुआ कि दूतावास के एक सांस्कृतिक अधिकारी से उसका संबंध जुड़ गया और वह इसी शहर में घूमता रहा।

प्रेमी अब उपहास भरे लहजे में कहता है कि माताओं और बहनों, 'प्रेम' शब्द अब उसके लिए सिर्फ एक मार्केट वेल्थू रखता है। यानी 'प्रेम' अब उसके लिए मात्र एक व्यावहारिक चीज बनकर रह गई है। वह प्रेम पर बड़े चाँव से लिखता है और लोग उसे प्रेम से पढ़ते हैं और जिसके लिए पत्रिका का संपादक भी उसे प्रेम से, जिसे लोग प्रेम से पढ़ते हैं और सम्पादक प्रेम से तनख्वाह देता है। प्रेम पर उपन्यास लिखो तो पॉकेट बुक में छप जाता है। यह उसकी आमदनी का हुनर है, जिसकी प्रतिष्ठा है और जीवन जीने के लिए उसे हररोज इसी का सहारा लेना पड़ता है। कुंतला, नलिनी और चंद्रा के पावन सम्पर्क से उसे जो प्राप्त हुआ, उसे उसने साहित्य में उतार दिया और अब वह बार-बार उसी को दोहराता है। अब जीवन में ताज़गी लाने के लिए लड़कियाँ घूर लेता है। दूसरों के साथ गुजरी घटनाओं को रस ले-लेकर पीता है। अब उसकी शादी हो गई है और उसे दो बच्चे भी हैं। अपनी रोजमर्रा की जिंदगी जीते हुए वह हररोज दफ़्तर जाता है। कुछ बाल यहाँ-वहाँ सफेद हो रहे हैं, अतः अब उसका कुछ-कुछ मनोबल भी गिरने लगा है। उसका फिर से प्रेमकांड करने का मूड जा रहा है। आज के दिन में समाज में उसकी प्रतिष्ठा बढ़ गई है और उसके गिरने का भय उसे सताए है। आज महिलाओं की सभा में रामायण पर बोलने के लिए उसे निमंत्रित किया गया है और वहाँ वह आदर्श प्रेम की व्याख्या करने वाला है। उन्हें प्रभावित करने पर मान बढ़ेगा और मन ही मन एक तुष्टि मिलेगी। बीते दिनों को याद करते वह कहता है कि कुंतला जब पानी भरते हुए उसे देखती थी या चंद्रा जब कॉपी पर बच्चन की एकाध पंक्ति लिख देती थी, तो उसे मीठा संतोष होता था। तब वह प्रेमी था लेकिन आज प्रेम का विशेषज्ञ है और प्रेम पर मार्गदर्शन देता है।

आज प्रेमी खुदसे कई बार अनुभव करता है, उसका ईमान उसे कहता है कि अपनी लिखी प्रेम-कथाओं के पारिश्रमिक का अंश उसे अपनी तीनों प्रेमिकाओं को भेजना चाहिए, पर वह चाह कर भी नहीं भेज सकता क्योंकि, उसकी जेहन में उनसे प्रेम कर जो लाभ उसे मिला है वह मात्र इतना ही है।

प्रेमी मानता है कि प्यार अमर है और अगर नहीं है, तो बराबर इंजेक्शन लगा अमर रखा जाना चाहिए।

खाल में भूसा भरकर कमरे में लटका देने से जैसे शेर अमर हो जाता है, वैसे ही प्यार भी अमर रहता है। इस दृष्टि से उसका कथन है कि उसका उन तीनों प्रेमिकाओं से प्यार बिलकुल नहीं खत्म हो सकता, आज भी वे तीनों चाहें तो इस प्यार को अमर रखने के लिए उसके लिए कुछ कर सकती हैं।

अब प्रेमी अपनी दिली ख्वाइश को जताते अपनी तीनों प्रेमिकाओं से बेहतर जीविका हेतु बेबस फरियाद करता है। पहले वह उसकी पहली प्रेमिका से दरखास्त करता है कि वह उसे अपने तीनों बच्चों के ट्यूशन का जिम्मा उसे सौंप दे, ताकि ट्यूशन हेतु मास्टर को दिए जाने वाले अस्सी रुपये उसे मिल सकें। बदले में वह यह विश्वास दिलाता है कि उसका प्रेम अब अपनी मजबूरियाँ समझता है और अब वह पवित्र रहेगा। पुष्टि हेतु उदाहरण बताते हुए वह कहता है कि प्राचीन काल में रानियाँ अपने पुराने प्रेमियों को राजा से कहकर अच्छी नौकरी दिला देती थीं। और फिर वह उससे ट्यूशन दिलाने की गुहार लगाता है। इसपर वह उसे यकीन भी दिलाता है कि वह एक शांत मास्टर की तरह घर आकर ट्यूशन पढ़ाएगा। प्रेम और जीवन की सच्चाई ने अब उसे यकीन दिलाया था कि प्रेम की तीव्रता से अधिक ज़रूरी है कि आदमी की आमदनी निरंतर बनी रहे। आगे वह उससे ट्यूशन दिलाने की दयनीय माँग करता है और अपने प्रेम की सौगंध देकर विश्वास जताता है कि पूरी ईमानदारी और लगन से काम करेगा।

आगे अपनी दूसरी प्रेमिका नलिनी से उसके लिए उसके दिल में जरा सा भी प्रेम हो तो एक कृपा करने की माँग करता है। दरअसल नलिनी के पति प्रेमी के बॉस के बहुत गहरे दोस्त हैं। नलिनी के घर बॉस का और बॉस के घर नलिनी का अक्सर आना-जाना रहता है। उसकी कम्पनी के कर्मचारियों में इसे लेकर बड़ी अफवाह भी फैली है कि दोनों का कई कोई चक्कर अवश्य है। तो इसी बात का फायदा उठाते हुए वह अपने बॉस से कहकर उसका प्रमोशन करवाने की बेबस गुजारिश करता है। अपनी आर्थिक स्थिति खराब रहने पर भी वह उसे याद करेगा और सुख की कामना करेगा, पर इसके आगे उसकी कामना है कि यदि उसे नलिनी के कारण प्रमोशन मिल जाए तो वह उसे सदा दुआएँ देगा।

वह नलिनी से कहता है कि उन दोनों का प्यार अमर है और फिर उससे अपने जीवन को उबारने की माँग करता है। असल में प्रेमी की कोई सिफारिश न होने के कारण वह आठ साल से उसी पद पर सड़ रहा है। और उसे पता है कि नलिनी से सुंदर, उससे कोमल और अधिक प्रभावशाली सिफारिश उसके कम्पनी के मालिक के लिए कोई और नहीं होगी। और फिर इसीलिए वह नलिनी से अपने प्रमोशन के लिए सिफारिश करवाना चाहता है।

अब उसकी तिसरी प्रेमिका चंद्रा की पहुँच तो विदेश विभाग तक होने के कारण वह उससे भी वहाँ कोई अच्छी नौकरी दिलाने की माँग करता है। बीते हुए दिनों के सच्चे प्रेम का वासता चंद्रा को देकर वह दिल्ली में चंद्रा के पति द्वारा दूतावास में अनुवाद और लेखन आदि का काम देने की बात को रखता है। वह उसकी खुशामद करते हुए कहता है कि वह चंद्रा से अब भी बेहद प्यार करता है, उसकी याद में रात भर सो नहीं पाता, तो अगर अनुवाद का काम उसे मिल जाए तो रात को वही करने की कामना कर, वह उसे अभी भी भूली नहीं होगी इस बात को जताते हुए, वह उससे मदद की आशा करता है।

अंत में प्रेमी अपने जीवन की गहरी सच्चाई को बयान करते हुए कहता है कि प्रेम की पीड़ा गहरी होती है, पर गरीब की पीड़ा उससे भी गहरी होती है। अब यथार्थ में वह अपनी प्रेमिकाओं से दिली गुजारिश करता है कि कॉलेज के दिनों में युवावस्था में उसने प्रेम किया, उनसे उसकी प्रेम की पीड़ा तो दूर नहीं हो सकी, लेकिन अगर वे चाहें तो वे उसकी गरीबी की पीड़ा तो दूर कर सकती हैं। अब वर्तमान में एक प्रेमी को छोड़ बी. ए. पास क्लर्क की हैसियत से उसके और उसके बाल-बच्चों सुखी रहने की सीमित महत्वाकांक्षाएँ उसमें शेष हैं। और फिर प्रेमी अपनी पुरानी मुहब्बत को गिरवी रखते हुए अब इन दिनों में उसके मदद की गुहार लगाते हुए प्रस्तुत पत्र लिखने की बात को सामने रखता है।

निश्चय ही प्रस्तुत व्यंग्य में प्रेम में समर्पण, विश्वासार्हता तथा उदात्त चिरंतन अभिव्यक्ति आदि मूल्यों के बदले अवसरवादिता, स्वार्थ, व्यावहारिकता, दिखावटीपन, खोखलापन, औपचारिकता एवं क्षणिकता आदि के बढ़ते प्रचलन और कारणवश छाए अधःपतन की ओर गहन चिंतन की दृष्टि से प्रकाश डाला गया है। प्रेम में बिखराव और फिर दिन गुजरते बिते दिनों के प्रति पछतावा और आर्थिक समस्याओं से गुजरते हुए यथार्थ की विवंचना में मदद की गुहार के सटीक चित्रण को शरद जोशी ने बेहद व्यंग्यात्मकता के साथ चित्रित किया है।

4.8.4 स्वयंअध्ययन के लिए प्रश्न

अ) नीचे दिए गए विकल्पों में से उचित विकल्प चुनकर प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. 'भूतपूर्व प्रेमिकाओं को पत्र' व्यंग्य के व्यंग्यकार कौन हैं?
 अ) बाबू श्यामसुंदरदास ब) विनोबा भावे
 क) मोहन राकेश ड) शरद जोशी
2. 'भूतपूर्व प्रेमिकाओं को पत्र' यह कौन-सी विधा है?
 अ) कहानी ब) एकांकी
 क) रेखाचित्र ड) व्यंग्य
3. प्रेमी अब अपनी भूतपूर्व प्रेमिकाओं को किस संबोधन से पुकारता है?
 अ) प्रियतम ब) सखी
 क) देवियों, माताओं और बहनों ड) जान
4. कुंतला के संदर्भ में युवा प्रेमी ने क्या सिखाने का दावा किया?
 अ) खाना बनाना ब) पढ़ाई करना
 क) आँखें मिलाना और लजाना ड) गाना गाना
5. चंद्रा झा किस साहित्य से प्रभावित थी?

- अ) हिंदी कविता ब) अंग्रेजी उपन्यास
क) रवींद्र साहित्य ड) उर्दू शायरी
6. प्रेमी के अनुसार प्रेम क्या बन गया है?
अ) भावना ब) मार्केट वैल्यू
क) कर्तव्य ड) त्याग
7. प्रेमी वर्तमान में क्या कार्य करता है?
अ) कवि ब) शिक्षक
क) दैनिक अखबार में सह-सम्पादक ड) व्यापारी
8. प्रेमी कुंतला से क्या अनुरोध करता है?
अ) शादी करने का ब) नौकरी दिलाने का
क) बच्चों को पढ़ाने का काम देने का ड) घर बुलाने का
9. प्रेमी नलिनी से क्या चाहता है?
अ) प्रमोशन दिलवाना ब) माफी
क) प्रेम ड) दोस्ती
10. चंद्रा से प्रेमी क्या अपेक्षा करता है?
अ) विवाह ब) पैसा उधार देना
क) विदेश यात्रा ड) नौकरी या अनुवाद कार्य दिलाना
11. प्रेमी के अनुसार कौन-सी पीड़ा अधिक गहरी है?
अ) प्रेम की ब) गरीबी की
क) असफलता की ड) अकेलेपन की
- आ) नीचे दिए गए पर्यायों में से उचित पर्याय चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।
1. प्रेमी अब अपनी पूर्व प्रेमिकाओं को ----- दूरी से संबोधित करता है।
अ) पारिवारिक ब) सामाजिक
क) व्यक्तिगत ड) भावनात्मक

- #### 4.8.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ :

- 137

- 3) इबारतें - लिखी हुई बातें, वाक्य या लेख
- 4) बिगुल - एक प्रकार का फूँक कर बजाया जाने वाला वाद्य यंत्र
- 5) झक्री - थोड़ा सनकी/अजीब स्वभाव का व्यक्ति
- 6) एक्सरसाइज - अभ्यास (यहाँ पत्र लिखने का अभ्यास)
- 7) रस्सियाँ कूदना - रस्सी को गोल-गोल घुमाकर कूदने का बचपन का खेल
- 8) ज्यामिती - ज्यामिति विषय, रेखाओं, आकृतियों, कोणों और स्थान (आकार-प्रकार) का अध्ययन करने वाली गणित की शाखा (यहाँ प्रेम में तर्क और बराबरी की बात समझने के लिए)
- 9) परपेंडिक्यूलर - लम्बवत खड़ा होना (यहाँ एक-दूसरे के सामने खड़े होकर देखना)
- 10) चतुर्भुज होना - चारों ओर से गिर जाना (यहाँ पूरी तरह से किसी के प्रभाव/आकर्षण में आ जाना)
- 11) अचुंबित - जिसे अभी तक चूमा न गया हो
- 12) मुटा जाना - मोटा/भारी हो जाना (समय के साथ बदलाव)
- 13) प्रोफाइल - चेहरे का लुभावना रूप/साईड लुक (प्रस्तुत व्यंग्य के संदर्भ में)
- 14) नुस्खे - उपाय या तरीके
- 15) नकेल - नियंत्रण रखने का साधन (किसी को अपने वश में रखना)
- 16) चाशनी चटाना - मीठी-मीठी बातें करना
- 17) कल्चरल अटैची - सांस्कृतिक पद / नौकरी से जुड़ा अधिकारी (विदेश में सांस्कृतिक काम देखनेवाला)
- 18) साख - प्रतिष्ठा / इज्जत
- 19) डिमॉरलाइज - मनोबल गिराना, हिम्मत तोड़ना
- 20) प्रमोशन - पदोन्नति, नौकरी में ऊँचा पद मिलना

4.8.6 स्वयंअध्ययन के प्रश्नों के उत्तर :

अ)

- | | | |
|-------------------------------|--------------------|---------------------------------|
| 1) शरद जोशी | 2) व्यंग्य | 3) देवियों, माताओं और बहनों |
| 4) रवींद्र साहित्य | 5) मार्केट वैल्यू | 6) दैनिक अखबार में सह-सम्पादक |
| 7) दैनिक अखबार में सह-सम्पादक | 8) प्रमोशन दिलवाना | 9) नौकरी या अनुवाद कार्य दिलाना |
| 10) गरीबी की | | |

आ)

- | | | |
|-------------------|---------------|------------------|
| 1) सामाजिक | 2) चाय | 3) पारिश्रमिक |
| 4) भंडार | 5) माइनस पाँच | 6) परपेंडिक्यूलर |
| 7) अपने पिताजी के | 8) नौकरी | |

4.8.7 सारांश :

- 1) यह व्यंग्य एक काल्पनिक पत्र के रूप में लिखा गया है, जिसमें एक टूटा-बिखरा प्रेमी अपनी भूतपूर्व प्रेमिकाओं को संबोधित करता है। वह 'देवियों, माताओं और बहनों' कहकर उन्हें पुकारता है, जिससे स्पष्ट होता है कि अब उसके प्रेम का भाव समाप्त होकर केवल औपचारिक सामाजिक संबंध रह गया है।
- 2) प्रेमी अपने अतीत को याद करते हुए बताता है कि कभी वह प्रेम के मीठे शब्दों में डूबा रहता था, लेकिन अब वे सब यादें समाप्त हो चुकी हैं। प्रेमिकाओं के विवाह के बाद वे प्रेम-संबंध भी समाप्त हो गए और दोनों अपनी-अपनी जिंदगी में व्यस्त हो गए। प्रेम-पत्र जलाकर घरेलू जीवन में बदल गए और प्रेमी ने उन्हीं भावनाओं को साहित्य बनाकर धन कमाया।
- 3) पहली प्रेमिका कुंतला के साथ उसका प्रेम मासूम और बालसुलभ था। सामाजिक व्यवस्था और दहेज जैसी वास्तविकताओं के कारण उनका संबंध टूट गया और कुंतला का विवाह कहीं और हो जाता है।
- 4) दूसरी प्रेमिका नलिनी व्यावहारिक और स्वार्थी थी, जिसने प्रेमी का उपयोग अपने अहंकार की तुष्टि के लिए किया। प्रेमी को यह समझ आया कि प्रेम में आदर्शवाद नहीं, बल्कि स्वार्थ और व्यवहारिकता अधिक प्रभावी है।
- 5) तीसरी प्रेमिका चंद्रा का गहरा प्रेम उसे साहित्यिक प्रेरणा देता है, लेकिन अंततः चंद्रा भी उसे छोड़कर आगे बढ़ जाती है।
- 6) अंत में प्रेमी स्वीकार करता है कि अब प्रेम उसके लिए केवल 'मार्केट वैल्यू' बनकर रह गया है। वह प्रेम पर लिखकर जीविका चलाता है और अपनी पुरानी प्रेमिकाओं से आर्थिक सहायता की अपेक्षा करता है।
- 7) इस व्यंग्य के माध्यम से यह स्पष्ट होता है कि आधुनिक समाज में प्रेम के उच्च आदर्शों का स्थान स्वार्थ, अवसरवादिता और व्यवहारिकता ने ले लिया है और यही इस रचना का मुख्य संदेश है।
- 8) पत्र में अतीत की प्रेमिकाओं को याद करते हुए व्यंग्यकार कहीं न कहीं अपने ही अनुभवों का मज़ाक उड़ाते हैं। यह आत्म-व्यंग्य रचना को और अधिक प्रभावशाली बनाता है।

- 9) यह व्यंग्य केवल व्यक्तिगत नहीं, बल्कि पूरे समाज का दर्पण है। इसमें आधुनिक जीवन की तेजी, अस्थिरता और संबंधों की नश्वरता को उजागर किया गया है। आधुनिक युग में प्रेम अपने आदर्श रूप से हटकर एक दिखावटी, अस्थायी और स्वार्थपूर्ण संबंध बन गया है।
- 10) प्रेम में सच्चाई और समर्पण का अभाव दिखाई देता है। शरद जोशी ने हास्य और व्यंग्य के माध्यम से इस सच्चाई को अत्यंत प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया है।

4.8.8 स्वाध्याय :

अ) लघुत्तरी प्रश्न.

- 1) 'भूतपूर्व प्रेमिकाओं को पत्र' व्यंग्य का उद्देश्य लिखिए।
- 2) 'भूतपूर्व प्रेमिकाओं को पत्र' व्यंग्य का परिचय लिखिए।
- 3) शरद जोशी का जीवन परिचय लिखिए।

आ) दीर्घोत्तरी प्रश्न -

- 1) 'भूतपूर्व प्रेमिकाओं को पत्र' व्यंग्य का कथानक लिखिए।
- 2) 'प्रेम अब एक मार्केट वैल्यू बन गया है।' इस कथन के संदर्भ में व्यंग्यकार के दृष्टिकोण की विस्तार से व्याख्या कीजिए।
- 3) व्यंग्यकार द्वारा तीनों प्रेमिकाओं (कुंतला, नलिनी, चंद्रा) से की गई सहायता-याचना के माध्यम से समाज की कौन-सी वास्तविकता उजागर होती है? विवेचन कीजिए।
- 4) 'प्रेम की पीड़ा गहरी होती है, पर गरीब की पीड़ा उससे भी गहरी होती है।' इस कथन का भावार्थ एवं व्यंग्यार्थ स्पष्ट कीजिए।
- 5) प्रस्तुत व्यंग्य के आधार पर बताइए कि व्यंग्यकार ने प्रेम में अवसरवादिता और स्वार्थपरता को किस प्रकार उजागर किया है।

इ) ससंदर्भ व्याख्या -

- 1) "साथ मरेंगे, साथ जिएँगे" के वे वचन, जो हमने एक-दूसरे को दिये थे, किसी राजनीतिक पार्टी के चुनाव घोषणा पत्र के लिए गए वायदों की तरह खुद हमने भुला दिए।"
- 2) "वे तीर, जिनसे दिल बिंधे थे, वक्त के सर्जन ने निहायत खूबसूरती से ऑपरेशन कर निकाल दिए।"
- 3) "मेरी एक्स-प्राणेश्वरी कुंतला! तुम मेरी ज़िंदगी में तब आयी थीं, जब मुझे 'प्रेम' शब्द समझने के लिए डिक्शनरी टटोलनी पड़ती थी।।"

- 4) ‘‘मैं प्रेम करने आया था, तुमने मुझे नौकरी करना सिखा दिया।’’
- 5) ‘‘प्रेम पर उपन्यास लिखो तो पॉकेट बुक में छप जाता है। यह सिक्का है, जिसकी साख है।’’
- 6) ‘‘प्रेम की पीड़ा गहरी होती है, पर गरीब की पीड़ा उससे भी गहरी होती है।’’

4.8.9 क्षेत्रीय कार्य :

- 1) प्रेम और विवाह के बदलते स्वरूप पर सर्वेक्षण तैयार करें।
- 2) ‘प्रेम और प्रेमिका’ विषय पर निबंध लिखने का प्रयास करें।
- 3) ‘भूतपूर्व प्रेमिकाओं को पत्र’ व्यंग्य का मराठी में अनुवाद करें।

4.8.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए :

- 1) जोशी, शरद. (२००९). यथार्थ और व्यंग्य (संपा.). नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन।
- 2) जोशी, शरद. (२०१२). परिक्रमा (व्यंग्य-संग्रह). नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन।
- 3) जोशी, शरद. (२०१५). किस्सा कोताह (व्यंग्य-संग्रह). नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन।
- 4) त्रिपाठी, वाचस्पति. (२०१०). आधुनिक हिंदी साहित्य: संवेदना और दृष्टि. नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन।
- 5) नवल, नंदकिशोर. (२०११). आधुनिक हिंदी साहित्य और मूल्य संकट. नई दिल्ली, वाणी प्रकाशन।
- 6) मिश्र, विद्यानीवास. (२०१३). भारतीय संस्कृति और आधुनिकता, इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन।



4.9 विज्ञापन युग

– मोहन राकेश

अनुक्रम

4.9.1 उद्देश्य

4.9.2 प्रस्तावना

4.9.3 विषय विवेचन

4.9.3.1 मोहन राकेश का परिचय जीवन एवं कृतित्व परिचय

4.9.3.2 'विज्ञापन युग' व्यंग्य का परिचय

4.9.3.3 'विज्ञापन युग' व्यंग्य का कथानक

4.9.4 स्वयंअध्ययन के लिए प्रश्न

4.9.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

4.9.6 स्वयंअध्ययन के प्रश्नों के उत्तर

4.9.7 सारांश

4.9.8 स्वाध्याय

4.9.9 क्षेत्रीय कार्य

4.9.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

4.9.1 उद्देश्य :

प्रस्तुत व्यंग्य के अध्ययन के बाद आप -

- 1) व्यंग्यकार मोहन राकेश से परिचित होंगे।
- 2) मोहन राकेश की व्यंग्य-शैली से अवगत होंगे।
- 3) आधुनिक युग में स्थित विज्ञापनों की तीव्र यथार्थता को जान सकेंगे।
- 4) आधुनिक विज्ञापन-कला का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
- 5) आधुनिक जीवन में व्याप्त विज्ञापनों की बढ़ती तीव्रता एवं उसके भीषण परिणामों पर उचित दिशा में विचार कर सकेंगे।

4.9.2 प्रस्तावना :

आज हम सभी विज्ञापनों के अनोखे दौर से गुजर रहे हैं। विज्ञापन हमारे जीवन का अभिन्न अंग बन गए हैं। उपभोक्तावादी संस्कृति के चलते विज्ञापनों के चकाचौंध ने समूचे इंसानी जीवन को घेर लिया है। यह जकड़ कुछ इस कदर बढ़ गई है कि अब तो उसके शिकंजे से बचना इंसान के लिए नासार-सा प्रतीत होता है। आज इंसान सुबह से रात तक विज्ञापनों से ग्रस्त एवं त्रस्त है। और लगातार विज्ञापन अपना भ्रमित मायाजाल इंसान के इर्द-गिर्द बुनता ही चला जा रहा है। आज के युग के विज्ञापनों की ऐसी शोचनीय यथार्थ स्थिति को व्यंग्यात्मक ढंग से मोहन राकेश ने अपने प्रस्तुत व्यंग्य के माध्यम से उजागर किया है।

4.9.3 विषय विवेचन :

4.9.3.1 मोहन राकेश का परिचय :

बहुमुखी प्रतिभा-संपन्न व्यक्तित्व के धनी मोहन राकेश हिंदी साहित्य जगत के चर्चित साहित्यकारों में अग्रणी स्थान पर विराजमान हैं। वे प्रयोगधर्मी नाटककार, नई कहानी के प्रमुख प्रवर्तक, श्रेष्ठ उपन्यासकार, उच्च कोटि के निबंधकार, प्रभावी अनुवादक, लब्धप्रतिष्ठित व्यंग्यकार, संस्मरणकार तथा गद्य की अन्य विधाओं में अपनी स्वतंत्र पहचान बनानेवाले संवेदनशील साहित्यकार हैं। उनका जन्म 8 जनवरी, 1925 को अमृतसर में हुआ। वह मूलतः एक सिंधी परिवार से थे। परिवार प्रतिष्ठित होने के साथ ही साहित्यिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों से जुड़ा था। उनका बचपन का नाम मदन मोहन गुगलानी था। आगे जाकर पंजाब विश्वविद्यालय से उन्होंने हिंदी और अंग्रेजी में एम. ए. किया। जीविका हेतु वे अध्यापन से जुड़े रहें, साथ ही कुछ वर्षों तक 'सारिका' के संपादक भी रहें। कहानी के क्षेत्र में सफल लेखन के बाद उन्होंने नाट्य-लेखन में ख्याति के नए स्तंभ स्थापित किए। उन्होंने हिंदी में हो रहे नाट्य-लेखन को रंगमंच पर प्रतिष्ठित किया। उनके नाटकों का प्रमुख भारतीय प्रतिष्ठित निर्देशकों ने निर्देशन किया है। संस्कृत और अंग्रेजी में भी लेखन करनेवाले मोहन राकेश सफल हिंदी नाटककार के रूप में अद्वितीय स्थान प्राप्त करने में सफल हुए हैं। इसीलिए तो मोहन राकेश को 'आधुनिक

नाटक का मसीहा' कहा गया है। वे सदा से अन्वेषी साहित्यकार रहे हैं। उनके पास एक चिन्तक का मस्तिष्क और साहित्यकार की दृष्टि थी। आधुनिक व्यस्त और दौड़ते हुए जीवन में भी मोहन राकेश चिन्तक के रूप में अपने व्यक्तित्व को आगे ले गए और साहित्य को मानव-मूल्यों की दृष्टि प्रदान की। उनके समूचे साहित्य में मध्यवर्गीय जीवन की विभिन्न समस्याओं का सूक्ष्मता एवं गहराई से मनोवैज्ञानिक चित्रण उपलब्ध होता है। ३ दिसंबर, 1972 को नई दिल्ली में उनका आकस्मिक देहावसान हुआ।

प्रमुख कृतियाँ :

उपन्यास	: 'अँधेरे बंद कमरे', 'न आनेवाला कल', 'अंतराल'।
कहानी-संग्रह	: 'क्वार्टर तथा अन्य कहानियाँ', 'पहचान तथा अन्य कहानियाँ', 'वारिस तथा अन्य कहानियाँ', 'एक घटना तथा अन्य कहानियाँ', 'मेरी प्रिय कहानियाँ', 'संपूर्ण कहानी-संग्रह'।
नाटक	: 'आषाढ़ का एक दिन', 'लहरों के राजहंस', 'आधे अधूरे', 'पैर तले की जमीन' (अधूरा, कमलेश्वर ने पूरा किया), 'शायद, हं:', 'छतरियाँ', 'रात बीतने तक' तथा अन्य ध्वनि-नाटक।
एकांकी-संग्रह	: 'अंडे के छिलके', 'सिपाही की माँ', 'प्यालियाँ टूटती हैं', 'बहुत बड़ा सवाल'।
निबंध-संग्रह	: 'बकलम खुद', 'मोहन राकेश : साहित्यिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण', 'परिवेश'।
अनुवाद	: 'मृच्छकटिक', 'शाकुंतला', 'स्वप्नवासवदत्तम', 'एक औरत का चेहरा', 'पाँच परदे'।
यात्रा-वृत्तांत	: 'आखिरी चट्टान तक'।
संस्मरण	: 'परिवेश'।
जीवनी	: 'समय-सारथी'।
रेखाचित्र	: 'दिल्ली रात के बाहों में', 'सत युग के लोग'।
डायरी	: 'मोहन राकेश की डायरी'।
सम्मान	: 'संगीत नाटक अकादमी' से सम्मानित।

4.9.3.2 'विज्ञापन युग' व्यंग्य का परिचय :

आज हम जहाँ पर भी देखें विज्ञापन-ही-विज्ञापन दिखाई देते हैं। आज विज्ञापनों की भरमार-सी हो गई है और इसीलिए मोहन राकेश ने वर्तमान युग को 'विज्ञापन युग' नाम से अभिहित किया है। यहाँ मोहन राकेश ने विज्ञापनों के बढ़ते प्रचलन पर तीखा व्यंग्य कसा है। असल में 'विज्ञापन युग' व्यंग्य आज के जीवन की

सामाजिकता और राजनीति की ओर करारा व्यंग्य करता है। आज की दिखावटी दुनिया में जरूरत न होने पर भी जरूरत पैदा करते हुए मोहजाल बुनकर ग्राहकों के मन में लालच पैदा करते हुए उन्हें भ्रमित करने का काम विज्ञापन लगातार कर रहे हैं। आज संसार की प्रत्येक वस्तु बिकाऊ है, जिस कारण विज्ञापनों की भरमार ने जीवन में उथल-पुथल मचा दी है। संसार की प्रत्येक वस्तु विज्ञापित की जाने लगी है। झूठी शान में लिप्त इंसान बाजार से विज्ञापनों के कारण नाहक ही गैर-जरूरतमंद वस्तुएँ खरीदने के लिए विवश हो रहा है। हर कोई, हर किसी का विज्ञापन बना चला है। अब नौबत यहाँ तक आ पड़ी है कि इस मची होड़ के दुष्परिणामों को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता और इसी गहन समस्या की सोच-विचार से अभिहित कराने हेतु मोहन राकेश ने प्रस्तुत व्यंग्य का ताना-बाना बुना है।

4.9.3.3 'विज्ञापन युग' व्यंग्य का कथानक :

प्रस्तुत व्यंग्य के माध्यम से मोहन राकेश ने 'विज्ञापन युग' किस हद तक हमारे रोजमर्रा के जीवन में हावी हो रहा है, इसका मार्मिक चित्रण किया है। घर-घर में अपना राज स्थापित करने हेतु अग्रसर विज्ञापनों की होड़ को मोहन राकेश ने दैनंदिन जीवन के विभिन्न छोटे-छोटे उदाहरणों द्वारा रोचकता के साथ प्रस्तुत करने का प्रयास इस व्यंग्य में किया है।

मोहन राकेश को पड़ोसियों के रेडियो पर सुबह से रात तक भजन, गीत और गजलों के साथ-साथ चाय, तेल और सिरदर्द की टिकियों के विज्ञापन सुनने पड़ते हैं। अब उन्हें उन विज्ञापनों की इतनी आदत हो चुकी है कि वह अन्य कहीं भी जब गालिब की गजल सुनते हैं या सूरदास का भजन सुनते हैं, या फिर कोई अच्छा-सा गीत भी सुनते हैं, तो उनके दिमाग में उन विज्ञापनों के शब्द अपने-आप ही गूँजने लगते हैं, जैसे की क्या आपके सिर में दर्द रहता है? सिरदर्द से छुटकारा पाइए... फलाना-फलाना की एक गोली लीजिए और सिरदर्द गायब। उन विज्ञापनों का उन पर इस हद तक परिणाम हुआ है कि उनके लिए कोई गजल, गजल नहीं रही या कोई गीत, गीत नहीं रहा, यह सब किसी-न-किसी चीज का विज्ञापन बन गए हैं। दिनभर यह विज्ञापन उनका पीछा करते रहते हैं। स्थिति यहाँ तक पैदा हुई है कि कबीर का मीठा गीत लय में बजता है कि 'रहना नहीं देश विराना है' और उसके तुरंत बाद विज्ञापन सुनाई देता है 'क्या आपके शरीर में खुजली होती है? खुजली का नाश करने के लिए एक ही रामबान औषधि है...' यानी यहाँ विज्ञापनों के लिए कोई निर्बंध नहीं है। ऐसी स्थिति में संत कबीर भी क्या कर सकते हैं। यह खुजली कंपनी उनकी किसी भी रचना पर अपनी मोहर चिपका सकती है। यानी विज्ञापन बगैर किसी रोक-टोक के कहीं पर भी अपनी मनमानी कर सकते हैं।

मोहन राकेश को लगता है कि उनके चारों ओर हर चीज का एक नया मूल्य उभर रहा है। कोई भी चीज ऐसी नहीं जो किसी न किसी चीज का विज्ञापन न हो। अपनी बात को स्पष्ट करने के लिए उन्होंने कंपनियाँ, विभिन्न ऐतिहासिक कला-कृतियों को विज्ञापन के लिए किस प्रकार इस्तेमाल करती है इसका व्यंगात्मक उदाहरण दिया है। अजंता के चित्र और एलोरा की मूर्तियाँ एक अछूती कला का अद्भुत उदाहरण हैं, पर आज इस कला-कृतियों को अलग रूप में ही इस्तेमाल किया जा रहा है।

उन मूर्तियों के केश-सौंदर्य को किसी कंपनी के तेल की शीशी के विज्ञापन के लिए इस्तेमाल किया जाता है। उनकी आँखें एक फार्मैसी कंपनी का विज्ञापन प्रतीत होती है और उनका समूचा कलेवर किसी पेट्रोल कंपनी की कलाभिरुचि को अभिव्यक्त करता है। जिन हाथों ने उन कला-कृतियों का निर्माण किया था, अब उन हाथों को भी किसी बिस्कुट कंपनी की विकास-योजना के विज्ञापन रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है। देश में व्याप्त सभी मंदिर, पुराने किले, खंडहर, स्तंभ और स्मारकों का भी मानो निर्माण इसीलिए किया गया है, जिससे लोगों में यातायात की सुविधा के प्रति रुचि जागृत हो, देश-विदेश के लोगों द्वारा पर्यटन-व्यवसाय को प्रोत्साहन मिले। मीनाक्षी और रामेश्वरम के शिखर तथा खजुराहो की मूर्तियों का प्रतीक रूप में इस्तेमाल किसी सीमेंट कंपनी के विज्ञापन के लिए किया जा रहा है। कश्मीर की पर्वतीय सुषमा, वहाँ की नव-युवतियों का भाव-सौंदर्य और वहाँ के कारीगरों की दिन-रात की मेहनत को वहाँ मिलनेवाले सफेद रंग के डिब्बा बंद शहद के विज्ञापन के साथ जोड़ा जा रहा है। बर्नार्ड शॉ के नाटक मानो इसलिए छापे जाते हैं, ताकि हमें पता चले कि ब्रिटेन की प्रेस में सबसे अच्छी छपाई की जाती है। प्रशांत महासागर में अनुबम हमें इस बात की चेतावनी देने के लिए गिराए जाते हैं कि हम और हमारे बच्चों के सुरक्षित भविष्य हेतु जल्द-से-जल्द जीवन बीमे की पॉलिसी ले लें। भारत और पाकिस्तान में कश्मीर के लिए लड़ाई सिर्फ इसलिए होती है कि वहाँ की सेबों का मुरब्बा बहुत अच्छा होता है और जिसे वहाँ की सिर्फ एक ही कंपनी तैयार करती है।

ईश्वर ने ये जो धरती बनाई है या फिर मनुष्य ने विज्ञान के आधार पर यह जो उन्नति की है मानो यह सभी विज्ञापन-कला के उत्कर्ष हेतु ही है। उत्तर ध्रुव से लेकर दक्षिण ध्रुव तक कुछ भी ऐसा नहीं बचा है, जिसका किसी न किसी चीज के विज्ञापन के लिए उपयोग ना किया जा रहा हो। आज हर चीज और हर जगह का इस्तेमाल विज्ञापन के रूप में किया जा रहा है। गेहूँ की फसल एक कपड़े की मिल का विज्ञापन है, क्योंकि फसल से उत्पन्न पैसे से केवल कपड़ा ही खरीदा जाए। कपड़े की मिल डबल रोटी की बेकरी का विज्ञापन है, क्योंकि मिल में काम करने वाले तभी काम पर जा सकते हैं, जब वह डबल रोटी खाएँगे। अब बेकरी वॉटरप्रूफ जूते का विज्ञापन है, क्योंकि बेकरी में वाटरप्रूफ जूते न होंगे तो बारिश के कारण इंसान डबल रोटी को भी नहीं पा सकेगा। आज बहुत-सी चीजे हैं, जो एक-दूसरे का विज्ञापन बनी हैं, जैसे की फूल इत्र की शीशी का विज्ञापन है, इत्र की शीशी फूलों का विज्ञापन है, पत्र लेखक का विज्ञापन है, लेखक पत्र का विज्ञापन है, साथ ही सौंदर्य श्रृंगार-प्रसाधनों का विज्ञापन है और श्रृंगार-प्रसाधन सौंदर्य के विज्ञापन हैं। इसी कड़ी में उपदेशकता, आलोचकता, नेतागिरी आदि बहुत-सी चीजें स्वयं अपना विज्ञापन होती हैं। आज के युग में हम विज्ञापन से नहीं बच सकते। सुबह-सुबह ही विज्ञापन दस्तक देते हुए सवाल करते हैं कि क्या आपने आज दाँत साफ किए हैं? और अपने आप मुफ्त का परामर्श भी देते हैं कि दाँत साफ करने के लिए केवल क्लोरोफिल वाले टूथपेस्ट से दाँत साफ कीजिए। क्योंकि याद रखिए दाँतों को रोगों से बचाने के लिए सिर्फ यही एक साधन है। घर से निकलते ही रास्ते के दोनों तरफ, चौराहों पर, सड़क के खंभे पर विज्ञापन हमें विभिन्न जानकारी प्रदान करते हैं। साथ ही खतरे की चेतावनी भी देते हैं। आज हम जिधर देखें उधर विज्ञापनों का ही बोलबाला है। विज्ञापनों की होड़ में इंसान की व्यक्तिगत जिंदगी बिल्कुल व्यक्तिगत नहीं रही है और मानो नौबत यहाँ तक आने की कगार पर है कि उसे केवल और केवल विज्ञापन-दाताओं के परामर्श से ही जिया जा सकता है।

विज्ञापन-कला जिस तेजी से आज अपनी उन्नति कर रही है, उसे देखकर यह अंदेशा लगाया जा सकता है कि भविष्य में हमारी शिक्षा, विज्ञान, संस्कृत और साहित्य इनका प्रयोग केवल विज्ञापन-कला के लिए ही किया जाएगा। आज भी इन सभी का प्रयोग विज्ञापन-कला के लिए किया जा रहा है। आज बहुत सारी शिक्षा संस्थाएँ सांप्रदायिक संस्थाओं का विज्ञापन कर रही हैं। अपनी पीढ़ी के कई लेखकों की कृतियाँ किसी न किसी स्मारक-निधि से प्रकाशित होकर उनकी दिवंगत आत्मा के प्रति स्मारक होने का फर्ज अदा कर रही हैं। लेकिन भविष्य में यह कला और दो कदम इससे भी आगे बढ़ जाएगी। विद्यार्थियों को जो उपाधियाँ दी जाएँगी उन पर भी किसी न किसी कंपनी का विज्ञापन छपा होगा। उन पर लिखा होगा कि आज ही आयात-निर्यात का धंधा शुरू कीजिए। मुफ्त सूची पत्र के लिए निम्न पते पर संपर्क कीजिए...। नया अविष्कार करने वाला हर व्यक्ति टेलीविजन पर यह निवेदन करता हुआ दिखाई देगा कि उसकी सफलता का श्रेय किसी रबड टायर की कंपनी को देना चाहिए, क्योंकि उन्हीं के प्रोत्साहन और प्रेरणा से ही उन्हें नई दिशा मिली है। आगे विज्ञापन भगवान तक को भी नहीं बख्शेंगे।

विष्णु के मंदिर में संगमरमर की सुंदर प्रतिमा के नीचे पट्टी लगी होगी कि इस भवन और मूर्ति के निर्माण का श्रेय लाल हाथी वाले निशान के निर्माता को है। किसी भी भवन और मूर्ति के निर्माण के लिए तथा वास्तु-कला संबंधी सभी आवश्यकताओं के लिए लाल हाथी का निशान याद रखें। आगे चलकर हमारे हाथ में ऐसे उपन्यास आएँगे कि उसके सुंदर चमड़ी की जिल्द पर छोटे अक्षरों में छपा होगा कि साहित्य में अभिरुचि रखनेवालों के लिए इक्का मार्का साबुन बनानेवाले कंपनी की ओर से तुच्छे भेंट। आगे जाकर बात यहाँ तक पहुँच जाएगी की शादी के बाद पति बड़े अरमान से घूँघट उठा कर दुल्हन की प्रशंसा में कुछ कहेगा तो दुल्हन मधुर भाव से कहेगी कि उसकी सुंदरता का राज नौ सौ इक्यावन नंबर वाला साबुन ही है, आप भी वह इस्तेमाल कीजिए। इसकी सुमधुर गंध? सारा दिन दिमाग को ताजा रखती है और इसकी मुलायम झाग से त्वचा बहुत कोमल रहती है। इसकी बड़ी टिकिया खरीदने से पैसे की भी बचत होती है...।

मोहन राकेश विज्ञापनों की सही जगह के बारे में व्यंग्य करते हुए लिखते हैं कि विज्ञापन-कला की दृष्टि से सब चीजों का एक-दूसरे के साथ अन्योन्याश्रित संबंध लगाया जा सकता है। दवाई की शीशियों में मक्खन के डिब्बों का विज्ञापन तथा मक्खन के डिब्बों में दवाई की शीशियों का विज्ञापन होना चाहिए। चित्र गैलरी में चित्रों के अतिरिक्त तेल के इश्तहार टाँगने चाहिए और तेल की बोतलों पर चित्र गैलरियों के इश्तहार होने चाहिए। कंबलों और दुशाला में चाय और कोको के विज्ञापन हो सकते हैं। नमदे और गलीचे रबडसोल के जूते के विज्ञापन का आदर्श साधन हो सकते हैं। बैकों की दीवारों पर लॉटरी और रेस कोर्स के विज्ञापन लिखे जा सकते हैं। रेस कोर्स में बचत की स्कीमों का विज्ञापन दिया जा सकता है। रेल और हवाई जहाज के टिकटों पर बीमा कंपनियों का विज्ञापन हो सकता है और अस्पतालों की दीवारों पर वैवाहिक विज्ञापन लगाए जा सकते हैं।

आज हर जगह विज्ञापन ही विज्ञापन दिखाई देते हैं। जहाँ विज्ञापन होते हैं, वहाँ तो दिखाई ही देते हैं, लेकिन जहाँ नहीं होते हैं, वहाँ भी वे नजर आते हैं। विज्ञापनों की अतिशयता के कारण मोहन राकेश का दिमाग

हर चेहरे, हर आवाज, हर नाम का संबंध किसी-न-किसी विज्ञापन के साथ जोड़ देता है। सुबह-सुबह जब राकेश चायवाले की दुकान के लड़के को चाय लाने के लिए कहते हैं, तो उनको निलगिरी चाय के इशतहार की सुंदरी का खयाल आता है, जिसका चेहरा वह रोज अखबार में देखते हैं। नीलगिरी के नाम से उन्हें कॉफी प्रदेश की ढलाने याद आती हैं, साथ ही एक बुढ़े राजपूत का चेहरा उनकी आँखों के सामने उभरता है और अनायास ही वे उस इशतहार की लाइन बुदबुदाते हैं कि 'यह अच्छी कॉफी और यह अच्छा चेहरा दोनों भारतीय हैं'।

जब लड़का दो मिनट में चाय की प्याली लेकर मुस्कराता हुआ मोहन राकेश के सामने आ जाता है, तो उसके पतले सफेद दाँतों को देखकर उन्हें लगता है कि वह क्लोरोफिल मुस्कराहट मुस्करा रहा है। अमरीकी मुहावरे में इसे मिलियन डॉलर की स्माइल कहते हैं और लड़का है कि रोज छहः पैसे की चाय उन्हें पकड़ता हुआ मिलियन डॉलर की मुस्कराहट मुस्करा जाता है। यहाँ पर मोहन राकेश इच्छा जताते हैं कि वह उस लड़के को किसी क्लोरोफिल कंपनी के हवाले कर दें, जिससे कि उसकी मुस्कराहट का सही मूल्य दुनिया के सामने आए। उन्हें स्त्री-कंठ की सुमधुर आवाज सुनाई देती है कि क्या आपका लिवर ठीक काम नहीं करता, अपना लिवर ठीक रखने के लिए आज से लिवर इमल्शन लीजिए। विज्ञापनों के अपने ऊपर के असर को जताते हुए मोहन राकेश आगे कहते हैं कि जब वह किसी बच्चे को किलकारी मार कर हँसते देखते हैं, तो उन्हें लाल डिब्बे में बंद बेबी मिल्क की याद आ जाती है, साथ ही किसी सुंदर दृश्य को देखने पर उनकी रुचि वाला कैमरा उनके आँखों के सामने आ जाता है। विवाह मंडप के पास खड़े होने पर उन्हें राष्ट्रीय बचत प्रमाण-पत्र की याद आती है। मोहल्ले के लाल चौधरी में उन्हें विटामिन बी कॉम्प्लेक्स का विज्ञापन नजर आता है। दफ्तर की नई टाइपिस्ट रोजी का व्यक्तित्व उन्हें लाल रंग की लिपस्टिक का विज्ञापन लगता है। और अब तो मोहन राकेश की हालत ऐसी हो गई है कि जब स्वयं को वे आईने के सामने खड़ा देखते हैं, तो उन्हें अपने चेहरे में लिवर बाल्ट का विज्ञापन दिखाई देता है।

इस प्रकार प्रस्तुत व्यंग्य के द्वारा मोहन राकेश ने विज्ञापन के साथ हमारी रोजमर्रा की जिंदगी किस प्रकार जुड़ी हुई है और विज्ञापनों ने किस कदर हमारे जीवन को घेर रखा है, इसका मार्मिक वर्णन बेहद रोचकता के साथ किया है।

4.9.4 स्वयंअध्ययन के लिए प्रश्न :

अ) नीचे दिए गए विकल्पों में से उचित विकल्प चुनकर प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. 'विज्ञापन युग' व्यंग्य के व्यंग्यकार कौन हैं?

अ) बाबू श्यामसुंदरदास

ब) विनोबा भावे

क) मोहन राकेश

ड) शरद जोशी

2. 'विज्ञापन युग' कौन-सी विधा है?

- अ) कहानी ब) एकांकी
क) रेखाचित्र ड) व्यंग्य
3. मोहन राकेश के अनुसार विज्ञापनों का प्रभाव किस प्रकार है?
अ) केवल व्यापार तक सीमित ब) केवल शहरों तक सीमित
क) पूरे जीवन पर हावी ड) केवल मनोरंजन का साधन
4. व्यंग्यकार के अनुसार ग़ज़ल और गीत अब क्या बन गए हैं?
अ) साहित्य के श्रेष्ठ रूप ब) केवल मनोरंजन
क) विज्ञापन के माध्यम ड) धार्मिक संदेश
5. कबीर के गीत के साथ व्यंग्यकार ने क्या जोड़ा है?
अ) प्रेम संदेश ब) धार्मिक प्रवचन
क) खुजली की दवा का विज्ञापन ड) देशभक्ति गीत
6. अजंता और एलोरा की कला-कृतियों का उपयोग किस रूप में दिखाया गया है?
अ) ऐतिहासिक धरोहर ब) धार्मिक प्रतीक
क) विज्ञापन के साधन ड) पर्यटन स्थल
7. व्यंग्यकार के अनुसार आज की स्थिति क्या दर्शाती है?
अ) कला का विकास ब) विज्ञान की प्रगति
क) विज्ञापनों का सर्वव्यापी प्रभाव ड) शिक्षा का पतन
8. बच्चे को किलकारी मार कर हँसते हुए देखने पर मोहन राकेश को किस की याद आती है?
अ) बेबी मिल्क ब) लिवर बाल्ट
क) कॉम्प्लान ड) लिपस्टिक
9. दवाई की शीशियों में किस के डिब्बों के विज्ञापन होने चाहिए?
अ) रबड़ सोल ब) कोको
क) मक्खन ड) तेल
10. चाय का नाम लेते ही मोहन राकेश को कहाँ की सुंदरी का ध्यान हो जाता है?

- #### 4.9.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ :

- 151

- 3) चम्पा करना - चिपकाना
- 4) पार्वतय सुषमा - पर्वतों का प्राकृतिक सौंदर्य
- 5) रोशनदान - खिड़कियाँ
- 6) अन्योन्याश्रित - एक-दूसरे पर निर्भर
- 7) बरीकीबीनी - सूक्ष्म दृष्टि
- 8) स्कीम - योजना
- 9) अन्देशा - डर, चिंता
- 10) खासा - बहुत

4.9.6 स्वयंअध्ययन के प्रश्नों के उत्तर :

अ)

- | | | |
|------------------------------------|-----------------------------|----------------------|
| 1) मोहन राकेश | 2) व्यंग्य | 3) पूरे जीवन पर हावी |
| 4) विज्ञापन के माध्यम | 5) खुजली की दवा का विज्ञापन | 6) विज्ञापन के साधन |
| 7) विज्ञापनों का सर्वव्यापी प्रभाव | 8) बेबी मिल्क | 9) मक्खन |
| 10) नीलगिरी | 11) विज्ञापन-केंद्रित | 12) मूल्य |
| 13) लिवर बाल्ट | | |

आ)

- | | | |
|----------------------|-----------------|-----------------|
| 1) भजन, गीत और ग़ज़ल | 2) विज्ञापन | 3) खुजली की दवा |
| 4) विज्ञापन | 5) कपड़े की मिल | 6) दाँत |
| 7) विज्ञापन | 8) साबुन | 9) नीलगिरी |
| 10) टूथपेस्ट | 11) विज्ञापन | |

4.9.7 सारांश :

- 1) 'विज्ञापन युग' मोहन राकेश की चर्चित व्यंग्य कृति है। आज के युग को विज्ञापनों ने किस हद तक घेर रखा है, इसका बेहद मार्मिक चित्रण प्रस्तुत व्यंग्य में उन्होंने किया है।
- 2) आज हर चीज, हर जगह किसी न किसी रूप में विज्ञापन बनती चली जा रही है। कोई किसी का विज्ञापन है, तो कोई किसी का और इस अन्योन्याश्रित संबंध को बेहद व्यंगात्मक ढंग से मोहन राकेश ने प्रस्तुत किया है।
- 3) मोहन राकेश के अनुसार सृष्टि में ईश्वर द्वारा जिस-जिस चीज का निर्माण हुआ है या फिर मनुष्य ने

विज्ञान द्वारा जो उन्नति की है, यह सिर्फ और सिर्फ विज्ञापन-कला के उत्कर्ष के लिए ही। मंदिर, किले, स्मारक, खंडहर, पेड़-पौधे, शिक्षा संस्था सभी पर विज्ञापन चलते ही रहते हैं। विज्ञापनों के बगैर मानो हमारा जीवन अधूरा-सा ही रह जाता है।

- 4) आज भौतिकवादी एवं उपभोक्तावादी संस्कृति के चलते किसी भी चीज का कहीं पर भी विज्ञापन बेहद बखूबी ढंग से किया जाने लगा है। मोहन राकेश की स्थिति ऐसी है कि उनका दिमाग हर चेहरे, हर आवाज और हर नाम का संबंध किसी न किसी विज्ञापन के साथ जोड़ देता है। उनकी हालत ऐसी है कि आईने के सामने खड़े होने पर, वे अपने चेहरे में भी किसी विज्ञापन को पाते हैं। रोजमर्रा के जीवन के विभिन्न उदाहरणों द्वारा हावी होते विज्ञापनों के यथार्थ एवं व्यंग्य को बेहद सटीकता से उन्होंने उजागर किया है।
- 5) आज की युग की सच्चाई तो यही है कि विज्ञापनों के जंजाल से मनुष्य बच नहीं सकता। विज्ञापनों के शिकंजे में कसते जा रहे मनुष्य की यथार्थ स्थिति को बेहद व्यंग्यात्मक ढंग से मोहन राकेश ने यहाँ प्रस्तुति दी है।

4.9.8 स्वाध्याय :

अ) लघुत्तरी प्रश्न.

- 1) मोहन राकेश का जीवन परिचय लिखिए।
- 2) 'विज्ञान युग' व्यंग्य का उद्देश्य लिखिए।
- 3) 'विज्ञान युग' व्यंग्य का परिचय लिखिए।

आ) दीर्घोत्तरी प्रश्न -

- 1) 'विज्ञापन युग' व्यंग्य के कथानक को अपने शब्दों में लिखिए।
- 2) 'विज्ञापन युग' व्यंग्य के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि आधुनिक समाज में विज्ञापनों ने मनुष्य के जीवन, सोच और व्यवहार को किस प्रकार पूरी तरह प्रभावित किया है?
- 3) 'विज्ञापन युग' व्यंग्य के माध्यम से मोहन राकेश ने आधुनिक जीवन की विडंबनाओं, उपभोक्तावादी मानसिकता और मानवीय मूल्यों के अधःपतन को भलि-भाँति उजागर किया है।' स्पष्ट कीजिए।

इ) ससंदर्भ व्याख्या -

- 1) "आपकी शिक्षा के उपयोग का एक ही मार्ग है। आज ही आयात-निर्यात का धंधा प्रारंभ कीजिए। मुक्त सूची पत्र के लिए लिखिए..."
- 2) "उत्तरी ध्रुव से दक्षिणी ध्रुव तक कोई कोना ऐसा न बचा होगा जिसका किसी न किसी चीज के विज्ञापन के लिए उपयोग न किया जा रहा हो। हर चीज, हर जगह, किसी भी चीज और किसी

भी जगह का विज्ञापन हो सकती है।”

- 3) “यह अच्छी कॉफ़ी और यह अच्छा चेहरा दोनों भारतीय हैं।”
- 4) “याद रखिए इस मूर्ति और इस भवन की निर्माण का श्रेय लाल हाथी के निशानेवाले निर्माताओं का है। वास्तु-कला संबंधी अपनी सभी आवश्यकताओं के लिए लाल हाथी का निशान कभी मत भूलिए।”
- 5) “और वह लड़का है कि रोज छह पैसे की चाय मुझे पकड़ा?ता हुआ यह मिलियन डॉलर की मुस्कुराहट मुस्कुरा जाता है।”
- 6) “पर हालात यहाँ तक पहुँच गए हैं कि अब मैं खुद आईने के सामने खड़ा होता हूँ, तो लगता है अपना चेहरा नहीं लिवर बाल्ट का विज्ञापन देख रहा हूँ।”

4.9.9 क्षेत्रीय कार्य :

- 1) किसी संस्था या कंपनी की विज्ञापन-कला का अध्ययन कीजिए।
- 2) ‘विज्ञान युग’ व्यंग्य का मराठी में अनुवाद कीजिए।
- 3) ‘विज्ञापन’ विषय पर व्यंग्य निबंध लिखने का प्रयास कीजिए।
- 4) स्वयं किसी विज्ञापन को तैयार करने की कोशिश करें।

4.9.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए :

- 1) राकेश मोहन (2012) मोहन राकेश की सम्पूर्ण कहानियाँ और व्यंग्य, नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
- 2) राकेश मोहन (2010) मोहन राकेश की प्रतिनिधि रचनाएँ, नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।



इकाई 1

निबंध साहित्य का सामान्य परिचय

अनुक्रम

- 1.1 उद्देश्य
- 1.2 प्रस्तावना
- 1.3 विषय विवेचन
 - 1.3.1 निबंध : अर्थ और परिभाषा
 - 1.3.2 निबंध का स्वरूप
 - 1.3.3 निबंध के तत्त्व
 - 1.3.4 निबंध के प्रकार
- 1.4 स्वयंअध्ययन के लिए प्रश्न
- 1.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ
- 1.6 स्वयंअध्ययन के प्रश्नों के उत्तर
- 1.7 सारांश
- 1.8 स्वाध्याय
- 1.9 क्षेत्रीय कार्य
- 1.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

1.1 उद्देश्य :

प्रस्तुत इकाई के अध्ययन के बाद आप -

- 1) निबंध के अर्थ और परिभाषा से परिचित होंगे।
- 2) निबंध के स्वरूप को समझ सकेंगे।
- 3) निबंध के तत्त्वों से अवगत होंगे।
- 4) निबंध के प्रकारों को स्पष्ट कर सकेंगे।

1.2 प्रस्तावना :

निबंध आधुनिक गद्य साहित्य की एक अत्यंत महत्वपूर्ण और प्रभावशाली विधा है, जिसमें लेखक अपने विचारों, भावों तथा अनुभवों को स्वतंत्र और सजीव रूप में व्यक्त करता है। 'निबंध' शब्द संस्कृत से आया है, जिसका अर्थ है, बंधा हुआ या किसी विषय पर क्रमबद्ध रूप से विचार प्रस्तुत करना। अंग्रेजी में इसे 'Essay' कहा जाता है।

निबंध की सबसे प्रमुख विशेषता इसमें निहित वैयक्तिकता है। इसमें लेखक का व्यक्तित्व, उसकी सोच, दृष्टिकोण और अनुभूतियाँ स्पष्ट रूप से अभिव्यक्त होती हैं। इसीलिए निबंध को आत्माभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम माना जाता है। रामचंद्र शुक्ल के अनुसार, “निबंध गद्य की कसौटी है”, क्योंकि इसमें भाषा, शैली और विचारों की परिपक्वता का सर्वोत्तम रूप देखने को मिलता है।

निबंध का विषय कोई भी हो सकता है; साधारण से साधारण या गंभीर से गंभीर। एक कुशल निबंधकार अपनी प्रतिभा और शैली के माध्यम से साधारण विषय को भी रोचक और प्रभावशाली बना देता है। निबंध में भाषा सरल, स्पष्ट, प्रवाहपूर्ण तथा प्रभावशाली होती है, जिससे पाठक सहज ही उससे जुड़ पाता है।

1.3 विषय विवेचन :

निबंध वह गद्य रचना है जिसमें लेखक अपने व्यक्तिगत विचारों और भावनाओं को सीमित आकार में, कलात्मक और प्रभावपूर्ण ढंग से प्रस्तुत करता है। इसमें विषय के साथ-साथ लेखक का व्यक्तित्व और उसकी अभिव्यक्ति शैली विशेष महत्व रखती है। निबंध का अर्थ, परिभाषा, स्वरूप, तत्त्व एवं प्रकारों को निम्नलिखित रूप में स्पष्ट किया है -

1.3.1 निबंध : अर्थ और परिभाषा :

निबंध पूर्णतः आधुनिक विधा है और आधुनिक जीवन परिवेश, चिंतन तथा परिस्थितियों की देन है, फिर भी इस विधा का बोधक शब्द 'निबंध' पहले से प्रचलित है। हिंदी में यह शब्द संस्कृत से आया है। वहां निबंध का शाब्दिक अर्थ बंधन या विशेष रूप से बंधा हुआ है। निबंध का आधुनिक रूप बहुत कुछ पाश्चात्य है। अंग्रेजी में निबंध के लिए 'Essay' शब्द का प्रयोग किया जाता है। आधुनिक निबंध के जन्मदाता मौन्तेय को माना

जाता है। निबंध के स्वरूप को स्पष्ट करने का प्रयास अनेक पाश्चात्य एवं भारतीय विद्वानों ने किया है। हम यहाँ कुछ पाश्चात्य और भारतीय विद्वानों की परिभाषाओं के संदर्भ में विचार करेंगे।

निबंध की पाश्चात्य विद्वानों द्वारा प्रदत्त परिभाषाएँ –

- 1) अंग्रेजी के प्रख्यात रचनाकार **डॉ. सैम्युअल जॉनसन** ने कहा है कि, “निबंध मस्तिष्क के असंबद्ध विचारों का विस्फोटन है।”
- 2) निबंधों का जनक **मौन्टेय** निबंधों को विचारों, उद्धरणों और कथाओं का मिश्रण मानते थे। Essay in medley of reflection, quotation and anecdotes. “मैं ही अपने निबंधों का विषय हूँ। निबंध अपनी आत्मा को दूसरों तक पहुंचाने का प्रयत्न मात्र है। मेरे ही निजी विचार और कल्पनाएँ हैं, कोई नई खोज नहीं है।”
- 3) **ऑक्सफोर्ड** शब्दकोश के अनुसार निबंध की आकृति सीमित और परिष्कृत होती है। Oxford Dictionary : Essay A Horary composition causally prose and short on any subject.
- 4) **जॉनसन** –
“निबंध मन की उच्छृंखल स्थिति की साहित्यिक अभिव्यक्ति है।”
- 5) **हडसन** –
"The true essay is essentially personal."
- 6) **प्रिस्टले** –
“निबंध किसी मौलिक व्यक्तित्व की निच्छल अभिव्यक्ति होती है।”
- 7) **Hall ward and Hill** -
“साहित्यिक निबंध किसी विषय का कोई संक्षिप्त रूप ही नहीं होता। बल्कि उसे हम लेखक के मस्तिष्क में उद्भूत वस्तु-विशेष के प्रति उत्पन्न प्रतिक्रियात्मक चित्र की अभिव्यक्ति कह सकते हैं। इसकी सबसे प्रमुख विशेषता वैयक्तिकता है।”
- 8) **अलेक्ज़ंडर स्मिथ** –
“निबंध साहित्यिक विधा के रूप में गीत के अधिक समीप है। गीत के सदृश्य ही उसका मूल भाव किसी की मौज से प्रेरित होता है। मन की मौज पैदा हुई कि निबंध लिखा गया। मन की मौज के चारों ओर निबंध इसी प्रकार विकसित होता जाता है, जिसप्रकार रेशम के कीड़े के चारों ओर कोकून पैदा होता है।”
- 9) **गार्डनर** –
“निबंध लेखन में विषय महत्वपूर्ण है या नहीं, इस बात पर विचार करने की आवश्यकता नहीं होती। उसका विषय कोई भी मामूली पदार्थ हो सकता है।”

पाश्चात्य विद्वानों के साथ-साथ भारतीय विद्वानों द्वारा दी गई निबंध की कुछ परिभाषाएँ देखेंगे ।

1) आ. रामचंद्र शुक्ल-

“गद्य कवियों या लेखकों की कसौटी है तो निबंध गद्य की कसौटी है।” भाषा की पूर्ण शक्ति का विकास निबंधों में ही सबसे अधिक संभव होता है, इसीलिए गद्य शैली के लिए अधिकतर निबंध को ही चुना जाता है। एक जगह शुक्लजी लिखते हैं “आधुनिक पाश्चात्य लक्षणों के अनुसार निबंध उसी को कहना चाहिए जिसमें व्यक्तित्व अर्थात् व्यक्तिगत विशेषता हो।”

2) बाबू गुलाबराय -

“निबंध उस गद्य रचना को कहते हैं जिसमें एक सीमित आकार के भीतर किसी विषय का वर्णन या प्रतिपादन एक विशेष निजीपन, स्वच्छंदता, सौष्ठव और सजीवता के साथ ही आवश्यक संगति और सुसंबद्धता के साथ किया गया हो।”

3) डॉ. कोतमिरे -

“निबंध वह एक साहित्यिक और ललित गद्य रचना है। जिसमें लेखक किसी विचार या विषय से प्रभावित होकर अपनी भाषा में अपने भावों या विचारों की क्रिया तथा प्रतिक्रिया को ऐसे सजीव ढंग से व्यक्त करता हुआ पाठक की मनोवृत्तियों को सचेत करता है कि वह कुछ काल के लिए प्रभावित होता रहे या विचार करता रहे।”

4) डॉ. श्रीकृष्ण लाल -

“भावों और विचारों की प्रधानता तथा शैली की रमणीयता के योग से जिस नवीन साहित्य का प्रचलन हुआ, उसे निबंध साहित्य की संज्ञा दी गई।... निबंध वह साहित्य रूप है जिसमें लेखक ने प्रतिपाद्य विषय के भीतर की अपनी रुचि, भावना और विचारों की स्वच्छंद अभिव्यक्ति की हो।”

5) डॉ. ज्ञानराज गायकवाड -

“निबंध वह व्यवस्थित और मर्यादित गद्य-रचना है, जो कथा-चित्रण या व्यक्ति-चित्रण से रहित किसी भी विषय से सम्बद्ध व्यक्तिगत विचार और भाव की रमणीय अभिव्यक्ति होती है।”

6) सुमन तथा मल्लिक -

“निबंध गद्य काव्य की वह विधा है, जिसमें कि लेखक एक सीमित आकार में इस विविध रूप जगतब के प्रति अपनी भावात्मक तथा विचारात्मक प्रतिक्रियाओं को प्रकट करता है।”

7) डॉ. गोविंद त्रिगुणायत -

“निबंध वह एक छोटा-सा गद्य विधान है, जिसमें निबंधकार जीवन या जगतब से संबंधित किसी

भी वस्तु या व्यक्ति के प्रति उद्भूत अपनी मानसिक और बौद्धिक प्रतिक्रियाओं की इस प्रकार निर्वाध अभिव्यक्ति करता है कि वह अधिक से अधिक रोचक, संवेदनशील और चमत्कारपूर्ण हो।”

उपर्युक्त पाश्चात्य और भारतीय विद्वानों की परिभाषाओं के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि निबंध में निबंधकार का व्यक्तित्व ही सबसे प्रमुख तत्त्व होता है। निबंध केवल विषय-वर्णन नहीं, बल्कि लेखक के निजी विचार, अनुभव और दृष्टिकोण की अभिव्यक्ति है। निबंध में हृदय (भाव) और बुद्धि (विचार) दोनों का समन्वय आवश्यक होता है। बिना वैचारिकता के निबंध की रचना संभव नहीं है। साथ ही, निबंध का सीमित आकार (लघुता) उसे सुसंगठित, प्रभावशाली और सुव्यवस्थित बनाता है।

निबंध की एक महत्वपूर्ण विशेषता यह भी है कि इसमें विषय का कोई बंधन नहीं होता। साधारण से साधारण और गंभीर से गंभीर किसी भी विषय पर निबंध लिखा जा सकता है। लेखक अपनी प्रतिभा और दृष्टिकोण के माध्यम से सामान्य विषय को भी असाधारण बना देता है। निबंध में व्यक्ति-सापेक्षता का विशेष महत्त्व होता है।

वास्तव में निबंधकार में एक साथ कवि, दार्शनिक, इतिहासकार और चिंतक के गुण समाहित होते हैं। जब निबंध में जीवन का सजीव चित्रण होता है, तब वह श्रेष्ठ साहित्य की कसौटी बन जाता है। रामचंद्र शुक्ल निबंध में विचार-गांभीर्य और सामासिकता के समर्थक हैं।

इसी प्रकार बाबु गुलाबराय ने अपनी परिभाषा में निबंध के लगभग सभी तत्त्वों-निजीपन, स्वच्छंदता, सजीवता और संगति का समावेश किया है।

1.3.2 निबंध का स्वरूप :

निबंध का मौलिक अर्थ है बाँधना। नि+बंध (बाँधना)। निबंध का प्रयोग लिखे हुए भोज पत्रों को सँवार कर बांधने या सीने की क्रिया के लिए भी होता था, परन्तु कालांतर में अर्थ संकोच के रूप में केवल साहित्यिक कृति के लिए इसका प्रयोग किया जाने लगा।

संस्कृत में इसका समानार्थी और अधिक व्यापक शब्द ‘प्रबंध’ आता है। इसका मूल अर्थ है ‘संदर्भ या ग्रंथ रचना।’ किसी विषय पर कल्पना से ग्रंथ-रचना करना भी प्रबंध कहलाता है। धीरे-धीरे यह शब्द केवल काव्य के लिए प्रयुक्त होने लगा और प्रबंध-काव्य के लिए रूढ़ हो गया। लेकिन आज निबंध और प्रबंध दोनों ही अपने मूल या रूढ़ अर्थों में प्रयुक्त नहीं होते। आज प्रबंध का प्रयोग उस गद्य रचना के लिए किया जाता है, जिसमें लेखक किसी विषय का विस्तार से अपनी भाषा शैली में विवेचन करता है। इसे अंग्रेजी के ‘थीसिस’ का समानार्थक कहा जा सकता है।

निबंध अत्यंत परिष्कृत और प्रौढ़ गद्य का प्रतीक है। निबंध का शाब्दिक अर्थ है सूत्रों में आबद्ध गठी हुई रचना। “निबंध आकार में लघु और अत्यधिक संगठित और समास शैली में लिखा गया होता है और प्रबंध बड़े आकार का तथा व्याख्यात्मक होता है।” निबंध की सहजता प्रबंध में नहीं मिलती। जिस प्रकार की

चेतना और जीवतन्ता निबंध में होती है, वैसे वह प्रबंध में नहीं होती। प्रबंध में योजनाबद्ध परिश्रम, सैद्धान्तिक विवेचन और विस्तार रहता है। प्रबंध किसी विषय पर लिखी गयी एक संपूर्ण वायवीन कृति है। निबंध में निबंधकार का व्यक्तित्व निहित होता है। प्रबंध में प्रबंधकार का परिश्रम, उसका अध्ययन, ज्ञान, सूक्ष्म दृष्टि और विवेचन होता है।

निबंध में भावना के साथ विचारों को पिरोना, एक साथ बांधना, बुनना या संकलन करना होता है। इसे लेख से कम व्यापक समझा जाता है। निबंध के समानार्थी यह वह गद्य रूप है, जिसकी किसी विषय के, किसी प्रसंगों पर विचार व्यक्त किये जाते हैं। आज निबंध अपने मूल और रूढ़ अर्थों से भिन्न अर्थ में प्रयुक्त होता है। वह अपने सभी समानांतर पर्यायों के मौलिक तथा पारंपारिक अर्थों में भी भिन्न अस्तित्व रखता है। वास्तव में यह आज लैटिन के 'एज्जीजियर' (निश्चयता पूर्वक परीक्षण करना) से निकले फ्रेंच के 'ऐसाइ' तथा अंग्रेजी के 'ऐसे' का पर्याय हो गया है। जिसका शाब्दिक अर्थ प्रयत्न, प्रयोग या परीक्षण होता है और प्रयोग की दृष्टि से जो लघु या दीर्घ गद्य-रचना के लिए प्रयुक्त होता है। जिसमें निबंधकार अपनी आत्मीयता, वैयक्तिकता या निर्व्यक्तिकता के साथ किसी एक विषय या उसके किसी एक पहलू या प्रसंग पर अपनी निजी भाषा-शैली में भाव या विचार प्रकट करता है।

निबंध गद्य की केन्द्रिय विधा है। हिन्दी में यह विधा आधुनिक युग की देन है। यह व्यक्ति और समाज की मानसिक चेतना और भावानुभूति की अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने निबंध का महत्त्व इन शब्दों में बताया है, "यदि गद्य कवियों या लेखकों की कसौटी है तो निबंध गद्य की कसौटी है।" निबंध एक ऐसी विधा है जिसमें व्यक्ति अपने स्वतंत्र व्यक्तित्व, निजीपन, अपने दृष्टिकोण का प्रतिपादन अपने निजी ढंग से कर सकता है। अपने कथन का तर्क, परस्पर संवाद का समन्वय करते हुए लेखक अपने व्यक्तित्व का प्रभाव पाठक के मन पर अंकित कर सकता है। वैचारिकता और आत्म-प्रकाशन का ऐसा प्रभावशाली और रोचक माध्यम संभवतः अन्य विधाएँ नहीं है।

1.3.3 निबंध के तत्व :

निबंध के निम्नलिखित प्रमुख तत्व माने जाते हैं-

1) विषय या वस्तु :

निःसंशय निबंध में लेखक का व्यक्तित्व सर्वोपरि रहता है, परंतु व्यक्तित्व के उद्घाटन के लिए 'विषय' या 'वस्तु' की आवश्यकता होती है। वस्तुतः निबंध के विषयों की कोई सीमा नहीं है। निबंध का विषय साधारण से साधारण एवं गंभीर से गंभीर कोई भी हो सकता है। साधारण विषय भी कुशल लेखक के हाथ से असाधारण बन जाता है। विषय के अंग तीन हैं-

अ) प्रारंभ - यहाँ लेखक पाठकों को अपने विषय की ओर आकृष्ट करता है। अपने विषय का स्वरूप स्पष्ट करता है। आरंभ में लेखक सबकुछ खोलकर नहीं रखता। आरंभ आकर्षक होने पर ही पाठक निबंध की ओर आकृष्ट होता है।

ब) मध्य – लेखक अपने विषय का पूरा विस्तार वास्तव में मध्य में ही करता है। अतः निबंध का यह अंश अत्यंत महत्वपूर्ण है। निबंधकार यहाँ तर्क-वितर्क, अनुकूल-प्रतिकूल सभी दृष्टियों से विषय का परीक्षण करते हुए अपने वांछित की ओर पाठकों को अग्रसर करने का कार्य करता है। यहां विस्तार करते वक्त लेखक को यह ध्यान रखना चाहिए कि अधिक विस्तार के कारण रस-हानि न हो। यहां उदाहरणों, उद्धरणों या अंतर्कथाओं द्वारा लेखक विषय का विस्तार बड़ी सावधानी से करता है।

क) अंत – यहाँ लेखक अपने उद्देश्य की पूर्ति पर पहुंचता है। पाठकों की शंका का परिहार भी यहाँ आकर ही होता है। यह एक प्रकार से निबंध का उपसंहार होता है। इसमें लेखक अपने प्रतिपाद्य को सार रूप में भी रख सकता है। निबंध का अंत पाठकों पर प्रभाव डालने वाला होना चाहिए।

विषय के संबंध में निम्न बातें महत्वपूर्ण हैं-

- 1) विषय का कोई बंधन नहीं होता।
- 2) उसका स्वरूप गपशप का होना चाहिए।
- 3) आकार सीमित होना चाहिए।
- 4) उदाहरणों, उद्धरणों तथा अंतर्कथाओं की सहायता से प्रभावपूर्ण चित्रण हो।
- 5) विषय की प्रकटीकरण पद्धति पर निबंध का रूप निर्भर होता है।
- 6) लेखक की मनोवृत्ति के अनुसार प्रतिपादन पद्धति होती है।
- 7) आदि, मध्य और अंत का उचित निर्वाह हो।

2) व्यक्तित्व की प्रधानता :

निबंध का स्वरूप कोई भी हो, उसमें लेखक के व्यक्तित्व की छाप अनिवार्य है। व्यक्तित्व निबंध की आत्मा है। लेखक का व्यक्तित्व तीन बातों पर निर्भर होता है- (1) भाव तत्त्व, (2) बुद्धि तत्त्व तथा सौंदर्य तत्त्व।

भाव तत्त्व निबंध का प्रमुख तत्त्व है। निबंध में गद्य शैली में विचारों की अभिव्यक्ति होती है। लेखक के भाव यहाँ आदर्श से प्रेरित होकर विवेचित होते हैं। लेखक की भावुकता उसके अनुभव, जीवन-दर्शन के आदर्शों तथा उसकी रुचि पर अवलंबित होती है। प्रवेग, शक्ति एवं ध्वन्यात्कता भाव तत्त्व की विशेषताएँ हैं। बुद्धि तत्त्व विचार द्वारा परिपुष्ट होता है। बुद्धि द्वारा भावों का चिंतन-मनन होता है और फिर उन्हें क्रमबद्ध रूप से प्रस्तुत किया जाता है। मननशीलता, गंभीरता, तार्किकता, यथार्थता, औचित्य एवं संक्षिप्तता बुद्धि तत्त्व की विशेषताएँ हैं। लेखक के अनुभव, अभिरुचि तथा आदर्शों पर उसकी भावुकता निर्भर होती है और इसी भावुकता पर उसकी सौंदर्यानुभूति स्थिर रहती है। आंतरिक एवं बाह्य सौंदर्य, आकर्षण एवं संगीतात्मकता सौंदर्य तत्त्व की विशेषताएँ हैं।

व्यक्तित्व के संबंध में निम्न बातें महत्वपूर्ण हैं -

- 1) व्यक्तित्व निबंध की आत्मा है।
- 2) लेखक का व्यक्तित्व उसके भाव तत्त्व, बुद्धि तत्त्व और सौंदर्य तत्त्व पर निर्भर करता है।
- 3) लेखक का अध्ययन, चिंतन, मनन, गांभीर्य, तर्क, औचित्य, यथार्थता उसके बुद्धि तत्त्व को निर्माण करते हैं।
- 4) लेखक के अनुभव, रुचि तथा जीवन विषयक दृष्टि उसकी सौंदर्य दृष्टि को निर्माण करते हैं।
- 5) लेखक का व्यक्तित्व निबंध के रूप एवं प्रतिपादन प्रणाली को निश्चित करता है। इस पर निबंध का उद्देश्य निर्भर रहता है।
- 6) विश्व की तुच्छ से तुच्छ वस्तु भी निबंध का विषय बन सकती है तथा वह लेखक के व्यक्तित्व के स्पर्श से स्पंदित होकर महत्वपूर्ण बन जाती है।

3) भाषाशैली :

कहा जाता है कि निबंध गद्य की कसौटी है। निबंध में उपन्यास, नाटक आदि की तरह कथावस्तु नहीं होती। अतः निबंधकार को भाषा और शैली के द्वारा ही निबंध में रोचकता लानी पड़ती है। निबंध की भाषा भावों को वहन करने में सक्षम तथा सरलता, स्पष्टता, औचित्य, प्रवाह एवं प्रसाद गुण से युक्त हो। शैली निबंध को प्राणवान बनाती है तथा उसे व्यक्तित्व प्रदान करती है। शैली के अंतर्गत निबंध में साधारणता प्रसाद शैली, समास शैली, विवेचन शैली, व्यंग्य शैली, आवेग शैली तथा प्रलाप शैली का प्रयोग किया जाता है।

भाषाशैली के संबंध में निम्न बातें महत्वपूर्ण हैं-

- 1) भाषाशैली के बल पर ही निबंधकार का समस्त व्यापार निहित होता है।
- 2) इसकी भाषा 'गपशप' के लिए उपयुक्त सरल तथा स्पष्ट होनी चाहिए।
- 3) निबंध साधारण गद्य की अपेक्षा अधिक रोचक और सजीव होने चाहिए।
- 4) इसमें केवल वर्णनात्मकता न होकर लेखक की प्रतिभा का प्रस्फुटन भी हो। निबंधकार अपनी प्रतिभा से सामान्य विषय को भी असामान्य बना देता है।
- 5) भाषाशैली के उभार के लिए निबंध में ध्वनि, हास्य, व्यंग्य, लाक्षणिकता और अलंकारों का प्रयोग भी होता है।
- 6) भाषा सुबोध, प्रसादपूर्ण तथा प्रवाही हो।
- 7) आवश्यकतानुसार उसमें संगीतात्मकता एवं बाह्य सौंदर्य भी समाविष्ट हो।
- 8) शैली में विषयानुरूप भिन्नता आवश्यक है।

९) निबंध को एक प्रकार से 'स्वगत भाषण' भी कहा जाता है।

4) उद्देश्य :

निबंध के स्वरूप पर उसका उद्देश्य निर्भर होता है। परंतु लेखक अपने उद्देश्य को पाठकों पर थोपने का प्रयत्न न करें। यह एक साहित्यिक विधा है, अतः उद्देश्य कथन भी कलात्मक ही होना चाहिए। दूसरी बात यह है कि निबंध द्वारा लेखक अपने विचारों को पाठकों के सम्मुख रखता है। अर्थात् विचार-कथन तथा व्यक्तित्व-प्रकाशन ये तो उसके उद्देश्य होते ही हैं।

1.3.4 निबंध के प्रकार :

निबंधों के वर्गीकरण के अनेक आधार हो सकते हैं। बाह्य और आन्तरिक विविधता इसके मुख्य आधार है। वैसे भी विवेचन पद्धति, भाषा शैली, वस्तु विषय सभी निबंधों में समान नहीं हो सकते। व्यक्ति को प्रधान मानकर वर्गीकरण किया जाए तो व्यक्ति-प्रधान और विषय-प्रधान दो वर्ग हो सकते हैं। व्यक्ति प्रधान या वैयक्तिक निबंध में निजता पर ध्यान केन्द्रित रहता है। इस निजता को आत्माभिव्यंजकता या व्यक्ति प्रधानता भी कह सकते हैं। इसके अंतर्गत लेखक अपनी निजी वेदना, विफलता, हर्ष-विवाद, भाव-अभाव के साथ अपने को व्यक्त करना चाहता है। विषय-प्रधान निबंधों में अपने को अलग रखकर शेष संसार पर विचार किया जाता है। आचार्य शुक्ल निबंधों के दो प्रकार मानते हैं। मस्तिष्क की प्रधानतावाले विचारात्मक और हृदय की प्रधानता वाले भावात्मक ।

निबंधों के अनेक प्रकार हैं। जिनकी संख्या देना बहुत मुश्किल कार्य है। निबंध की बाह्य और आन्तरिक विविधता को आधार बनाकर इसका वर्गीकरण किया जा सकता है। बाह्य विविधता में विवेचन पद्धति भाषा-शैली, वस्तु-विषय आदि आते हैं और आन्तरिक विविधता में विचार, भाव, अनुभूतियाँ, संवेदना आदि इत्यादि का समावेश रहता है। वैसे तो निबंध के केन्द्र में व्यक्ति रहता है, लेकिन मात्र व्यक्ति को निबंध के वर्गीकरण का आधार नहीं माना जा सकता सभी दृष्टिकोण से विचार करने पर निबंधों को इसप्रकार वर्गीकृत किया जा सकता है।

निबंध :

अ) वस्तुनिष्ठ या विषयनिष्ठ अथवा वस्तुपरक निबंध -

१. वर्णनात्मक
२. विवरणात्मक

आ) व्यक्तिनिष्ठ या आत्मनिष्ठ अथवा व्यक्तिपरक -

१. विचारात्मक या विचेनात्मक
२. भावात्मक
३. वैयक्तिक

अ) वस्तुनिष्ठ या विषयनिष्ठ अथवा वस्तुपरक निबंध :

निबंध के इस भेद में निबंधकार के व्यक्तित्व की अपेक्षा विषय का अधिक महत्त्व होता है। इसी कारण इसे 'विषयनिष्ठ निबंध' कहा जाता है। इसके दो भेद किए जा सकते हैं- वर्णनात्मक और विवरणात्मक निबंध। जिका विस्तृत विवेचन निम्नवत है -

1) वर्णनात्मक निबंध -

इस प्रकार के निबंधों में किसी प्राकृतिक या भौतिक पदार्थ का वर्णन रहता है। किसी वस्तु, घटना और नगरादि के वर्णन द्वारा सजीव चित्र अंकित करना ही इस प्रकार के निबंधों की विशेषता है। वर्णनात्मक निबंधों में इसकी उत्पत्ति विकास, गुण-दोष, स्वभाव, लाभ, हानि और प्रभाव आदि की ओर विशेष ध्यान दिया जाता है। इस प्रकार के निबंधों के लिए लेखक में सुक्ष्म पर्यवेक्षण शक्ति का होना अत्यंत आवश्यक है।

इस प्रकार के निबंधों में केवल वर्णन मात्र करना अभीष्ट नहीं है, वरन् लेखक को उस वर्णन को अपनी कल्पना-शक्ति का सहयोग देकर इतना मनोरंजक बनाना चाहिए कि पाठक उसमें एक नवीनता, सजीवता और स्फूर्ति का आभास प्राप्त करे। नवीनता, सजीवता, मौलिकता एवं मनोरंजकता ही इस प्रकार के निबंधों की सफलता की कसौटी है। ठाकुर जगमोहन सिंह का 'श्याम-स्वप्न', कृष्णबलदेव वर्मा का 'बुदेलखंड का पर्यटन' तथा मिश्रबंधुओं का 'रूस-जापानी युद्ध' वर्णनात्मक निबंध हैं।

2) विवरणात्मक निबंध -

जिन निबंधों में गतिशील वस्तुओं, काल तथा परिस्थितियों का वर्णन होता है, वे निबंध 'विवरणात्मक निबंध' कहलाते हैं। प्रायः इस प्रकार के निबंधों में पर्वतारोहण, दुर्गम प्रदेशों की यात्रा, नदियों के उद्गम स्रोत की खोज आदि साहसपूर्ण कृत्यों का वर्णन रहता है। ऐतिहासिक घटनाओं, महापुरुषों की संक्षिप्त विवरणात्मक जीवनियों तथा यात्राओं का वर्णन भी ऐसे ही निबंधों में रहता है। कभी-कभी इस प्रकार के निबंधों में विषय-विवेचन के लिए कथा की सहायता भी ली जाती है। वर्णनात्मक निबंधों की तरह इसमें भी 'व्यास शैली' का ही प्रयोग होता है। कथात्मकता, ऐतिहासिकता युक्त इन निबंधों में लेखक को वर्णनात्मक निबंध लेखक की अपेक्षा कठिनाई का सामना करना पड़ता है। कल्पना और अनुभूति के माध्यम से लेखक क्रियाशील व्यक्तियों के अन्तः बाह्य कार्य व्यापारों को पकड़ने का प्रयत्न करता है। इस प्रयत्न में उसे जितनी सफलता मिल सकती है वह उतना ही अधिक सफल विवरणात्मक निबंध लिख सकता है।

शिकार, जीवनी, यात्राएँ, पर्वतारोहण युद्ध इत्यादि विषयक निबंध इसी श्रेणी में आते हैं। पौराणिक, ऐतिहासिक, साहित्यिक तथा धार्मिक सभी प्रकार के महापुरुषों का जीवन-विवरण इन निबंधों के माध्यम से सामने आया। घटनात्मक विवरणों में ऐतिहासिक, अलौकिक तथा सामान्य सभी प्रकार की घटनाओं का वर्णन हुआ है। भारतेन्दु का 'एक अद्भुत अपूर्व स्वप्न', सितारे हिन्द का 'राजा भोज का सपना' आदि इस युग के निबंध उल्लेखनीय हैं। हिन्दी में विवरणात्मक निबंध लेखकों में बालकृष्ण भट्ट, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, महावीर प्रसाद द्विवेदी, वासुदेवशरण अग्रवाल, राहुल सांकृत्यायन, पं. श्रीराम शर्मा आदि के नाम लिये जाते हैं।

आ) व्यक्तिनिष्ठ या आत्मनिष्ठ अथवा व्यक्तिपरक निबंध :

निबंध के इस भेद में विषय के विवेचन की अपेक्षा निबंधकार के विशिष्ट व्यक्तित्व का प्रकाशन अधिक महत्व का होता है। इसी कारण व्यक्तिनिष्ठ निबंध अधिक रोचक होते हैं। इसके तीन भेद हैं- विचारात्मक या विवेचनात्मक, भावात्मक और वैयक्तिक निबंध। जिसका विस्तृत विवेचन निम्नवत है -

1) विचारात्मक या विवेचनात्मक निबंध -

इस प्रकार के निबंधों में बौद्धिक विवेचन की प्रधानता रहती है। दार्शनिक, आध्यात्मिक तथा मनोवैज्ञानिक आदि विषयों की विवेचना ऐसे निबंधों में रहती है। निबंधकार जीवन की किसी बात को लेकर चिंतन-मनन कर तर्क और बुद्धि की सहायता से अपने विचारों को व्यक्त करता है। ऐसे निबंधों के लिए गंभीर अध्ययन, मनन और जीवन में प्राप्त गंभीर अनुभवों की आवश्यकता होती है। लेखक की वैयक्तिक अनुभूतियाँ जितनी विस्तृत होंगी, उसके जीवन का अध्ययन जितना पूर्ण होगा, उतनी ही अधिक उसे सफलता मिलेगी।

हिन्दी में आचार्य शुक्ल, डॉ. नगेन्द्र, जैनेन्द्र, वासुदेव शरण अग्रवाल, आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी आदि ऐसे प्रमुख नाम हैं जिन्होंने बहुत अच्छे विचारात्मक निबंध लिखे हैं। आचार्य शुक्ल की 'चिन्तामणि' में संग्रहित 'लोभ और प्रीति', 'क्रोध', 'श्रद्धा और भक्ति', 'घृणा' आदि, जैनेन्द्र के 'जैनेन्द्र के विचार', 'जड़ की बात', 'पूर्वोदय' आदि संग्रह, वासुदेव शरण अग्रवाल के 'पृथ्वी पुत्र' तथा 'कला और संस्कृति' आदि संग्रह में संकलित कुछ निबंध तथा आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी और डॉ. नगेन्द्र के सैकड़ों निबंध हिन्दी के विचारात्मक निबंध पठनीय हैं। डॉ. पीताम्बर दत्त बड़वाल ने भी अच्छे विचारात्मक निबंध लिखे हैं।

विचारात्मक निबंधों में भाव अथवा रागात्मक तत्त्वों की सर्वथा उपेक्षा नहीं की जा सकती, अंशतः उसका भी अस्तित्व होता है। आचार्य शुक्ल ने इसका समर्थन किया है- 'इस पुस्तक में मेरी अंतर्यात्रा में पड़नेवाले प्रदेश हैं। यात्रा के लिए निकलती रही है बुद्धि, पर हृदय को साथ लेकर अपना रास्ता निकालती हुई बुद्धि जहाँ कहीं मार्मिक या भावाकर्षक स्थलों पर पहुँचती है, वहाँ हृदय थोड़ा बहुत रमता है विचारात्मक निबंधों में भाव अथवा रागात्मक तत्त्वों की सर्वथा उपेक्षा नहीं की जा सकती, अंशतः उसका भी अस्तित्व होता है। आचार्य शुक्ल ने इसका समर्थन किया है - "इस पुस्तक में मेरी अंतर्यात्रा में पड़नेवाले प्रदेश हैं। यात्रा के लिए निकलती रही है बुद्धि, पर हृदय को साथ लेकर अपना रास्ता निकालती हुई बुद्धि जहाँ कहीं मार्मिक या भावाकर्षक स्थलों पर पहुँचती है, वहाँ हृदय थोड़ा बहुत रमता है अपनी प्रवृत्ति के अनुसार कुछ कहता गया है। इसप्रकार यात्रा के क्रम का परिहार होता है। बुद्धि पथ पर हृदय भी अपने लिए कुछ न कुछ पाता रहा है। इसमें कल्पना, राग, बुद्धि एवं शैली सभी का सहयोग रहता है, भले ही बुद्धि प्रमुख हो और राग गौण।"

आ. रामचंद्र शुक्ल, डॉ. श्यामसुंदरदास तथा नलिनीमोहन सान्याल इत्यादि ने बहुत ऊँचे विचारात्मक निबंध लिखे हैं। विचारात्मक निबंध व्यास शैली के अतिरिक्त समास शैली में भी लिखे जाते हैं। द्विवेदी के निबंध अधिकतर व्यास शैली में लिखे गए हैं, तो आ. शुक्ल के निबंधों में समास शैली का आधिक्य दिखाई देता है।

2) भावात्मक निबंध –

भावात्मक निबंधों में भाव-तत्त्व, हृदय का आग्रह प्रधान होता है। एक व्यक्ति के हृदय का भाव प्रेषित होकर दूसरे व्यक्ति का भाव बन जाता है। इसी को प्रेषणीयता कहते हैं। भावनाओं की तीव्रता, कल्पना की स्वच्छंद उड़ान भावात्मक निबंधों की पहचान है। इस प्रकार के निबंधों में बुद्धि की अपेक्षा हृदय का अधिक योग होता है। भावात्मक निबंध में भाव की प्रधानता होने के कारण इसे ‘कवित्वपूर्ण निबंध’ भी कहा जाता है। भावात्मक निबंधों में एक विशेष सजीवता, तड़प और हार्दिक सौंदर्य विद्यमान रहता है। निबंधकार के व्यक्तित्व की छाप इस प्रकार के निबंधों की विशेषता है। इनमें प्रायः तीन प्रकार की शैलियों का प्रयोग किया जाता है धारा शैली, तरंग शैली और विक्षेप शैली।

इन शैलियों के संबंध में डॉ. गुलाबराय का कथन है, “धारा शैली में भावों की धारा प्रवाहमयी रहकर प्रायः एक गति से चलती है, किंतु तरंग शैली में वे भाव लहराते हुए प्रतीत होते हैं – तरंग की भाँति उठते और गिरते प्रतीत होते हैं। विक्षेप शैली में वह कुछ-कुछ उखड़े हुए रहते हैं, उसमें तारतम्य और नियंत्रण का अभाव रहता है।” भावात्मक निबंधों में लेखक की सभी प्रकार की अनुभूतियाँ निहित होती हैं। इस निबंध की सीमा किसी एक भाव तक ही सीमित नहीं होती हास्य व्यंग्य की गद्यात्मक रचनाएँ भी भावात्मक निबंध में आती हैं।

प्रतापनारायण मिश्र के ‘भौं’, ‘नाक’, ‘आँख’ । बालकृष्ण भट्ट के ‘आँसू’, ‘माधुर्य’, ‘माता का स्नेह’, ‘ईश्वर भी क्या ठठोल है।’ पूर्णसिंह के ‘ब्रम्ह क्रांति’ । माखनलाल चतुर्वेदी के – ‘साहित्य देवता’, ‘युग और कला’, ‘छलकत गगरी’। रामवृक्ष बेनीपुरी के ‘गेहूँ और गुलाब’, ‘मीरा नाची रे’, ‘लागत कलेजवा में चोट’। रामकुमार रघुवीर सिंह के – ‘ताज’, ‘अवशेष’, ‘उजड़ा स्वर्ग’ आदि निबंध भावात्मक निबंधों की श्रेणी में रखे जाते हैं।

3) वैयक्तिक निबंध –

इसे ‘आत्मनिष्ठ निबंध’, ‘आत्मपरक निबंध’, ‘ललित निबंध’ या ‘लघु निबंध’ भी कहा जाता है। इसमें लेखक सर्वोपरि है, उसमें विषय तथा व्यक्तित्व को अलग करके नहीं देखा जा सकता। इस प्रकार के निबंधों में निबंधकार अपने व्यक्तिगत जीवन से संबंधित अनुभूतियों और उनसे संबंधित भावों तथा विचारों की रमणीय अभिव्यक्ति करता है। लेखक के व्यक्तिगत जीवन की घटनाएँ ही निबंधों का रूप धारण करती हैं। इस प्रकार के निबंधों में हृदय और बुद्धि दोनों का संतुलन रहता है। निबंधों के सभी प्रकारों में इस प्रकार के निबंध सर्वश्रेष्ठ समझे जाते हैं।

1.4 स्वयंअध्ययन के लिए प्रश्न :

प्रश्न 1. निम्नलिखित वाक्यों में दिए गए पर्यायों में से उचित पर्याय चुनकर वाक्य फिर से लिखिए।

- 1) ‘निबंध’ शब्द का शाब्दिक अर्थ क्या है?

- (क) लिखना (ख) बाँधना
(ग) समझाना (घ) वर्णन करना
- 2) आधुनिक निबंध के जन्मदाता किसे माना जाता है?
(क) जॉनसन (ख) प्रिस्टले
(ग) गार्डनर (घ) मौन्तेय
- 3) “निबंध गद्य की कसौटी है” यह कथन किसका है?
(क) बाबू गुलाबराय (ख) रामचंद्र शुक्ल
(ग) हडसन (घ) जॉनसन
- 4) निबंध की आत्मा किसे कहा जाता है?
(क) विषय (ख) भाषा
(ग) व्यक्तित्व (घ) उद्देश्य
- 5) निबंध का आकार सामान्यतः कैसा होता है?
(क) विस्तृत (ख) लघु
(ग) अनिश्चित (घ) बहुत बड़ा
- 6) किस प्रकार के निबंध में बौद्धिक विवेचन की प्रधानता होती है?
(क) भावात्मक (ख) वर्णनात्मक
(ग) विचारात्मक (घ) विवरणात्मक
- 7) किस निबंध में लेखक का व्यक्तित्व प्रमुख होता है?
(क) वस्तुनिष्ठ (ख) विषयप्रधान
(ग) व्यक्तिनिष्ठ (घ) विवरणात्मक
- 8) वर्णनात्मक निबंध का मुख्य उद्देश्य क्या है?
(क) तर्क देना (ख) भाव व्यक्त करना
(ग) सजीव चित्रण करना (घ) आलोचना करना
- 9) निबंध में भाषा कैसी होनी चाहिए?

- (क) कठिन (ख) जटिल
 (ग) सरल और स्पष्ट (घ) अलंकारिक
- 10) निबंध किस युग की प्रमुख देन माना जाता है?
 (क) प्राचीन काल (ख) मध्यकाल
 (ग) आधुनिक काल (घ) वैदिक काल
- 11) विचार-कथन तथा व्यक्तित्व-प्रकाशन किस विधा के उद्देश्य होते हैं?
 (क) नाटक (ख) उपन्यास
 (ग) आत्मकथा (घ) निबंध
- 12) वस्तुनिष्ठ निबंध को भी कहा जाता है?
 (क) आत्मनिष्ठ (ख) व्यक्तिनिष्ठ
 (ग) विषयनिष्ठ (घ) भावात्मक

1.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ :

- * वैयक्तिकता – व्यक्तिगतता, अपना निजीपन
- * व्यक्तिनिष्ठ – जिसमें लेखक का व्यक्तित्व प्रमुख हो
- * वस्तुनिष्ठ – जो विषय या वस्तु पर आधारित हो, तटस्थ
- * प्रतिपादन – किसी बात को स्पष्ट रूप से प्रस्तुत करना
- * सौष्ठव – सुंदरता, आकर्षक गठन
- * सजीवता – जीवंतता, जीवित जैसा प्रभाव
- * संगति / सुसंबद्धता – आपसी जुड़ाव, क्रमबद्धता
- * वैचारिकता – सोच-विचार करने की क्षमता
- * आत्म-प्रकाशन – अपने विचारों/भावों को व्यक्त करना
- * मनोवृत्ति – मन की प्रवृत्ति, सोचने का ढंग
- * परिष्कृत – शुद्ध और सुधरा हुआ
- * प्रौढ़ – परिपक्व, विकसित

- * विवेचन – किसी विषय का विस्तार से विश्लेषण
- * निर्वैयक्तिकता – बिना व्यक्तिगत भाव के, निष्पक्षता
- * लघुता – छोटापन (संक्षिप्तता)
- * समास शैली – संक्षिप्त और गहन भाषा शैली
- * व्यास शैली – विस्तारपूर्वक समझाने की शैली
- * आत्मपरक – अपने अनुभवों पर आधारित
- * संवेदनशीलता – भावनाओं को गहराई से महसूस करने की क्षमता
- * चमत्कारपूर्ण – आश्चर्यजनक, प्रभावशाली

1.6 स्वयंअध्ययन के प्रश्नों के उत्तर :

- | | |
|-------------------|---------------------|
| 1. बाँधना | 2. मौन्तेय |
| 3. रामचंद्र शुक्ल | 4. व्यक्तित्व |
| 5. लघु | 6. सजीव चित्रण करना |
| 7. सरल और स्पष्ट | 8. व्यक्तिनिष्ठ |
| 9. आधुनिक काल | 10. विचारात्मक |
| 11. निबंध | 12. विषयनिष्ठ |

1.7 सारांश :

1. निबंध एक लघु, सजीव और व्यक्तित्वप्रधान गद्य रचना है, जिसमें लेखक अपने विचारों और भावों को स्वतंत्र रूप से व्यक्त करता है तथा इसमें विभिन्न प्रकार जैसे विचारात्मक, भावात्मक और वर्णनात्मक पाए जाते हैं।
2. निबंध सीमित आकार की गद्य विधा है, जिसमें विषय, व्यक्तित्व, भाषा-शैली और उद्देश्य जैसे तत्वों के माध्यम से भाव और विचार का सुंदर समन्वय किया जाता है।
3. निबंध में लेखक का व्यक्तित्व प्रमुख होता है, परंतु विषय के आधार पर यह व्यक्तिनिष्ठ और विषयप्रधान प्रकारों में विभाजित किया जाता है।
4. निबंध एक परिष्कृत और प्रौढ़ गद्य रूप है, जिसमें प्रारंभ, मध्य और अंत की संरचना के साथ विचारों को क्रमबद्ध रूप में प्रस्तुत किया जाता है।
5. निबंध में भाषा सरल, स्पष्ट और सजीव होती है तथा इसमें भावात्मक, विचारात्मक, वर्णनात्मक और विवरणात्मक जैसे विभिन्न प्रकार सम्मिलित होते हैं।

6. निबंध गद्य की कसौटी मानी जाती है, क्योंकि इसमें लेखक का व्यक्तित्व, उसकी वैचारिकता और शैली का सर्वोत्तम रूप दिखाई देता है।
7. निबंध में हृदय और बुद्धि दोनों का समन्वय होता है तथा यह आत्म-अभिव्यक्ति और विचार-प्रकाशन का सशक्त माध्यम है।
8. निबंध का स्वरूप लघु होते हुए भी प्रभावशाली होता है, जिसमें किसी विषय के एक पक्ष को सजीव और रोचक ढंग से प्रस्तुत किया जाता है।
9. निबंध में विषय का कोई बंधन नहीं होता और लेखक अपनी भाषा-शैली तथा अनुभवों के माध्यम से साधारण विषय को भी असाधारण बना देता है।
10. निबंध के तत्त्वों में विषय, व्यक्तित्व, भाषा-शैली और उद्देश्य शामिल होते हैं, जो मिलकर इसे एक सजीव, प्रभावशाली और समन्वित गद्य विधा बनाते हैं।

1.8 स्वाध्याय :

अ) लघुत्तरी प्रश्न.

1. निबंध की परिभाषा एवं स्वरूप का विस्तार से वर्णन कीजिए।
2. निबंध का महत्त्व स्पष्ट कीजिए।

आ) दीर्घोत्तरी प्रश्न.

1. निबंध के तत्त्वों का विस्तृत विवेचन कीजिए।
2. निबंध के विभिन्न प्रकारों का उदाहरण सहित वर्णन कीजिए।

1.9 क्षेत्रीय कार्य :

1. आ. रामचंद्र शुक्ल द्वारा लिखित 'चिंतामणि' निबंध संकलन का पठन कीजिए ।
2. 'मेरे गाँव/ शहर की विशेषताएँ' इस विषय पर निबंध लिखिए ।

1.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए :

1. शुक्ल रामचंद्र, (२०००) हिंदी साहित्य का इतिहास, नई दिल्ली, लोकभारती प्रकाशन।
2. गुलाबराय बाबु, (१९९८) हिंदी निबंध, नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन।
3. द्विवेदी हजारी प्रसाद (२००५) हिंदी साहित्य की भूमिका, नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन।
4. गायकवाड ज्ञानराज (२०१०) निबंध साहित्य के सिद्धांत, नई दिल्ली, वाणी प्रकाशन।
5. लाल श्रीकृष्ण (२००८) निबंध और अन्य गद्य विधाएँ, नई दिल्ली, किताब महल।



इकाई 2

निबंध साहित्य

2.1 जगत् प्रवाह

– बालकृष्ण भट्ट

अनुक्रम

- 2.1.1 उद्देश्य
- 2.1.2 प्रस्तावना
- 2.1.3 विषय विवेचन
 - 2.1.3.1 बालकृष्ण भट्ट का जीवन परिचय
 - 2.1.3.2 'जगत् प्रवाह' निबंध का परिचय
 - 2.1.3.3 'जगत् प्रवाह' निबंध का विवेचन
- 2.1.4 स्वयंअध्ययन के लिए प्रश्न
- 2.1.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ
- 2.1.6 स्वयंअध्ययन के प्रश्नों के उत्तर
- 2.1.7 सारांश
- 2.1.8 स्वाध्याय
- 2.1.9 क्षेत्रीय कार्य
- 2.1.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

2.1.1 उद्देश्य :

प्रस्तुत निबंध के अध्ययन के बाद आप -

- 1) भारतेंदुकालीन निबंधकार बालकृष्ण भट्ट के व्यक्तित्व एवं कृतित्व से परिचित होंगे।
- 2) बालकृष्ण भट्ट के निबंध लेखन एवं उनकी विचारशैली से परिचित होंगे।
- 3) 'जगत् प्रवाह' निबंध की कथावस्तु से परिचित होंगे।
- 4) 'जगत् प्रवाह' निबंध के आशय को जानने के बाद उसके उद्देश्य को समझ सकेंगे।
- 5) 'जगत् प्रवाह' निबंध के जरिए मनुष्य जीवन के अबाध प्रवाह एवं उसकी सार्थकता को जानेंगे।

2.1.2 प्रस्तावना :

हिंदी गद्य साहित्य में निबंध एक विचारप्रधान विधा के रूप में सर्वपरिचित है। 19 वीं शताब्दी में भारतेंदु ने गद्यलेखन का सूत्रपात किया और इस कालखंड में 'निबंध' यह एक प्रमुख और विचारप्रधान गद्यविधा के रूप में मशहूर हुई। भारतेंदु के अमूल्य योगदान से 19 वीं शताब्दी का उत्तरार्ध 'भारतेंदु युग' से पहचाने जाने लगा जिसमें अनगिनत साहित्यकारों ने हिंदी साहित्य की विविध विधाओं में लेखन करके साहित्य को समृद्ध करने का प्रयास किया। इसमें निबंधकार बालकृष्ण भट्ट का नाम शीर्षस्थ है। इलाहाबाद के निवासी भट्ट जी ने 'हिंदी प्रदीप' पत्रिका के माध्यम से सामाजिक एवं राष्ट्रीय चेतना निर्माण की। उन्होंने लगभग एक हजार से अधिक निबंध लिखे, जिससे उन्हें हिंदी निबंध विधा के पितामह कहा जाता है। 'जगत् प्रवाह' उनका एक मशहूर निबंध है, जो 'भट्ट निबंधमाला' में संकलित है। प्रस्तुत निबंध में भट्टजी ने दुनिया के अनादि प्रवाह और मनुष्य जीवन के उससे संबंध की वैचारिक विवेचना की है।

2.1.3 विषय विवेचन :

2.1.3.1 बालकृष्ण भट्ट का जीवन परिचय, व्यक्तित्व एवं कृतित्व :

हिंदी साहित्य के भारतेंदुकालीन प्रारंभिक गद्य रचनाकारों में बालकृष्ण भट्ट का नाम विशेष उल्लेखनीय है। इनका जन्म 3 जून, 1844 ई. को इलाहाबाद (उ.प्रदेश) में हुआ। बालकृष्ण भट्ट ने निरंतर बत्तीस वर्षों तक 'हिंदी प्रदीप' इस साहित्यिक पत्रिका के संपादन के माध्यम से हिंदी भाषा एवं साहित्य की मौलिक सेवा की है। उन्होंने नाटक, उपन्यास, निबंध और पत्रकारिता आदि गद्य विधाओं में मौलिक लेखन किया। लेकिन निबंधकार के रूप में ही उन्हें कालजयी प्रसिद्धि मिली। उन्होंने लगभग एक हजार से अधिक निबंधों का लेखन करके सामाजिक और राष्ट्रीय चेतना को निर्माण किया। बालकृष्ण भट्ट बहुभाषाओं के ज्ञाता थे और उन्हें हिंदी, संस्कृत, अंग्रेजी, बंगला और फारसी भाषाओं का अच्छा ज्ञान था। निबंध लेखन की अपनी आत्मपरक शैली के माध्यम से उन्होंने हिंदी निबंध विधा को समर्थ शैली प्रधान की और भविष्य के निबंधकारों के लिए प्रेरणास्रोत बने। वे भारतेंदु द्वारा स्थापित 'भारतेंदु मंडली' के सदस्य थे और उन्होंने स्वयं प्रयाग में 'हिंदी प्रवर्द्धिनी' नाम से साहित्य सभा की स्थापना की थी।

उन्होंने 'हिंदी प्रदीप' के माध्यम से एक हजार से भी अधिक निबंध लिखे, जिसे हिंदी साहित्य सम्मेलन-प्रयाग ने 'साहित्य सुमन' और 'भट्ट निबंधावली' नाम से प्रकाशित किया है। इसके अलावा 'नूतन ब्रह्मचारी', 'सौ अजान एक सुजान' (दो उपन्यास), 'दमयंती स्वयंवर', 'बाल-विवाह', 'चंद्रसेन का विकट खेल' (तीनों नाटक) और 'वेणीसंहार', 'मृच्छकअक, पद्मावती इन संस्कृत नाटकों का हिंदी में अनुवाद किया है। हिंदी भाषा को प्रतिष्ठित करने में उनका बहुमोल योगदान रहा और उनकी रचनाओं में पूर्वी बोली का जीवंत रूप देखने को मिलता है। व्यंग्य और विचारों की गहनता इन दोनों का समुचित संतुलन इनके निबंधों में देखने मिलता है। निबंध लेखन में इनकी तुलना अंग्रेजी के निबंधकार चार्ल्स लैंब से की जाती है। बालकृष्ण भट्ट ने अपनी साहित्य सेवा द्वारा हिंदी साहित्य एवं निबंध विधा को समृद्ध किया। उनका निधन 20 जुलाई, 1941 ई. को हुआ।

2.1.3.2 'जगत् प्रवाह' निबंध का परिचय :

बालकृष्ण भट्ट लिखित 'जगत् प्रवाह' यह निबंध उनके 'भट्ट निबंधमाला' में संकलित एक उत्कृष्ट और विचारप्रधान निबंध है। इसमें भट्ट जी ने मानवी जीवन और जगत्? के विभिन्न प्रवाह (दौर) का संबंध दिखाते हुए उनका गहराई से विश्लेषण किया है। मनुष्य ने विज्ञान और तंत्रज्ञान के बलबुते पर दुनिया में अनेक आविष्कार कर दिखाए हैं लेकिन जगत् की गति और उसके प्रवाह को मोड़ने की क्षमता उसमें आज तक नहीं आई है। जगत्? का प्रवाह मनुष्य के सोच, विचार से बाहर की चीज है जिसे मनुष्य लाख कोशिश करने के बावजूद भी बदल नहीं सकता या रोक नहीं सकता। भट्ट जी कहते हैं मनुष्य आज आर्थिक संसाधनों के लिए स्वार्थी बनकर अपने ही लोगों का दुश्मन बन बैठा है। वह सत्ता और संपत्ति पर अधिकार जमाकर विकास की अंधी दौड़ में भाग रहा है। लेकिन प्राचीन सभ्यताएं इस बात का प्रमाण है कि जगत् के प्रवाह के सामने आज तक कोई टिक नहीं पाया है। धरती के नीचे कई सभ्यताएं दफन हो चुकी है जो कभी वैभवशाली थी। यह निबंध संसार की निरंतर परिवर्तनशीलता और मनुष्य जीवन की क्षणभंगुरता पर भाष्य करनेवाला विचारप्रधान निबंध है। जगत् प्रवाह नदी की धारा की तरह अबाध गति से बहता आ रहा है जिसमें कभी स्थिरता नहीं हो सकती। प्रस्तुत निबंध के माध्यम से लेखन ने मनुष्य के जीवन की नश्वरता को स्वीकारकर केवल कर्म करते रहने का संदेश दिया है।

2.1.3.3 'जगत् प्रवाह' निबंध का विवेचन :

'जगत् प्रवाह' एक दार्शनिक निबंध है जिसमें जगत् के प्रवाह और मनुष्य जीवन की नश्वरता का तात्त्विक विवेचन किया है। निबंध की शुरुआत में बालकृष्ण भट्ट स्पष्ट करते हैं, मनुष्य में जगत् को रोकने या उसे पलटने की क्षमता नहीं है। मनुष्य ने विज्ञान और तकनीक के विकास से नदियों की निरंतर बहते प्रवाह में बाँध डालकर उसे भले ही रोक दिया हो लेकिन वह लाख कोशिश करे, वह जगत् के प्रवाह को रोक नहीं सकेगा। जगत् का प्रवाह निरंतर बदल रहा है और इसका प्रमाण है आज की स्वार्थी वृत्ति और रुपयों के लिए दुनिया की अंधीदौड़ शुरू होना। आज रुपए के लिए बड़े-बड़े तपस्वी, बुद्धिवादी और साधक लोग भी अपने ज्ञान एवं तपस्या का सौदा करने लगे हैं। मैंने जब भी बड़े-बड़े विद्वानों की परीक्षा लेनी चाहिए तो वे भी पैसों के आगे

फिसल गए हैं। पैसों के लिए रिशतों में दरारे आ रही है। पुत्र और पिता में मनमुटाव है, भाई-भाई में झगड़े हो रहे हैं। आर्थिक संसाधन पाने की लालच में दोनों एक-दूसरे के खून के प्यासे बन गए हैं। यह सब जगत् प्रवाह का ही परिणाम है, जो दुनिया इतनी मूल्यहीन हो चुकी है। वृंदावन की याद बताते हुए भट्ट जी कहते हैं कि एक बार मैं दोस्त की पहचान से एक व्यक्ति से मिला था। वह बहुत ही अमीर था, उसने हमें उसकी कोठी पर ले जाकर नौकरों को हमारे मेहमाननवाजी में कोई भी कमी न रहने की हिदायत दी। नौकर उसके सामने तो हामी भरते रहे लेकिन मालिक के निकल जाने पर हँसी-ठिठोली करने लगे। यह भी जगत् प्रवाह का ही परिणाम है, जो नौकर अपने कर्तव्य को सही तरीके से नहीं निभाते। बुद्धिमान और अनपढ़ में यही अंतर होता है। जगत् का यह प्रवाह पूर्ण वेग से चला जाए या वह मंद हो जाए तो धरती पर प्रलय आ जाएगा।

भट्ट जी आगे कहते हैं कि बहुत बड़े साधु-संत, महात्मा, योग अभ्यास करनेवाले योगी या वेदांत मर्मज्ञ मन को मारकर शांति की खोज करते हैं। लेकिन मेरा सवाल है कि जगत् के प्रवाह में एक बार पड़ने के बाद मनुष्य के मन को शांति कहाँ से मिल पाएगी? आम इंसान की बात छोड़ दीजिए। जमशेद, दारा, सिकंदर जैसे इतिहास विख्यात पुरुष हो या फिर राम, युधिष्ठिर जैसे अवतारी पुरुष ही क्यों न हो जगत् के प्रवाह में पड़कर उन्हें भी मानवी जीवन के भोग को भोगना ही पड़ा था। जगत् प्रवाह में एक क्षण में न जाने कितने ग्रह, नक्षत्र तारों का तेज परिवर्तित होता है या नष्ट होता है। कितने तारों का विलय हो जाता है। प्रकृति के प्रलय में एक क्षण में लाखों-करोड़ों लोगों का जीवन खत्म हो जाता है। कितनी वैभवशाली सभ्यता और संस्कृति जगत् के प्रवाह में काल की गाल में समाकर लुप्त हो जाती है। वह तो आज साहित्य में किस्से और कहानियाँ बनकर रह गई है। जैसे- प्राचीन भारत, प्राचीन पारस, प्राचीन यूनान, प्राचीन रोम की सभ्यता और संस्कृति लुप्त हो गई है।

सच्चा बुद्धिमानी व्यक्ति कभी जगत् प्रवाह से मुँह नहीं मोड़ता। वह अपनी सोच, संस्कार और क्षमता के अनुसार परिवर्तन के गीत गाते हुए आगे बढ़ता है। वह उत्साह और धैर्य के साथ जगत् के प्रवाह का सामना करता है। भट्ट जी आर्यों के इतिहास का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि आर्यों ने जगत् प्रवाह को त्रिगुणों में विभाजित किया था। पहला वह था जिसमें जगत् का प्रवाह मनुष्यों की सभ्यता, संस्कृति एवं व्यवहार के अनुकूल था। पूरी प्रकृति मनुष्य के साथ काम करती थी वह सत्ययुग या सतोगुण रहा है। इस युग में मनुष्य में सत्ता और आर्थिक संसाधनों को लेकर सात्विक भाव रहे थे। यह मनुष्य अपनी बुद्धि और कर्म से भी सात्विक रहा। जगत् प्रवाह की दृष्टि से यह कालखंड तरक्की, सभ्यता, मनुष्य की स्वतंत्रता का स्वर्णिम काल था। लेकिन भारत में जगत् का प्रवाह निरंतर बदलता रहा है। सतोगुण के स्थान पर रजोगुण आने पर मनुष्यों का जीवन विकारों से ग्रस्त होने लगा। स्वार्थ, हिंसा, निंदा, कपट, भेदभाव आदि के भाव बढ़ने लगे। यह प्रवाह जब तमोगुणों में परिवर्तित हुआ तो राग-द्वेष, बैर, फूट, ईर्ष्या, हिंसा, दानवता, व्याभिचार, क्रूरता चरम पर पहुँच गई। तमोगुण के प्रवाह के कारण ही हिंदुस्तान विदेशों के हाथ में चला गया और पराधीन हो गया। भारत की प्राचीन विरासत मिट्टी में मिल गई। लेकिन कुछ निर्बुद्ध लोग भी इस पराधीनता को भी स्वर्ग सुख का अनुभव करते हैं। पराधीनता को सुख मानोगे तो नरक के प्राणी भी हमसे श्रेष्ठ और सुखी कहलाएंगे। भट्ट जी

कहते हैं कि पुनर्जन्म की बात यदि सच होगी तो पराधीन भारत में जन्म लेने से सहारा रेगिस्तान का जीवन अच्छा होगा।

निबंधकार भट्ट जी 'भागवत' के रचनाकार की भी खबर लेते हुए कहते हैं कि पराधीन भारत की दुर्दशा के बावजूद भागवतकार इसी देश में देवों की जन्म लेने की इच्छा होने की बात कहते हैं, ऐसे लोगों को तो मैं तीन-चार चाटे जड़ देता। जगत् के प्रवाह को विषय बनाकर बहुत बड़े विद्वान लेखक हजारों पन्नों की किताब लिखते हैं या वक्ता भी बड़े-बड़े अभ्यासपूर्ण भाषण-व्याख्यान देते हैं। लेकिन जगत् प्रवाह के आगे उन दोनों के कार्य (लेखन और वक्तृत्व) का असर अणु जितना भी नहीं है।

निबंधकार बालविवाह की प्रथा को हराम की इच्छा कहकर संबोधित करता है। वे अपनी 'हिंदी प्रदीप' इस साहित्यिक पत्रिका के प्रत्येक अंक में इस कुरीति पर लिखकर उसका जोरदार प्रतिकार भी करते हैं। लेकिन लोग इस कुरीति के प्रवाह के मोह में बँध ही जाते हैं। सूरज प्रतिदिन उगता और फिर अस्त होता है। मनुष्य का जीवन हर क्षण घटता जा रहा है। कार्य का भार उठाते, व्यापार, उद्योग करते-करते लोग एक दिन बूढ़े हो जाते हैं और एक दिन मौत के आगोश में चले जाते हैं, यह भी जगत् प्रवाह का ही हिस्सा है। जगत् प्रवाह में तर जाने के लिए 'धैर्य' ही एक मात्र उपाय है। महाभारत के 'वन पर्व' में जन्म-मृत्यु के प्रवाह का उल्लेख आता है। इसमें महाभारतकार ने जन्म-मरण को महानदी और धैर्य को उस महानदी में नौका के रूपक का इस्तेमाल किया है। इस जन्म-मृत्यु की महानदी को धैर्य की नौका पर सँवार होकर ही पार किया जाता है। जीवन के षड्विकारों के इस जीवन रूपी प्रवाह से पार होने के लिए धैर्य, संयम की नौका पर चढ़कर ही जन्म-मरण के बंधन से छूटकारा पाया जा सकता है।

2.1.4 स्वयंअध्ययन के लिए प्रश्न :

अ) नीचे दिए गए प्रश्नों के विकल्पों में से सही विकल्प चुनिए।

- 1) 'जगत् प्रवाह' यह निबंध ने लिखा है?
अ. आ. महावीरप्रसाद द्विवेदी ब. बालकृष्ण भट्ट
क. बाबू गुलाब राय ड. निर्मल वर्मा
- 2) 'जगत् प्रवाह' निबंध बाळकृष्ण भट्ट कृत निबंध संग्रह में शामिल है?
अ. वसंत निबंध माला ब. अमृत निबंध माला
क. भट्ट निबंध माला ड. निबंध माला
- 3) बालकृष्ण भट्ट कालखंड के निबंधकार माने जाते हैं?
अ. भारतेन्दु युग ब. द्विवेदी युग
क. शुक्ल युग ड. शुक्लोत्तर युग

ब. माया

ਡ. ਧੈਰਯ

10) देवों की पराधीन भारत में जन्म लेने की इच्छा के संदर्भ में भट्ट जी की आलोचना करते हैं।

ब. रामायणकार

ड. शास्त्रकार

11) महाभारतकार ने को महानदी और को नौका का रूपक दिया है।

ब. जन्म-मरण, धैर्य

ड. मोह, माया

12) प्रवाह से पार होने के लिए मनुष्य के पास संयम की नौका होना जरूरी है।

ब. षड्विकारों

ड. कुरीतियों

2.1.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ :

- * **प्रद्योतित** – प्रकाशित, चमकता हुआ या रोशन किया हुआ। संस्कृत के प्रद्युतब धातु से बना शब्द जिसका अर्थ प्रकाश फैलाना है।
- * **दस्तूर** – रीति, रस्म, रिवाज, परंपरा या नियम ।
- * **कमीनगी** – नीचता, दुष्टता, ओछापन या कमीना होने का भाव ।
- * **अकिल** – बुद्धिमान, समझदार, विवेकी या अक्लमंद।
- * **कयामत का प्रलय** – इस्लाम धर्म में दुनिया नष्ट होने के अंतिम समय को कयामत कहा जाता है, हिंदू धर्म में उसे प्रलय कहते हैं।
- * **लियाकत** – योग्यता, क्षमता, पात्रता या गुण ।
- * **सिकंदर** – मैसेडोनिया का एक प्राचीन यूनानी शासक (356-323 ई.पूर्व) विश्वविजय की महत्त्वाकांक्षा रखनेवाला महान राजा।
- * **सिरमोर** – सिर का मुकुट, ताज, शिरोमणि या श्रेष्ठ व्यक्ति।
- * **आर्य** – प्राचीन भारत में एक श्रेष्ठ, सभ्य और वैदिक संस्कृति का पालन करने वाले समूह को कहा गया है।

- * **भागवतकार** – भागवत पुराण की रचना करने वाले, भागवत के रचयिता।
- * **उच्छिन्न** – नष्ट, उखाड़ा हुआ, कटा हुआ या निर्मूल किया हुआ।
- * **‘धीरज धैरे, सो उतरै पारा** – कहावत है-धैर्य रखने वाला संकटों से पार उतरता है।
- * **तनज्जुली** – अवनति, पतन, गिरावट, पद से गिरना।
- * **पारस, यूनान सभ्यता** – प्राचीन फारसी या अकेमेनिड साम्राज्य से संबंधित पारस सभ्यता थी और प्राचीन ग्रीक साम्राज्य से संबंधित यूनान सभ्यता थी। इनका कालखंड ईसा पूर्व पाचवीं शताब्दी था।
- * **वक्तृक्ता** – बोलने की कला, भाषण, व्याख्यान या वाक्पटुता ।

2.1.6 स्वयंअध्ययन प्रश्नों के उत्तर :

अ) प्रश्न के उत्तर :

- | | |
|---------------------------|-----------------------|
| 1. ब. बालकृष्ण भट्ट | 2. क. भट्ट निबंध माला |
| 3. अ. भारतेंदु युग | 4. ब. रूपयों |
| ५. अ. राम-युधिष्ठिर | 6. ब. सत्य युग |
| 7. ब. सहारा रेगिस्तान में | 8. अ. लेखक-वक्ता |
| 9. ब. पराधीनता | 10. अ. वन पर्व |

आ) प्रश्न के उत्तर :

- | | |
|------------------------|--------------------|
| 1. क. जगत् | 2. ब. हिंदी प्रदीप |
| 3. एक हजार | 4. चार्ल्स लैंब |
| ५. ड. वृंदावन | 6. क. बालविवाह |
| 7. ब. तमोगुण | 8. अ. लेखक-वक्ता |
| 9. ड. धैर्य | 10. अ. भागवतकार |
| 11. ब. जन्म-मरण, धैर्य | 12. ब. षड्विकारों |

2.1.7 सारांश :

1. हिंदी साहित्य के भारतेंदुकालीन प्रारंभिक गद्य रचनाकारों में बालकृष्ण भट्ट का नाम विशेष उल्लेखनीय है। बालकृष्ण भट्ट ने निरंतर बत्तीस वर्षों तक ‘हिंदी प्रदीप’ इस साहित्यिक पत्रिका के संपादन के माध्यम से हिंदी भाषा एवं साहित्य की मौलिक सेवा की। उन्होंने नाटक, उपन्यास, निबंध और पत्रकारिता आदि गद्य विधाओं में मौलिक लेखन किया। लेकिन निबंधकार के रूप में ही उन्हें

कालजयी प्रसिद्धि मिली। उन्होंने लगभग एक हजार से अधिक निबंधों का लेखन करके सामाजिक और राष्ट्रीय चेतना को निर्माण किया। हिंदी साहित्य सम्मेलन-प्रयाग ने 'साहित्य सुमन' और 'भट्ट निबंधावली' नाम से प्रकाशित किया है।

2. बालकृष्ण भट्ट लिखित 'जगत् प्रवाह' यह निबंध उनके 'भट्ट निबंधमाला' में संकलित एक उत्कृष्ट और विचारप्रधान निबंध है। इसमें भट्ट जी ने मानवी जीवन और जगत् के विभिन्न प्रवाह (दौर) का संबंध दिखाते हुए उनका गहराई से विश्लेषण किया है। मनुष्य ने विज्ञान और तंत्रज्ञान के बलबुते पर दुनिया में अनेक आविष्कार कर दिखाए हैं लेकिन जगत् की गति और उसके प्रवाह को मोड़ने की क्षमता उसमें आज तक नहीं आई है। जगत् का प्रवाह मनुष्य के सोच, विचार से बाहर की चीज है जिसे मनुष्य लाख कोशिश करने के बावजूद भी बदल नहीं सकता या रोक नहीं सकता।
3. मनुष्य आज आर्थिक संसाधनों के लिए स्वार्थी बनकर अपने ही लोगों का दुश्मन बन बैठा है। वह सत्ता और संपत्ति पर अधिकार जमाकर विकास की अंधी दौड़ में भाग रहा है। लेकिन प्राचीन सभ्यताएं इस बात का प्रमाण है कि जगत् के प्रवाह के सामने आज तक कोई टिक नहीं पाया है। धरती के नीचे कई सभ्यताएं दफन हो चुकी हैं, जो कभी वैभवशाली थीं।
4. 'जगत् प्रवाह' निबंध संसार की निरंतर परिवर्तनशीलता और मनुष्य जीवन की क्षणभंगुरता पर भाष्य करनेवाला विचारप्रधान निबंध है। जगत्? प्रवाह नदी की धारा की तरह अबाध गति से बहता आ रहा है जिसमें कभी स्थिरता नहीं हो सकती। मनुष्य ने जीवन की नश्वरता को स्वीकारकर केवल कर्म करते रहने का संदेश यह निबंध देता है।

2.1.8 स्वाध्याय :

अ) लघुत्तरी प्रश्न :

1. बालकृष्ण भट्ट के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दीजिए।
2. जगत् प्रवाह के संदर्भ में आर्यों के त्रिगुणों का विभाजन को भट्ट कैसे समझाते हैं, स्पष्ट कीजिए।
3. 'जगत् प्रवाह' निबंध में महाभारतकार के 'वन पर्व' का उल्लेख किस प्रकार किया है।
4. 'जगत् प्रवाह' के सामने लेखक और वक्ता के कार्य को भट्ट ने क्या माना है?
5. हिंदुस्तान की पराधीनता के बारे में भट्ट जी के क्या विचार हैं?
6. 'जगत् प्रवाह' निबंध के शीर्षक की सार्थकता को स्पष्ट कीजिए।

आ) दीर्घोत्तरी प्रश्न :

1. 'जगत् प्रवाह' निबंध में बालकृष्ण भट्ट के दार्शनिक विचारों का विवेचन कीजिए।

2. 'जगत् प्रवाह' निबंध का विवेचन अपने शब्दों में लिखिए।
3. निबंधकार बालकृष्ण भट्ट ने कौन-कौनसे उदाहरणों द्वारा 'जगत् प्रवाह' का विवेचन किया है, स्पष्ट कीजिए।

2.1.9 क्षेत्रीय कार्य :

1. बालकृष्ण भट्ट के निबंधों का संकलन करके कक्षा में उन पर गुटचर्चा कीजिए।
2. भारतेन्दु कालीन अन्य निबंधकारों की जानकारी संकलित कीजिए।
3. 'जगत् प्रवाह' इस विषय पर कविता लिखने का प्रयास कीजिए।

2.1.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए :

1. मिश्र सत्यप्रकाश (संपा.), बालकृष्ण भट्ट के श्रेष्ठ निबंध, (सं. 2011 ई.), नई दिल्ली, लोकभारती प्रकाशन।
2. मीणा गंगा सहाय (संपा.), बालकृष्ण भट्ट रचना संचयन, (सं.2018 ई.) नई दिल्ली, साहित्य अकादमी प्रकाशन।



इकाई 2

2.2 दाँत

– प्रतापनारायण मिश्र

अनुक्रम

- 2.2.1 उद्देश्य
- 2.2.2 प्रस्तावना
- 2.2.3 विषय विवेचन
 - 2.2.3.1 प्रतापनारायण मिश्र का जीवन परिचय
 - 2.2.3.2 'दाँत' निबंध का परिचय
 - 2.2.3.3 'दाँत' निबंध का विवेचन
- 2.2.4 स्वयंअध्ययन के लिए प्रश्न
- 2.2.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ
- 2.2.6 स्वयंअध्ययन के प्रश्नों के उत्तर
- 2.2.7 सारांश
- 2.2.8 स्वाध्याय
- 2.2.9 क्षेत्रीय कार्य
- 2.2.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

2.2.1 उद्देश्य :

प्रस्तुत निबंध के अध्ययन के बाद आप,

- 1) भारतेंदुकालीन निबंधकार प्रतापनारायण मिश्र के व्यक्तित्व एवं कृतित्व से परिचित होंगे।
- 2) प्रतापनारायण मिश्र के निबंध लेखन एवं उनकी विचारशैली से परिचित होंगे।
- 3) 'दाँत' इस व्यंग्यात्मक निबंध की कथावस्तु से परिचित होंगे।
- 4) आप 'दाँत' निबंध के आशय को जानने के बाद उसके उद्देश्य को समझ सकेंगे।
- 5) 'दाँत' निबंध के जरिए मनुष्य शरीर में दाँत के महत्त्व एवं उसके साहित्यिक सौंदर्य को परिचित होंगे।

2.2.2 प्रस्तावना :

प्रतापनारायण मिश्र भारतेंदु युग के एक विख्यात हास्य और व्यंग्य निबंधकार के रूप में सुपरिचित है। उन्होंने 'ब्राह्मण' पत्रिका के माध्यम में खड़ी बोली के विकास में महनीय योगदान दिया है। पत्रकारिता, निबंध, कविता और नाटक लेखन के माध्यम से उन्होंने हिंदी भाषा की सेवा की। उन्होंने नाटक, निबंध, काव्य और व्यंग्य-प्रहसन में लगभग 40 रचनाएं लिखी हैं। 'दाँत' उनका एक व्यंग्यात्मक निबंध है, जिसमें उन्होंने दाँत जैसे शरीर के अंग के मानवी सौंदर्य और साहित्यिक महत्त्व का व्यंग्यात्मक विवेचन किया है। इस निबंध में प्रतापनारायण मिश्र ने मानव के व्यक्तिगत एवं सामाजिक व्यवहार पर कठोर व्यंग्यात्मक प्रहार किया है। इस निबंध में मिश्रजी ने हास्य, व्यंग्य और विचारशैली का अनोखा संगम किया है। वे कहते हैं कि दाँत केवल शरीर का एक साधारण अंग नहीं, बल्कि सौंदर्य और अनुभवों का प्रतीक है।

2.2.3 विषय विवेचन :

2.2.3.1 प्रतापनारायण मिश्र का जीवन परिचय :

प्रतापनारायण मिश्र का जन्म 24 सितंबर, 1856 ई. में उत्तर प्रदेश के उन्नाव जिले में स्थित बैजे नामक गाँव में हुआ। भारतेंदु हरिश्चंद्र को वे अपना गुरु मानते थे और उन्हें भगवान की तरह पूजते थे। उनकी रचना एवं विचार शैली का उनपर काफी प्रभाव था। इस कारण हिंदी साहित्य जगत् में उन्हें 'प्रति भारतेंदु' या 'द्वितीय हरिश्चंद्र' के उपनाम दिए गए थे। भारतेंदु के द्वारा स्थापित 'भारतेंदु मंडल' के ये सदस्य भी थे। उन्होंने एक कवि, नाटककार, निबंधकार और पत्रकार के रूप में हिंदी भाषा एवं साहित्य की सेवा की। उन्होंने स्वयं अध्ययन के बल पर हिंदी, उर्दू, बंगला, फारसी, अंग्रेजी और संस्कृत भाषाओं को सीखा था।

उन्होंने 15 मार्च, 1883 ई. को अपने दोस्तों के सहयोग से 'ब्राह्मण' नाम से मासिक साहित्यिक पत्रिका शुरू की। इस पत्रिका के संपादन के माध्यम से उन्होंने सामाजिक, धार्मिक कुरीतियों और राजनीतिक अवमूल्यन पर व्यंग्यात्मक लेखन करके समाज जागरण का कार्य किया। 'हिंदी, हिंदू, हिंदुस्तान' यह प्रसिद्ध नारा प्रतापनारायण मिश्र का था। हिंदी भाषा, हिंदू समाज और हिंदू देश को लेकर वे बहुत ही कट्टर भावना रखते

थे। उनके हिंदी निबंधों के महत्त्व को बताते हुए विख्यात आलोचक रामचंद्र शुक्ल ने कहा है, 'पं. प्रतापनारायण मिश्र ने हिंदी गद्य साहित्य में वही काम किया है, जो अंग्रेजी गद्य साहित्य में एडीसन ने किया।'।

समाजसुधार के उद्देश्य को लेकर उन्होंने नाटक, कविता, निबंध और पत्रकारिता विधा में लेखन किया। साथ ही संस्कृत और बंगला भाषा की कुछ रचनाओं का हिंदी में अनुवाद भी किया है। उनकी रचनाओं की संक्षिप्त जानकारी इस प्रकार है- 1. निबंध संग्रह- 'निबंध नवनीत', 'प्रताप पीयूष', 'प्रताप समीक्षा। 2. नाटक : 'गो संकट', 'कलिकौतुक', 'कलिप्रभाव', 'हठी हमीर। 3. कविता: 'प्रेम पुष्पावली', 'मन की लहर', 'कानपुर महात्म्य', 'ब्रैडला स्वागत', 'दंगल खंड', 'तृप्यन्ताम्', 'लोकोक्तिशतक', 'दीवो बरहमन' (उर्दू)। 4. अनूदित गद्य कृतियाँ : 'चरिताष्टक', 'पंचामृत', 'नीतिरत्नमाला', 'बात', 'राजसिंह', 'अमरसिंह', 'इंदिरा कथामाला', 'शिशु विज्ञान', 'राधारानी', 'सेनवंश का इतिहास', 'सूबे बंगाल का भूगोल', 'वर्ण परिचय' आदि।

पं. प्रतापनारायण मिश्र के निबंधों के विषयों में विविधता रही है। उन्होंने ईश्वर प्रेम, समाज सुधार और मानवी जीवन के मनोरंजक विषयों पर व्यंग्यात्मक निबंध लिखे हैं। खड़ी बोली में प्रचलित जनभाषा का प्रयोग, जनभाषा एवं लोक जीवन से संबंधित मुहावरें, कहावतों और विदेशी शब्दों का संतुलित प्रयोग इनके निबंधों में देखने को मिलता है। अतः उनके 'दाँत' इस मनोरंजनात्मक एवं व्यंग्यात्मक निबंध का विवेचन इस प्रकार है-

2.2.3.2 'दाँत' निबंध का परिचय :

पं. प्रतापनारायण मिश्र लिखित 'दाँत' निबंध एक ललित और व्यंग्यात्मक निबंध है, जो उनके 'प्रताप पीयूष' निबंध संकलन में शामिल है। मिश्र जी ने 'दाँत' जैसे साधारण अंग को विषय बनाकर उसके मानवी सौंदर्य एवं साहित्यिक महत्त्व को सोदाहरण स्पष्ट किया है। निबंधकार ने इसमें मानवी जीवन एवं व्यवहार के कई उदाहरणों द्वारा 'दाँत' के महत्त्व और मनुष्य के सामाजिक व्यवहार पर कठोर आघात किया है। मिश्र जी ने इसमें पाकशास्त्र और काव्यशास्त्र के नवरसों के परिप्रेक्ष्य में 'दाँत' के महत्त्व की व्यंग्यात्मक मीमांसा की है। साथ ही 'दाँत' के यथोचित स्थान पर न होने पर सौंदर्य में बाधा आने के संकेत को आधार बनाकर लोगों को अपने स्थान अर्थात् अपने देश के प्रति प्रेम, निष्ठा रखने और भाईचारे से रहने का संदेश दिया है। बीच-बीच में 'दाँत' को लेकर हिंदी साहित्य के मुहावरें और कहावतों का सटीक प्रयोग इस निबंध में देखने को मिलता है। इस निबंध की कथावस्तु का विस्तार से विवेचन इस प्रकार है-

2.2.3.3 'दाँत' निबंध का विवेचन :

पं. प्रतापनारायण मिश्र 'दाँत' निबंध की शुरुआत में ही साहित्यकारों पर खेद जताते हुए कहते हैं कि साहित्य में 'दाँत' को एक साधारण हड्डी मानकर उसकी ओर अनदेखी की गई है। उसकी तुलना में केश, भौंहे, आँख, कान, होठ, नाक, गाल आदि मानवी शरीर के अंगों एवं उनके सौंदर्य का खूब वर्णन देखने को मिलता है। लेकिन मुँह की शोभा और खाने का स्वाद दाँत पर ही निर्भर होता है। मुख के अवयवों की शोभा तभी है,

जब दाँत सही जगह और अच्छे से हो। बिना दाँत के मनुष्य का मुँह ठोड़ी और नाक के बीच पिचक जाएगा और हमारी सुंदरता मिट्टी में मिल जाएगी।

पं. प्रतापनारायण मिश्र कहते हैं कि कवियों ने तो कुछ जगहों पर 'दाँत' को हीरे-मोती, माणिकों की उपमा दी है। पाकशास्त्र के छह रसों और काव्यशास्त्र के नौ रसों का आधार मूलतः दाँत ही है। दाँत के अभाव में इन रसों का कोई अर्थ ही नहीं रहेगा। पाकशास्त्र के संदर्भ में दाँतों के महत्त्व को समझना है तो किसी दंतविहिन वृद्ध आदमी से मिलकर इसका अनुभव करो। दाँत न होने के कारण बेचारे बुजुर्ग लोगों को सभी व्यंजनों का घोल बनाकर उसे खाना नहीं, निगलना पड़ता है। जिससे खाने का मजा ही किरकिरा हो जाता है। वृद्ध लोग खाने को चबाने के लिए मानो तरस जाते हैं।

मिश्र जी कहते हैं कि काव्यशास्त्र के नव रसों का प्रमुख आधार दाँत ही है। काव्यशास्त्र में नवरसों के परिप्रेक्ष्य में वे दाँतों के महत्त्व को सोदाहरण स्पष्ट करते हुए वे बताते हैं कि शृंगार रस में नायिका के पान में रंगे दाँत बात करते और हँसते समय हमारा मन और आँखों को मोहित कर लेते हैं। इसका वर्णन मानो गूँगे के लिए मिठाई के स्वाद जैसा ही है। हास्य रस में तो हँसते-हँसते दाँत न निकले तो वह सार्थक ही नहीं होगा। करुण और रौद्र रस में दुःख और क्रोध में दाँत अपने होठ चबाते हुए रस को मजबूत करते हैं। अपनी दीनता दिखाकर दूसरों से संवेदना पाने में इन्हीं दाँतों का इस्तेमाल होता है या क्रोध में हम दाँतों को पीसकर अपना गुस्से का प्रदर्शन करते हैं। वीर रस में भी शत्रु की सेना या दुखियों के दुःखों को देखकर या शत्रु की सत्कीर्ति को दाँत लगाने की इच्छा होती है। सिंह और बाघ के दाँतों के स्मरण मात्र से भय रस निर्माण होता है लेकिन इनका स्मरण रात्रि के समय मत कीजिए वरना नींद में ही आप भागने लगेंगे। बीभत्स रस को समझना चाहते हो तो किसी तिब्बती साधु के दाँत देख लीजिए। उनके दाँतों के मैल पर पैसे चिपक सकते हैं। अद्भुत रस में तो हम अक्सर कोई अविश्वसीनय या आश्चर्यजनक बातें सुनकर दाँत और मुँह को फैलाकर हक्के-बक्के रह जाते हैं। शांत रस की पुष्टि हेतु मिश्र जी ने शंकराचार्य स्वीमी के एक संस्कृत वचन का आधार लेते हुए कहा है कि मृत्यु की दाढ़ में बैठे हमपर जल के कछुए, मछली, स्थल के कौआ, कुत्ता आदि के दाँत पैने हो रहे हैं और फिर भी हम भगवान का चिंतन नहीं कर रहे हैं, तो हमारा सारा जीवन व्यर्थ है। मनुष्य के दाँत हाथी के नहीं है जो मरने के बाद किसी के काम आए। इसलिए जीते जी हमें समझदारी रखकर परमार्थ कार्य करना चाहिए।

दाँतों से हमें यही मार्मिक शिक्षा अर्जित करनी चाहिए कि हम जहाँ भी है उसी स्थान पर मजबूती से काम कर सकते हैं। हमारी इज्जत, प्रतिष्ठा अपने उचित स्थान पर निर्भर होती है। बड़े-बड़े कवि मुख की सुंदरता में दाँतों की ओर अनदेखी करते हैं। लेकिन यही दाँत अगर मुख से बाहर होते तो मुख की सुंदरता घृणा, उपेक्षा का पात्र बन जाती है। दाँत अपने जगह पर होने पर ही योग्य लगते हैं। उसी तरह देश की जनता भी अपने देश में उचित भाईचारे से रहे तो अच्छा होता है। हिंदू-मुस्लिम अपने-अपने स्थान पर रहकर भाईचारे से रहेंगे तो अच्छा रहेगा। वरना वे अपने-अपने स्थान (भाईचारे के विचार से) भ्रष्ट हो जाएंगे तो इसमें उनका और देश का अहित होगा। इससे देश की सुंदरता और शोभा नष्ट हो जाएगी। अतः हमें तन-मन-धन से इस भाईचारे को निभाना जरूरी है।

निबंध में आगे मिश्र जी स्वदेश निष्ठा को दाँतों के परिप्रेक्ष्य में समझाते हुए कहते हैं कि कुछ लोग भारत छोड़कर विदेश में चले जाते हैं तो कुछ लोग उन्हें ताने मारते हैं। लेकिन देश के कल्याण और स्वदेश की चिंता में यदि कुछ समय के लिए देशांतर भी करना पड़े तो उसमें कोई बुराई नहीं। जैसे हँसते समय दाँत भी कुछ समय के लिए अपना स्थान छोड़कर बाहर आ ही जाते हैं। लेकिन विदेशों में बसकर अगर आप अपनी मातृभूमि, अपने स्वदेश को भूल जाएंगे तो आप उन दाँतों की तरह भट्टे लगोगे, जो किसी कारण विशेष मुँह के बाहर निकल पड़े हैं और भेड़िये जैसे दिखेंगे। गाल और होठ दाँतों का परदा है, उसी तरह स्वदेश के प्रति स्वाभिमान न होनेवाले निर्लज्ज का जीवन व्यर्थ ही कहलाएगा।

दाढ़ में दर्द होने पर हम उसे उखाड़ फेंकना चाहते हैं उसी तरह देश में स्वार्थ की अंधी दौड़ शुरू हुई है। अनेक कुरीतियाँ, विसंगतियाँ देश और हमारे समाज का दर्द बन चुकी है। इस दर्द के कारण भाईचारे में, देश हित में बाधा पहुँच रही है। भगवान ऐसे दर्द देनेवाले लोगों को सुबुद्धि दे या उनका सर्वनाश कर डाले। ऐसे भ्रष्ट और देश के गद्दारों से देश को क्या लाभ मिलेगा? हमें तो उन लोगों का सम्मान करना चाहिए, जो 'दाँत काटी रोटी' का व्यवहार करते हैं। अर्थात् देश के प्रति गहरी निष्ठा और भक्ति रखते हैं। मिश्र जी भगवान से प्रार्थना करते हैं कि यहाँ के हिंदु-मुस्लिम लोग भाईचारे के साथ देश के हित के लिए उत्साह के साथ दाँत पीसते रहे। निबंधकार मिश्र जी कहते हैं कि 'ब्राह्मण' पत्रिका में लिखे हमारे लेखों को देख-पढ़कर कोई दाँतों तले उंगली दबाए प्रशंसा करता है, कोई दाँत बाय के रह जाता है, तो कोई अरसिकता से यह क्या 'दाँतः.दाँतः.का शोर मचाया रखा है' कहकर निंदा करते हैं तो हमें इसकी कोई परवाह नहीं है। हमारा दाँत जिस उद्देश्य की पूर्ति करने में लगा रहा है वह निरंतर लगा रहेगा। दूसरों के दाँत काँटने से हमारा कुछ लेना-देना ही नहीं है।

अंत में निबंधकार मिश्र जी अपनी दाँत की दंतकथा का समापन करते कुछ नसीहतें देते हैं कि देश के हालात बिगड़ चुके हैं। देश में सांप्रदायिक भेदभाव बढ़ रहा है। जाति, धर्म, संप्रदाय के नाम पर नफरत को फैलाया जा रहा है। भारत जैसे बहुभाषिक, बहुधार्मिक देश में हमें बत्तीस दाँतों के बीच जिस तरह जीभ रहती है, वैसे सभी को मिल-जुलकर भाईचारे के साथ रहना जरूरी है। देश की भलाई के लिए दाँत में तिनका दबाने की स्थिति आए तो हमें शरमाना नहीं है। हमेशा ध्यान रखिए कि दुनियादारी में सभी विश्वास के पात्र नहीं होते क्योंकि हाथी के दाँत खाने के और होते हैं और दिखाने के और होते हैं।

2.2.4 स्वयंअध्ययन के लिए प्रश्न :

अ) नीचे दिए गए प्रश्नों के विकल्पों में से सही विकल्प चुनिए।

1) पं. प्रतापनारायण मिश्र किस मंडल के सदस्य थे?

अ. द्विवेदी

ब. भारतेन्दु

क. शुक्ल

ड. प्रेमचंद

2) भारतेन्दु के गहन प्रभाव के कारण प्रतापनारायण मिश्र हिंदी साहित्य जगत् में किस नाम से जाने जाते थे?

- अ. कवि शिरोमणि ब. गद्यजनक
- क. प्रति भारतेन्दु ड. नाट्यसम्राट
- 3) 'दाँत' यह निबंध प्रतापनारायण मिश्र के कौनसे निबंध संकलन में शामिल है?
- अ. प्रताप पीयूष ब. रस मीमांसा
- क. प्रताप निबंधावली ड. राणा प्रताप संग्रह
- 4) पं. प्रतापनारायण मिश्र का जन्म कब और कहाँ हुआ है?
- अ. 28 सितंबर, 1956, भोपाल (मध्य प्रदेश)
- ब. 20 सितंबर, 1756, इलाहाबाद (उ.प्रदेश)
- क. 24 सितंबर, 1856, बैजा (उ. प्रदेश)
- ड. 29 सितंबर, 1858, रांची (झारखंड)
- 5) बूढ़े लोग किस बात के लिए तरसते हैं?
- अ. खाना चबाने ब. हँसने
- क. नाचने ड. गाने
- 6) किन शास्त्रों के परिप्रेक्ष्य में निबंधकार मिश्र ने 'दाँत' के महत्त्व को समझाया है?
- अ. नाट्यशास्त्र, संगीतशास्त्र ब. पाकशास्त्र, काव्यशास्त्र
- क. मानसशास्त्री, शरीरशास्त्र ड. समाजशास्त्री, राज्यशास्त्र
- 7) बीभत्स रस की अनुभूति के लिए निबंधकार मिश्र कौनसे साधुओं के दाँत देखने को कहते हैं?
- अ. तिब्बती ब. सिद्ध
- क. नाथ ड. जैन
- 8) 'दाँत' निबंध में काव्यशास्त्र के कितने रसों का वर्णन किया है?
- अ. ग्याहरह ब. नौ
- क. दस ड. बारह
- 9) 'दाँत' निबंध में पं. मिश्र ने शांत रस के परिप्रेक्ष्य में किसके श्लोक का वर्णन किया है?
- अ. स्वामी दयानंद ब. स्वामी विवेकानंद
- क. स्वामी शंकराचार्य ड. स्वामी रामानंद

10) 'दाँत' निबंध में आए 'दाँत काटी रोटी' का संबंध किस भावना से है?

अ. सच्ची गहरी प्रीति

ब. स्वाभिमान

क. घृणा

ड. सांप्रदायिकता

आ) नीचे दिए गए प्रश्नों के विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

1) प्रतापनारायण मिश्र को अपना गुरु मानकर ईश्वरसमान पूजा करते थे।

अ. भारतेन्दु हरिश्चंद्र

ब. महावीरप्रसाद द्विवेदी

क. बालकृष्ण भट्ट

ड. बाबू गुलाबराय

2) पं. प्रतापनारायण मिश्र ने हिंदी मासिक पत्रिका का संपादन किया है।

अ. हिंदी प्रदीप

ब. कविवचन सुधा

क. ब्राह्मण

ड. हंस

3) आ. रामचंद्र शुक्ल ने प्रताप नारायण मिश्र की तुलना अंग्रेजी गद्य लेखक से की है।

अ. एडीसन

ब. इलियट

क. क्रोचे

ड. मैक्स मूल्लर

4) प्रतापनारायण मिश्र लिखित 'दाँत' यह एक निबंध है।

अ. दार्शनिक

ब. हास्य-व्यंग्य

क. ऐतिहासिक

ड. मनोवैज्ञानिक

5) निबंधकार मिश्र ने काव्यशास्त्र के के संदर्भ में दाँतों का वर्णन किया है।

अ. नवरसों

ब. अलंकारों

क. मंत्रों

ड. महाकाव्यों

6) नायिका के पान खाने से रंगे हुए दाँतों को देखकर रस की निर्मिती हो जाती है।

अ. भय

ब. शृंगार

क. रौद्र

ड. वीर

7) रस में दुःख और क्रोध के आवेग में दाँत अपने होठ चबाने लगते हैं।

अ. शृंगार और शांत

ब. बीभत्स और वीर

क. हास्य और भक्ति

ड. करुणा और रौद्र

8) में छह रसों का वर्णन किया जाता है।

है जिसका अर्थ है जिस प्रकार दाँत, बाल, नाखून और पुरुष (मनुष्य) अपने उचित स्थान (स्वस्थान) से अलग होने पर शोभा नहीं देते, उसी प्रकार बुद्धिमान व्यक्ति को अपना मूल स्थान या पद नहीं छोड़ना चाहिए।

- * **मुख में मानिक सम दशन बाहर निकसत हाड़ :** जब तक दाँत मुख में होते हैं तो वह माणिक-हिरों की तरह मुखी की शोभा बनते हैं लेकिन वही दाँत मुँह से बाहर (टूटे हुए) हो तो वह एक घृणा फैलाने वाली हड्डी बनकर रह जाते हैं।
- * **पाकशास्त्र के छह रस :** आयुर्वेद और भारतीय पाकशास्त्र में भोजन के संतुलन के लिए छह रसों को महत्वपूर्ण माना है। मधुर (मीठा), खट्टा, नमकीन, तीखा, कड़वा, कसैला आदि।
- * **काव्यशास्त्र के नौ रस :** आचार्य भरतमुनि ने नाट्यशास्त्र में काव्य रसों की संख्या नौ मानी है- शृंगार, हास्य, करुण, रौद्र, वीर, भयानक, बीभत्स, अद्भुत और शांत रस। बाद के आचार्यों ने इसमें वात्सल्य रस (बालप्रेम) और भक्ति रस (ईश्वर प्रेम) को भी रस माना है।

2.2.6 स्वयंअध्ययन के प्रश्नों के उत्तर :

अ) प्रश्न के उत्तर :

- | | |
|-------------------------|---|
| 1. ब. भारतेन्दु | 2. क. प्रति भारतेन्दु |
| 3. अ. प्रताप पीयूष | 4. क. २४ सितंबर, १८५६, बैजा (उ. प्रदेश) |
| ५. अ. खाना चबाने | 6. ब. पाकशास्त्र, काव्यशास्त्र |
| 7. अ. तिब्बती | 8. ब. नौ |
| 9. क. स्वामी शंकराचार्य | 10. अ. सच्ची गहरी प्रीति |

आ) प्रश्न के उत्तर :

- | | |
|----------------------------|---------------------|
| 1. अ. भारतेन्दु हरिश्चंद्र | 2. क. ब्राह्मण |
| 3. अ. एडीसन | 4. ब. हास्य-व्यंग्य |
| ५. अ. नवरसों | 6. ब. शृंगार |
| 7. ड. करुणा और रौद्र | 8. अ. पाकशास्त्र |
| 9. क. भयानक | 10. अ. स्वदेश |

2.2.7 सारांश :

1. प्रतापनारायण मिश्र भारतेन्दु युग के एक विख्यात हास्य और व्यंग्य निबंधकार के रूप में सुपरिचित है। उन्होंने 'ब्राह्मण' पत्रिका के माध्यम से खड़ी बोली के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

पत्रकारिता, निबंध, कविता और नाटक लेखन के माध्यम से उन्होंने हिंदी भाषा की सेवा की। उन्होंने नाटक, निबंध, काव्य और व्यंग्य-प्रहसन आदि 40 रचनाएं लिखी हैं।

2. पं. प्रतापनारायण मिश्र लिखित 'दाँत' निबंध एक ललित और व्यंग्यात्मक निबंध है, जो उनके 'प्रताप पीयूष' इस निबंध संकलन में शामिल है। मिश्र जी ने 'दाँत' जैसे साधारण अंग को विषय बनाकर उसके मानवी सौंदर्य एवं साहित्यिक महत्त्व को सोदाहरण स्पष्ट किया है। निबंधकार ने इसमें मानवी जीवन एवं व्यवहार के कई उदाहरणों द्वारा 'दाँत' के महत्त्व और मनुष्य के सामाजिक व्यवहार पर कठोर आघात किया है।
3. मिश्र जी ने इसमें पाकशास्त्र और काव्यशास्त्र के नवरसों के परिप्रेक्ष्य में 'दाँत' के महत्त्व की व्यंग्यात्मक मीमांसा की है। साथ ही 'दाँत' के यथोचित स्थान पर न होने पर सौंदर्य में बाधा आने के संकेत को आधार बनाकर लोगों को अपने स्थान अर्थात् अपने देश के प्रति प्रेम, निष्ठा रखने और भाईचारे से रहने का संदेश दिया है।
4. बीच-बीच में 'दाँत' को लेकर हिंदी साहित्य के मुहावरों, कहावतों और संस्कृत सुभाषितों का सटीक प्रयोग इस निबंध में देखने को मिलता है- जैसे 'दाँत काँटी रोटी', 'हाथी के खाने के दाँत और दिखाने के दाँत और होते हैं', 'मुख में मानिक सम दशन बाहर निकसत हाड़', 'स्थानभ्रष्ट न शोभन्ते, दन्ताः केशा नखा नराः', 'कायर कपूत कहाय, दाँत दिखाय भारत तम हरौ' आदि।

2.2.8 स्वाध्याय :

अ) लघुत्तरी प्रश्न :

1. पं. प्रतापनारायण मिश्र के व्यक्तित्व और कृतित्व का परिचय दीजिए।
2. 'दाँत' निबंध में मिश्र जी ने वृद्धत्व और यौवन का दाँत से किस तरह संबंध बताया है? स्पष्ट कीजिए।
3. 'दाँत' निबंध में पाकशास्त्र के संदर्भ में दाँतों का क्या महत्त्व है?
4. पं. प्रतापनारायण मिश्र ने 'दाँत' के महत्त्व के संदर्भ में काव्यशास्त्र के नौ रसों का वर्णन कैसे किया है?
5. 'दाँत' निबंध में दाँत को रूपक मानकर निबंधकार ने देशनिष्ठा को कैसे व्यक्त किया है?

आ) दीर्घोत्तरी प्रश्न :

1. पं. प्रतापनारायण मिश्र लिखित 'दाँत' निबंध के विवेचन अपने शब्दों में लिखिए।
2. पं. प्रतापनारायण मिश्र का 'दाँत' यह निबंध एक हास्य-व्यंग्य निबंध है, सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।
3. 'दाँत' निबंध में पं. प्रतापनारायण मिश्र ने दाँतों के महत्त्व को कैसे समझाया है?
4. 'दाँत' निबंध में प्रयुक्त हुए भाषा सौंदर्य तत्त्वों (मुहावरों, सुभाषितों, कहावतों) की समीक्षा कीजिए।

2.2.9 क्षेत्रीय कार्य :

1. प्रतापनारायण मिश्र के 'शरीर अंग' विषयवाले का संकलन कीजिए।
2. 'दाँत' निबंध का मराठी में अनुवाद करने का प्रयास करें।

2.2.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए :

1. पल्लव (संपा.), हिंदी के प्रारंभिक निबंधकार प्रतापनारायण मिश्र, (सं. 2025 ई.), नई दिल्ली, सस्ता साहित्य मंडल प्रकाशन।
2. जैन निर्मला, रमेश द्विवेक (संपा.) निबंधों की दुनिया : प्रतापनारायण मिश्र, (सं.2012 ई.), नई दिल्ली, वाणी प्रकाशन।



इकाई 2

2.3 साहित्य की महत्ता

– आ. महावीरप्रसाद द्विवेदी

अनुक्रम

- 2.3.1 उद्देश्य
- 2.3.2 प्रस्तावना
- 2.3.3 विषय विवेचन
 - 2.3.3.1 आ. महावीरप्रसाद द्विवेदी का जीवन परिचय, व्यक्तित्व एवं कृतित्व
 - 2.3.3.2 'साहित्य की महत्ता' निबंध का परिचय
 - 2.3.3.3 'साहित्य की महत्ता' निबंध का विवेचन
- 2.3.4 स्वयंअध्ययन के लिए प्रश्न
- 2.3.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ
- 2.3.6 स्वयंअध्ययन के प्रश्नों के उत्तर
- 2.3.7 सारांश
- 2.3.8 स्वाध्याय
- 2.3.9 क्षेत्रीय कार्य
- 2.3.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए
- 2.3.1 उद्देश्य :

प्रस्तुत निबंध के अध्ययन के बाद आप -

- 1) द्विवेदी युगीन निबंधकार आ. महावीरप्रसाद द्विवेदी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व से परिचित होंगे।
- 2) आ. महावीरप्रसाद द्विवेदी के निबंध लेखन एवं उनकी विचारशैली से परिचित होंगे।
- 3) 'साहित्य की महत्ता' इस व्यंग्यात्मक निबंध की कथावस्तु से परिचित होंगे।
- 4) 'साहित्य की महत्ता' निबंध के आशय को जानने के बाद उसके उद्देश्य को समझ सकेंगे।
- 5) साहित्य का महत्त्व, साहित्य सृजन का उद्देश्य एवं मानवी जीवन में साहित्य के महत्त्व से परिचित होंगे।

2.3.2 प्रस्तावना :

हिंदी साहित्य में सन 1900 से 1920 का कालखंड 'द्विवेदी युग' के नाम से जाना जाता है। यह नामकरण हिंदी के विख्यात निबंधकार, आलोचक आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी के नाम पर किया गया है। आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी ने सन् 1903 को 'सरस्वती' पत्रिका के माध्यम से खड़ी बोली हिंदी को व्याकरणिक दृष्टि से शुद्ध रूप प्रदान किया। कविता में ब्रज भाषा के स्थान पर खड़ी बोली को स्थापित करने में उनका बहुमोल योगदान रहा। द्विवेदी युग में हिंदी साहित्य की अनेक विधाओं का विकास हुआ और उनकी साहित्यिक संरचना सुगठित हुई। हिंदी निबंध में खड़ी बोली की प्रतिष्ठा, राष्ट्रीयता एवं देशभक्ति, नैतिकता एवं आदर्शवाद, विचारप्रधानता, सामाजिक सुधार आदि की स्थापना करने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। आ. महावीरप्रसाद द्विवेदी लिखित 'साहित्य की महत्ता' यह निबंध साहित्य के महत्त्व एवं उसकी सामाजिक आवश्यकता पर प्रकाश डालता है।

2.3.3 विषय विवेचन :

2.3.3.1 आ. महावीरप्रसाद द्विवेदी का जीवन परिचय :

आ. महावीरप्रसाद द्विवेदी को हिंदी साहित्य जगत् में एक महान युगप्रवर्तक साहित्यकार एवं पत्रकार के रूप में पहचाना जाता है। आ. महावीरप्रसाद द्विवेदी का जन्म 15 जुलाई, 1864 ई. में उत्तर प्रदेश के रायबरेली जिले में स्थित दौलतपुर गाँव में हुआ। उनके पिता का नाम पं. रामसहाय द्विवेदी था, जो कान्यकुब्ज ब्राह्मण थे। अर्थाभाव के कारण प्रारंभिक शिक्षा ही पूरी हो पाई और उन्होंने रेल विभाग में नौकरी की। लेकिन अपने स्वाभिमानी और स्पष्टवादी स्वभाव के कारण उन्होंने रेल विभाग से त्यागपत्र दिया और पूर्णरूप से हिंदी साहित्य सेवा में जुट गए। हिंदी के साथ उन्हें मराठी, गुजराती, संस्कृत आदि भाषाओं का अच्छा ज्ञान था। हिंदी भाषा और आधुनिक हिंदी साहित्य के दूसरे चरण में दिए उनके योगदान के कारण उनके सन 1900 से 1920 के कालखंड को उनका नाम दिया गया, जो 'द्विवेदी युग' के नाम से विख्यात है। उन्होंने सन 1903 ई. में हिंदी की विख्यात साहित्यिक पत्रिका 'सरस्वती' की स्थापना की और लगभग 1920 ई. तक वे इस पत्रिका के

संपादक बने रहे। पत्रिका के संपादन के साथ-साथ वे हिंदी में मौलिक साहित्य का सृजन करते रहे। सत्रह वर्षों तक संपादन की जिम्मेदारी सँभालने के बाद वे अपने अंतिम समय में अपने गाँव चले गए। वहाँ पर लंबी बीमारी के बाद 21 दिसंबर, 1938 ई. को रायबरेली में उनका देहांत हुआ।

आ. महावीरप्रसाद द्विवेदी पहले साहित्यकार थे जिन्होंने अपने प्राचीन भारतीय ग्रंथों एवं परंपराओं का गंभीर अध्ययन करके उन पर आलोचनाएं भी लिखीं। उन्होंने कविता, कहानी, आलोचना, अनुवाद, जीवनी, निबंध आदि विधाओं में 80 से अधिक ग्रंथों की निर्मिती की। साथ ही अर्थशास्त्र, विज्ञान, इतिहास आदि साहित्येतर विषयों पर लेखन किया और अन्य लेखकों को भी प्रेरणा दी। उन्होंने इन शास्त्रों को भी साहित्य की परिधि में लाने का कार्य किया और वे उन्हें साहित्य ही मानते थे। उनके रचना संसार की संक्षिप्त जानकारी इस प्रकार है- (1) कविता- 'देवी स्तुति शतक', 'कान्यकुब्जावलीव्रतम', 'समाचारपत्र संपादन स्तवः', 'नागरी', 'कान्यकुब्ज-अबला-विलाप', 'काव्य मंजूषा', 'सुमन', 'द्विवेदी काव्य-माला', 'कविता कलाप' आदि। (2) गद्य : 'नैषध चरित्र चर्चा', 'तरुणोपदेश', 'हिंदी शिक्षावली तृतीय भाग की समालोचना', 'वैज्ञानिक कोश', 'नाट्यशास्त्र', 'विक्रमांकदेवचरित चर्चा', 'हिंदी भाषा की उत्पत्ति', 'संपत्ति शास्त्र', 'कौटिल्य कुठार', 'कालिदास की निरकुंशकता', 'दीनता-विलाप' आदि। (3) निबंध-संग्रह : 'रसज्ञ रंजन', 'साहित्यालाप', 'विचार-विमर्श' 'महिलामोद', 'लेखांजलि', 'बेकन विचार' 'रत्नावली' (अनूदित) आदि। आ. द्विवेदी लिखित 'अलौकिक शिशु-गायक मास्टर मदन', 'कवियों की उर्मिला विषयक उदासीनता', 'क्रोध', 'लोभ', 'स्त्री शिक्षा के विरोधी कुतर्कों का खंडन', 'कवित और कविता', 'भारत की चित्र-विद्या', 'सेठ खेमराज श्रीकृष्णदास', 'लेखकों से प्रार्थना', 'संपादकों के लिए स्कूल', 'देशी भाषाओं में शिक्षा', 'समाचार-पत्रों का विराट रूप', 'भारतवर्ष में नशेबाजी', 'साहित्य की महत्ता', 'कालिदास के 'मेघदूत' का रहस्य', 'संगीत के स्वर', 'दंडदेव का आत्मनिवेदन' आदि विख्यात निबंध हैं। (4) अनुवाद : 'बेकन विचार', 'रत्नावली', 'हिंदी महाभारत', 'वेणी संसार' आदि।

2.3.3.2 'साहित्य की महत्ता' निबंध का परिचय :

आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी के उल्लेखनीय निबंधों में 'साहित्य की महत्ता' यह एक कालजयी निबंध माना जाता है। यह निबंध उनके 'विचार-विमर्श' निबंध संग्रह से लिया गया है। यह एक विचारात्मक निबंध है जिसमें आ. द्विवेदी ने साहित्य महिमामंडन किया है। किसी भी देश के समाज और मानवी जीवन के लिए साहित्य कितना जरूरी है? इसका विवेचन किया है। साहित्य किसी भी समाज के अभिव्यक्ति का आइना होता है और उस समाज की ज्ञान राशि का संचित कोष होता है, ऐसा आ. द्विवेदी जी का मानना है। उन्होंने इस निबंध में साहित्य की परिभाषा, समाज और साहित्य का संबंध, मानवी जीवन में साहित्य का महत्त्व, साहित्य सृजन के उद्देश्य आदि की मार्मिक विवेचना की है। 'साहित्य की महत्ता' निबंध के कथानक में इसे विस्तार से समझते हैं-

2.3.3.3 'साहित्य की महत्ता' निबंध का विवेचन :

आ. महावीरप्रसाद द्विवेदी लिखित 'साहित्य की महत्ता' यह एक विचारप्रधान निबंध है, जो उनके 'विचार-विमर्श' निबंध संग्रह में संकलित है। हिंदी निबंध साहित्य में यह एक कालजयी निबंध माना जाता है, जिसमें उन्होंने साहित्य के महत्त्व को प्रतिपादित किया है। निबंध के प्रारंभ में ही आ. द्विवेदी साहित्य को परिभाषित करते हुए कहते हैं कि, 'ज्ञान-राशि के संचित कोष का नाम साहित्य है'। किसी समाज के अनुभव, ज्ञान का संचय कोष साहित्य होता है। यदि अपनी भाषा में भावों को प्रकट करने के सभी गुण विद्यमान हैं और वह सभी दोषों से मुक्त है तो वह भाषा साहित्य निर्माण के लिए बहुत ही उपयोगी होती है। लेकिन फिर भी हम उस भाषा में साहित्य का सृजन नहीं करते तो वह भाषा एक रूपवान भिखारिणी की तरह कभी भी सम्मान एवं आदर के पात्र नहीं हो सकेगी। उसके रूप, गुण का कोई सम्मान नहीं करेगा। भाषा की गरिमा, सौंदर्य और उसका मान-सम्मान साहित्य से जुड़ा है, साहित्य पर ही निर्भर है।

विश्व की किसी भी जाति (समुदाय) के विकास-पतन, अच्छाई-बुराई का, उसके धार्मिक, सामाजिक, ऐतिहासिक और राजनीतिक संगठन, स्थितियों की जानकारी उस समुदाय के साहित्य ग्रंथों से ही मिलती है। सामाजिक शक्ति से निर्माण होनेवाली सजीवता या सभ्यता हो, या सामाजिक कमजोरी से निर्माण होने वाली निर्जीवता या असभ्यता का फैसला हम साहित्य के माध्यम से ही करते हैं। साहित्य का अभाव होने वाले जाति-समुदाय निःसंशय असभ्य या अपूर्ण सभ्य समझने चाहिए। किसी देश या समाज के सामाजिक स्थितियों के अनुसार ही वहाँ का साहित्य होता है। किसी जाति-समुदाय की क्षमताओं और चेतना का प्रतिबिंब हमें साहित्य के दर्पण में देखने मिलता है। आप जैसे ही उस दर्पण के सामने जाएंगे तो आप को संबंधित जाति-समुदाय की वर्तमान जीवन शक्ति कैसी है? या भूतकाल में वह कैसी थी? इसकी तत्काल जानकारी मिलती है।

भोजन न ग्रहण करने के कारण मानवी शरीर जिस तरह धीरे-धीरे क्षीण होकर खत्म होता है, वैसे ही साहित्य के रसपान से हमारे दिमाग, बुद्धि को दूर रखा जागता तो वह भी धीरे-धीरे निष्क्रिय हो जाएगी। उस दिमाग से कुछ भी काम नहीं लिया जा सकता। बुद्धि से अगर काम ही नहीं लिया जाएगा तो वह एक दिन निष्क्रिय होकर काम करना ही बंद कर देगी। उसकी काम करने की शक्ति नष्ट हो जाएगी। भोजन शरीर का खाना है, वैसे साहित्य मस्तिष्क (बुद्धि) की खुराक होता है। अगर हमें अपनी बुद्धि की चेतना को निष्क्रिय नहीं करना है, तो हमें निरंतर साहित्य का रसपान करना जरूरी है। केवल साहित्य का रसपान ही करना नहीं बल्कि उसमें नवीनता और पौष्टिकता लाना भी जरूरी है। उसके लिए हमें साहित्य का नवसृजन भी करना जरूरी है। जैसे-बासी या विषाक्त भोजन से मनुष्य का शरीर रोगी बनेगा, उसी तरह निष्कृष्ट या विकृत साहित्य से हमारा दिमाग खराब हो जाएगा।

एक संतुलित और अच्छे जीवन के लिए मन-बुद्धि का विकारों से मुक्त होना जरूरी है, वरना विकारग्रस्त मन शरीर को भी नुकसान पहुँचा सकता है। अच्छे साहित्य के मनन-चिंतन से हम बुद्धि को बलवान और ताकतवर बना सकते हैं। साहित्य ही बुद्धि के निरंतर विकास का माध्यम है। हम साहित्य के जरिए काल पर भी विजय प्राप्त कर सकते हैं। साहित्य के माध्यम से हम सदियों तक जीवित रह सकते हैं। सभ्यता और संस्कृति की दौड़ में अगर हम जीवित रहना, अपना अस्तित्व बचाए रखना है तो हमें श्रमपूर्वक और उत्साह के साथ

सात्विक और समाजोपयोगी साहित्य का सृजन करना चाहिए। साथ ही हमें हमारे गौरवशाली प्राचीन साहित्य की भी सुरक्षा एवं संवर्धन करना होगा। अगर हम वर्तमान दयनीय स्थिति में निष्क्रिय होकर पड़े रहकर अपनी मानसिक हत्या करते हैं तो साहित्य-सम्मेलन के आयोजन का ढोंग और आडंबर बंद करना ही उचित होगा।

आ. द्विवेदी आगे कहते हैं कि हम यदि विश्व के अन्य देशों का अध्ययन करते हैं तो ज्ञात होता है कि वहाँ के साहित्य के ही कारण सामाजिक एवं राजनीतिक क्रांतियाँ हुई हैं। वहाँ की सरकारें हिल गईं। सामाजिक स्थितियों में काफी सुधार आए। इतना ही नहीं तो अमानवीय धार्मिक तत्त्वों को भी वहाँ की जनता ने उखाड़ फेंका। अर्थात् साहित्य की शक्ति तोप, तलवार और बम के गोलों की ताकत से भी बड़ी होती है। यूरोप में हानिकार धार्मिक रूढ़ियों और परंपराओं को वहाँ धार्मिक साहित्य ने ही प्रस्थापित किया था। उसी तरह जातिगत स्वतंत्रता का बीजारोपण भी साहित्य ने ही किया है। बाद में व्यक्ति स्वातंत्र्यता की वकालत करने, उसे पालने-पोसने और बढ़ाने में भी साहित्य का ही हाथ रहा है। साहित्य ने पतित देशों का पुनर्निर्माण किया है। निबंधकार आ. द्विवेदी सवाल करते हैं कि पोप की प्रभुता को किसने कम किया है? फ्रांस में लोकतंत्र का उदय और स्थापना किसने की है? पराजीत इटली का मस्तक गौरव के साथ किसने ऊंचा किया? इन सभी प्रश्नों का एक ही उत्तर है, साहित्य। साहित्य में मुर्दों को जिंदा करने की संजीवनी ताकत होती है, जो पतित को फर्श से उठाकर आसमान तक पहुँचा सकता है। ऐसे साहित्य का सम्मान, संवर्धन और नवसृजन यदि कोई समाज नहीं करता तो वह हमेशा के लिए अज्ञान के अंधकार कीगर्त में खोकर अपना अस्तित्व ही खत्म कर देगा। अतः जो व्यक्ति सजग, समर्थ और सक्षम होकर भी साहित्य की सेवा या उसमें अभिवृद्धि नहीं करता या उससे प्रेम नहीं करता तो वह व्यक्ति समाजद्रोही, जातिद्रोही या आत्मद्रोही है। वह अपनी आत्मा का ही हथियारा है।

आ. द्विवेदी जी निबंध में आगे समृद्ध भाषाओं और उनके साहित्य के अन्य भाषा-साहित्य पर होनेवाले प्रभाव पर विचार व्यक्त करते हुए कहते हैं कि कोई समृद्ध भाषा अपनी वैभवशाली परंपरा के कारण दूसरे भाषाओं पर दबाव बना लेती है। जैसे-जर्मनी, रूस और इटली देशों की भाषा पर फ्रेंच भाषा ने लंबे समय तक प्रभाव बनाया था। अंग्रेजी भाषा भी फ्रेंच और लैटिन के दबाव से खुद को बचा नहीं सकी। राजनीतिक सत्ताओं का दबाव होना भी इसका एक कारण है। लेकिन इस राजनीतिक दबाव के कारण दूसरे भाषाओं में साहित्य निर्माण की रफ्तार कमजोर पड़ जाती है। यह स्थिति स्वाभाविक है लेकिन यह दबाव उन भाषाओं पर सदैव बना नहीं रहता। ऐसी दमित भाषाओं के लोगों में जब सजगता आती है, चेतना निर्माण होती है तो वे शोषण के तंत्रों को उखाड़ फेंक देते हैं। जर्मनी, रूस, इटली और इंग्लैंड इसी राजनीतिक प्रभाव के कारण फ्रेंच और लैटिन भाषाओं के मोहजाल में फँसी रही थी। लेकिन उनमें सजगता आने पर बहुत वर्षों पूर्व ही इन्होंने फ्रेंच और लैटिन का मोह त्याग दिया। वे अब अपनी भाषाओं में साहित्य निर्माण करते हैं। भूलकर भी विदेशी भाषाओं में ग्रंथ रचना का विचार तक नहीं करते।

अपनी मातृभाषा या स्वदेश की भाषा में ही साहित्य निर्माण करना देश और अपने समाज के विकास के लिए जरूरी है। विदेशी भाषाओं के सर्वोच्च ज्ञान के साथ कोई ग्रंथ रचना करने पर भी हमें विशेष यश नहीं

- 200

2.3.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ :

- * **अचिरातब** : शीघ्र, जल्दी, तुरंत या बिना विलंब के।
- * **नाशोन्मुख** : विनाश के कगार पर, नष्ट होने की ओर अग्रसर, खत्म होने को तैयार।
- * **यथेष्ट** : जितना चाहिए उतना, काफी, पर्याप्त या इच्छा के अनुसार ।
- * **आत्महन्ता** : अपनी हत्या करनेवाला या आत्मघाती। वह व्यक्ति जो खुद की जान लेता है।
- * **पोप** : रोमन कैथोलिक चर्च के सर्वोच्च धर्मगुरु होते हैं। पोप शब्द का शाब्दिक अर्थ पिता होता है। उन्हें संत पीटर का उत्तराधिकारी और ईसा मसीह का पृथ्वी पर प्रतिनिधि माना जाता है। पोप दुनिया भर के कैथोलिकों का आध्यात्मिक मार्गदर्शन करते हैं।
- * **फ्रांस, इटली की क्रांतियाँ** : फ्रांस में 1789 ई. की क्रांति ने पूरे यूरोप में राष्ट्रवाद और स्वतंत्रता के बीज बोए, जिसने इटली के एकीकरण को भी सीधे प्रभावित किया। फ्रांसीसी विचारों और नेपोलियन के आक्रमणों ने इटली में राजनीतिक पुनर्जागरण को प्रेरित किया जिससे विभाजित इटली अंततः एक राष्ट्र बना।
- * **चूड़ांत** : अंतिम सीमा, पराकाष्ठा या चरम बिंदु जहाँ तक कोई बात या वस्तु पहुँच सकती है। यह शब्द चूड़ा अर्थात् चोटी, शिखर और अंत (समाप्ति) से मिलकर बना है। जिसका शाब्दिक अर्थ चोटी या शिखर का अंतिम सिरा भी होता है।
- * **मनु** : हिंदू दर्शन के अनुसार मानव जाति का प्रथम पुरुष को 'मनु' कहा जाता है। उन्हें दुनिया का प्रथम कानून निर्माता और 'मनुस्मृति' का रचयिता माना जाता है। हिंदू ग्रंथों में मनु का मानव जाति का आदिम पिता या प्रथम राजा माना गया है।
- * **याज्ञवल्क्य** : ये एक प्राचीन हिंदू वैदिक ऋषि, दार्शनिक और शिक्षक हैं। उन्हें शुक्ल यजुर्वेद का द्रष्टा और शतपथ ब्राह्मण का रचयिता माना जाता है। वे ज्ञान, योग और आत्मा के ज्ञानी थे। मुख्य रूप से बृहदारण्यक उपनिषद् में दार्शनिक संवादों के लिए प्रसिद्ध हैं। उनका 'याज्ञवल्क्य स्मृति' हिंदू कानून का एक प्रमुख ग्रंथ है ।
- * **आपस्तम्ब** : ये एक भारत के प्राचीन गणितज्ञ और शुल्ब सूत्र के रचयिता हैं। वे सूत्रकार हैं, ऋषि नहीं। वैदिक संहिताओं में इनका उल्लेख नहीं पाया जाता। इनके 'आपस्तम्ब सूत्र' ग्रंथ में वैदिक अनुष्ठान, घरेलू रीति-रिवाज और सामाजिक कानूनी नियमों (धर्म) की विस्तृत व्याख्या की है।
- * **विजित देश** : जीता हुआ देश, विजय प्राप्त किया हुआ देश, वश में किया हुआ देश।
- * **जेता जाति** : विजेता जाति, जीतनेवाला या विजय प्राप्त करने वाला ।

2.3.6 स्वयंअध्ययन के प्रश्नों के उत्तर :

अ) प्रश्न के उत्तर :

- | | |
|------------------------|------------------------|
| 1. ब. द्विवेदी युग | 2. ड. सरस्वती |
| 3. अ. ग्रंथों में | 4. ब. सतब साहित्य |
| ५. अ. विकृत साहित्य से | 6. क. साहित्य |
| 7. अ. फ्रेंच | 8. क. आपस्तम्ब |
| 9. अ. लोकभाषा | 10. अ. खड़ी बोली हिंदी |

आ) प्रश्न के उत्तर :

- | | |
|--------------------|--------------------------------|
| 1. अ. विचार-विमर्श | 2. ब. आ. महावीरप्रसाद द्विवेदी |
| 3. ब. साहित्य | 4. क. भिखारिनी |
| ५. अ. दर्पण | 6. क. साहित्य |
| 7. अ. यूरोप | 8. क. इटली |
| 9. अ. देशद्रोही | 10. अ. स्वभाषा साहित्य |

2.3.7 सारांश :

1. आ. महावीरप्रसाद द्विवेदी को हिंदी साहित्य जगत् में एक महान युगप्रवर्तक साहित्यकार एवं पत्रकार के रूप में पहचाना जाता है। हिंदी भाषा और आधुनिक हिंदी साहित्य के दूसरे चरण में दिए उनके योगदान के कारण उनके सन 1900 से 1920 के कालखंड को उनका नाम दिया गया, जो 'द्विवेदी युग' के नाम से विख्यात है। उन्होंने सन 1903 ई. में हिंदी की विख्यात साहित्यिक पत्रिका 'सरस्वती' की स्थापना की और लगभग 1920 ई. तक वे इस पत्रिका के संपादक बने रहे।
2. आ. महावीरप्रसाद द्विवेदी पहले साहित्यकार थे जिन्होंने अपने प्राचीन भारतीय ग्रंथों एवं परंपराओं का गंभीर अध्ययन करके उन पर आलोचनाएं भी लिखी। उन्होंने कविता, कहानी, आलोचना, अनुवाद, जीवनी, निबंध आदि विधाओं में लेखन किया है। साथ ही अर्थशास्त्र, विज्ञान, इतिहास आदि साहित्येतर विषयों पर लेखन किया और अन्य लेखकों को भी प्रेरणा दी।
3. आ. महावीरप्रसाद द्विवेदी एक उत्कृष्ट और विचारशील निबंधकार रहे हैं।
4. आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी के उल्लेखनीय निबंधों में 'साहित्य की महत्ता' यह एक कालजयी निबंध माना जाता है। यह निबंध उनके 'विचार-विमर्श' इस निबंध संग्रह से लिया है। यह एक विचारात्मक

निबंध है जिसमें आ. द्विवेदी जी ने साहित्य महिमामंडन किया है।

5. किसी भी देश के समाज और मानवी जीवन के लिए साहित्य कितना जरूरी है? इसका विवेचन किया है। साहित्य किसी भी समाज के अभिव्यक्ति का आइना होता है और उस समाज की ज्ञान राशि का संचित कोष होता है, ऐसा आ. द्विवेदी जी का मानना है। उन्होंने इस निबंध में साहित्य की परिभाषा, समाज और साहित्य का संबंध, मानवी जीवन में साहित्य का महत्व, साहित्य सृजन के उद्देश्य आदि की मार्मिक विवेचना की है।

2.3.8 स्वाध्याय :

अ) लघुत्तरी प्रश्न :

1. आ. महावीरप्रसाद द्विवेदी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व को स्पष्ट कीजिए?
2. आ. महावीरप्रसाद द्विवेदी ने 'साहित्य की महत्ता' इस निबंध में साहित्य सृजन के कौनसे उद्देश्य बताए हैं?
3. आ. महावीरप्रसाद द्विवेदी ने 'रूपवती भिखारिनी' की उपमा किस भाषा के लिए और क्यों दी है?
4. सतब साहित्य और असतब साहित्य के लाभ-दोषों का विवेचन आ. द्विवेदी ने किस प्रकार किया है?
5. स्वभाषा के साहित्य निर्माण करने से क्या लाभ होते हैं, 'साहित्य की महत्ता' निबंध के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

आ) दीर्घोत्तरी प्रश्न :

1. आ. महावीरप्रसाद द्विवेदी लिखित 'साहित्य की महत्ता' निबंध का विवेचन अपने शब्दों में लिखिए।
2. 'ज्ञान-राशि के संचित कोष का नाम साहित्य है' इस कथन की समीक्षा कीजिए।
3. 'साहित्य की महत्ता' निबंध के आधार पर साहित्य के महत्व को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।
4. 'साहित्य की महत्ता' निबंध के द्वारा आ. महावीरप्रसाद द्विवेदी क्या संदेश देना चाहते हैं।

2.3.9 क्षेत्रीय कार्य :

1. आ. महावीरप्रसाद द्विवेदी ने खड़ी बोली हिंदी को स्थापित करने के लिए किए कार्य का संकलन करके उस पर कक्षा में गुट चर्चा कीजिए।
2. हिंदी पत्रकारिता के क्षेत्र में 'सरस्वती पत्रिका' और आ. महावीरप्रसाद द्विवेदी के कार्य पर निबंध लेखन कीजिए।

3. मराठी भाषा में साहित्य के महत्त्व पर लिखे मराठी निबंधों को पढ़कर उसकी हिंदी से तुलना करके समीक्षा लेखन कीजिए।

2.3.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए :

1. पाण्डेय रामेंद्र (डॉ.), आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी (प्र. सं. 2008 ई.), लखनऊ (उ.प्रदेश), उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान प्रकाशन।
2. गौतम मधु, हिंदी भाषा और महावीरप्रसाद द्विवेदी (प्र. सं. 2020 ई.), नई दिल्ली, लोकभारती प्रकाशन।
3. शर्मा कृष्णदत्त (संपा.), महावीर प्रसाद द्विवेदी संचयिता, नई दिल्ली, अनामिका पब्लिकेशन प्रा. लि.।
4. शर्मा रामविलास, महावीरप्रसाद द्विवेदी और हिंदी नवजागरण (दसवाँ सं. 2026 ई.), नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन।



इकाई 3

निबंध साहित्य

3.4 आचरण की सभ्यता

– सरदार पूर्णसिंह

अनुक्रम

3.4.1 उद्देश्य

3.4.2 प्रस्तावना

3.4.3 विषय विवेचन

3.4.3.1 सरदार पूर्णसिंह का जीवन परिचय

3.4.3.2 'आचरण की सभ्यता' निबंध का परिचय

3.4.3.3 'आचरण की सभ्यता' निबंध का आशय

2.4.4 स्वयंअध्ययन के लिए प्रश्न

2.4.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

2.4.6 स्वयंअध्ययन के प्रश्नों के उत्तर

2.4.7 सारांश

2.4.8 स्वाध्याय

2.4.9 क्षेत्रीय कार्य

2.4.10 अतिरिक्त अध्ययन हेतु संदर्भ

3.4.1 उद्देश्य :

प्रस्तुत निबंध के अध्ययन के बाद आप -

- 1) निबंधकार सरदार पूर्णसिंह के व्यक्तित्व एवं कृतित्व से परिचित होंगे।
- 2) सरदार पूर्णसिंह की निबंध शैली से परिचित होंगे।
- 3) 'आचरण की सभ्यता' के कथ्य से परिचित होंगे।
- 4) 'आचरण की सभ्यता' के कथानक से परिचित होंगे।
- 5) विद्या, कला, कविता, साहित्य, धन और राजस्व से अधिक महत्त्वपूर्ण आचरण की शुद्धता से परिचित होंगे।

3.4.2 प्रस्तावना :

सरदार पूर्णसिंह द्विवेदी युग के श्रेष्ठ निबंधकारों में गिने जाते हैं। उन्होंने भावात्मक तथा लाक्षणिक शैली में निबंधों की रचना कर हिंदी निबंध साहित्य को एक नई दिशा प्रदान की है। मूलतः अध्यापक होने के कारण उनके निबंधों में भावों की प्रधानता के साथ-साथ गहन चिंतन और बुद्धितत्त्व का भी समन्वय दिखाई देता है। 'आचरण की सभ्यता' उनका सर्वाधिक चर्चित तथा मानव-आचरण की दृष्टि से अत्यंत महत्त्वपूर्ण निबंध है। प्रस्तुत निबंध में उन्होंने विद्या, कला, साहित्य, धन और वैभव की अपेक्षा शुद्ध एवं श्रेष्ठ आचरण को अधिक महत्त्व दिया है। इस निबंध के माध्यम से वे मनुष्य के हृदय में नम्रता, दया, प्रेम, करुणा, परोपकार और उदारता जैसे मानवीय गुणों के विकास का संदेश देते हैं। उनके अनुसार शुद्ध आचरण वाले व्यक्तियों के संपर्क से ही समाज में सुख, शांति और आनंद का वातावरण निर्मित होता है। लेखक का मानना है कि सच्चा आचरण हिमालय की भाँति महान, अटल और प्रेरणादायक होता है। अतः लेखक ने प्रस्तुत निबंध के माध्यम से सभी को अपना आचरण पवित्र, आदर्श और मानवोचित बनाए रखने की प्रेरणा दी है।

3.4.3 विषय विवेचन :

3.4.3.1 सरदार पूर्णसिंह का जीवन परिचय :

द्विवेदी युग के अप्रतिम एवं अग्रणी निबंधकारों में सरदार पूर्णसिंह का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। वे एक उत्कृष्ट साहित्यकार होने के साथ-साथ महान शिक्षक, चिंतक, शिक्षाविद्, वैज्ञानिक तथा देशभक्त नागरिक के रूप में भी विख्यात हैं। उनके व्यक्तित्व में ज्ञान, संवेदना और राष्ट्रप्रेम का अद्भुत समन्वय दिखाई देता है।

1. जन्म एवं जन्मस्थान :

सरदार पूर्णसिंह का जन्म 17 फरवरी, 1881 ई. को वर्तमान पाकिस्तान के एबटाबाद जनपद के सलहद नामक ग्राम में एक संपन्न एवं प्रतिष्ठित परिवार में हुआ था। बाल्यकाल से ही उनमें असाधारण प्रतिभा, जिज्ञासा और अध्ययनशीलता के गुण विद्यमान थे।

2. माता-पिता :

सरदार पूर्णसिंह की माता अत्यंत सात्विक, धर्मपरायण एवं संस्कारवान महिला थीं। उनके पिता सरदार करतार सिंह भागर एक सरकारी कर्मचारी थे। उनका विवाह माया देवी से हुआ था। माता-पिता से प्राप्त धार्मिक एवं नैतिक संस्कारों का उनके व्यक्तित्व और कृतित्व पर गहरा प्रभाव रहा है।

3. शिक्षा – दीक्षा :

सरदार पूर्णसिंह की प्रारंभिक शिक्षा रावलपिंडी में सम्पन्न हुई है। इसके पश्चात उन्होंने लाहौर से इंटरमीडिएट की शिक्षा प्राप्त की। इंटरमीडिएट परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद सन् 1900 ई. में विशेष छात्रवृत्ति प्राप्त कर वे उच्च शिक्षा के लिए जापान चले जाते हैं। वहाँ उन्होंने इंपीरियल विश्वविद्यालय में तीन वर्षों तक रसायनशास्त्र का गहन अध्ययन किया है।

4. संन्यास – दीक्षा :

सन् 1902 ई. में जापान यात्रा के दौरान सरदार पूर्णसिंह की भेंट स्वामी रामतीर्थ से हुई। स्वामी रामतीर्थ के ओजस्वी व्याख्यानों तथा आध्यात्मिक विचारों से प्रभावित होकर उन्होंने संन्यास जीवन को अपनाया और उनके साथ भारत लौट आए। बाद में बहन गंगा की इच्छा और अनुरोध पर उन्होंने माया देवी से विवाह कर गृहस्थ जीवन का आरंभ किया। सरदार पूर्णसिंह के व्यक्तित्व में आध्यात्म और विज्ञान का अद्भुत समन्वय दिखाई देता है, जो उनके जीवन-दर्शन की विशिष्ट पहचान है।

5. नौकरी :

सन् 1907 ई. में सरदार पूर्णसिंह देहरादून स्थित इंपीरियल फॉरेस्ट इंस्टीट्यूट में रसायनशास्त्र के अध्यापक के रूप में कार्यभार ग्रहण करते हैं। यही से वे 'अध्यापक पूर्णसिंह' के नाम से भी प्रसिद्ध हुए हैं। सन् 1918 ई. में वे अध्यापक पद से त्यागपत्र देकर ग्वालियर राज्य के प्रधान नियुक्त हुए। इसके पश्चात वे पंजाब के जड़वाला नामक स्थान पर रहने लगे, जहाँ उन्होंने कृषि कार्य को अपनाकर सादगी, श्रम और आत्मनिर्भरता से युक्त जीवन व्यतीत किया।

3. भाषाओं का ज्ञान :

सरदार पूर्णसिंह एक बहुभाषाविद् विद्वान थे। उन्हें हिंदी, पंजाबी, उर्दू, संस्कृत, फ़ारसी, जर्मन तथा अंग्रेज़ी सहित कई भाषाओं का गहन ज्ञान था। अपनी बहुभाषिक प्रतिभा और प्रभावशाली लेखन-शैली के कारण वे हिंदी एवं पंजाबी भाषी पाठकों के बीच समान रूप से लोकप्रिय और सम्मानित थे।

4. मृत्यु :

सरदार पूर्णसिंह का निधन 31 मार्च, 1931 ई. को देहरादून में हुआ। उस समय उनकी आयु लगभग 50 वर्ष थी। अपने बहुआयामी व्यक्तित्व, उच्च जीवन-मूल्यों और साहित्यिक योगदान के कारण वे आज भी हिंदी साहित्य-जगत में आदरपूर्वक स्मरण किए जाते हैं।

सरदार पूर्णसिंह का साहित्य परिचय :

सरदार पूर्णसिंह हिंदी के श्रेष्ठ निबंधकारों तथा आधुनिक पंजाबी काव्य के प्रमुख संस्थापकों में गिने जाते हैं। उन्होंने हिंदी, अंग्रेजी, उर्दू और पंजाबी आदि भाषाओं के साहित्य को अपनी प्रतिभा से समृद्ध किया है। उनकी साहित्यिक रचनाएँ विषय-वस्तु, शैली और भाव-संपन्नता की दृष्टि से अत्यंत महत्त्वपूर्ण हैं। उनकी प्रमुख कृतियाँ निम्नलिखित हैं-

हिंदी निबंध : सरदार पूर्णसिंह ने हिंदी में केवल छः निबंधों की रचना की है-

- 1) सच्ची वीरता 2) कन्यादान 3) पवित्रता 4) आचरण की सभ्यता
- 5) मजदूरी और प्रेम 6) अमेरिका का मस्त योगी वॉल्ट व्हिटमैन

अंग्रेजी साहित्य : 1) द स्टोरी ऑफ स्वामी राम 2) दि स्केचेज फ्रॉम सिख हिस्ट्री

- 3) एक हिज फीट 4) शॉर्ट स्टोरीज 5) वीणा प्लेयर्स
- 6) सिस्टर्स ऑफ दि स्पिनिंग व्हील 7) गुरु गोविंदसिंह
- 8) दि लाइफ एंड टीचिंग्स ऑफ श्री गुरु तेगबहादुर
- 9) ऑन दि पाथ्स ऑफ लाइफ

उर्दू साहित्य : स्वामी रामतीर्थ की असली जिंदगी पर तैराना नज़र।

पंजाबी साहित्य : 1) अविचल जोत 2) खुले मैदान 3) खुले घुंड

- 4) मेरी साईक विदा दिल कविता 5) चुप प्रीतदा शहंशाह विओपारी
- 6) खुले लेख आदि।

अनुवाद साहित्य : पंजाबी से अंग्रेजी में - 1) जपजी

- 2) भाई वीर सिंह की कविताओं का अनुवाद

संपादन : मासिक पत्रिका 'थंडरिंग डॉन' का संपादन कार्य किया है।

3.4.3.2 'आचरण की सभ्यता' निबंध का परिचय :

'आचरण की सभ्यता' प्रसिद्ध निबंधकार सरदार पूर्णसिंह द्वारा रचित एक अत्यंत लोकप्रिय, प्रभावशाली एवं सशक्त निबंध है। जिसका प्रकाशन सन् 1912 ई. में हिंदी की प्रतिष्ठित पत्रिका 'सरस्वती' से हुआ था। इस निबंध में लेखक ने आचरण के महत्त्व, सादगी, प्रेम की भाषा तथा अंतर्मन की पवित्रता का अत्यंत मार्मिक एवं प्रभावशाली चित्रण किया है। प्रस्तुत निबंध भावात्मक शैली का उत्कृष्ट उदाहरण है, जिसमें दार्शनिक चिंतन, भावुकता, व्यक्तित्व-प्रकाशन, सामाजिक चेतना, भाषागत लाक्षणिकता तथा काव्यात्मक गरिमा का सुंदर

समन्वय दिखाई देता है। इस निबंध में लेखक ने देश, काल और जाति की संकुचित सीमाओं से ऊपर उठकर मानव जीवन में आचरण की श्रेष्ठता और उसकी अनिवार्यता को प्रतिपादित किया है। लेखक के अनुसार जीवन-मूल्यों को व्यवहार में उतारकर स्वयं को श्रेष्ठ बनाना ही वास्तविक आचरण-सभ्यता है। उन्होंने आचरणवान मनुष्य को अवतारों और पैगंबरों के समान प्रभावशाली माना है। यूरोप की मशीनी सभ्यता के विरुद्ध जो मानवीय प्रतिक्रिया हमें टॉलस्टॉय, रसकिन तथा बाद में महात्मा गांधी के चिंतन में दिखाई देती है, उसकी स्पष्ट अनुगूँज पूर्णसिंह के निबंधों में भी सुनाई पड़ती है। पूँजीवाद के प्रारम्भिक दौर में ही सरदार पूर्णसिंह ने अपने लेखन के माध्यम से श्रम और श्रमिक के महत्त्व को प्रतिष्ठित किया था, जिसे आगे चलकर राष्ट्रीय आंदोलन की विचारधारा में भी स्वीकार किया है। अध्यापक पूर्णसिंह भौतिक समृद्धि की अपेक्षा मनुष्य के आध्यात्मिक जीवन को अधिक समृद्ध, सशक्त और अर्थपूर्ण बनाना चाहते थे। इसी उद्देश्य से उन्होंने इस निबंध में विभिन्न धर्मों और संप्रदायों के बाह्य स्वरूपों से परे उनके भीतर विद्यमान एकात्म चेतना तथा मानव-धर्म की सार्वभौमिक भावना को उद्घाटित करने का प्रयास किया है। इस कार्य में उन्होंने तर्क और बौद्धिक विवेचन की अपेक्षा मानवीय संवेदनाओं तथा हृदयगत अनुभूतियों को अधिक महत्त्व दिया है। परिणामस्वरूप उनका यह निबंध पाठकों के भाव-जगत को अधिक गहराई से स्पर्श करता है। सरदार पूर्णसिंह ने इसमें सहज, स्वाभाविक, निष्कपट और शुद्ध आचरण पर विशेष बल दिया है। उनके अनुसार आचरण से तात्पर्य उन क्रियाओं, प्रवृत्तियों और मनोवृत्तियों से है जिन्हें मनुष्य अपने जीवन में अपनाता है, जबकि व्यवहार का संबंध दूसरों के प्रति उसके आचरण और संबंधों से है। आचरण की सर्वोच्च सभ्यता प्रेम, समानता, करुणा और एकता पर आधारित होती है। वहाँ किसी प्रकार का भेदभाव, संघर्ष या वैमनस्य नहीं रहता। श्रेष्ठ आचरण और मौन जीवन-उपदेश मनुष्य को सत्य, शांति और आत्मिक मुक्ति की ओर ले जाते हैं। यही वास्तविक सभ्यता और मानवता का आदर्श स्वरूप है। प्रस्तुत निबंध में लेखक ने विविध उदाहरणों, दृष्टान्तों तथा उद्धरणों के माध्यम से यह सिद्ध करने का प्रयास किया है कि श्रेष्ठ आचरण ही मनुष्य की सबसे बड़ी सभ्यता है। यदि मनुष्य सच्चे अर्थों में मनुष्यता को प्राप्त करना चाहता है, तो उसे अपने आचरण को श्रेष्ठ, सुंदर, पवित्र तथा दूसरों के लिए अनुकरणीय बनाना होगा। यही इस निबंध का मूल संदेश और केंद्रीय प्रतिपाद्य है।

3.4.3.3 'आचरण की सभ्यता' निबंध का आशय :

लेखक ने 'आचरण की सभ्यता' निबंध में सदाचार, विनम्रता और नैतिकता के महत्त्व को अत्यंत प्रभावशाली ढंग से प्रतिपादित किया है। उनके अनुसार विद्या, कला, कविता, साहित्य, धन तथा राजसत्ता जैसी उपलब्धियाँ भी आचरण की सभ्यता की तुलना में गौण प्रतीत होती हैं। मनुष्य का चरित्र और उसका सुसंस्कृत व्यवहार ही उसे वास्तविक सम्मान एवं प्रतिष्ठा प्रदान करता है। एक निर्धन व्यक्ति भी यदि सदाचारी और विनम्र है, तो वह अपने गुणों के बल पर राजाओं और प्रतिष्ठित व्यक्तियों के हृदय पर अधिकार स्थापित कर सकता है। लेखक का मानना है कि आचरण की सभ्यता कला, साहित्य और संगीत को भी नवीन ऊँचाइयाँ प्रदान करती है। इसके प्रभाव से संगीत अधिक मधुर बनता है, ज्ञान में गहराई, विवेक और दूरदृष्टि का विकास होता है तथा चित्रकला में अद्भुत जीवंतता आती है। ऐसी उच्च अनुभूति के समक्ष शब्द भी मौन हो जाते हैं। अतः

उत्तम आचरण ही मानव व्यक्तित्व का सर्वोच्च गुण है, जो जीवन को वास्तविक गरिमा और उत्कृष्टता प्रदान करता है।

सच्चे अर्थों में आचारनवान व्यक्ति न तो बड़बोले होते हैं और न ही आत्मप्रशंसा के शिकार। वे मौन रहकर अपने कर्तव्यों का निष्ठापूर्वक पालन करते हैं। उनका चरित्र श्वेत पत्र की भाँति निर्मल और उज्ज्वल होता है। वे अपनी श्रेष्ठता का स्वयं प्रचार नहीं करते, किंतु उनके सद्गुण और श्रेष्ठ व्यवहार स्वतः लोगों के सामने प्रकट होते हैं। फलस्वरूप समाज में उन्हें सम्मान और श्रद्धा प्राप्त होती है। ऐसे व्यक्तियों की वाणी सदैव मधुर और संयमित होती है। वे कटु शब्दों का प्रयोग कभी नहीं करते, क्योंकि उनका उद्देश्य किसी को आहत करना नहीं होता है। नम्रता, प्रेम, दया और उदारता उनके व्यक्तित्व के प्रमुख गुण हैं। लेखक का मानना है कि शब्दों की अपेक्षा आचरण का प्रभाव अधिक गहरा और स्थायी होता है। चिल्लाकर एवं ऊँचे स्वर में दिए गए उपदेश प्रायः क्षणिक होते हैं, जबकि श्रेष्ठ व्यवहार सीधे मानव के हृदय को स्पर्श करते हैं। इस प्रकार मौन आचरण ही मनुष्य के व्यक्तित्व की सबसे प्रभावशाली अभिव्यक्ति बनती है।

यह निबंध आचरण की सभ्यता और उसके कल्याणकारी प्रभावों का वर्णन करता है। श्रेष्ठ आचरण किसी जाति रंग देश या बाहरी पहचान तक सीमित नहीं होता बल्कि वह समस्त मानव समाज में प्रेम, करुणा, दया, नम्रता और पवित्रता का प्रचार-प्रसार करता है। सदाचार मनुष्य के मन और हृदय में सकारात्मक परिवर्तन लाते हुए जीवन को शांत संतुलित बनाता है। जैसे वर्षा की फुहार सूखी धरती को शीतलता देती है ठीक वैसे ही उत्तम आचरण दुखी व्यक्तियों को सुख और नवचेतना प्रदान करता है। इसके प्रभाव से निराशा आशा में नीरसता आनंद में बदलती है। मौन आचरण शब्दों से अधिक प्रभावशाली होता है समाज में मैत्री, प्रेम, सौहार्द, एकता और दिव्यता की भावना विकसित करते हुए मानव जीवन को सार्थक बनाता है।

लेखक ने मौन व्याख्यान, अर्थात् श्रेष्ठ आचरण और अनुभूति की निःशब्द अभिव्यक्ति की महत्ता को अत्यंत प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया है। उनके अनुसार मौन की भाषा शक्तिशाली, अर्थपूर्ण और प्रभावकारी होती है। इसके सामने मातृभाषा, साहित्यिक भाषा तथा अन्य भाषाएँ गौण प्रतीत होती हैं, क्योंकि शब्दों की सीमा होती है, जबकि मौन सीधे हृदय को स्पर्श करता है। इसी कारण लेखक ने इसे ईश्वरीय भाषा की संज्ञा दी है। लेखक का मानना है कि सच्चा मौन व्याख्यान मनुष्य के विचारों, भावनाओं और जीवन-दृष्टि में गहरा परिवर्तन लाता है। वह अंतर्मन में सौंदर्य, संवेदना और नवचेतना का संचार करता है। यदि कोई उपदेश हृदय को स्पर्श न कर सके, तो उसका प्रभाव स्थायी नहीं होता। लेखक प्रकृति के एक उदाहरण द्वारा इसे प्रस्तुत करते हुए लिखते हैं, चन्द्रमा की मधुर मुस्कान, तारों की मौन चमक और प्रकृति की निःशब्द छटा कवि के हृदय को गहराई से प्रभावित करती है। इसी प्रकार महान समाज-सुधारक केशवचंद्र सेन और देवेन्द्रनाथ ठाकुर के बीच का मौन संवाद इतना प्रभावकारी था कि पूरी रात क्षणभर के समान बीत गई। यही मौन की वास्तविक और दिव्य शक्ति है।

लेखक ने मौन, प्रेम और श्रेष्ठ आचरण की महत्ता को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया है। उनके अनुसार प्रेम की वास्तविक अभिव्यक्ति शब्दों में नहीं, बल्कि नेत्रों, भाव-भंगिमाओं और व्यवहार में दिखाई देती है।

जीवन का सत्य भी शब्दों की सीमाओं से परे है। लेखक का मानना है कि आदर्श चरित्र और उत्तम आचरण केवल उपदेशों, धर्मग्रंथों या सत्संगों से नहीं बनते, बल्कि जीवन के अनुभवों, संघर्षों और प्रकृति की मौन शिक्षाओं से विकसित होते हैं। ये अनुभव धीरे-धीरे मनुष्य के हृदय पर गहरा प्रभाव डालकर उसके व्यक्तित्व को निखारते हैं। अतः मौन शिक्षा चरित्र-निर्माण का सबसे प्रभावशाली साधन है। लेखक हिमालय के उदाहरण के माध्यम से स्पष्ट करते हैं कि जैसे हिमालय का निर्माण प्रकृति के दीर्घकालीन और सतत प्रयासों से हुआ है, वैसे ही श्रेष्ठ आचरण भी निरंतर साधना, धैर्य, आत्मसंयम और अभ्यास का परिणाम है। यह तात्कालिक उपलब्धि नहीं, बल्कि दीर्घ विकास की प्रक्रिया है। अतः आदर्श आचरण अत्यंत दुर्लभ और प्रेरणादायी होता है।

आदर्श आचरण केवल पुस्तकीय ज्ञान, शास्त्रों के अध्ययन या तर्क-वितर्क से प्राप्त नहीं होता। जीवन के उच्चतम मूल्य तभी सार्थक होते हैं, जब उन्हें व्यवहार में उतारा जाए। वेदों और शास्त्रों का ज्ञान होने पर भी मनुष्य का चरित्र स्वतः महान नहीं बनता। शब्द और वाणी की सीमाएँ होती हैं, वे अंतर्मन की गहराइयों तक नहीं पहुँच पाते जहाँ से श्रेष्ठ आचरण का जन्म होता है। वेदों को ब्रह्मवाणी माना जाता है, फिर भी वे मानवता को एक भाषा या विचारधारा में नहीं बाँध सके। सत्य और आध्यात्मिक अनुभूति भाषा से परे हैं। ऋषियों ने ज्ञान शब्दों से नहीं, बल्कि आचरण, आत्मानुभूति और अंतःकरण की पवित्रता से प्राप्त किया है। इसलिए आदर्श आचरण का आधार अनुभव और व्यवहार है।

लेखक ने शब्दों, उपदेशों और शास्त्रार्थों की अपेक्षा श्रेष्ठ आचरण को अत्याधिक महत्वपूर्ण माना है। उनके अनुसार किसी व्यक्ति का चरित्र केवल भाषणों या विद्वत्तापूर्ण चर्चाओं से प्रभावित नहीं होता। प्रकृति की कोमल वस्तुएँ जैसे पुष्प, जल, बर्फ और सूर्य जिस प्रकार मन को सहज रूप से प्रभावित करती हैं, उसी प्रकार सदाचरण भी हृदय को स्पर्श करता है, जो भाषा श्रोता समझ ही न सके, वह निरर्थक है। उपदेश का वास्तविक प्रभाव उपदेशक के जीवन और चरित्र पर निर्भर करता है। मंदिर, मस्जिद और गिरजाघर के उपदेश तभी सार्थक होते हैं जब उपदेशक स्वयं आदर्शों का पालन करें। पादरी में ईसा, पुजारी में ऋषित्व और मुल्ला में पैगंबर के गुणों का प्रतिबिंब होना चाहिए।

लेखक ने मानवता, प्रेम और करुणा पर आधारित श्रेष्ठ आचरण की सार्वभौमिकता का प्रतिपादन किया है। उनके अनुसार यदि कोई ब्राह्मण किसी डूबती कन्या की प्राणरक्षा हेतु जाति, धर्म या परिचय की चिंता किए बिना अपने प्राण संकट में डाल दे, तो यह कार्य बिना किसी शब्द के सर्वत्र समझा जा सकता है। ऐसे निस्वार्थ कर्मों की अनुभूति के लिए किसी भाषा या व्याख्या की आवश्यकता नहीं होती। प्रेम और दया एक मौन भाषा है, जिसे मनुष्य ही नहीं, समस्त प्राणी-जगत स्वतः समझ लेता है। इसीलिए शिशुओं की मुस्कान और भाव-भंगिमाएँ विश्व के प्रत्येक देश में समान रूप से बोधगम्य हैं- उन पर किसी भाषा, जाति या संस्कृति का बंधन नहीं होता।

मानवता, अतिथि-सत्कार और निःस्वार्थ सेवा की भावना का अत्यंत प्रभावशाली चित्रण प्रस्तुत निबंध में हुआ है। लेखक एक घटना का उल्लेख करते हैं जिसमें एक राजा शिकार के दौरान जंगल में मार्ग भटकता

है। उसके सभी साथी बिछड़ जाते हैं, घोड़ा मर जाता है और राजा अंधेरी रात, वर्षा, ओले तथा तीव्र शीत के कारण संकट में पड़ता है। उस समय प्रकृति ने उसे पूर्णतः असहाय बना दिया था। ऐसे कठिन क्षण में एक निर्धन पहाड़ी किसान उसे अपनी झोपड़ी में आश्रय देता है, उसके वस्त्र सुखाता है, भोजन कराता है तथा अपने शय्या उसे देकर स्वयं भूमि पर सोता है। लेखक के अनुसार यह निःस्वार्थ सेवा और करुणा मानव की सर्वोच्च महानता है। किसान राजा की पहचान जाने बिना केवल मानवता के आधार पर सहायता करता है, जो ईश्वर के गुणों की झलक प्रस्तुत करता है। मनुष्य के जीवन पर उपदेशों की अपेक्षा आचरण और अनुभवों का प्रभाव अधिक गहरा होता है। पहाड़ी किसान द्वारा संकटग्रस्त राजा की निःस्वार्थ सहायता केवल दयालु कर्म नहीं था, बल्कि मानवता का एक मौन संदेश भी था, जिसने राजा के हृदय पर एक गहरी छाप छोड़ दी। उस समय किसान की एक रोटी, आग की चिनगारी और आश्रय राजा के समस्त वैभव से अधिक मूल्यवान प्रतीत होता है। इस घटना ने राजा को मानवता और करुणा का वास्तविक बोध करा दिया। मनुष्य का चरित्र केवल सुखद अनुभवों से नहीं, बल्कि शुभ और अशुभ दोनों प्रकार के अनुभवों से निर्मित होता है। कई बार पतन, भूल या बुराई का अनुभव ही व्यक्ति को सत्य और सदाचार की ओर प्रेरित करता है। इसी संदर्भ में लेखक जगई-मधई, सूरदास, मेरोमाडलिन और ध्रुव के उदाहरण प्रस्तुत करता है। यदि इनके जीवन में संघर्ष, त्रुटियाँ और प्रतिकूल परिस्थितियाँ न आतीं, तो उनके जीवन में महान परिवर्तन संभव न होता। जीवन के अनुभव ही चरित्र को तराशते हैं। जैसे सोना अग्नि में तपकर कुंदन बनता है, ठीक वैसे ही मनुष्य का आचरण भी संघर्षों और आत्मबोध से उज्ज्वल होता है।

लेखक ने प्रस्तुत निबंध में मानव जीवन, आचरण और आत्म-विकास की प्रक्रिया का गहन विवेचन किया है। उनके अनुसार मनुष्य का जीवन अत्यंत व्यापक और बहुआयामी है। उसके चरित्र के निर्माण में सुख-दुःख, अमीरी-गरीबी, उन्नति-अवनति तथा पवित्रता-अपवित्रता जैसे विविध अनुभव महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। केवल शुभ अनुभव ही नहीं, बल्कि प्रतिकूल परिस्थितियाँ भी व्यक्तित्व को परिपक्व बनाती हैं। लेखक का मानना है कि जिन व्यक्तियों को आज हम धर्मात्मा या पवित्रात्मा मानते हैं, उनका जीवन भी संघर्षों और भूलों से होकर गुजरा हो सकता है। मनुष्य का वास्तविक विकास अनुभवों और संस्कारों की दीर्घ प्रक्रिया का परिणाम है। लेखक विभिन्न उपमाओं से स्पष्ट करता है कि जैसे नेत्रहीन के लिए सूर्य का प्रकाश और बहरे के लिए संगीत निरर्थक है, ठीक वैसे ही बिना ग्रहणशीलता के उपदेश भी प्रभावहीन हो जाते हैं। लेखक बीज के उदाहरण द्वारा समझाते हैं कि जिस प्रकार अंकुरण के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ आवश्यक हैं, ठीक उसी प्रकार मनुष्य के आत्म-विकास के लिए भी अनुभव, संघर्ष और संस्कार अनिवार्य हैं।

प्रस्तुत निबंध में धर्मानुभूति, आचरण और जीवन की गहन सत्यता को स्पष्ट किया है। लेखक के अनुसार संसार के विभिन्न धर्म और सम्प्रदाय अनेक आध्यात्मिक विषयों का वर्णन करते हैं, किंतु जब तक मनुष्य का अंतःकरण अज्ञान और माया से मुक्त नहीं होता, तब तक वह उनके वास्तविक अर्थ को नहीं समझ सकता। केवल शब्दों का श्रवण या अध्ययन धर्म का सच्चा अनुभव नहीं दे सकता। महापुरुषों और ऋषियों के वचनों का सार वही समझ सकता है, जिसका आचरण भी उसी स्तर का हो। ऋषि-दृष्टि वाला व्यक्ति प्रत्येक वस्तु

से शिक्षा ग्रहण करता है। लेखक के अनुसार प्रत्येक मनुष्य में विपरीत गुणों की संभावनाएँ रहती हैं, जिन्हें परिस्थितियाँ और आचरण प्रकट करते हैं।

लेखक ने धर्म की सार्थकता को आचरण से जोड़ते हुए स्पष्ट किया है कि धर्म का वास्तविक स्वरूप केवल ग्रंथों, उपदेशों या सम्प्रदायों में नहीं, बल्कि मनुष्य के व्यवहार और चरित्र में निहित है। धर्म के गूढ़ संदेश को समझने के लिए सदाचार, प्रेम, करुणा और आत्मशुद्धि आवश्यक हैं। इनके अभाव में मनुष्य धर्म के वास्तविक उद्देश्य को नहीं समझ सकता और धर्म संघर्ष, वैमनस्य तथा हिंसा का कारण बन सकता है, जिसे लेखक ने मानसिक महाभारत कहा है। इसके विपरीत, श्रेष्ठ आचरण वाला व्यक्ति सभी धर्मों में निहित मानवता को ग्रहण करता है। धर्म किसी को महान नहीं बनाता, बल्कि सदाचारी व्यक्ति अपने जीवन से धर्म की गरिमा को बढ़ाता है।

लेखक ने आचरण के महत्त्व तथा उसके विकास की प्रक्रिया पर प्रकाश डाला है। उनके अनुसार मनुष्य के जीवन का सर्वोच्च उद्देश्य उत्तम आचरण का विकास करना है। आचरण का निर्माण केवल धार्मिक उपदेशों या सिद्धांतों से नहीं, बल्कि जीवन के विविध अनुभवों, कर्मों और परिस्थितियों से होता है। शारीरिक, मानसिक, प्राकृतिक और आध्यात्मिक जीवन के सभी साधन इस विकास में सहायक होते हैं। अतः आचरण से जुड़े समस्त कर्म धर्म के अंग हैं, इसलिए धर्म को केवल पूजा-पाठ या किसी संप्रदाय तक सीमित नहीं किया जा सकता। धर्म का वास्तविक स्वरूप वही है, जो मनुष्य के चरित्र को श्रेष्ठ बनाए। कोई भी महापुरुष सभी के लिए एक ही मार्ग का विधान नहीं कर सकता, क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति की परिस्थितियाँ भिन्न होती हैं। जिन महापुरुषों ने आदर्श आचरण प्राप्त किया, उन्होंने भी अपना मार्ग स्वयं अनुभव और संघर्ष से निर्मित किया है। अतः केवल उनका अनुकरण पर्याप्त नहीं है। मनुष्य को अपने अनुभव, परिश्रम और आत्मसंघर्ष से अपना मार्ग स्वयं बनाना चाहिए। जैसे नाविक अपनी नाव स्वयं बनाकर नदी पार करता है, ठीक वैसे ही प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन का मार्ग स्वयं निर्धारित करना चाहिए।

प्रस्तुत निबंध में लेखक ने ज्ञान की अपेक्षा आचरण और कर्तव्यपालन की श्रेष्ठता को स्पष्ट किया है। उनके अनुसार केवल ईश्वर, धर्म या आध्यात्मिकता का सैद्धांतिक ज्ञान पर्याप्त नहीं है, यदि वह व्यवहार और कर्म में प्रकट न हो। ऐसे ज्ञान का कोई विशेष मूल्य नहीं रहता है। एक लोहार यदि ईश्वर का दार्शनिक ज्ञान न रखते हुए भी अपने कार्य को पूर्ण निष्ठा से करता है और लोहे को उपयोगी रूप देता है, तो उसका कर्म ही उसकी महानता का प्रमाण है। इसी प्रकार यदि कोई व्यक्ति सदाचारी जीवन जीता है, तो उसका सत्कर्म ही उसकी वास्तविक उपलब्धि है। लेखक जहाज के कप्तान का उदाहरण देते हैं, जो व्यक्तिगत कमजोरियों के बावजूद संकट में जहाज और यात्रियों की रक्षा करता है। वे प्रश्न उठाते हैं कि क्या ऐसा कर्तव्यपरायण व्यक्ति उन उपदेशकों से कम है, जो केवल शब्दों तक सीमित रहते हैं? स्पष्टतः नहीं। कर्म और चरित्र का मूल्य शब्दों से अधिक है।

लेखक ने धार्मिक आडंबरों की अपेक्षा सरल, सत्यनिष्ठ और कर्मप्रधान जीवन की महत्ता को प्रतिपादित किया है। वे एक साधारण किसान के जीवन का उदाहरण देकर बताते हैं कि सच्चा धर्म बाहरी कर्मकांडों में नहीं, बल्कि ईमानदारी, सादगी और सदाचार में निहित है। किसान न तो मंदिर या गिरजाघर जाता है, न ही

किसी विशेष पूजा-पद्धति का पालन करता है। उसे धार्मिक ग्रंथों या आचार्यों का विशेष ज्ञान भी नहीं है, फिर भी उसका जीवन पूर्ण और संतुलित है, क्योंकि वह अपने कर्तव्यों का निष्ठापूर्वक पालन करता है। वह कृषि को ही अपना धर्म मानता है और प्रकृति से गहरा जुड़ाव रखता है। वह किसी को धोखा नहीं देता और सीमित आवश्यकताओं में संतुष्ट रहता है। लेखक के अनुसार उसकी सादगी, सत्यनिष्ठा और संतोष ही वास्तविक धर्म का स्वरूप है।

लेखक ने इस निबंध के माध्यम से सभ्यता, राष्ट्रों की उन्नति और कर्मशील जीवन के महत्त्व पर अपने विचार प्रस्तुत किए हैं। उनके अनुसार किसी जाति या राष्ट्र की महानता केवल कला, साहित्य, संगीत या धार्मिक कर्मकांडों से नहीं बनती, बल्कि उसके पीछे कठोर परिश्रम, संघर्ष, साहस और कर्मठ जीवन की निर्णायक भूमिका होती है। लेखक रोमन साम्राज्य का उदाहरण देते हैं, जहाँ विलासिता, भोग-विलास और सुख-सुविधाओं में डूब जाने के कारण संघर्षशीलता समाप्त हो गई और अंततः उसका पतन हो गया। इसके विपरीत, एंग्लो-सैक्सन जाति ने समुद्र, वन और पर्वतों के कठिन जीवन तथा साहसिक अभियानों के माध्यम से निरंतर उन्नति प्राप्त की है। लेखक के अनुसार वास्तविक धर्म मंदिरों तक सीमित नहीं, बल्कि जीवन की सक्रियता, साहस, परिश्रम और कर्मनिष्ठा में निहित है। यूरोप की उन्नति का आधार अन्वेषण, समुद्री यात्राएँ, युद्ध और संगठन शक्ति रहे हैं। रॉबिन हुड, नेल्सन और वेलिंगटन जैसे वीर व्यक्तित्व इसी परंपरा के प्रतीक हैं। अतः लेखक मानते हैं कि आधुनिक साधन मानव की प्रगति और साहस के प्रतीक हैं, जो भविष्य की उन्नत सभ्यता का मार्ग प्रशस्त करते हैं।

लेखक के अनुसार यूरोप की वैज्ञानिक और बौद्धिक उन्नति उसके साहस, संघर्ष, धन-संग्रह तथा समुद्री विस्तार के कारण संभव हुई है। यदि यूरोपीय देशों ने अपनी शक्ति, संपत्ति और प्रभाव का विस्तार न किया होता, तो वहाँ विज्ञान और ज्ञान के महान आचार्य तथा ऋषि उत्पन्न न होते। पश्चिमी ज्ञान और विज्ञान से समस्त मानवता को लाभ पहुँचा है। यद्यपि यूरोपीय जीवन का एक पक्ष स्वार्थ, कठोरता और असभ्यता से युक्त दिखाई देता है, फिर भी उसका दूसरा पक्ष ज्ञान, विद्या और वैज्ञानिक उपलब्धियों से आलोकित अत्यंत महान है। लेखक का विश्वास है कि मानव जाति भविष्य में यूरोप की कमियों को भूलकर उसके ज्ञान-विज्ञान और मानव-कल्याणकारी योगदान को ही अधिक महत्त्व देगी।

लेखक के अनुसार धर्म, आध्यात्मिकता और श्रेष्ठ आचरण का विकास सहज रूप से नहीं होता, बल्कि इसके लिए निरंतर परिश्रम, संघर्ष और प्रकृति तथा जीवन के विविध अनुभवों की आवश्यकता होती है। जिस प्रकार समुद्र के विशाल जल से बहुत कठिन प्रयास के बाद रेडियम का एक कण प्राप्त होता है और समुद्र-मंथन से थोड़ी मात्रा में अमृत निकला था, उसी प्रकार संसार के व्यापक अनुभवों और कर्मों के माध्यम से ही उत्तम आचरण रूपी स्वर्ण प्राप्त होता है। लेखक का मानना है कि प्रकृति और संसार को त्यागकर नहीं, बल्कि उनके बीच रहकर, कर्म करते हुए और कठिनाइयों का सामना करके ही धर्म तथा आदर्श आचरण की प्राप्ति संभव है। इसलिए श्रेष्ठ चरित्र और आध्यात्मिक उन्नति बिना परिश्रम के कभी प्राप्त नहीं हो सकती।

लेखक ने राष्ट्र की उन्नति में शक्ति, कर्मशीलता, साहस और ऋषि-परंपरा के संतुलन की आवश्यकता

पर विचार व्यक्त किए हैं। उनके अनुसार केवल प्राचीन ऋषियों की महानता का स्मरण करना पर्याप्त नहीं है, बल्कि समाज को निरंतर ऐसे व्यक्तियों को जन्म देना चाहिए जिनमें ज्ञान, चरित्र, साहस और कर्मशीलता का समन्वय हो। यदि किसी समाज का संपर्क अधिक संघर्षशील और पराक्रमी जातियों से होता है, तो उसमें भी वीरता और नेतृत्व के गुण विकसित हो सकते हैं। लेखक के अनुसार तत्कालीन हिंदू समाज अपनी गौरवपूर्ण ऋषि-परंपरा पर गर्व तो करता था, किंतु उसे व्यवहार में न उतारकर निष्क्रियता और आत्मसंतोष में डूबता जा रहा था, जिससे उसकी प्रगति अवरुद्ध हो गई। ऋषि और महापुरुष किसी जड़ समाज में उत्पन्न नहीं होते; इसके लिए शक्तिशाली और कर्मठ समाज आवश्यक है, जैसे उपजाऊ भूमि में ही सुंदर फूल खिलते हैं। लेखक यहाँ पर यूरोप का उदाहरण देते हैं, जहाँ संघर्षशीलता और साहस के आधार पर आधुनिक सभ्यता विकसित हुई, जबकि भारत अपनी निष्क्रियता के कारण पिछड़ता गया। अतः समाज को वर्तमान में भी महान व्यक्तित्वों का सृजन करना चाहिए, तभी राष्ट्र प्रगति कर सकता है।

लेखक ने भारतीय समाज की निष्क्रियता, कल्पनाशीलता और कर्महीनता की आलोचना करते हुए कर्म, पुरुषार्थ और व्यावहारिक आचरण के महत्त्व पर बल दिया है। उनके अनुसार भारतवर्ष लंबे समय तक कल्पनाओं और अव्यावहारिक धारणाओं में खोया रहा, जहाँ यह विश्वास किया गया कि केवल योग, तपस्या या आध्यात्मिक साधना से ही सभी समस्याओं का समाधान संभव है। किंतु केवल कल्पनाएँ किसी राष्ट्र को महान नहीं बना सकतीं, इसी कारण समाज का विकास अवरुद्ध हुआ। लेखक चेतावनी देते हैं कि यदि समाज कर्महीनता से नहीं उबरा, तो उसका भविष्य संकट में पड़ सकता है। वे स्पष्ट करते हैं कि आदर्श, सिद्धांत और ऊँची बातें तब तक निरर्थक हैं जब तक उन्हें व्यवहार में न लाया जाए। आचरण का निर्माण कल्पना से नहीं, बल्कि संघर्ष और अनुभवों से होता है, जैसे पत्थर घिसकर आकार पाता है और फूल कठिन परिस्थितियों से सुंदरता अर्जित करते हैं। लेखक अश्वमेध यज्ञ का प्रतीक देते हुए कहते हैं कि प्रत्येक व्यक्ति को साहस, आत्मविश्वास और कर्म के माध्यम से आगे बढ़ना चाहिए, क्योंकि वास्तविक प्रगति केवल पुरुषार्थ से ही संभव है।

लेखक ने धर्म, तप, सभ्यता और शुद्ध आचरण के वास्तविक स्वरूप को स्पष्ट करते हुए बाह्य आडंबरों तथा कर्मकांडों की सीमाओं को रेखांकित किया है। उनके अनुसार धर्म का संबंध केवल पूजा-पाठ, माला-जप या तीर्थ-स्नान से नहीं, बल्कि मनुष्य के व्यवहार, कर्म और चरित्र से है। सच्चा तप जीवन के संघर्षों, कठिनाइयों, सुख-दुःख तथा प्रतिकूल परिस्थितियों का धैर्यपूर्वक सामना करने में निहित है। इन्हीं अनुभवों से व्यक्ति का चरित्र सुदृढ़ और आचरण परिष्कृत होता है। लेखक का मानना है कि आध्यात्मिकता तभी सार्थक होती है, जब मनुष्य अपने कर्तव्यों का निष्ठापूर्वक पालन करता है। वे बताते हैं कि मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति के बिना उच्च आध्यात्मिक विचारों का प्रभाव सीमित रहता है। सभ्यता के विकास की प्रक्रिया में पहले भौतिक, फिर मानसिक और अंत में आचरण की सभ्यता का निर्माण होता है। जब तक समाज के सभी वर्गों में नैतिकता, सदाचार और मानवता का विकास नहीं होता, तब तक वास्तविक आचरण-सभ्यता की स्थापना संभव नहीं है। यही धर्म और सभ्यता का सच्चा आधार है।

लेखक ने आचरण की सभ्यता के आदर्श स्वरूप का प्रभावशाली चित्रण किया है। उनके अनुसार यह मानव विकास की सर्वोच्च अवस्था है, जहाँ शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक स्तर पर सभी प्रकार के भेदभाव, संघर्ष और विरोध समाप्त होते हैं। इस स्थिति में ऊँच-नीच, अमीरी-गरीबी, युद्ध, वैमनस्य और सामाजिक विषमताओं का स्थान प्रेम, करुणा, सद्भाव और एकता ले लेते हैं। मनुष्य स्वार्थ, अहंकार और संकीर्णताओं से ऊपर उठकर समस्त मानवता को एक परिवार के रूप में देखता है। लेखक प्रतीकात्मक शैली में स्पष्ट करते हैं कि श्रेष्ठ आचरण का प्रभाव शब्दों और उपदेशों से कहीं अधिक गहरा होता है। आदर्श व्यक्तित्व का मौन आचरण मनुष्य के भीतर आत्मबोध, हृदय-परिवर्तन और सत्य की अनुभूति उत्पन्न करता है। ऐसे आचरण के प्रभाव से व्यक्ति को शांति, आत्मिक उन्नति और जीवन के वास्तविक सत्य का बोध होता है।

लेखक ने आचरण की सभ्यता, मानव-एकता और धर्मों के आंतरिक सत्य का अत्यंत भावपूर्ण वर्णन किया है। उनके अनुसार सभी धर्मों का वास्तविक सार प्रेम, करुणा, सदाचार और मानवता में निहित है, न कि बाहरी रीति-रिवाजों और मतभेदों में। जब मनुष्य धर्मों के बाहरी आवरण से ऊपर उठकर उनके मूल तत्त्व को समझता है, तब उसे सभी धर्मों में एक ही दिव्य सत्य का अनुभव होता है। लेखक प्रतीकात्मक शैली में स्पष्ट करते हैं कि श्रेष्ठ आचरण मनुष्य को एकता, प्रेम और आत्मबोध की ओर ले जाता है। ऐसी अवस्था में जाति, धर्म, अमीरी-गरीबी और ऊँच-नीच के सभी भेद समाप्त होते हैं तथा संपूर्ण मानवता एक परिवार के रूप में दिखाई देती है। लेखक के अनुसार आचरण की सभ्यता ही मनुष्य का वास्तविक स्वदेश है। केवल धर्मग्रंथों का अध्ययन पर्याप्त नहीं, बल्कि उनके आदर्शों को जीवन में उतारना आवश्यक है। यही सच्चा धर्म, आत्मिक उन्नति और मानव कल्याण का मार्ग है।

2.4.4 स्वयंअध्ययन के लिए प्रश्न :

अ) निम्नलिखित वाक्यों के नीचे दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनिए।

- 1) 'आचरण की सभ्यता' किस विधा की रचना है?

अ) कहानी	ब) निबंध
क) उपन्यास	ड) संस्मरण
- 2) 'आचरण की सभ्यता' रचना के लेखक कौन हैं?

अ) बालकृष्ण भट्ट	ब) हरिशंकर परसाई
क) सरदार पूर्णसिंह	ड) हजारी प्रसाद द्विवेदी
- 3) सरदार पूर्णसिंह ने किसकी शुद्धता पर बल दिया है?

अ) आचरण	ब) मनुष्य
क) समाज	ड) धर्म

10) सरदार पूर्णसिंह आचरण की तुलना ----- से करते हैं।

अ) हिमालय

ब) मानवता

क) सभ्यता

ड) खंडहर

2.4.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ :

- * आचरण : व्यवहार, चाल-चलन, कर्म करने की रीति
- * शिवनेत्र : भगवान शिव का तीसरा नेत्र, दिव्य दृष्टि
- * सभ्यता : सुसंस्कृत जीवन-पद्धति, शिष्टता
- * उदारता : दानशीलता, विशाल हृदयता, महानता
- * जगत् : संसार, विश्व
- * प्रकृति : प्राकृतिक सृष्टि, भौतिक या पदार्थिक जगत या ब्रह्माण्ड हैं।
- * ब्रह्मवाणी : परम सत्य या ईश्वर की वाणी
- * ज्ञानोदय : ज्ञान का उदय, आत्मबोध, चेतना का जागरण
- * औदार्य : उदारता, विशाल हृदयता, दानशीलता
- * पवित्रता : शुद्धता, निर्मलता
- * अनुच्चारित : जो उच्चारित न किया गया हो, अनकहा
- * परमोद्देश्य : सर्वोच्च उद्देश्य, श्रेष्ठ लक्ष्य
- * एंग्लो-सैक्सन : इंग्लैंड के प्राचीन जर्मनिक निवासियों से संबंधित; अंग्रेज़ जाति/संस्कृति से जुड़ा
- * तारागणों : तारों का समूह
- * त्रिपिटक : बौद्ध धर्म के प्रमुख धर्मग्रंथों का संग्रह (विनय पिटक, सुत्त पिटक और अभिधम्म पिटक)

2.4.6 स्वयंअध्ययन के प्रश्नों के उत्तर :

- अ) 1) निबंध 2) सरदार पूर्णसिंह 3) आचरण 4) उपर्युक्त सभी 5) देवदारु
6) सरदार पूर्णसिंह 7) भावात्मक 8) हिमालय 9) आचरण 10) मौन
- आ) 1) द्विवेदी 2) 1881 3) 1912 4) सरस्वती 5) स्वामी रामतीर्थ
6) आचरण की सभ्यता 7) आचरण 8) अध्यापक 9) आचरण 10) हिमालय

2.4.7 सारांश :

1. सरदार पूर्णसिंह देशभक्त, शिक्षाविद् तथा साहित्यकार के रूप में विख्यात थे। उन्होंने हिंदी, पंजाबी, अंग्रेज़ी एवं उर्दू भाषाओं में उच्चकोटि का साहित्य-सृजन किया है।
2. सदाचार के बिना धर्म का कोई महत्व नहीं है। श्रेष्ठ आचरण ही धर्म का वास्तविक स्वरूप है और वही धर्म को गौरव प्रदान करता है।
3. मनुष्य के जीवन का परम लक्ष्य श्रेष्ठ आचरण का विकास है। यह विकास किसी एक निश्चित मार्ग या दूसरे के अनुकरण से नहीं होता, बल्कि व्यक्ति को अपनी परिस्थितियों के अनुसार परिश्रम, अनुभव और आत्मसंघर्ष द्वारा अपना मार्ग स्वयं बनाना पड़ता है। यही मार्ग उसे आदर्श जीवन और उच्चतम लक्ष्य की प्राप्ति तक पहुँचाता है।
4. सच्चा धर्म, ईश्वर-ज्ञान और आध्यात्मिकता व्यक्ति के श्रेष्ठ आचरण, कर्तव्यनिष्ठा और कर्म में प्रकट होते हैं। केवल उपदेश, ज्ञान या वाद-विवाद की अपेक्षा निष्ठापूर्ण कर्म और आदर्श आचरण अधिक महत्वपूर्ण हैं। यही मनुष्य की वास्तविक महानता का आधार है।
5. लेखक का मुख्य संदेश यह है कि किसी राष्ट्र या समाज की वास्तविक उन्नति विलासिता, निष्क्रियता अथवा केवल धार्मिक कर्मकांडों से नहीं होती। महानता का आधार साहस, संघर्ष, परिश्रम, कर्मशीलता और जीवन की चुनौतियों का सामना करने की क्षमता है, जो जातियाँ कर्म और पुरुषार्थ को अपनाती हैं, वही इतिहास में महान और प्रभावशाली बनती हैं।
6. लेखक का मानना है कि किसी समाज की उन्नति केवल अपने गौरवशाली अतीत पर गर्व करने से नहीं होती। समाज को निरंतर कर्मशील, साहसी, ज्ञानवान और चरित्रवान व्यक्तियों का निर्माण करना चाहिए। शक्ति, परिश्रम और उच्च आदर्शों के आधार पर ही ऋषि-परंपरा जीवित रह सकती है और राष्ट्र निरंतर प्रगति कर सकता है।
7. धर्म और शुद्ध आचरण बाहरी कर्मकांडों से नहीं, बल्कि जीवन के संघर्षों, कर्तव्यपालन, परिश्रम और नैतिक व्यवहार से प्राप्त होते हैं। वास्तविक सभ्यता तभी स्थापित हो सकती है जब समाज के सभी वर्गों में सदाचार, नैतिकता और कर्तव्यनिष्ठा का विकास हो। यही सच्चे धर्म और आचरण की पहचान है।
8. आचरण की सर्वोच्च सभ्यता प्रेम, समानता, करुणा और एकता पर आधारित होती है। वहाँ किसी प्रकार का भेदभाव, संघर्ष या वैमनस्य नहीं रहता। श्रेष्ठ आचरण और मौन जीवन-उपदेश मनुष्य को सत्य, शांति और आत्मिक मुक्ति की ओर ले जाते हैं। यही वास्तविक सभ्यता और मानवता का आदर्श स्वरूप है।
9. सभी धर्मों का वास्तविक आधार प्रेम, एकता और श्रेष्ठ आचरण है। बाहरी भेदों से ऊपर उठकर जब मनुष्य समस्त मानवता को अपना मानने लगता है, तब वह आचरण की सर्वोच्च सभ्यता को प्राप्त

करता है। केवल ग्रंथों का अध्ययन नहीं, बल्कि उनके आदर्शों को जीवन में उतारना ही सच्ची साधना और वास्तविक मानवता है।

2.4.8 स्वाध्याय :

अ) लघुत्तरी प्रश्न।

1. सरदार पूर्णसिंह का संक्षिप्त परिचय दीजिए।
2. 'आचरण की सभ्यता' निबंध के आधार पर मानवीय मूल्यों को रेखांकित कीजिए।
3. आचरण का विकास जीवन का परम उद्देश्य है। इस कथन की पुष्टि कीजिए।
4. 'आचरण की सभ्यता' निबंध का संक्षिप्त परिचय दीजिए।
5. 'आचरण की सभ्यता' से लेखक का तात्पर्य क्या है? स्पष्ट कीजिये।
6. 'आचरण की सभ्यता' निबंध का सारांश लिखिए।

आ) दीर्घोत्तरी प्रश्न।

1. 'आचरण की सभ्यता' के कथ्य पर प्रकाश डालिए।
2. 'आचरण की सभ्यता' का आशय स्पष्ट कीजिए।
3. 'आचरण की सभ्यता' के कथावस्तु पर प्रकाश डालिए।
4. 'आचरण की सभ्यता' के उद्देश्य पर प्रकाश डालिए।

2.4.9 क्षेत्रीय कार्य :

1. सरदार पूर्णसिंह के समग्र साहित्य की सूची तैयार कीजिए।
2. मानवीय मूल्यों की सूची तैयार कीजिए।

2.4.10 अतिरिक्त अध्ययन हेतु संदर्भ :

1. सरदार पूर्णसिंह अध्यापक के निबंध : संपा. शास्त्री प्रभात, इलाहाबाद, कौशाम्बी प्रकाशन।
2. हिंदी भाषा और नैतिक मूल्य : गुप्ता स्नेहल, मिश्रा आशुतोष, शर्मा उर्विजा, भोपाल, मध्यप्रदेश भोज मुक्त विश्वविद्यालय।

◆◆◆

इकाई 3

3.5 गेहूँ बनाम गुलाब

– रामवृक्ष बेनीपुरी

अनुक्रम

3.5.1 उद्देश्य

3.5.2 प्रस्तावना

3.5.3 विषय विवेचन

3.5.3.1 रामवृक्ष बेनीपुरी का जीवन परिचय

3.5.3.2 'गेहूँ बनाम गुलाब' निबंध का परिचय

3.5.3.3 'गेहूँ बनाम गुलाब' निबंध का आशय

3.5.4 स्वयंअध्ययन के लिए प्रश्न

3.5.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

3.5.6 स्वयंअध्ययन के प्रश्नों के उत्तर

3.5.7 सारांश

3.5.8 स्वाध्याय

3.5.9 क्षेत्रीय कार्य

3.5.10 अतिरिक्त अध्ययन हेतु संदर्भ

3.5.1 उद्देश्य :

प्रस्तुत निबंध के अध्ययन के बाद आप -

- 1) निबंधकार रामवृक्ष बेनीपुरी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व से परिचित होंगे।
- 2) रामवृक्ष बेनीपुरी की निबंध शैली से परिचित होंगे।
- 3) 'गेहूँ बनाम गुलाब' के कथ्य से परिचित होंगे।
- 4) 'गेहूँ बनाम गुलाब' के आशय से परिचित होंगे।
- 5) 'गेहूँ बनाम गुलाब' की प्रतीकात्मकता से परिचित होंगे।

3.5.2 प्रस्तावना :

रामवृक्ष बेनीपुरी हिंदी साहित्य के शुक्लोत्तर युग के सुप्रसिद्ध ललित निबंधकार हैं। उन्होंने हिंदी निबंध साहित्य को नवीन दृष्टि, संवेदनशीलता और वैचारिक गहराई प्रदान की है। उनका प्रसिद्ध निबंध 'गेहूँ बनाम गुलाब' मानव जीवन की भौतिक एवं सांस्कृतिक आवश्यकताओं के मध्य संतुलन की समस्या को अत्यंत प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करता है। इस निबंध में 'गेहूँ' और 'गुलाब' क्रमशः भौतिक सुख-संपन्नता तथा सौन्दर्य, कला, संस्कृति और मानसिक परिष्कार के प्रतीक हैं। लेखक का मानना है कि मानव जीवन की सार्थकता केवल आर्थिक उन्नति और भौतिक उपलब्धियों में निहित नहीं है, बल्कि सांस्कृतिक, बौद्धिक एवं आध्यात्मिक विकास में भी उसका समान महत्त्व है। आधुनिक युग में भौतिकतावादी प्रवृत्तियों के तीव्र प्रसार ने जीवन के इस स्वाभाविक संतुलन को विचलित किया है, जिसके परिणामस्वरूप मानवीय संवेदनाएँ, सांस्कृतिक मूल्य और सौन्दर्यबोध संकटग्रस्त हुए हैं। प्रस्तुत निबंध में बेनीपुरी ने भौतिक प्रगति और सांस्कृतिक चेतना के समन्वय की आवश्यकता को रेखांकित करते हुए मानव जीवन के समग्र, संतुलित एवं मूल्यपरक विकास का संदेश दिया है।

3.5.3 विषय विवेचन :

3.5.3.1 रामवृक्ष बेनीपुरी का जीवन परिचय :

रामवृक्ष बेनीपुरी हिंदी साहित्य के सुप्रसिद्ध साहित्यकार, स्वतंत्रता सेनानी तथा समाजसेवी थे। वे बहुमुखी प्रतिभा के धनी, प्रतिभासंपन्न एवं सृजनशील रचनाकार के रूप में प्रतिष्ठित हैं। रामवृक्ष बेनीपुरी को ओजस्वी, प्रभावपूर्ण और जीवन-सापेक्ष लेखन के कारण उन्हें हिंदी साहित्य जगत में 'कलम के जादूगर' के नाम से भी ख्याति प्राप्त हुई है।

1. जन्म एवं जन्मस्थान :

रामवृक्ष बेनीपुरी का जन्म 23 दिसंबर 1899 ई. में बिहार के मुज़फ्फरपुर जनपद के बेनीपुरी नामक ग्राम में एक साधारण कृषक परिवार में हुआ था। अपने जन्मस्थान बेनीपुरी के प्रति गहरे लगाव और आत्मीयता के

कारण उन्होंने अपने नाम के साथ 'बेनीपुरी' उपनाम अपनाया था। यही उपनाम आगे चलकर उनकी विशिष्ट साहित्यिक पहचान का आधार बना। उनके जीवन के प्रारंभिक वर्ष अभावों, कठिनाइयों और संघर्षपूर्ण परिस्थितियों में व्यतीत हुए, जिनका उनके व्यक्तित्व और चिंतन पर गहरा प्रभाव पड़ा है।

2. परिवार :

रामवृक्ष बेनीपुरी के पिता फुलवंत सिंह एक साधारण किसान थे। दुर्भाग्यवश, बाल्यावस्था में ही माता-पिता के असामयिक निधन के कारण उनका लालन-पालन उनकी मौसी के संरक्षण में हुआ था। मौसी के स्नेह, मार्गदर्शन और संस्कारों ने उनके व्यक्तित्व-निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। सोलह वर्ष की आयु में उनका विवाह उमरानी के साथ संपन्न हुआ है।

3. शिक्षा - दीक्षा :

रामवृक्ष बेनीपुरी की प्रारंभिक शिक्षा उनके ननिहाल में संपन्न हुई। मैट्रिक की शिक्षा प्राप्त करने के उद्देश्य से वे मुज़फ्फरपुर गए थे, किंतु सन् 1920 ई. के असहयोग आंदोलन में सक्रिय सहभागिता के कारण उनकी स्कूली शिक्षा बीच में ही छूट गई। तत्पश्चात् उन्होंने स्वाध्याय के बल पर अध्ययन जारी रखा और 'विशारद' परीक्षा उत्तीर्ण कर अपनी विद्वत्ता का परिचय दिया है।

4. स्वतंत्रता सेनानी :

रामवृक्ष बेनीपुरी महात्मा गांधी के असहयोग आंदोलनों से प्रेरित होकर स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय रूप से सहभागी बने। राष्ट्रीय आंदोलनों में भाग लेने के कारण उन्हें अनेक बार कारावास का दंड मिला और लगभग नौ साल जेल में बिताने पड़े थे। उनका समाजवादी आंदोलन से भी घनिष्ठ संबंध रहा है तथा भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान वे जयप्रकाश नारायण के निकट सहयोगी रहे हैं।

5. प्रभाव एवं प्रेरणा :

रामवृक्ष बेनीपुरी भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन तथा रूस और चीन की सामाजिक क्रांति से प्रभावित रहे हैं। साहित्यिक क्षेत्र में उन पर गणेशशंकर विद्यार्थी, माखनलाल चतुर्वेदी, शिवपूजन सहाय तथा रामदहिन मिश्र का प्रभाव था। राजनीतिक क्षेत्र में वे मदन मोहन मालवीय, महात्मा गांधी, राजेन्द्र प्रसाद और नरेन्द्र देव से विशेष रूप से प्रेरित थे।

6. राजनीतिक जीवन :

रामवृक्ष बेनीपुरी सन् 1957 ई. में बिहार प्रजा समाजवादी पार्टी के उम्मीदवार के रूप में भारी बहुमत से बिहार विधानसभा के सदस्य निर्वाचित हुए थे। इसके पश्चात् सन् 1958 ई. में वे बिहार विश्वविद्यालय की सिंडिकेट के सदस्य मनोनीत किए गए। अपने राजनीतिक जीवन में उन्होंने समाजवादी विचारधारा, जनसेवा और लोकतांत्रिक मूल्यों के प्रति दृढ़ प्रतिबद्धता का परिचय दिया है।

7. यात्राएँ :

रामवृक्ष बेनीपुरी ने सन् 1960 के दशक में सोवियत संघ, तुर्की, ईरान, सीरिया, बर्मा (म्यांमार), थाईलैंड, चीन तथा अनेक यूरोपीय देशों की यात्राएँ की है। इन यात्राओं से उन्हें विभिन्न देशों की संस्कृति, समाज, राजनीति और जीवन-दृष्टि को निकट से समझने का अवसर प्राप्त हुआ, जिसका प्रभाव उनके चिंतन और साहित्यिक दृष्टिकोण पर भी परिलक्षित होता है।

8. निधन :

महान स्वतंत्रता सेनानी, समाजसेवी एवं साहित्यकार रामवृक्ष बेनीपुरी का निधन 7 सितंबर, 1968 ई. को बिहार के मुजफ्फरपुर में हुआ। उनके निधन से हिंदी साहित्य को अपूरणीय क्षति पहुँची है।

रामवृक्ष बेनीपुरी का साहित्य परिचय :

रामवृक्ष बेनीपुरी हिंदी साहित्य के बहुआयामी रचनाकार, प्रखर चिंतक तथा युगचेतना के साहित्यकार हैं। उन्होंने साहित्यिक साधना का प्रारंभ कविता से किया था, किंतु उनकी सृजनात्मक प्रतिभा का सर्वाधिक उत्कर्ष गद्य-साहित्य की विविध विधाओं में परिलक्षित होता है। कहानी, उपन्यास, नाटक, रेखाचित्र, संस्मरण, जीवनी, निबंध तथा पत्रकारिता के क्षेत्र में उनका योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण एवं अविस्मरणीय है। उनकी रचनाओं में राष्ट्रीय चेतना, मानवीय संवेदना, सामाजिक प्रतिबद्धता तथा कलात्मक सौष्ठव का अद्वितीय समन्वय दृष्टिगोचर होता है। हिंदी गद्य-साहित्य को समृद्ध बनाने वाली उनकी प्रमुख कृतियों का संक्षिप्त परिचय निम्नलिखित रूप में प्रस्तुत है-

उपन्यास साहित्य	: 1) पतितों के देश में 2) कैदी की पत्नी
कहानी साहित्य	: 1) चिता के फूल
रेखाचित्र साहित्य	: 1) लालतारा 2) माटी की मूर्तें 3) गेहूँ बनाम गुलाब 4) मील के पत्थर
नाटक साहित्य	: 1) अंबपाली 2) तथागत 3) विजेता
एकांकी नाटक	: 1) संघमित्रा 2) सिंहल विजय 3) नेत्रदान 4) नया समाज
रेडियो साहित्य	: 1) रामराज्य 2) गांव के देवता 3) अमर ज्योति 4) सीता की माँ 5) शकुंतला
संस्मरण साहित्य	: 1) जंजीरें और दीवारें 2) मील के पत्थर
निबंध साहित्य	: 1) नई नारी 2) मशाल 3) हवा पर 4) वंदे वाणी विनायको
यात्रा वर्णन	: 1) पैरों में पंख बांधकर 2) उड़ते चलो, उड़ते चलो 3) अत्र-तत्र

जीवनी साहित्य	: 1) जयप्रकाश
बाल कहानियाँ	: 1) हीरामन तोता 2) पृथ्वी पर विजय 3) प्रकृति पर विजय 4) बेटे हो तो ऐसे 5) बेटियाँ हो तो ऐसी 6) अमर कथाएं
बाल जीवनियाँ	: 1) शिवाजी 2) गुरु गोविंद सिंह 3) विद्यापति 4) लंगट सिंह
संपादन	: साप्ताहिक पत्रिकाएं – तरुण भारत, किसान मित्र, योगी, मासिक पत्रिकाएं – युवक, बालक लोकसंग्रह, कर्मवीर, हिमालय, नईधारा आदि।

सम्मान : रामवृक्ष बेनीपुरी मूलतः क्रांतिकारी चेतना से संपन्न, निर्भीक तथा स्पष्टवादी साहित्यकार थे। उन्होंने साहित्य-सृजन में कभी भी यश, प्रतिष्ठा अथवा पुरस्कारों को लक्ष्य नहीं बनाया, बल्कि सामाजिक सरोकारों और राष्ट्रीय मूल्यों के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को सर्वोपरी रखा है। हिंदी साहित्य के क्षेत्र में उनके महत्वपूर्ण एवं अविस्मरणीय योगदान के सम्मानस्वरूप अखिल भारतीय हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग के द्वारा सन् १९६७ ई. में उन्हें 'साहित्य वाचस्पति' की उपाधि से सम्मानित किया है।

3.5.3.2 'गेहूँ बनाम गुलाब' निबंध का परिचय :

'गेहूँ बनाम गुलाब' रामवृक्ष बेनीपुरी का एक उत्कृष्ट एवं विचारोत्तेजक ललित निबंध है, जिसमें लेखक ने मानव जीवन की भौतिक और आध्यात्मिक आवश्यकताओं के मध्य संतुलन की अनिवार्यता को प्रभावपूर्ण ढंग से प्रतिपादित किया है। इस निबंध में 'गेहूँ' और 'गुलाब' दो सशक्त एवं सार्थक प्रतीकों के रूप में प्रयुक्त हुए हैं। जहाँ गेहूँ मनुष्य की शारीरिक आवश्यकताओं, आजीविका तथा आर्थिक समृद्धि का प्रतीक है, वहीं गुलाब सौन्दर्यबोध, संवेदनशीलता, संस्कृति और मानसिक परितोष का प्रतिनिधित्व करता है। लेखक का स्पष्ट मानना है कि केवल भौतिक साधनों और सुख-सुविधाओं की उपलब्धि से मानव जीवन की पूर्णता संभव नहीं है। यदि मनुष्य अपनी चेतना को मात्र भोजन, उपभोग और भौतिक आवश्यकताओं तक सीमित कर ले, तो उसमें और पशु में कोई मौलिक अंतर नहीं रहेगा। मनुष्य की वास्तविक श्रेष्ठता उसकी संवेदनशीलता, सौन्दर्य-चेतना, सांस्कृतिक अभिरुचि तथा उच्च मानसिक वृत्तियों में निहित है, जिनका प्रतीक गुलाब है। इस प्रकार लेखक ने भौतिकता और आध्यात्मिकता के समन्वय को मानव जीवन की सार्थकता का आधार माना है।

'गेहूँ बनाम गुलाब' की सर्वाधिक महत्वपूर्ण विशेषता इसकी सशक्त प्रतीकात्मकता है। गेहूँ और गुलाब के माध्यम से लेखक ने सभ्यता, संस्कृति, नैतिकता तथा मानवीय मूल्यों से जुड़े जटिल प्रश्नों को अत्यंत सरल, सरस और प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया है। रामवृक्ष बेनीपुरी सावधान करते हैं कि यदि मनुष्य अपनी भौतिक आकांक्षाओं और इन्द्रिय-लिप्साओं को अनियंत्रित छोड़ देगा तथा सौन्दर्य और संस्कृति को विलासिता, भ्रष्टाचार और नैतिक पतन का माध्यम बना देगा, तो उसके परिणाम समाज के लिए विनाशकारी सिद्ध होंगे। भाषा और शैली की दृष्टि से प्रस्तुत निबंध अत्यंत परिमार्जित, प्रवाहपूर्ण, भावात्मक तथा चिंतनप्रधान है। इसमें ललित निबंध की सभी अपेक्षित विशेषताएँ विद्यमान हैं। लेखक की कल्पनाशीलता, संवेदनशीलता तथा मानवीय दृष्टि

पाठक को गहराई से प्रभावित करती है। निबंध का संदेश आज के उपभोक्तावादी और भौतिकतावादी युग में और भी अधिक प्रासंगिक प्रतीत होता है, जब मनुष्य मानसिक शान्ति, सांस्कृतिक मूल्यों और आत्मिक संतोष की अपेक्षा भौतिक उपलब्धियों को अधिक महत्त्व देने लगा है। 'गेहूँ बनाम गुलाब' केवल एक ललित निबंध नहीं, अपितु संतुलित एवं समन्वित मानव जीवन का एक सशक्त घोषणापत्र है। यह निबंध इस सत्य को उद्घाटित करता है कि जीवन की वास्तविक सार्थकता तभी संभव है, जब शरीर और मन, भौतिकता और संस्कृति तथा उपभोग और सौन्दर्यबोध के मध्य संतुलित सामंजस्य स्थापित हो।

3.5.3.3 'गेहूँ बनाम गुलाब' निबंध का आशय :

लेखक ने मानव जीवन में भौतिक आवश्यकताओं और मानसिक-आध्यात्मिक आवश्यकताओं के महत्त्व का अत्यंत प्रभावशाली ढंग से वर्णन किया है। लेखक के अनुसार गेहूँ मानव की शारीरिक आवश्यकताओं का प्रतीक है, जबकि गुलाब सौन्दर्य, कला, संस्कृति, प्रेम और मानसिक तृप्ति का प्रतीक है। गेहूँ शरीर का पोषण करता है और गुलाब मन को आनंद प्रदान करता है। मनुष्य को केवल शरीर की पुष्टि ही नहीं, बल्कि मानसिक और भावनात्मक संतुष्टि की भी आवश्यकता होती है। लेखक कहते हैं कि आदिम मानव जब पृथ्वी पर आया, तब उसकी पहली चिंता भोजन और प्यास मिटाने की थी। उसने प्रकृति के विभिन्न साधनों जैसे माँ का दूध, वृक्षों के फल, जीव-जंतु, पशु-पक्षी आदि से अपनी भूख शांत की। धीरे-धीरे गेहूँ उसके जीवन का मुख्य आधार बन गया। आज भी मनुष्य अपनी भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए खेत जोतता है, उत्पादन बढ़ाता है और जीवन का अधिकांश समय रोटी कमाने में व्यतीत करता है। इसी कारण 'गेहूँ' का महत्त्व बढ़ा है और 'गुलाब' अर्थात् कला, साहित्य और सौन्दर्यबोध उपेक्षित होते जा रहे हैं। किन्तु लेखक स्पष्ट करते हैं कि मनुष्य और पशु में यही मूलभूत अंतर है कि मनुष्य केवल भोजन तक सीमित नहीं रहता। यदि केवल भोजन ही जीवन का उद्देश्य होता, तो मनुष्य और पशु में कोई अंतर न रहता। मनुष्य को मनुष्य बनाने का कार्य 'गुलाब' ने किया है। मनुष्य के शरीर में मस्तिष्क, हृदय तथा उदर (पेट) क्रमशः ऊपर से नीचे की ओर स्थित होते हैं, जबकि पशुओं में इन अंगों की संरचना अपेक्षाकृत भिन्न होती है। यह व्यवस्था प्रतीकात्मक रूप से इस तथ्य को भी इंगित करती है कि मनुष्य के जीवन में मानसिक एवं भावनात्मक संतुष्टि का महत्त्व केवल शारीरिक आवश्यकताओं की पूर्ति से अधिक है। यही विशेषता उसे अन्य प्राणियों से भिन्न तथा श्रेष्ठ बनाती है। उसने अपनी मानसिक वृत्तियों, सौन्दर्यबोध और रचनात्मकता को विकसित किया है। जब मनुष्य की स्त्रियाँ अनाज पीस रही थीं, तब गीतों का जन्म हुआ। जब वह शिकार करता था, तब ढोल, तुरही और संगीत का विकास हुआ। नाव चलाते समय जल की ध्वनि में उसने ताल और लय का अनुभव किया। बाँस से उसने केवल लाठी नहीं बनाई, बल्कि बाँसुरी भी बनाई। इससे सिद्ध होता है कि मनुष्य ने जीवन की आवश्यकताओं के साथ-साथ कला और सौन्दर्य को भी महत्त्व दिया है। लेखक आगे प्रकृति के सौन्दर्य के प्रति मानव की संवेदनशीलता का वर्णन करता है। सूर्योदय, ऊषा की लालिमा, ओस की बूँदें, बादलों का सौन्दर्य और इन्द्रधनुष के रंग मानव को केवल उपयोगिता के कारण आकर्षित नहीं करते, बल्कि उसके भीतर सौन्दर्यबोध और आनंद की अनुभूति उत्पन्न करते हैं। मानव शरीर की संरचना का उल्लेख करते हुए लेखक कहते हैं कि पेट नीचे, हृदय ऊपर और मस्तिष्क सबसे

ऊपर स्थित है। यह व्यवस्था प्रतीकात्मक रूप से बताती है कि मनुष्य का जीवन केवल पेट तक सीमित नहीं है; उसे भावनाओं और बुद्धि का भी विकास करना चाहिए। जब मनुष्य सीधा खड़ा हुआ, तब उसने पशुता पर मानवता की विजय की घोषणा की। लेखक का मानना है कि मनुष्य को गेहूँ की आवश्यकता अवश्य है, किंतु उसका लक्ष्य केवल पेट भरना नहीं होना चाहिए। उपवास, व्रत और तपस्या जैसी परंपराएँ इसी बात का संकेत हैं कि मनुष्य भौतिक इच्छाओं पर नियंत्रण स्थापित करना चाहता है। संक्षेप में लेखक कहते हैं कि जब तक मानव जीवन में गेहूँ और गुलाब अर्थात् श्रम और सौन्दर्य, शरीर और मन, भौतिकता और संस्कृति का संतुलन बना रहा, तब तक मनुष्य सुखी और आनंदित रहा। वह काम भी करता था और गीत भी गाता था। परंतु जब श्रम केवल पेट पालने का साधन बन गया और उसमें आनंद, संगीत तथा सृजनशीलता समाप्त हो गई, तब जीवन नीरस, थकाऊ और कष्टपूर्ण बन गया है।

लेखक ने मानव सभ्यता के विकास, भौतिकता और सांस्कृतिक मूल्यों के संघर्ष तथा विज्ञान की भूमिका पर अपने विचार व्यक्त किए हैं। यहाँ 'गेहूँ' भौतिक आवश्यकताओं, भोजन और जीवन-निर्वाह का प्रतीक है, जबकि 'गुलाब' सौंदर्य, संस्कृति, कला, प्रेम और मानसिक उन्नति का प्रतीक है। लेखक ने श्रीकृष्ण को 'सांवला' कहकर संबोधित किया है। मथुरा जाने से पूर्व वे एक साधारण ग्वाले के रूप में गायें चराते थे और बाँसुरी-वादन करते थे। सामान्य ग्रामीण जीवन व्यतीत करने के बावजूद उन्होंने अपने उच्च आदर्शों और सांस्कृतिक मूल्यों को नहीं छोड़ा। मथुरा पहुँचने के बाद भी वे अपनी सांस्कृतिक जड़ों और लोक-परंपराओं से जुड़े रहे तथा बाँसुरी-वादन नहीं छोड़ा। लेखक अनेक उदाहरणों द्वारा यह स्पष्ट करते हैं कि मानव जीवन की पूर्णता केवल जीविका में नहीं, बल्कि सांस्कृतिक और आध्यात्मिक मूल्यों के संतुलित विकास में निहित है। लेखक कहते हैं कि समय के साथ गुलाब का वास्तविक अर्थ विकृत हो गया। जो गुलाब कभी सौंदर्य और संस्कृति का प्रतीक था, वही विलासिता, भ्रष्टाचार, भोग-विलास और नैतिक पतन का प्रतीक बन गया है। परिणामस्वरूप समाज में संघर्ष, युद्ध और विनाश की स्थितियाँ उत्पन्न हुईं। महाभारत का उदाहरण देकर लेखक बताते हैं कि जब शक्ति और वैभव का दुरुपयोग होता है, तब परिवार, समाज और राष्ट्र विनाश की ओर बढ़ते हैं। आज भी संसार में चारों ओर संघर्ष और अशांति दिखाई देती है, मानो महाभारत की पुनरावृत्ति हो रही हो। लेखक प्रतीकात्मक रूप से कहता है कि गेहूँ खेतों में और गुलाब बगीचों में रो रहे हैं, क्योंकि मनुष्य ने दोनों के वास्तविक महत्त्व को समझने के बजाय उनका दुरुपयोग किया है। एक समय ऐसा लगता है कि मानव को फिर से गेहूँ और गुलाब के बीच संतुलन स्थापित करना चाहिए, अर्थात् भौतिक समृद्धि और मानसिक सांस्कृतिक विकास दोनों का संतुलन आवश्यक है। तभी जीवन पूर्ण सुखी, संतुलित और सार्थक बन सकता है। किंतु लेखक का मानना है कि मानव इतिहास की धारा को पीछे नहीं मोड़ा जा सकता। मानव निरंतर आगे बढ़ने वाला यात्री है। इसीलिए लेखक एक नए आदर्श की कल्पना करता है— 'गेहूँ पर गुलाब की विजय'। इसका अर्थ यह नहीं है कि भोजन या भौतिक आवश्यकताओं का महत्त्व समाप्त हो जाए, बल्कि यह कि मनुष्य का जीवन केवल रोटी कमाने तक सीमित न रहे। जब उसकी मूलभूत आवश्यकताएँ पूरी हो जाएँ, तब वह कला, संस्कृति, सौंदर्य, प्रेम और मानसिक विकास की ओर अधिक ध्यान दे सके। लेखक को विश्वास है कि यह लक्ष्य विज्ञान की सहायता से प्राप्त किया जा सकता है। विज्ञान ने यह स्पष्ट कर दिया है कि गेहूँ किन तत्वों से बनता

है और भूख का कारण क्या है। भविष्य में विज्ञान इतनी प्रगति कर सकता है कि भोजन की समस्या का समाधान हो जाए। वह संकेत करता है कि यदि विज्ञान विनाशकारी हथियारों और युद्धों के बजाय मानव-कल्याण की समस्याओं पर ध्यान दे, तो वह ऐसे साधन विकसित कर सकता है जिनसे अन्न और अन्य आवश्यक वस्तुएँ प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हों। लेखक आगे कहते हैं कि उन्नत बीज, खाद, सिंचाई और कृषि तकनीकों के कारण उत्पादन लगातार बढ़ रहा है। विज्ञान मानव को उस दिशा में ले जा रहा है जहाँ भोजन और जीवन की आवश्यक वस्तुओं की कमी समाप्त हो सकती है। तब मनुष्य की ऊर्जा केवल जीविका के संघर्ष में न लगकर मानसिक और सांस्कृतिक उन्नति में लग सकेगी। अंत में लेखक 'प्रचुरता' शब्द के साथ प्रश्नचिन्ह लगाकर संकेत करता है कि केवल भौतिक वस्तुओं की अधिकता ही मानव जीवन का अंतिम लक्ष्य नहीं है। वास्तविक प्रश्न यह है कि क्या यह प्रचुरता मानव को अधिक मानवीय, संवेदनशील और संस्कारित बना पाएगी? यही भविष्य की सबसे बड़ी चुनौती है।

लेखक ने भौतिक समृद्धि गेहूँ और सांस्कृतिक-मानसिक उन्नति गुलाब के संबंध को स्पष्ट करते हुए मानव सभ्यता के आदर्श भविष्य की कल्पना प्रस्तुत की है। लेखक का मानना है कि केवल भौतिक संपन्नता से मानव को वास्तविक सुख और शांति प्राप्त नहीं हो सकती। यदि प्रचुरता के साथ नैतिकता, आत्मसंयम और सांस्कृतिक चेतना न हो, तो वह राक्षसी प्रवृत्तियों को जन्म दे सकती है। लेखक 'सोने की लंका' का उदाहरण देते हुए बताते हैं कि केवल धन-संपत्ति और वैभव किसी समाज को महान नहीं बनाते। लंका स्वर्णमयी थी, परंतु वहाँ रावण और राक्षसी प्रवृत्तियों का शासन था। इस नगरी के निवासी दुराचारी निशाचर राक्षस थे। वे दिन में विश्राम करते और रात्रि में हिंसा, अत्याचार तथा स्त्रियों के अपहरण जैसे अनैतिक कार्यों में संलग्न रहते थे। इसलिए समृद्धि तभी कल्याणकारी है, जब उसके साथ मानवीय मूल्य जुड़े हों। लेखक के अनुसार मनुष्य की भूख केवल पेट तक सीमित नहीं रहती। भोजन की आवश्यकता पूरी होने के बाद वासनाएँ और भोग-लालसाएँ जन्म ले सकती हैं। इसलिए यह आवश्यक है कि मनुष्य अपनी वृत्तियों को नियंत्रित और परिष्कृत करे। आधुनिक मनोविज्ञान इसके लिए दो उपाय बताते हैं- इंद्रियों का संयम और वृत्तियों का उन्नयन। इन्द्रिय-संयमन का अर्थ है अपनी इन्द्रियों पर नियंत्रण स्थापित करना, जबकि वृत्ति-उन्नयन का आशय अपनी प्रवृत्तियों और आचरण को उच्च एवं सकारात्मक दिशा प्रदान करना है। इन्द्रिय-संयमन मनुष्य को दुष्प्रवृत्तियों पर नियंत्रण रखने में सहायता करता है, यद्यपि यह अत्यंत कठिन साधना है। इतिहास में अनेक ऋषि-मुनि भी इन्द्रियों के आकर्षण से पूर्णतः मुक्त नहीं रह सके। केवल दमन के स्थान पर वृत्तियों का परिष्कार और उनका रचनात्मक रूपांतरण अधिक प्रभावी माना जाता है। जब व्यक्ति अपनी प्रवृत्तियों को सदाचार, सत्य, प्रेम, कर्तव्यनिष्ठा और नैतिक मूल्यों की ओर उन्मुख करता है, तब उसके सच्चरित्र व्यक्तित्व तथा संस्कारित समाज का निर्माण संभव होता है। लेखक इन दोनों में वृत्तियों के उन्नयन को अधिक महत्त्व देता है। उसका आशय यह है कि मनुष्य अपनी इच्छाओं को निम्न भौतिक स्तर से उठाकर उच्च सांस्कृतिक, नैतिक और आध्यात्मिक स्तर की ओर मोड़े। अतः वृत्ति-उन्नयन ही वह प्रभावी साधन है, जो दुष्प्रवृत्तियों के जाल में फँसे मनुष्यों को उचित मार्ग का बोध कराकर उन्हें प्रगति, आत्मविकास तथा चरित्र-निर्माण की दिशा में अग्रसर करता है। इसी संदर्भ में लेखक 'गेहूँ पर गुलाब

की विजय' की बात करते हैं। इसका अर्थ है कि शरीर पर मन, भौतिकता पर संस्कृति और वासनाओं पर मानवीय मूल्यों की विजय हो। लेखक का विश्वास है कि मानव सभ्यता धीरे-धीरे उस दिशा में बढ़ रही है जहाँ आर्थिक और राजनीतिक संघर्षों का प्रभुत्व कम होगा और सांस्कृतिक चेतना का विकास होगा। लेखक 'गुलाब की दुनिया' की कल्पना करते हैं। यह ऐसी दुनिया है जहाँ जीवन केवल रोटी और भौतिक साधनों तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि सौंदर्य, प्रेम, कला, संगीत, नृत्य, आनंद और मानवीय संवेदनाओं से परिपूर्ण होगा। वहाँ कुरूपता, हिंसा, शोषण और गंदगी का स्थान नहीं होगा। मानव का जीवन रंगों, सुगंधों, गीतों और उत्साह से भर जाएगा। लेखक कहते हैं कि यह आदर्श संसार कोई असंभव स्वप्न नहीं है, बल्कि उसकी आहट वर्तमान में ही सुनाई दे रही है। आवश्यकता केवल दृष्टि बदलने की है। यदि मनुष्य भौतिकता के मोह से ऊपर उठकर जीवन को व्यापक दृष्टि से देखे, तो वह इस आने वाले सांस्कृतिक और मानवीय युग को पहचान सकता है। ऐसे युग में शारीरिक आवश्यकताओं की अपेक्षा मानसिक संतोष और भावनात्मक तृप्ति को अधिक महत्व प्राप्त होगा। यदि कोई इस सुखमय भविष्य की अनुभूति करना चाहता है, तो उसे दूरदर्शी एवं जिज्ञासापूर्ण दृष्टिकोण विकसित करना होगा। इसी भाव को व्यक्त करने के लिए लेखक उर्दू की पंक्ति उद्धृत करते हैं- 'शौके दीदार अगर है, तो नजर पैदा कर', अर्थात् यदि सत्य और सौंदर्य का दर्शन करना चाहते हो, तो उसे देखने की क्षमता विकसित करो।

3.5.4 स्वयंअध्ययन के लिए प्रश्न :

अ) निम्नलिखित वाक्यों के नीचे दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनिए।

1. 'गेहूँ बनाम गुलाब' के रचयिता कौन हैं?
 अ) सरदार पूर्णसिंह
 ब) रामवृक्ष बेनीपुरी
 क) बालकृष्ण भट्ट
 ड) रामचंद्र शुक्ल
2. रामवृक्ष बेनीपुरी का जन्म किस राज्य में हुआ था?
 अ) बिहार
 ब) उत्तर प्रदेश
 क) महाराष्ट्र
 ड) हरियाणा
3. रामवृक्ष बेनीपुरी का जन्म किस वर्ष हुआ था?
 अ) 1899
 ब) 1905
 क) 1910
 ड) 1920
4. रामवृक्ष बेनीपुरी किस राज्य की विधानसभा के सदस्य थे?
 अ) महाराष्ट्र
 ब) दिल्ली
 क) हरियाणा
 ड) बिहार

3.5.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ :

- * पुष्ट : दृढ़, पक्का, मजबूत
- * तृप्त : संतोष
- * क्षुधा : भूख
- * कामिनी : सुंदर स्त्री
- * समिधा : हवन में जलाने की लकड़ी
- * प्रस्फुटित : खिली हुई
- * काफ़िला : यात्रियों का दल
- * तरजीह : महत्त्व
- * गलीज : गंदा, मैला
- * इफरात : बहुत अधिक
- * दीदार : दर्शन, देखा-देखी
- * यंत्रणाएँ : कष्ट, पीड़ा
- * वासनाएँ : इच्छाएं
- * ऊषा : प्रातः
- * हस्तामलकवत् : हथेली पर रखे हुए आँवले के समान
- * अभक्ष्य : जो खाने योग्य न हो
- * अकाय : जिसकी काया या शरीर न हो
- * उन्नयन : उन्नति

3.5.6 स्वयंअध्ययन के प्रश्नों के उत्तर :

- अ) 1) ब) रामवृक्ष बेनीपुरी 2) अ) बिहार 3) अ) 1899 4) ड) बिहार
5) ब) निबंध 6) अ) गेहूँ 7) क) श्रीकृष्ण 8) ब) गेहूँ
9) अ) गुलाब 10) ड) गेहूँ बनाम गुलाब
- आ) 1) अ) ललित 2) ब) प्रतीकात्मक 3) अ) भूख एवं शारीरिक 4) ब) मानसिक तृप्ति

- 5) ब) सूँघते 6) अ) रंगों 7) क) संतुलन 8) ड) मानव
9) ड) नज़र 10) ड) आचरण की सभ्यता

3.5.7 सारांश :

(1) हिंदी साहित्य में जिन साहित्यकारों ने अपने साहित्य सृजन से जो एक अमिट छाप छोड़ी है, उनमें रामवृक्ष बेनीपुरी का महत्वपूर्ण स्थान है। वे एक संवेदनशील पत्रकार तथा साहित्यकार तो थे ही, साथ ही वे एक क्रांतिकारी, निष्ठावान समाजसेवी और भाषा सहृदय मानव भी थे।

(2) रामवृक्ष बेनीपुरी ने उपन्यास, कहानी, नाटक, निबंध, रेखाचित्र, संस्मरण इन सभी विधाओं को अपनी कलम से समृद्ध किया है। हिंदी साहित्य में उनकी ख्याति का मुख्य आधार उनके द्वारा लिखे निबंध है।

(3) लेखक ने प्रस्तुत निबंध के माध्यम से संदेश दिया है कि मानव जीवन का अंतिम उद्देश्य केवल भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं, बल्कि मानसिक, सांस्कृतिक और मानवीय मूल्यों का विकास है। विज्ञान की सहायता से भोजन और अन्य आवश्यकताओं की समस्या का समाधान संभव है, परंतु उसके बाद भी मनुष्य को 'गुलाब' अर्थात् सौंदर्य, संस्कृति, प्रेम और उच्च जीवन-मूल्यों को अपनाना होगा। तभी मानव सभ्यता का वास्तविक उत्कर्ष संभव होगा।

(4) 'गेहूँ बनाम गुलाब' प्रतीकात्मक निबंध है। जिसमें गेहूँ भौतिक, आर्थिक, राजनीतिक सुख-समृद्धि एवं प्रगति का प्रतीक है तो गुलाब मानसिक एवं आध्यात्मिक प्रगति का प्रतीक है। वर्तमान समय में गेहूँ परिश्रम का प्रतीक तो गुलाब विलासिता का प्रतीक बन गया है। दोनों में समन्वय स्थापित करने की आवश्यकता है।

3.5.8 स्वाध्याय :

अ) लघुत्तरी प्रश्न।

1. रामवृक्ष बेनीपुरी का संक्षिप्त परिचय दीजिए।
2. 'गेहूँ बनाम गुलाब' में 'गेहूँ' और 'गुलाब' किनके प्रतीक हैं? स्पष्ट कीजिए।
3. रामवृक्ष बेनीपुरी ने 'गेहूँ' और 'गुलाब' के बीच क्या अंतर बताया है?
4. 'गेहूँ बनाम गुलाब' निबंध के उद्देश्य को स्पष्ट कीजिए।

आ) दीर्घोत्तरी प्रश्न।

1. 'गेहूँ बनाम गुलाब' निबंध का आशय स्पष्ट कीजिए।
2. 'गेहूँ बनाम गुलाब' निबंध के कथ्य पर प्रकाश डालिए।

3.5.9 क्षेत्रीय कार्य :

1. रामवृक्ष बेनीपुरी के समग्र साहित्य की सूची तैयार कीजिए।

2. मानवीय जीवन सुखी और आनंदी कब होता है? विषय पर निबंध लिखे।

3.5.10 अतिरिक्त अध्ययन हेतु संदर्भ :

1. गेहूँ बनाम गुलाब - बेनीपुरी रामवृक्ष, कलकत्ता, जनवाणी प्रकाशन।
2. रामवृक्ष बेनीपुरी और उनका साहित्य - चव्हाण गजानन, नई दिल्ली, अनामिका प्रकाशन।



3.6 साहित्य और जीवन

– आचार्य नंददुलारे वाजपेयी

अनुक्रम

3.6.1 उद्देश्य

3.6.2 प्रस्तावना

3.6.3 विषय विवेचन

3.6.3.1 आचार्य नंददुलारे वाजपेयी का जीवन परिचय

3.6.3.2 'साहित्य और जीवन' निबंध का परिचय

3.6.3.3 'साहित्य और जीवन' निबंध का आशय

3.6.4 स्वयंअध्ययन के लिए प्रश्न

3.6.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

3.6.6 स्वयंअध्ययन के प्रश्नों के उत्तर

3.6.7 सारांश

3.6.8 स्वाध्याय

3.6.9 क्षेत्रीय कार्य

3.6.10 अतिरिक्त अध्ययन हेतु संदर्भ

3.6.1 उद्देश्य :

प्रस्तुत निबंध के अध्ययन के बाद आप -

- 1) निबंधकार आचार्य नंददुलारे वाजपेयी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व से परिचित होंगे।
- 2) आचार्य नंददुलारे वाजपेयी की निबंध शैली से परिचित होंगे।
- 3) 'साहित्य और जीवन' निबंध के कथ्य से परिचित होंगे।
- 4) 'साहित्य और जीवन' निबंध के कथानक से परिचित होंगे।
- 5) साहित्य और जीवन के अंतर्संबंधों से परिचित होंगे।

3.6.2 प्रस्तावना :

आधुनिक हिंदी आलोचना के क्षेत्र में आचार्य नंददुलारे वाजपेयी का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण और विशिष्ट है। हिंदी साहित्य को वैज्ञानिक दृष्टिकोण, गहन समीक्षात्मक चेतना तथा संतुलित आलोचनात्मक परिप्रेक्ष्य प्रदान करने वाले प्रमुख आलोचकों में उनका नाम अग्रणी रूप से लिया जाता है। उनकी विद्वत्ता, चिंतन की गहराई तथा भाषा की परिष्कृत एवं सुसंस्कृत शैली उन्हें हिंदी आलोचना-जगत में विशिष्ट पहचान प्रदान करती है। आचार्य नंददुलारे वाजपेयी के द्वारा लिखित 'साहित्य और जीवन' एक महत्वपूर्ण एवं विचारोत्तेजक निबंध है, जिसमें साहित्य और जीवन के पारस्परिक संबंधों का व्यापक एवं गंभीर विवेचन किया है। प्रस्तुत निबंध में लेखक ने साहित्य और जीवन के संबंध को लेकर प्रचलित समकालीन मतों एवं विवादों की आलोचनात्मक समीक्षा प्रस्तुत की है। साथ ही साहित्यकार की सृजनात्मक स्वतंत्रता तथा साहित्य के निष्पक्ष एवं वस्तुनिष्ठ मूल्यांकन की आवश्यकता पर भी विशेष बल दिया है। इस प्रकार यह निबंध साहित्य, जीवन-मूल्यों और सामाजिक चेतना के अंतर्संबंधों को समझने की दृष्टि प्रदान करता है तथा भारतीय समाज में साहित्य की भूमिका को रेखांकित करता है।

3.6.3 विषय विवेचन :

3.6.3.1 आचार्य नंददुलारे वाजपेयी का जीवन परिचय :

आचार्य नंददुलारे वाजपेयी आधुनिक हिंदी साहित्य के प्रमुख आलोचकों तथा युग-निर्माता साहित्यकारों में अग्रणी स्थान रखते हैं। उन्होंने हिंदी आलोचना को नई दृष्टि, सुदृढ़ वैचारिक आधार तथा वैज्ञानिक मूल्यांकन-पद्धति प्रदान की है। आलोचना के अतिरिक्त साहित्य-सृजन, पत्रकारिता, संपादन, अध्यापन एवं प्रशासन के क्षेत्र में भी उनका योगदान अत्यंत उल्लेखनीय रहा है। हिंदी साहित्य में छायावाद की प्रतिष्ठा एवं उसके सैद्धांतिक स्वरूप के निर्धारण में वाजपेयी की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। उन्होंने जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' और सुमित्रानंदन पंत को 'छायावाद की वृहत्त्रयी' के रूप में प्रतिष्ठित किया है। इसके साथ ही उन्होंने छायावादोत्तर हिंदी कविताओं में नई कविता, प्रयोगवाद तथा प्रगतिवाद का गहन एवं तटस्थ विश्लेषण प्रस्तुत किया है। हिंदी साहित्य में 'प्रयोगवाद' शब्द के प्रचलन और उसकी आलोचनात्मक अवधारणा के विकास का

श्रेय भी मुख्यतः उन्हें ही दिया जाता है। एक समीक्षक के रूप में उन्हें इतनी ख्याति प्राप्त हुई है कि उनके साहित्यकार, पत्रकार, संपादक और शिक्षाविद् रूप पर अपेक्षाकृत कम ध्यान दिया है। वस्तुतः उनका व्यक्तित्व बहुआयामी तथा कृतित्व अत्यंत समृद्ध है। उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व का संक्षिप्त परिचय निम्नलिखित रूप में प्रस्तुत है-

1. जन्म एवं जन्मस्थान :

आचार्य नंददुलारे वाजपेयी का जन्म 4 सितंबर, 1906 ई. को उत्तर प्रदेश के उन्नाव जनपद के मगरायर नामक ग्राम में हुआ था।

2. परिवार :

आचार्य नंददुलारे वाजपेयी के पिता का नाम गोवर्धनलाल वाजपेयी तथा माता का नाम जनकदुलारी था। उनके पिता आर्य समाज के प्रति गहरी आस्था रखते थे और अपने गाँव के सर्वाधिक शिक्षित तथा प्रगतिशील व्यक्तियों में गिने जाते थे। वे हिंदी के अध्यापक भी रहे हैं। उन्नीस वर्ष की आयु में आचार्य वाजपेयी का विवाह श्रीमती सावित्री देवी के साथ हुआ था। उन्हें दो पुत्र और एक पुत्री है।

3. शिक्षा :

आचार्य नंददुलारे वाजपेयी की प्रारंभिक शिक्षा हजारीबाग में संपन्न हुई। वहीं मिशन कॉलेजिएट स्कूल से उन्होंने मैट्रिकुलेशन तथा सेंट कोलंबस कॉलेज से इंटरमीडिएट की परीक्षा उत्तीर्ण की है। इसके पश्चात सन् 1922 ई. में काशी हिंदू विश्वविद्यालय से बी.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की, जिसमें वे संपूर्ण विश्वविद्यालय में चौथे स्थान पर रहे। सन् 1929 ई. में वहीं से एम.ए. हिंदी की परीक्षा उत्तीर्ण की। सन् 1929 से 1930 तक उन्होंने 'मध्यकालीन हिंदी काव्य' विषय पर अनुसंधान कार्य किया है।

4. नौकरी :

आचार्य नंददुलारे वाजपेयी सन् 1941 से 1947 तक काशी हिंदू विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में अध्यापक के रूप में कार्यरत रहे हैं। इसके पश्चात उन्होंने सन् 1947 से 1965 तक सागर विश्वविद्यालय में हिंदी विभागाध्यक्ष के रूप में कार्य किया है। सन् 1965 ई. में उन्हें विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन का उपकुलपति नियुक्त किया गया, जहाँ उन्होंने अपनी विद्वत्ता और प्रशासनिक क्षमता का सफल परिचय दिया है।

5. निधन :

हिंदी साहित्य के वरिष्ठ आलोचक एवं विद्वान आचार्य नंददुलारे वाजपेयी का 21 अगस्त, 1967 ई. को मध्य प्रदेश के उज्जैन में हृदयाघात के कारण निधन हुआ।

आचार्य नंददुलारे वाजपेयी का साहित्य परिचय :

आचार्य नंददुलारे वाजपेयी हिंदी की स्वच्छंदतावादी समीक्षा-पद्धति के एक महत्वपूर्ण आधार-स्तंभ

माने जाते हैं। हिंदी आलोचना के क्षेत्र में उनका योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है। यद्यपि उन्होंने समीक्षा-क्षेत्र में द्विवेदी युग में ही पदार्पण किया था, तथापि उनकी समीक्षा-दृष्टि का वास्तविक एवं सर्वांगीण विकास शुक्लोत्तर युग में परिलक्षित होता है। अपनी मौलिक दृष्टि, गहन अध्ययन और निष्पक्ष मूल्यांकन-पद्धति के बल पर उन्होंने हिंदी साहित्य की आलोचना-परंपरा को विशेष रूप से समृद्ध किया है। उनकी प्रमुख कृतियाँ निम्नलिखित हैं-

आलोचनात्मक कृतियाँ :

- | | |
|---|--|
| 1. जयशंकर प्रसाद | 2. प्रेमचन्द्र - एक साहित्यिक विवेचन |
| 3. आधुनिक - साहित्य | 4. नया साहित्य : नए प्रश्न |
| 5. महाकवि - सूरदास | 6. कवि निराला |
| 7. नई कविता | 8. कवि सुमित्रानन्दन पंत |
| 9. रस सिद्धान्त नए संदर्भ | 10. साहित्य का आधुनिक युग |
| 11. आधुनिक साहित्य सृजन और समीक्षा | 12. रीति और शैली |
| 13. रचनावली (८ खण्डों में) | 14. हिन्दी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास |
| 15. पाश्चात्य सौंदर्य शास्त्र का इतिहास | 16. राष्ट्रभाषा की कुछ समस्याएं |

निबंध साहित्य : 1. हिन्दी साहित्य बीसवीं शताब्दी
2. राष्ट्रीय साहित्य तथा अन्य निबंध 3. प्रकीर्णिका

संस्मरण साहित्य : 1. यादें बोल उठीं

व्यंग्य लेख : 1. भुलकड़ों का देश

संपादन : 1. भारत (साप्ताहिक पत्र) 2. रामचरितमानस (विशेषांक)
3. आलोचना (त्रैमासिक) 4. सूरसागर

सम्मान : आचार्य नंददुलारे वाजपेयी के सम्मान में स्थापित 'आचार्य नंददुलारे वाजपेयी आलोचना पुरस्कार' द्वारा प्रतिवर्ष उत्कृष्ट साहित्यकारों को सम्मानित किया जाता है।

3.6.3.2 'साहित्य और जीवन' निबंध का परिचय :

'साहित्य और जीवन' आचार्य नंददुलारे वाजपेयी का एक महत्वपूर्ण चिंतन-प्रधान निबंध है, जिसमें साहित्य और जीवन के अंतःसंबंधों पर गंभीर एवं सूक्ष्म विवेचन प्रस्तुत किया है। निबंधकार ने साहित्य में चित्रित जीवन और यथार्थ जीवन के मध्य विद्यमान अंतर, समीक्षा की प्रचलित प्रवृत्तियों तथा अपने आलोचनात्मक दृष्टिकोण का सुव्यवस्थित विश्लेषण किया है। आचार्य नंददुलारे वाजपेयी उस स्थूल प्रगतिवादी दृष्टिकोण का

प्रबल विरोध करते हैं, जो साहित्य को मात्र राजनीतिक, सामाजिक अथवा राष्ट्रीय प्रयोजनों की प्राप्ति का साधन मानता है। उनकी दृष्टि में साहित्य और जीवन का संबंध अत्यंत विस्तृत, गहन और शाश्वत है; इसे क्षणिक परिस्थितियों या तात्कालिक आवश्यकताओं के सीमित दायरे में नहीं बांधा जा सकता। वे साहित्य को राजनीतिक प्रचार का साधन बनाए जाने की प्रवृत्ति की कटु आलोचना करते हुए चेतावनी देते हैं कि ऐसा दृष्टिकोण साहित्य के मूल स्वरूप को विकृत कर सकता है। फ्रांसीसी राज्यक्रांति के पश्चात यूरोप में विकसित साहित्यिक प्रवृत्तियों का उदाहरण देकर वे स्पष्ट करते हैं कि जीवन-मूल्यों के परिवर्तन के साथ साहित्य की विषयवस्तु और अभिव्यक्ति-शैली भी अनिवार्यतः परिवर्तित होती है। साथ ही, वे साहित्यकार के निजी जीवन के अध्ययन को उपयोगी तो मानते हैं, परंतु उसे साहित्य-मूल्यांकन की एकमात्र कसौटी स्वीकार करने से असहमति व्यक्त करते हैं। इस प्रकार यह निबंध साहित्य और जीवन के व्यापक, संतुलित एवं यथार्थपरक संबंध को प्रभावी ढंग से प्रतिपादित करता है।

3.6.3.3 'साहित्य और जीवन' निबंध का आशय :

आचार्य नंददुलारे वाजपेयी ने अपने महत्वपूर्ण निबंध 'साहित्य और जीवन' के कथानक में साहित्य और जीवन के घनिष्ठ संबंध की अनिवार्यता पर बल देते हुए स्पष्ट किया है कि साहित्य को केवल राजनीतिक अथवा सामाजिक प्रचार का साधन मानना उचित नहीं है। साहित्य का उद्देश्य जीवन की गहन एवं व्यापक सच्चाइयों को उद्घाटित करना है, न कि मात्र तात्कालिक आवश्यकताओं की पूर्ति करना है। साहित्यकारों का मूल्यांकन उनकी रचनात्मक स्वतंत्रता और वैयक्तिक दृष्टि के आधार पर किया जाना चाहिए, न कि उनके बाह्य जीवन अथवा राजनीतिक गतिविधियों के आधार पर। साहित्य जीवन की सीमाओं का अतिक्रमण कर एक व्यापक एवं चिरस्थायी दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है, जो मानवता के उच्च आदर्शों की प्रतिष्ठा करता है।

लेखक साहित्य और जीवन के संबंध पर चल रही समकालीन बहस की आलोचनात्मक समीक्षा करते हैं। लेखक कहते हैं कि वर्तमान समय में साहित्य को सीधे जीवन, विशेषकर राजनीतिक और सामाजिक आंदोलनों से जोड़ने की माँग बहुत प्रबल हो रही है। इस कारण लोग उन साहित्यकारों को अधिक महत्व देने लगे हैं, जो सक्रिय रूप से आंदोलनों में भाग लेते हैं, जेल जाते हैं या राजनीतिक संघर्षों से जुड़े रहते हैं। विद्यार्थियों और समाज में भी ऐसे विचारों को आज उत्साहपूर्वक स्वीकार किया जा रहा है। लेखक के अनुसार इस प्रवृत्ति ने एक प्रकार का उन्माद उत्पन्न कर दिया है, जिसमें साहित्य के कलात्मक और मानवीय मूल्यों की उपेक्षा होने लगी है। कुछ लोग तो यह अपेक्षा करने लगे हैं कि साहित्य केवल विचारों से ही नहीं, बल्कि लेखक के व्यक्तिगत संघर्षों और बलिदानों से भी प्रमाणित होना चाहिए। ऐसी स्थिति साहित्यिक समीक्षा की निष्पक्षता को नष्ट कर सकती है तथा जीवन और साहित्य दोनों को कृत्रिम एवं पाखंडपूर्ण बना सकती है। लेखक अपनी बात को उदाहरण स्वरूप स्पष्ट करने की कोशिश करते हैं कि बंगाल में इसी प्रकार की संकुचित मानसिकता के कारण महान साहित्यकार रवीन्द्रनाथ ठाकुर को भी आलोचनाओं का सामना करना पड़ा था। लेखक स्वीकार करते हैं कि विशेष परिस्थितियों में साहित्य का उपयोग राजनीतिक प्रचार के साधन के रूप में हो सकता है और अन्य देशों में भी ऐसा हुआ है, किंतु साहित्य का मूल्यांकन केवल इसी आधार पर करना उचित नहीं है। अतः

साहित्य की श्रेष्ठता का निर्णय केवल राजनीतिक सक्रियता या सामाजिक संघर्षों में भागीदारी से नहीं, बल्कि उसकी साहित्यिक गुणवत्ता, कलात्मकता, मानवीय संवेदना और स्थायी मूल्यों के आधार पर किया जाना चाहिए।

लेखक साहित्य और जीवन के संबंध को व्यापक दृष्टिकोण से देखने की प्रेरणा देते हैं। लेखक का मानना है कि साहित्य का मूल्यांकन केवल तत्कालीन राष्ट्रीय, राजनीतिक या सामाजिक आवश्यकताओं के आधार पर नहीं किया जाना चाहिए। यदि हम साहित्य को केवल वर्तमान परिस्थितियों और क्षणिक समस्याओं तक सीमित कर देंगे, तो उसके वास्तविक स्वरूप और व्यापक महत्त्व को समझ नहीं पाएँगे। लेखक 'क्षितिज के पास के रक्तिम वर्ण' का प्रतीकात्मक प्रयोग करते हुए कहते हैं कि हमें केवल तत्काल दिखाई देने वाली घटनाओं या परिस्थितियों पर ही ध्यान नहीं देना चाहिए। इसके स्थान पर 'सम्पूर्ण सौरमण्डल' की भाँति साहित्य के विशाल, व्यापक और शाश्वत स्वरूप को भी देखना चाहिए। साहित्य केवल वर्तमान का चित्रण नहीं करता, बल्कि मानव जीवन के सार्वकालिक सत्य, आदर्श, सौंदर्य, करुणा, प्रेम और मानवीय मूल्यों को भी अभिव्यक्त करता है। लेखक आगे चेतावनी देते हैं कि क्षणिक और सीमित यथार्थ को ही वास्तविक यथार्थ मान लेना उचित नहीं है। साहित्य का वास्तविक यथार्थ उन आदर्शों और मानवीय मूल्यों से जुड़ा होता है, जो देश, काल और परिस्थितियों से परे स्थायी महत्त्व रखते हैं। इसलिए साहित्य और जीवन के संबंध को संकुचित दृष्टि से नहीं, बल्कि व्यापक और सार्वभौमिक दृष्टि से समझना चाहिए। अतः लेखक का मानना है कि साहित्य का उद्देश्य केवल तात्कालिक आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं, बल्कि मानव जीवन के शाश्वत सत्य और आदर्शों का उद्घाटन करना भी है। इसलिए साहित्य और जीवन के संबंध को व्यापक, गहन और दूरदर्शी दृष्टिकोण से देखना अत्यंत आवश्यक है।

लेखक ने साहित्य और जीवन के संबंध की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि तथा उसके बदलते स्वरूप का विवेचन किया है। लेखक बताते हैं कि साहित्य को जीवन से जोड़ने का विचार यूरोप में फ्रांसीसी राज्य-क्रांति के बाद विशेष रूप से विकसित हुआ है। इंग्लैंड के विलियम वड्सवर्थ और फ्रांस के विक्टर ह्यूगो जैसे साहित्यकारों ने इस विचारधारा को आगे बढ़ाया है। उस समय यह प्रवृत्ति उचित थी, क्योंकि मध्यकालीन कृत्रिम जीवन के स्थान पर सरल, स्वाभाविक और मानवीय मूल्यों पर आधारित नवीन जीवन का उदय हो रहा था। इसलिए साहित्य में भी प्रकृति-प्रेम, सरलता और मानवीय संवेदनाओं का चित्रण होने लगा है। लेखक आगे बताते हैं कि प्रारंभ में साहित्य और जीवन का संबंध स्वाभाविक तथा स्वस्थ था। इसी कारण अंग्रेज़ी आलोचक मैथ्यू आर्नल्ड जीवन-मूल्यों के आधार पर तथा वाल्टर पेटर सौंदर्य के आधार पर एक ही कवि की प्रशंसा करते थे। परंतु बाद में यूरोप में राष्ट्रीयता, क्षेत्रीयता और समाजवादी आंदोलनों का प्रभाव बढ़ा। विशेषकर रूस में साहित्य को समाजवाद की सेवा का साधन बना दिया गया, जिससे उसकी स्वतंत्रता प्रभावित हुई। लेखक के अनुसार जब साहित्य राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक या वैचारिक संगठनों का उपकरण बनता है, तब वह स्वतंत्र सृजन नहीं रहता है। साहित्य का जीवन से संबंध तो स्वाभाविक और कल्याणकारी है, किंतु जब उसे किसी विचारधारा या प्रचार का माध्यम बना दिया जाता है, तब उसकी स्वाधीनता समाप्त होती है। जिस प्रकार बंधनों में जकड़ा

हुआ जीवन स्वतंत्र नहीं रह सकता, ठीक उसी प्रकार बंधनों में बँधा साहित्य भी अपनी वास्तविक शक्ति को खो देता है। अतः लेखक इस बात की आलोचना करते हैं कि साहित्य और जीवन को जोड़ने के नाम पर साहित्य को संकुचित, सामयिक और तथाकथित 'मिथ्या यथार्थ' की अंधेरी गली में धकेला जा रहा है। लेखक के अनुसार साहित्य का संबंध जीवन से अवश्य होना चाहिए, पर वह स्वतंत्र, व्यापक और शाश्वत मानवीय मूल्यों पर आधारित होना चाहिए, न कि किसी राजनीतिक या सामाजिक बंधन पर।

लेखक साहित्य और जीवन के संबंध के संदर्भ में साहित्यकार के व्यक्तिगत जीवन को साहित्य-मूल्यांकन का आधार बनाने की प्रवृत्ति की समीक्षा करते हैं। लेखक बताते हैं कि साहित्य और जीवन के संबंध को स्पष्ट करने के लिए आलोचकों ने साहित्यकारों की जीवनी और व्यक्तिगत जीवन का अध्ययन आरंभ किया है। उनका मानना था कि किसी लेखक की रचनाओं को ठीक प्रकार से समझने के लिए उसके जीवन, विचारधारा, व्यक्तित्व और मानसिक विकास का ज्ञान आवश्यक है। इस दृष्टिकोण से कई लाभ भी हुए हैं। लेखकों के व्यक्तित्व और उनकी रचनात्मक प्रक्रिया को समझने में सहायता मिली तथा अनेक पाखंडियों का वास्तविक स्वरूप भी सामने आया है। किन्तु लेखक का मानना है कि मानव जीवन अत्यंत रहस्यमय, जटिल और बहुआयामी होता है। इसलिए केवल बाहरी घटनाओं या जीवन-परिस्थितियों के आधार पर किसी साहित्यकार की कृतियों का मूल्यांकन करना उचित नहीं है। यदि आलोचक पर्याप्त सूक्ष्म दृष्टि न रखें, तो वे साहित्य के वास्तविक मूल्य को समझने के बजाय केवल बाहरी जीवन तक सीमित रह जाएंगे। लेखक विशेष रूप से इस बात का विरोध करते हैं कि किसी व्यक्ति को केवल इसलिए श्रेष्ठ साहित्यकार मान लिया जाए क्योंकि वह सैनिक, आंदोलनकारी या सार्वजनिक जीवन का सक्रिय व्यक्ति है। ऐसे कार्यों का सम्मान समाज और राजनीति के क्षेत्र में अवश्य हो सकता है, पर साहित्यिक मूल्यांकन की कसौटी कुछ और है। साहित्य में महत्त्व उस बाहरी पद या भूमिका का नहीं, बल्कि उस आंतरिक चेतना, संवेदना और मानवीय अनुभव का है, जो रचना में व्यक्त होता है। लेखक के अनुसार साहित्य-समीक्षा को 'सैनिक' नहीं, बल्कि 'सैनिकत्व की आत्मा' को पहचानना चाहिए। लेखक कहते हैं कि अंग्रेजी साहित्य-समीक्षा में भी व्यक्तिगत चरित्र-चित्रण की यह पद्धति प्रचलित रही, किन्तु जीवन की जटिलता को समझने के बाद उसका महत्त्व कम होता गया है। लेखक का मानना है कि यदि असूक्ष्म दृष्टि वाले आलोचक साहित्यकारों के निजी जीवन को ही मूल्यांकन का आधार बनाएँगे, तो साहित्य में पक्षपात, विद्वेष और भ्रम फैलने की संभावना बढ़ जाएगी। इसलिए साहित्य का मूल्यांकन उसके आंतरिक गुणों, कलात्मकता और मानवीय संवेदनाओं के आधार पर किया जाना चाहिए।

लेखक साहित्यकार की स्वतंत्रता तथा साहित्य के निष्पक्ष मूल्यांकन की आवश्यकता पर बल देते हैं। लेखक का मानना है कि साहित्यकार को जीवन, समाज और साहित्य के संबंध में स्वतंत्र विचार रखने तथा अपनी रुचि और अनुभूति के अनुसार विभिन्न साहित्यिक मार्गों पर चलने का पूरा अधिकार होना चाहिए। किसी लेखक के साहित्य का मूल्यांकन केवल तत्कालीन सामाजिक, राजनीतिक या राष्ट्रीय आवश्यकताओं के आधार पर नहीं किया जा सकता। लेखक के अनुसार साहित्यकार के व्यक्तित्व, अनुभवों और रचनाओं को समझने के लिए हमें उसकी दृष्टि से संसार को देखने तथा उसकी अनुभूतियों के साथ सहानुभूति स्थापित करने का प्रयास

करना चाहिए। केवल उसके निजी जीवन की कमजोरियों, नैतिक त्रुटियों या राजनीतिक निष्क्रियता को देखकर उसकी साहित्यिक उपलब्धियों को नकारना उचित नहीं है। यदि किसी साहित्यकार ने अपनी रचनाओं के माध्यम से नई शैली, नवीन सौंदर्य-बोध और उच्च भाव-जगत् की सृष्टि की है, तो उसका मूल्यांकन उसी आधार पर होना चाहिए। लेखक उदाहरण स्वरूप रवीन्द्रनाथ ठाकुर का उल्लेख करते हैं। वे बताते हैं कि कुछ लोगों ने उनके महर्षि-सदृश व्यक्तित्व पर आक्षेप किए तथा राजनीति में सक्रिय भाग न लेने के कारण उनकी आलोचना भी की। किंतु लेखक प्रश्न उठाते हैं कि क्या किसी साहित्यकार की साहित्यिक महानता का निर्णय केवल उसकी राजनीतिक सक्रियता या सामाजिक भूमिका से किया जा सकता है? अतः लेखक का निष्कर्ष है कि साहित्यिक समीक्षा का आधार साहित्यकार की रचनात्मक प्रतिभा, कलात्मकता, भाव-संपदा और साहित्य में उसके योगदान का होना चाहिए, न कि उसके निजी जीवन या राजनीतिक गतिविधियों का। यही साहित्यिक मूल्यांकन की उचित और न्यायसंगत पद्धति है।

लेखक ने रवीन्द्रनाथ ठाकुर की साहित्यिक और मानवीय महानता का वर्णन करते हुए उनके प्रति किए जाने वाले संकुचित आलोचनाओं का खंडन किया है। लेखक का कहना है कि भारत की दार्शनिक परंपरा बाहरी कर्मों की अपेक्षा चेतना, विचार और आत्मिक शक्ति को अधिक महत्त्व देती है। ऐसे देश में रवीन्द्रनाथ ठाकुर के योगदान का उचित सम्मान होना अपेक्षित है। लेखक के अनुसार रवीन्द्रनाथ ने स्वदेश-प्रेम को संकुचित राष्ट्रवाद की सीमाओं से ऊपर उठाकर विश्व-मानवता और विश्व-प्रेम के स्तर पर प्रतिष्ठित किया है। उन्होंने अपने उदार विचारों, गहन अनुभूतियों और विराट कल्पना के माध्यम से मानव-मात्र की एकता, शांति और सामंजस्य का आदर्श प्रस्तुत किया है। उनका दृष्टिकोण केवल किसी एक प्रदेश, जाति या राष्ट्र तक सीमित नहीं था, बल्कि संपूर्ण विश्व के कल्याण से जुड़ा हुआ था। इसलिए उनकी साहित्य-साधना का महत्त्व अत्यंत व्यापक और दूरगामी है। लेखक आगे कहते हैं कि यदि हम उनके इस महान योगदान की उपेक्षा करके उनसे राजनीतिक नेता या जन-आंदोलन के अग्रदूत बनने की अपेक्षा करें, तो यह हमारी संकुचित सोच का परिचायक होगा। प्रत्येक व्यक्ति की प्रतिभा और कार्यक्षेत्र अलग होता है। रवीन्द्रनाथ का कार्य मानवता के लिए उच्च आदर्शों की सृष्टि करना था, न कि आवश्यक रूप से राजनीतिक नेतृत्व करना। अतः लेखक का मानना है कि रवीन्द्रनाथ ठाकुर की महानता उनके विश्वमानवीय दृष्टिकोण, उदारता और शांति-संदेश में निहित है। उनके योगदान का मूल्यांकन इसी आधार पर होना चाहिए, न कि राजनीतिक सक्रियता की कसौटी पर।

लेखक ने साहित्य और जीवन के गहरे संबंध को स्वीकार करते हुए दोनों के बीच के मूलभूत अंतर को स्पष्ट करने की कोशिश की है। लेखक के अनुसार साहित्य और जीवन एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं, फिर भी दोनों पूर्णतः समान नहीं हैं। जीवन एक निरंतर प्रवाहित होने वाली धारा के समान है, जिसमें असंख्य घटनाएँ, अनुभव और परिस्थितियाँ शामिल होती हैं। इसके विपरीत साहित्य जीवन के उन्हीं महत्त्वपूर्ण, प्रेरणादायक और स्मरणीय अनुभवों को चुनकर अभिव्यक्त करता है, जो स्थायी मूल्य रखते हैं। लेखक साहित्य की तुलना जीवन के आकाश में चमकते नक्षत्रों से करता है। जीवन में अनेक ज्ञात-अज्ञात तथा नियमित-अनियमित घटनाएँ घटित होती रहती हैं, जबकि साहित्य में चयन, संयोजन और कलात्मक अनुशासन आवश्यक होता है। यद्यपि

साहित्यकार अपने समय और समाज से प्रभावित होता है, फिर भी उसकी रचना केवल तत्कालीन परिस्थितियों का प्रतिबिम्ब नहीं होती। लेखक का मानना है कि प्रतिभाशाली व्यक्ति वर्तमान में रहते हुए भी अतीत से प्रेरणा और भविष्य की संभावनाओं से जुड़ा रहता है। विशेष रूप से महान साहित्यकार देश और काल की सीमाओं से ऊपर उठकर सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों को अभिव्यक्त करते हैं। उनके लिए समकालीन जीवन का महत्त्व तभी है, जब वह व्यापक और शाश्वत जीवन-सत्य को व्यक्त करने में सहायक हो। अतः महान साहित्य केवल तत्कालीन जीवन का चित्रण नहीं करता, बल्कि मानव जीवन के सार्वकालिक और सार्वभौमिक सत्य, आदर्श तथा अनुभवों को कलात्मक रूप में प्रस्तुत करता है। यही उसकी स्थायी महत्ता है।

लेखक साहित्य और जीवन के अंतर को स्पष्ट करते हुए साहित्य की विशिष्टता तथा उसकी महत्ता का प्रतिपादन करते हैं। लेखक के अनुसार साहित्य केवल जीवन का यथार्थ चित्रण नहीं करता, बल्कि उसमें सौंदर्य, आदर्श, कल्पना और मानवीय आकांक्षाओं का भी समावेश होता है। साहित्य-कला की अनेक ऐसी सुंदर और प्रभावशाली विशेषताएँ हैं, जो जीवन के स्थूल और सामान्य यथार्थ से पूरी तरह मेल नहीं खातीं। साहित्य में राम और कृष्ण का चित्रण अत्यंत सुंदर, आदर्श और आकर्षक रूप में प्रस्तुत हुआ है। संभव है कि वास्तविक जीवन में उनका स्वरूप ऐसा न रहा हो, किंतु साहित्य ने उन्हें आदर्श रूप में प्रस्तुत किया है। इसी प्रकार साहित्य की अतिशयोक्तियाँ और कल्पनाएँ जीवन की कठोर, नीरस और रूखी वास्तविकताओं को इंद्रधनुष की भाँति सुंदर और आकर्षक बनाती हैं। साहित्य में केवल मनुष्य का वर्तमान जीवन ही नहीं, बल्कि उसकी अधूरी इच्छाएँ, सपने, आकांक्षाएँ और आदर्श भी समाहित रहते हैं। जीवन जहाँ अपूर्ण है, वहीं साहित्य उस अपूर्णता को पूर्णता की दिशा प्रदान करता है। साहित्य मानवता के आदर्श स्वरूप और उसकी श्रेष्ठ संभावनाओं का चित्र प्रस्तुत करता है। निष्कर्ष रूप में कह सकते हैं कि साहित्य जीवन की अपेक्षा अधिक सारवान, व्यापक और परिपूर्ण है। वह केवल जीवन का प्रतिबिम्ब नहीं, बल्कि उसका मार्गदर्शक और नियामक भी है। साहित्य मनुष्य को उच्च आदर्शों की प्रेरणा देकर उसके जीवन को दिशा प्रदान करता है।

3.6.4 स्वयंअध्ययन के लिए प्रश्न :

अ) निम्नलिखित वाक्यों के नीचे दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनिए।

- आचार्य नंददुलारे वाजपेयी का जन्म किस राज्य में हुआ था?

अ) उत्तर प्रदेश	ब) मध्य प्रदेश
क) आंध्र प्रदेश	ड) हिमाचल प्रदेश
- आचार्य नंददुलारे वाजपेयी ने हिंदी विषय में एम. ए. की शिक्षा किस विश्वविद्यालय से प्राप्त की थी?

अ) सागर विश्वविद्यालय	ब) विक्रम विश्वविद्यालय
क) काशी हिंदू विश्वविद्यालय	ड) मुंबई विश्वविद्यालय
- आचार्य नंददुलारे वाजपेयी किस विश्वविद्यालय के उपकुलपति नियुक्त किए गए थे?

- अ) सागर
क) विक्रम

ब) काशी हिंदू
ड) शिवाजी

4. आचार्य नंददुलारे वाजपेयी की पत्नी का नाम क्या था?
अ) सावित्री देवी
क) रेणुका देवी
ब) बबिता देवी
ड) पार्वती देवी

5. हिंदी साहित्य में 'प्रयोगवाद' शब्द के प्रचलन तथा उसकी अवधारणा के विकास का श्रेय किसे दिया जाता है?
अ) आचार्य रामचंद्र शुक्ल
क) आचार्य नंददुलारे वाजपेयी
ब) आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी
ड) आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी

6. आचार्य नंददुलारे वाजपेयी का निधन किस वर्ष हुआ था?
अ) 1960
क) 1970
ब) 1967
ड) 1975

7. साहित्य को जीवन से जोड़कर देखने की दृष्टि यूरोप में किस क्रांति के बाद विकसित हुई?
अ) फ्रांसीसी राज्य क्रांति
क) अमेरिकी क्रांति
ब) रूसी क्रांति
ड) चीनी क्रांति

8. 'साहित्य और जीवन' किस प्रकार का निबंध है?
अ) भावात्मक
क) ललित
ब) व्यंग्यात्मक
ड) चिंतनात्मक

9. छायावाद की प्रतिष्ठा तथा उसके सैद्धांतिक स्वरूप के निर्धारण में किसका महत्वपूर्ण योगदान रहा है?
अ) कमलेश्वर
क) सरदार पूर्णसिंह
ब) आचार्य नंददुलारे वाजपेयी
ड) रामवृक्ष बेनीपुरी

10. आचार्य नंददुलारे वाजपेयी ने काशी नागरी प्रचारिणी सभा में किस ग्रंथ का संपादन किया था?
अ) रामचरितमानस
क) सुरसागर
ब) भारत
ड) आलोचना

आ) निम्नलिखित वाक्यों के नीचे दिए गए विकल्पों में से उचित विकल्प चुनकर वाक्य फिर से लिखिए।

1. आचार्य नंददुलारे वाजपेयी का जन्म ----- ई. में हुआ था।
अ) 1900 ब) 1906 क) 1910 ड) 1915
2. आचार्य नंददुलारे वाजपेयी ने-----विश्वविद्यालय से बी.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की थी।
अ) काशी हिंदू ब) सागर क) विक्रम ड) शिवाजी
3. 'साहित्य और जीवन' -----विधा की रचना है।
अ) संस्मरण ब) निबंध क) रेखाचित्र ड) कहानी
4. 'साहित्य और जीवन' एक -----निबंध है।
अ) ललित ब) चिंतनात्मक क) भावात्मक ड) व्यंग्यात्मक
5. ----- रचना आचार्य नंददुलारे वाजपेयी की नहीं है ?
अ) नई कविता ब) जयशंकर प्रसाद क) साहित्य और जीवन ड) आचरण की सभ्यता
6. आचार्य नंददुलारे वाजपेयी स्थूल -----दृष्टिकोण का विरोध करते हैं।
अ) प्रगतिवादी ब) गांधीवादी क) यथार्थवादी ड) कल्पनावादी
7. महाकवि -----का कार्य मानवता के लिए उच्च आदर्शों की सृष्टि करना था।
अ) शेक्सपियर ब) रवीन्द्रनाथ ठाकुर क) बिहारी ड) केशवदास
8. साहित्य मनुष्य को उच्च आदर्शों की -----प्रदान करता है।
अ) प्रेरणा ब) कल्पना क) महत्ता ड) साधना
9. साहित्य को ----- प्रोपेगंडा का साधन बनाया जा रहा है।
अ) सामाजिक ब) धार्मिक क) सांस्कृतिक ड) राजनीतिक
10. साहित्यिक दृष्टि से -----का स्वतः कोई महत्त्व नहीं है।
अ) सैनिकत्व ब) कल्पना क) पुलिस ड) आनन्द भवन

3.6.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ :

- * उत्कर्ष : उन्नति, उत्थान, प्रगति
- * पाखंडपूर्ण : आडंबर, दिखावा, ढोंगी,
- * प्रोपेगंडा : जनमत को प्रभावित करने के लिए किया जानेवाला एक खास तरह का प्रचार है। मत प्रचार, दुष्प्रचार

- * परिधि : दायरा, सीमा, रेखा
- * समीचीन : उचित, उपयुक्त, तर्कसंगत,
- * सात्विक : शुद्ध, पवित्र, निर्मल, सद्गुणी, सच्चरित्र
- * परिपाटी : रीति, प्रथा, परम्परा
- * साधुवाद : प्रशंसा, बधाई, सराहना, धन्यवाद
- * अज्ञेयता : अबोधगम्यता, दुर्बोधता, अगोचर
- * स्थूल : मूर्त , मोटा, प्रत्यक्ष, भारी
- * मनोरम : आनंदित होना, सुंदर, आकर्षक, रमणीय
- * मार्गदृष्टि : पथ-प्रदर्शक, प्रणेता

3.6.6 स्वयंअध्ययन के प्रश्नों के उत्तर :

- | | |
|---------------------------------|---------------------------------|
| अ) 1) अ - उत्तर प्रदेश | 2) क - काशी हिंदू विश्वविद्यालय |
| 3) क - विक्रम | 4) अ - सावित्री देवी |
| 5) क - आचार्य नंददुलारे वाजपेयी | 6) ब - 1967 |
| 7) अ - फ्रांसीसी राज्य क्रांति | 8) ड - चिंतनात्मक |
| 9) ब - आचार्य नंददुलारे वाजपेयी | 10) क - सूरसागर |
| आ) 1) ब - 1906 | 2) अ - काशी हिंदू |
| 3) ब - निबंध | 4) ब - चिंतनात्मक |
| 5) ड - आचरण की सभ्यता | 6) अ - प्रगतिवादी |
| 7) ब - रवीन्द्रनाथ ठाकुर | 8) अ - प्रेरणा |
| 9) ड - राजनीतिक | 10) अ - सैनिकत्व |

3.6.7 सारांश :

(1) आचार्य नंददुलारे वाजपेयी हिंदी की स्वच्छंदतावादी समीक्षा-पद्धति के प्रमुख आधार-स्तंभ माने जाते हैं। उन्होंने हिंदी आलोचना को वैज्ञानिक दृष्टिकोण, सुदृढ़ वैचारिक आधार तथा संतुलित मूल्यांकन-पद्धति प्रदान की है।

(2) 'साहित्य और जीवन' निबंध में नंददुलारे वाजपेयी साहित्य और जीवन के मध्य घनिष्ठतम सम्बन्ध

स्थापित करने का प्रयास करते हैं, तथापि दोनों में एक मौलिक अन्तर सदैव विद्यमान रहता है। साहित्य में जो प्रभावशाली एवं सौन्दर्यपूर्ण विशेषताएँ होती हैं, वे यथार्थ जीवन में प्रायः अनुपस्थित रहती हैं। साहित्य में केवल मनुष्य के वास्तविक जीवन का चित्रण ही नहीं होता, अपितु उन अपूर्ण कामनाओं और आकांक्षाओं की भी अभिव्यक्ति होती है, जो सम्पूर्ण जीवनकाल में भी पूर्णतः साकार नहीं हो पाती है।

(3) जीवन मनुष्यता की अभिव्यक्ति है, तो साहित्य उस अभिव्यक्ति की आशा और उत्कण्ठा को भी अपने में समाहित किए हुए है। यदि जीवन अपूर्णता से आवृत्त है, तो साहित्य उसे सम्पूर्णता प्रदान करता है। इसीलिए उसकी सार्थकता 'साहित्य' नाम में ही निहित है।

3.6.8 स्वाध्याय :

अ) लघुत्तरी प्रश्न।

1. आचार्य नंददुलारे वाजपेयी का संक्षिप्त परिचय दीजिए।
2. साहित्य और जीवन निबंध का उद्देश्य लिखिए।
3. 'साहित्य और जीवन' निबंध का सारांश लिखिए।

आ) दीर्घोत्तरी प्रश्न।

1. 'साहित्य और जीवन' निबंध के कथ्य पर प्रकाश डालिए।
2. 'साहित्य और जीवन' निबंध का आशय स्पष्ट कीजिए।

3.6.9 क्षेत्रीय कार्य :

1. आचार्य नंददुलारे वाजपेयी के आलोचनात्मक साहित्य की सूची तैयार कीजिए।
2. स्थानीय कवि, लेखक अथवा साहित्यकार से भेंट कर साहित्य और जीवन के संबंध पर उनके विचार संकलित कीजिए।

3.6.10 अतिरिक्त अध्ययन हेतु संदर्भ :

1. आचार्य नंददुलारे वाजपेयी रचना संचयन - संपा. सत्यवान, नई दिल्ली, साहित्य अकादेमी।
2. आचार्य नंददुलारे वाजपेयी व्यक्ति और साहित्य - शर्मा रामाधार, कानपुर, अनुसंधान प्रकाशन।
3. आचार्य नंददुलारे वाजपेयी : साहित्य और समीक्षा - पाण्डेय ब्रजेश कुमार, नई दिल्ली, किशोर विद्या निकेतन।
4. आचार्य नंददुलारे वाजपेयी स्वच्छंदतावादी आलोचना के संदर्भ में - शास्त्री योगेश्वरी।
5. संचयिता आचार्य नंददुलारे वाजपेयी - संपा. मिश्र शिवकुमार, नई दिल्ली, शिल्पायन प्रकाशन।



इकाई 4
निबंध साहित्य
4.7 जमुना के तीरे-तीरे

– विद्यानिवास मिश्र

अनुक्रम

- 4.7.1 उद्देश्य
- 4.7.2 प्रस्तावना
- 4.7.3 विषय विवेचन
 - 4.7.3.1 विद्यानिवास मिश्र का जीवन परिचय
 - 4.7.3.2 'जमुना के तीरे-तीरे' निबंध का परिचय
 - 4.7.3.3 'जमुना के तीरे-तीरे' निबंध का आशय
- 4.7.4 स्वयंअध्ययन के लिए प्रश्न
- 4.7.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ
- 4.7.6 स्वयंअध्ययन के प्रश्नों के उत्तर
- 4.7.7 सारांश
- 4.7.8 स्वाध्याय
- 4.7.9 क्षेत्रीय कार्य
- 4.7.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

4.7.1 उद्देश्य :

प्रस्तुत निबंध के अध्ययन के बाद आप -

- 1) विद्यानिवास मिश्र के व्यक्तित्व एवं कृतित्व से परिचित होंगे।
- 2) 'जमुना के तीरे-तीरे' निबंध के कथ्य को गहराई से समझ पाएंगे।
- 3) 'जमुना के तीरे-तीरे' निबंध के द्वारा मानवी जीवन, मानवीय कर्म, व्यक्ति, ज्ञान और मनुष्य के मन का आंतरिक संघर्ष समझेंगे।
- 4) 'जमुना के तीरे-तीरे' निबंध के द्वारा आप में कर्म मार्ग, ज्ञान मार्ग और भक्ति मार्ग से परिचित होंगे।

4.7.2 प्रस्तावना :

पंडित विद्यानिवास मिश्र श्रेष्ठ निबंधकार हैं। वे हिंदी के एक ऐसे साहित्यकार हैं, जिन्होंने हिंदी, संस्कृत, पाली, अपभ्रंश, भोजपुरी, बिहारी आदि भाषाओं का गहरा ज्ञान और उन भाषाओं पर अधिकार था। वे चलते फिरते कोश थे। 'जमुना के तीरे-तीरे' उनका लोक प्रसिद्ध निबंध है। यह निबंध केवल एक नदी का वर्णन न होकर मनुष्य के जीवन में कर्म कितना उच्च कोटि का होता है। यह बात बताने का प्रयास निबंधकार ने किया है। इस निबंध में निबंधकार मनुष्य के जीवन के तीन मार्ग बताते हैं। जैसे - कर्म मार्ग, भक्ति मार्ग और ज्ञान मार्ग। इन मार्गों में से निबंधकार 'कर्म मार्ग' को ही मनुष्य के जीवन का सबसे श्रेष्ठ और उच्च कोटि का मार्ग बताते हैं, जो मनुष्य को निरंतर रूप से जीवन जीने की प्रेरणा देता है और मनुष्य को आंतरिक सुख की ओर ले जाता है। अतः इस निबंध में वह प्राकृतिक प्रतिकों के माध्यम से इस बात को अभिव्यक्त करते हैं।

4.7.3 विषय विवेचन :

4.7.3.1 विद्यानिवास मिश्र का जीवन परिचय :

विद्यानिवास मिश्र हिंदी के एक ललित निबंधकार हैं। उनके साहित्य में लोक जीवन के प्रति गहरी आस्था दिखाई देती है। जिससे उनकी मानवतावादी दृष्टि सामने आती है। विद्यानिवास मिश्र ने अपने साहित्यिक जीवन में हिंदी साहित्य की अनेक विधाओं में लेखन कार्य किया है। निबंध, यात्रावृत्त, संस्मरण, कविताएं आदि विधाओं में भी लेखन कार्य किया है।

जन्म एवं जन्मस्थान :

विद्यानिवास मिश्र का जन्म उत्तर प्रदेश के गोरखपुर जनपद के पकड़डीहा नामक गांव में 14 जनवरी, 1926 को पंक्तिपावन ब्राह्मण परिवार में हुआ।

माता-पिता एवं परिवार :

विद्यानिवास मिश्र 'पंक्तिपावन' ब्राह्मण परिवार से थे। उनके पिता का नाम पंडित प्रसिद्ध नारायण मिश्र और माता का नाम श्रीमती गौरी देवी था। इनके तीन भाई थे - महेश्वर, यज्ञेश्वर और दयानिधि। इनका पूरा परिवार

उच्च शिक्षित था। विद्यानिवास मिश्र की पत्नी का नाम राधिका देवी था और उनकी बेटी का नाम मंजुला शुक्ला था। अतः विद्यानिवास मिश्र का पारिवारिक वातावरण सहज था। परिवार में किसी भी चीज का अभाव न था। अतः विद्यानिवास मिश्र का बचपन और पारिवारिक जीवन सुखमय रहा है।

शिक्षा दीक्षा :

विद्यानिवास मिश्र उच्च शिक्षित थे। उनके पिताजी ने पंडित पदवी को भी प्राप्त किया था। विद्यानिवास मिश्र की प्रारंभिक शिक्षा बिसुनपुरी में हुई। हाईस्कूल की पढ़ाई गोरखपुर से पूरी की। उन्होंने बी.ए. की उपाधि इलाहाबाद विश्वविद्यालय से प्राप्त की। साथ ही उन्होंने प्रयाग विश्वविद्यालय से संस्कृत विषय लेकर एम. ए. की उपाधि भी प्राप्त की है। उन्होंने “डिस्क्रिप्टिव तकनीक ऑफ पाणिनि” इस विषय पर गोरखपुर विश्वविद्यालय से पी.एचडी की उपाधि प्राप्त की है। वह बहुभाषी ज्ञानी थे। उन्हें हिंदी, संस्कृत, अंग्रेजी, पाली, प्राकृत, अपभ्रंश आदि भाषाओं का गहरा ज्ञान था। इस तरह विद्यानिवास मिश्र उच्च शिक्षित एवं प्रतिभाशाली साहित्यकार थे।

नौकरी और अन्य कार्य :

विद्यानिवास मिश्र ने प्रयाग विश्वविद्यालय से संस्कृत से एम.ए. करने के उपरांत कोशकार्य में जुड़ गए थे। तदुपरांत सन् 1957 में विश्वविद्यालय सेवा में जुड़ गए। गोरखपुर विश्वविद्यालय, संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय और आगरा विश्वविद्यालय में वह संस्कृत और भाषा विज्ञान का अध्यापन करते रहे। साथ ही इन्होंने काशी विद्यापीठ और संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी के कुलपति रहे हैं। साथ ही वे नवभारत टाइम्स के संपादक भी रह चुके हैं। अतः विभिन्न पत्रिकाओं के संपादन कार्य में भी वह निरंतर कार्यरत थे।

मृत्यु :

पंडित विद्यानिवास मिश्र की मृत्यु 14 फरवरी, 2005 को एक सड़क दुर्घटना में हुई।

पुरस्कार एवं सम्मान :

पंडित विद्यानिवास मिश्र को अपने साहित्यिक एवं साहित्येतर कार्य के लिए विभिन्न पुरस्कारों से नवाजा गया है। जैसे - पद्मश्री, हिंदी गरिमा संवाद, विश्व भारती पुरस्कार, महाराष्ट्र भारती आदि पुरस्कार एवं सम्मान के पात्र बने, जिससे उनका कृतित्व सिद्ध होता है।

कृतित्व :

विद्यानिवास मिश्र प्रमुखता से एक श्रेष्ठ निबंधकार माने जाते हैं। उन्होंने अपने जीवन काल में साहित्य की विभिन्न विधाओं में लेखन कार्य किया है। पंडित विद्यानिवास मिश्र ने निबंध के साथ-साथ यात्रावृत्त, संस्मरण, कविता, समीक्षा, भाषा आदि विधाओं में लेखन कार्य किया है। साथ ही अनुवाद के क्षेत्र में भी उनका योगदान काफी बड़ा है। अतः उनका संक्षिप्त कृतित्व इस प्रकार है -

निबंध साहित्य :

निबंध साहित्य में पंडित विद्यानिवास मिश्र का योगदान काफी महत्वपूर्ण माना जाता है। उन्होंने अपने साहित्यिक जीवन में कुल 40 निबंध संग्रह का निर्माण किया है। उनके निबंध समाज, परिवार, संस्कृति, परंपरा, प्रकृति आदि विषयों पर आधारित है। जिसमें मनुष्य जीवन के दर्शन होते हैं। उन्होंने प्रमुख रूप से छितवन की छाव, कदम की फूली डाली, तुम चंदन हम पानी, मेरे राम का मुकुट भीग रहा है, देश, धर्म और साहित्य, नारी और संस्कृति, अस्मिता के लिए, गांधी का करुण रस, रहमान पानी रखिए, साहित्य के सरोकार आदि निबंध संग्रह का निर्माण उन्होंने किया है।

यात्रावृत्त और संस्मरण :

पंडित विद्यानिवास मिश्र ने निबंध के साथ-साथ यात्रावृत्त और संस्मरण भी लिखे हैं। 'यात्राओं की यात्रा' उनके प्रसिद्ध यात्रावृत्त है। साथ ही 'सपने कहा गए', 'चिड़िया रैन बसेरा' यह दो संस्मरण संग्रह भी प्रकाशित हुए हैं।

कविता संग्रह :

विद्यानिवास मिश्र ने अपनी साहित्यिक जीवन में कुल दो कविता संग्रह का निर्माण किया है। जो इस प्रकार हैं - पानी की प्रकार, उत्तर गीत-गोविंद।

अन्य साहित्य :

विद्यानिवास मिश्र ने निबंध संस्मरण, यात्रावृत्त, कविताओं के साथ-साथ साहित्यालोचन ग्रंथ आदि का निर्माण भी किया है। जैसे - साहित्य की चेतना, साहित्य का प्रयोजन, कालिदास से साक्षात्कार, तंत्र, कला और आस्वाद, तुलसीदास : भक्ति प्रबंध का नया उत्कर्ष आदि।

साथ ही संस्कृति संवाद के रूप में कुल 11 ग्रंथों का निर्माण भी उन्होंने किया है। इसके साथ-साथ भाषा चिंतन के संदर्भ में भी उनकी पुस्तकें प्रकाशित हैं।

समग्र रूप से कह सकते हैं कि पंडित विद्यानिवास मिश्र का व्यक्तित्व एवं कृतित्व उच्च कोटि का है, जो पाठकों पर अपनी अमिट छाप छोड़ता है।

4.7.3.2 'जमुना के तीरे-तीरे' निबंध का परिचय :

'जमुना के तीरे-तीरे' विद्यानिवास मिश्र का महत्वपूर्ण निबंध है। प्रस्तुत निबंध एक ललित निबंध है। इस निबंध में निबंधकार विद्यानिवास मिश्र जमुना के किनारे-किनारे चलते हुए मानस यात्रा भी करते हैं। यह निबंध केवल नदी का वर्णन नहीं है। बल्कि मनुष्य के जीवन मार्ग और मानसिक स्थितियों का प्रतीकात्मक चित्रण है। जिसमें लेखक ने मनुष्य के तीन जीवन मार्ग का चित्रण सुंदर रूप से किया है। यह तीन मार्ग हैं - कर्म मार्ग, ज्ञान मार्ग और भक्ति मार्ग। इन तीन मार्गों का चित्रण करते समय निबंधकार प्राकृतिक नदी, जंगल, घाट, पेड़-

पौधों का वर्णन करते हैं। जिसके माध्यम से वे मनुष्य जीवन की वास्तविकता को उजागर करते हैं। इस निबंध में लेखक की भारतीय संस्कृति और परंपरागत जीवन के प्रति होनेवाली आस्था, लगाव दिखाई देता है। साथ ही भटकती जीवन रूपी लय से उत्पन्न व्यथा का चित्रण भी मिलता है। साथ ही लेखक ने आज के मनुष्य की बुद्धिवादी और अवसरवादी प्रवृत्ति पर भी व्यंग्य किया है। अतः इस निबंध में लेखक कर्म मार्ग, ज्ञान मार्ग और भक्ति मार्ग में से मनुष्य जीवन का सर्वश्रेष्ठ मार्ग 'कर्म मार्ग' मानते हैं। क्योंकि यही मार्ग मनुष्य को अपने जीवन में निरंतर चलते रहने का साहस देता है और मनुष्य को एक आंतरिक सुकून भी देता है, जो मनुष्य का प्राप्य है।

4.7.3.3 'जमुना के तीरे-तीरे' निबंध का आशय :

'जमुना के तीरे-तीरे' विद्यानिवास मिश्र का महत्वपूर्ण निबंध है। विद्यानिवास मिश्र जी हिंदी के ललित निबंधकार के रूप में काफी प्रसिद्ध हैं। प्रस्तुत निबंध में निबंधकार जमुना नदी के किनारे-किनारे चलते हुए मानस यात्रा (मनुष्य की जीवन यात्रा) करते हैं। इसमें लेखक जमुना नदी के किनारे-किनारे चलने की कल्पना के माध्यम से मानवी जीवन, मानव का कर्म, भक्ति, ज्ञान और मनुष्य के मन का आंतरिक संघर्ष आदि को समझने का प्रयास करते हैं। यह निबंध प्रतीकात्मक निबंध है।

'जमुना के तीरे-तीरे' इस निबंध में विद्यानिवास मिश्र कहते हैं कि मैं नदी के किनारे-किनारे से चला जा रहा हूँ। नदी के किनारे से चलते समय उन्हें जमुना नदी का सुंदर और गहरा जल आकर्षित करता है। उनका मन करता है कि नदी के इस सुंदर पानी में उतर जाऊँ। परंतु तभी मन उसे नदी के पानी की गहराई को लेकर डरने लगता है। मन का डर उन्हें पानी में उतरने नहीं देता और इसलिए वह नदी के किनारे-किनारे से ही आगे बढ़ते रहते हैं। इस बात को निबंधकार ने प्रतीकात्मक रूप से उभारा है। असल में यह जमुना नदी जीवन के कर्म मार्ग का प्रतीक है। मनुष्य भी अपने जीवन में कर्म मार्ग पर आगे बढ़ना चाहता है। परंतु मन का डर और मन की दुविधा उसे आगे बढ़ने नहीं देती। निबंधकार आगे कहते हैं कि इस नदी के किनारे-किनारे से चलते-चलते कहीं कोई अच्छा घाट या नाव मिल ही जाती हैं। जिनके सहारे मैं नदी के दूसरे किनारे तक आसानी से पहुंच जाता हूँ। मुझे उसे किनारे पर जाने पर वहां बबूल, करील, कुश और पलाश जैसे पेड़-पौधे दिखाई देते हैं। यह पेड़-पौधे मुझे काफी सुंदर लगते हैं। उन्हें देखकर मन एक प्रकार से आनंदित होता है। निराशा निकल जाती है और उत्साह बढ़ जाता है। परंतु यह सारे पेड़-पौधे कठोरता, सरलता, सादगी और संघर्ष का प्रतीक है। उसमें सुंदरता तो है, लेकिन चैन और सुख-शांति बिल्कुल नहीं है। दूसरी ओर गेहूं की बालियों के झुमके, नहर के फूलों की नकबंसर, (सुगंध) कचनार का लुटाया प्यार और घने वृक्षों की ढंडी छाव नहीं मिलती। इसलिए दूसरे किनारे पर थोड़ी देर घूमकर वापस इसी पहले किनारे पर लौटकर आना ही पड़ता है। इसकी प्रतीकात्मकता यह है कि मनुष्य के जीवन में कर्म का रास्ता काफी कठिन और संघर्ष से भरा होता है। उसमें बाहरी सुख कम होते हैं। परंतु कर्म का रास्ता मानव को एक अलग प्रकार की शांति और गहराई प्रदान करता है। शायद मनुष्य के जीवन का यह लक्ष्य होता है कि वह शांति और समाधान प्राप्त करें।

निबंधकार आगे कहते हैं कि जमुना के तीर किनारे-किनारे चलते हुए मुझे गंगा-यमुना के नदी के बीच की उपजाऊ भूमि की याद आती है। जिस भूमि पर विशिष्ट आल्हादायक सुकून मिलता है। साथ ही याद आती है रूपकों के धनी संत तुलसीदास की। रामभक्त संत गोस्वामी तुलसीदास ने गंगा नदी को राम भक्ति का प्रतीक माना, सरस्वती को 'ब्रह्मा के प्रचार' ज्ञान का प्रतीक और यमुना को कर्म का प्रतीक माना है। लेखक कहते हैं कि 'कर्म मार्ग' ही मनुष्य के जीवन में सबसे श्रेष्ठ हैं। क्योंकि यह जीवन का राजमार्ग भी है। इसका रास्ता सीधा और स्थिर होता है। कहीं भी कटाव, घुमाव नहीं होता। इस कर्म रूपी नदी में छिछलापन नहीं है। इसमें जीवन की नौका आराम से आ-जा सकती है। इसमें गहराई है, कुंड है। परंतु दूटी हुई धारा नहीं है। घुमावदार भंवर नहीं है। पानी का बहाव एकदम शांत है। एक बार तैरना आ जाए तो विश्वस्त होकर इस धारा को पकड़े आदमी आगे बढ़ सकता है। अर्थात् एक बार मनुष्य कर्म मार्ग पर चलना सीख लेगा, मेहनत करना सीखेगा तो निश्चित रूप से मनुष्य अपने जीवन में सुख-शांति से आगे बढ़ सकेगा। इसी कर्म मार्ग पर कोई दिखावा नहीं है। इस मार्ग पर लगातार मेहनत और अभ्यास है। यमुना का जल गहरा है, लेकिन शांत हैं उसी प्रकार कर्म मार्ग भी कठिन और गंभीर होता है। परंतु वह डरावना नहीं होता बल्कि कर्म मार्ग में अणु-अणु के दर्शन होते हैं। इस रास्ते पर ऊपरी संघर्ष का अंधकार होने के बावजूद भीतर शीतल शांति का आलोक होता है।

लेखक कहते हैं न जाने कब से जमुना की धार पकड़े नदी के किनारे-किनारे से चल रहा हूं। अर्थात् 'कर्म पथ' पर निरंतर आगे बढ़ रहा हूं। परंतु बीच-बीच में दूर कहीं नीचे से कुछ कलकल की आवाज सुनाई देती है और मेरा मन उसे ओर आकर्षित होता है। ठीक उसी तरह कर्म मार्ग पर चलते-चलते बाहरी कल-कल मोह और आकर्षण मुझे अपनी ओर खींच लेता है और मैं कर्म पथ से भटक जाता हूं। अर्थात् कभी ज्ञान का आकर्षण तो कभी रास्तों का मोह भटकता रहता है। कई बार मैं जीवन की कर्म रूपी नाव रोककर सोच में पड़ जाता हूं। तब लेखक को लगता है कि वह स्वयं अपने जीवन के नियंत्रक नहीं है। जीवन की लहरें ही मनुष्य के अहंकार को तोड़ती देती है।

लेखक आगे कहते हैं कि इस जली रेतीली सरस्वती का भ्रम बहुत बड़ा अभिशाप है। अर्थात् ज्ञान एक प्रकार का अभिशाप भी है। अतः यहां लेखक सरस्वती अर्थात् ज्ञान मार्ग की बात करते हैं। वह बताते हैं कि कर्म मार्ग पर चलते समय मनुष्य को ज्ञान मार्ग का आकर्षण रहता है। परंतु यही ज्ञान कई बार मनुष्य को उलझन और निराशा में डालता है। ज्ञान के माध्यम से अधिक विचार करने वाले लोग वास्तव में निर्णय नहीं ले पाते। निर्णय लेने में उन्हें दुविधा होती है। करू-न-करू की स्थिति पैदा होती है और मनुष्य अपने आप में उलझ जाता है। लेखक भी यह महसूस करते हैं कि ज्ञान उन्हें आगे बढ़ाने के बजाय रोक देता है। अति विचार या ज्ञान के कारण मनुष्य के मन में हीनता, उदासी, असफलता और द्वेष की भावना पैदा होती है। इसलिए कर्म मार्ग में बाधा पहुंचती है। अर्थात् 'ज्ञान' कर्म मार्ग में एक प्रकार से बाधक बनता है। तभी लेखक को बचपन की एक बात याद आती है। वह बताते हैं कि मैंने लोगों से सुना है कि मैं बचपन में जज बनने की इच्छा रखता था। परंतु मैं जज तो नहीं बन पाया। लेकिन अपने मन और विचारों का जज बन गया। कच्ची उम्र में मैं अपने

भाव कुभाव का विश्लेषण करता रहा। हर बात का विश्लेषण किया करता। इससे मेरा अंतर्द्वंद्व बढ़ता गया। मैं किसी निष्कर्ष तक पहुंच ही नहीं पाया। अर्थात् लेखक का कहना है कि अत्याधिक सोचने से मनुष्य का जीवन सरल नहीं बनता बल्कि और अधिक जटिल बन जाता है। इसलिए वे ज्ञान मार्ग पर बात करते हुए कहते हैं कि, “कर्मपथ में सबसे अधिक भय मनुष्य को अपने ज्ञान से ही है। ज्ञान से बढ़कर कोई भ्रामक तत्व इस पथ पर है ही नहीं।”

आज के स्वार्थी और मोह से भरे समाज के गर्दनतोड़ गुड़दौड़ देखकर निबंधकार कहते हैं कि आज का बुद्धिवादी युग मूर्ख-सा है। मोह में फंसा हुआ है। उसने अपनी बनाई बेड़ी अपने ही पैरों में डाल दी हैं। ऐसे युग में जो विवेक और नीति से काम ले रहा है अर्थात् कलाबाजी करने वाला घुड़सवार पीछे रह रहा है और अंधाधुंध घुड़दौड़ करने वाला आगे जा रहा है। अर्थात् वे बुद्धिवादी समाज की आलोचना करते हुए कहते हैं कि आज के युग में वही लोग सफल हो रहे हैं, जो सही-गलत की बात न देखे, बिना रुके दौड़ते जा रहे हैं तथा विजय पदक प्राप्त कर रहे हैं। जो लोग विवेक और नैतिकता के बारे में सोचते हैं वह पीछे रह जाते हैं। आज के बुद्धिमानी लोग इसे ही ‘योग्यतम का आतिजीवन’ (सरवाइन ऑफ दी फिटेस्ट) कहते हैं। यह तो डार्विन का सिद्धांत है, मजाक नहीं। फिर लेखक प्रश्न करते हैं कि क्या केवल आगे बढ़ना ही सफलता है? क्या धूर्तता और चालाकी बुद्धिमानी है। इसी धूर्त की बदौलत ही मनुष्य ने अपने से विशाल और शक्तिशाली प्राणियों को भी परास्त किया है। स्वयं मानव जाति में भी जो जाति जितनी महीन रही है। वह उतनी ही आगे बढ़ी और जो सीधे और सच्चाई से चली वह जाति आज समाप्त हो गई है। अब सवाल यह पैदा होता है कि धूर्त को ज्ञान की कोठी में रखा जाए? यदि रखा जाए तो क्या केवल आगे बढ़ना ही एक मात्र सफलता है? क्या यही सफलता का मापदंड है। इन जिज्ञासाओं का ठीक-ठाक समाधान नहीं मिलता। कर्म की गहराई को आज तक कोई नाप नहीं सका।

निबंधकार विद्यानिवास मिश्र कहते हैं कि जीवन में कई लोग अलग-अलग रास्ते पर से चलते हैं। कुछ लोग सफलता के रास्ते पर पहुंच गए। तो कुछ लोग गलत रास्ते पर चले गए। परंतु वह खुद लगातार कर्मपथ अर्थात् ‘जमुना’ की धारा में चलते रहे। यह मार्ग भले ही अति साधारण लगता है, परंतु इसी मार्ग में जीवन का सच्चा संतोष है।

इसके बाद लेखक गंगा अर्थात् ‘भक्ति मार्ग’ की बात करते हैं। गंगा भक्ति का प्रतीक है। लेखक कहते हैं कि जब प्रतिकूल परिस्थितियाँ आयी, तब अन्य बातों ने मेरे मन को झगजोरना चाहा। मेरी जीवन रूपी नौका को पलटना चाहा। तभी भक्ति प्रवाहिनी मेरे हृदय समीप मंडराने लगी। परंतु मैं अपनी जीवन रूपी नौका के साथ कर्म मार्ग पर नित्य रूप से चला रहा। अर्थात् जीवन में जब कठिन समय आता है। तब मनुष्य के लिए भक्ति ही सहारा होती है। ‘गंगा’ अर्थात् भक्ति की धारा मुझे आकर्षित करती रही। वे बताते हैं कि मनुष्य को कठिन समय आने पर ईश्वर की याद आती है। भक्ति में मनुष्य पूरी तरह ईश्वर के प्रति समर्पित हो जाता है। तब मनुष्य मन का पाप-पुण्य और सुख-दुख का भाव पूरी तरह नष्ट हो जाता है। परंतु भक्ति के मार्ग पर का अनुकरण कर

पूरी तरह ईश्वर के प्रति समर्पित होना आसान नहीं है। उसके लिए मनुष्य के पास साहस, धैर्य और समर्पण होना चाहिए। मेरे जैसे डरने वाले इंसान के लिए यह रास्ता नहीं है। जिस व्यक्ति को पाप-पुण्य से लगाव हो। वह उस भक्ति रूपी धारा में कूदने का प्रयास नहीं करेगा। वही भक्ति की धारा में कूद पड़ेगा, जो अपने प्राणों के मोह से दूर रहेगा। तब वह खुद कूदने वाला नौका बनेगा और तब उसे ले जाने के लिए किसी नौका की जरूरत नहीं रहेगी। अर्थात् भक्ति मार्ग के लिए किसी नौका की जरूरत नहीं रहेगी। अर्थात् भक्ति मार्ग पर चलना काफी कठिन बात है, जो सहज और सरल नहीं है।

अंत में लेखक कहते हैं कि पर अब जाने दो! भक्ति मार्ग मेरा लक्ष्य ही नहीं है। उस पर मैं बात क्यों करूं? क्या केवल इसलिए कि यहां भक्ति धारा चोरी की प्रीति की तरह, लोभी के दाम की तरह बहुत मीठी है, इसलिए! नहीं! नहीं! मेरी यह चिरपरिचित – चिरचलित धार ही (कर्म मार्ग) बहुत अच्छी है। इस अपनी पुरानी और चिर-परिचित जमुना की धारा में ही मैं संतुष्ट हूं। भले ही उसमें संघर्ष हो, थकान हो, विरासत की जड़ता हो, जीवन में उत्साह कम लगे परंतु उसी में जो सौंदर्य है। इस पर मैं मुग्ध हूं। अर्थात् कर्म मार्ग में ही मेरी संतुष्टि है। मुझे पता है कि मेरी एक कमजोरी है कि मैं पूरी तरह एकाग्र होकर बीच धारा को पड़कर नहीं चला। स्थिर और निश्चित सिद्धि (प्राप्त करना) के लिए मेरा जो लोभ है। इसी कारण की जीवन पथ पर कदम-कदम पर दुरभ हुआ। फिर भी इस थकान में जमुना के तीरे-तीरे चलते रहने का काम निश्चित रूप से चल रहा है। अर्थात् जीवन के कर्म मार्ग पर वह निरंतर आगे बढ़े। यही मेरे लिए बड़ी राहत और सुकून देने वाली बात है। वैसे भी मनुष्य नसीब के नाम पर कल्पना करना मानव स्वभाव है। उसके लिए मैं क्या करूं? अर्थात् कुछ कर नहीं सकता। अतः प्रस्तुत निबंध में निबंधकार विद्यानिवास मिश्र ने जीवन के तीन मार्ग – ज्ञान मार्ग कर्म मार्ग और भक्ति मार्ग का सुंदर चित्रण किया है। इन तीन मार्गों में लेखक 'कर्म मार्ग' को सबसे व्यावहारिक और स्थिर मार्ग मानते हैं, जो जीवन में मनुष्य को एक आंतरिक सुकून देकर चला जाता है। निष्कर्ष रूप में कह सकते हैं कि जीवन में दुविधा, भ्रम, संघर्ष, थकान होने के बावजूद भी निरंतर कर्म करते रहना मनुष्य का सबसे बड़ा धर्म है।

4.7.4 स्वयंअध्ययन के लिए प्रश्न :

अ) निम्नलिखित वाक्यों के नीचे दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनिए।

- विद्यानिवास मिश्र हिंदी के ललित है।
 अ) नाटककार ब) एकांकीकार क) निबंधकार ड) कहानीकार
- विद्यानिवास मिश्र का जन्म सन् में हुआ।
 अ) 1926 ब) 1916 क) 1906 ड) 1896
- विद्यानिवास मिश्र का जन्म गोरखपुर जनपद के गांव में हुआ।
 अ) खुर्जा ब) मसर क) लमही ड) पकड़डीहा

4. विद्यानिवास मिश्र की मृत्यु सन् में हुई।
अ) 1995 ब) 2005 क) 2003 ड) 2001
5. 'जमुना के तीरे-तीरे' का प्रसिद्ध निबंध है।
अ) हरिशंकर परसाई ब) रामविलास शर्मा क) विद्यानिवास मिश्र ड) रामचंद्र शुक्ल
6. 'जमुना के तीरे-तीरे' निबंध में लेखक कवि की बात करता है।
अ) सूरदास ब) कबीर क) जायसी ड) तुलसीदास
7. 'जमुना के तीरे-तीरे' निबंध में लेखक मार्ग को मनुष्य जीवन का सबसे बेहतरीन मार्ग मानते हैं।
अ) ज्ञान ब) भक्त क) कर्म ड) धर्म
8. 'जमुना के तीरे-तीरे' निबंध में निबंधकार कर्मपथ में सबसे अधिक भय मनुष्य को.....से मानते हैं।
अ) ज्ञान ब) भक्ति क) धर्म ड) कर्म
9. 'जमुना के तीरे-तीरे' निबंध में निबंधकार युग को विमुढ प्राय-सा मानते हैं।
अ) कर्मवादी ब) बुद्धिवादी क) स्त्रीवादी ड) भोगवादी
10. निबंधकार विद्यानिवास मिश्र कहते हैं कि क्या केवल आगे बढ़ना ही है।
अ) कायरता ब) वीरता क) सफलता ड) असफलता
11. 'जमुना के तीरे-तीरे' निबंध में लेखक सबसे भ्रामक तत्त्व को मानते हैं।
अ) कर्म ब) ज्ञान क) भक्ति ड) धर्म
12. तुलसीदास ने को भक्ति का प्रतीक माना है।
अ) गंगा ब) सरस्वती क) जमुना ड) यमुना
13. तुलसीदास ने को ज्ञान का प्रतीक माना है।
अ) सरस्वती ब) गंगा क) जमुना ड) जमुना
14. निबंधकार विद्यानिवास मिश्र के अनुसार कर्म का मार्ग होता है।
अ) गंभीर ब) कठिन क) आसन ड) जड़
15. तुलसीदास ने 'ब्रह्म विचार के प्रचार' को का निराकार रूप प्रदान किया है।
अ) सरस्वती ब) गंगा क) जमुना ड) यमुना

16. 'जमुना के तीरे-तीरे' निबंध में निबंधकार के किनारे-किनारे चल रहे थे।

अ) जमुना ब) यमुना क) गंगा ड) कोयना

17. 'जमुना के तीरे-तीरे' निबंध में निबंधकार यमुना और यमराज में का नाता होने की बात करते हैं।

अ) पति-पत्नी ब) भाई-बहन क) माता-पिता ड) सास-ससुर

4.7.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ :

- * डग - पैर
- * पलाश - एक पेड़ का नाम
- * दोआबा - दो नदियों के बीच की भूमि
- * दिनलगाव - एक गहरा भावात्मक और मानसिक जुड़ाव
- * ब्रह्म विचार के प्रचार - ज्ञान
- * वर सूरसरि धार - भक्ति
- * नसावनी - भूख नष्ट करने वाली
- * विमूढ - अत्यंत भ्रमित, मूर्ख
- * सिधाई - सिधापन
- * घुड़दौड़ - घोड़े की दौड़

4.7.6 स्वयंअध्ययन के प्रश्नों के उत्तर :

- | | |
|-------------------------|----------------|
| अ) 1. क) निबंधकार | 2. अ) 1926 |
| 3. ड) पकड़डीहा | 4. ब) 2005 |
| ५. क) विद्यानिवास मिश्र | 6. ड) तुलसीदास |
| 7. क) कर्म | 8. अ) ज्ञान |
| 9. ब) बुद्धिवादी | 10. क) सफलता |
| 11. ब) ज्ञान | 12. अ) गंगा |
| 13. अ) सरस्वती | 14. अ) गंभीर |
| 15. अ) सरस्वती | 16. अ) जमुना |
| 17. ब) भाई-बहन | |

4.7.7 सारांश :

1. विद्यानिवास मिश्र हिंदी के श्रेष्ठ ललित निबंधकार हैं। उनके निबंध में सांस्कृतिक विरासत, लोकजीवन के प्रति आस्था, मानवतावादी दृष्टि के दर्शन होते हैं। उनका व्यक्तित्व एवं कृतित्व आकर्षक एवं सराहनीय है।
2. 'जमुना के तीरे-तीरे' एक ललित निबंध है। इसमें निबंधकार जमुना नदी के किनारे-किनारे चलते मानस यात्रा करता है। जिसमें लेखक की अभिरुचि के साथ वर्तमान परिवेश भी मूर्त हो जाता है। जिसमें लेखक की भारतीय संस्कृति और परंपरागत जीवन के प्रति आस्था दिखाई देती है।
3. प्रस्तुत निबंध विद्यानिवास मिश्र का गहन दार्शनिक निबंध है। इसमें लेखक ने जमुना नदी के किनारे चलने की कल्पना करते हुए जीवन, ज्ञान, कर्म, भक्ति और मनुष्य के आंतरिक संघर्ष को वाणी दी है। यह निबंध केवल एक नदी का प्राकृतिक वर्णन नहीं है बल्कि मनुष्य के जीवन मार्ग और मानसिक स्थितियों का प्रतीकात्मक चित्रण भी है।
4. प्रस्तुत निबंध में लेखक ने मनुष्य जीवन के तीन मार्गों का चित्रण किया है - कर्म मार्ग, ज्ञान मार्ग और भक्ति मार्ग। इसमें वह मनुष्य जीवन के लिए कर्म मार्ग को सबसे श्रेष्ठ मानते हैं, जो मनुष्य को निरंतर चलने का संदेश देता है। जिससे मनुष्य को एक आंतरिक सुकून मिलता है।
5. प्रस्तुत निबंध में विद्यानिवास मिश्र आधुनिक बुद्धिवादी समाज पर व्यंग्य भी करते हैं। जो बताते हैं कि आज का बुद्धिवादी समाज विमुढ़-सा हो गया है। सफलता की होड़ में वह सच्चाई और नैतिकता को भूल गया है और अंधाधुंध रूप से अपना जीवन रूपी घोड़ा दौड़ाए जा रहा है। आज बुद्धिवादी धूर्त और चालाक हैं। इस बात पर भी टिप्पणी करते हैं।

4.7.8 स्वाध्याय :

(अ) लघुत्तरी प्रश्न :

1. जमुना के तीरे-तीरे निबंध का उद्देश्य लिखिए।
2. विद्यानिवास मिश्र का जीवन परिचय दीजिए।

(आ) दीर्घोत्तरी प्रश्न :

1. जमुना के तीरे-तीरे निबंध का आशय या कथ्य अपने शब्दों में लिखिए।
2. विद्यानिवास मिश्र के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डालिए।

4.7.9 क्षेत्रीय कार्य :

1. छात्र अपनी नजदीकी नदियों की सैर करें और प्राकृतिक चित्रण करने का प्रयास करें।

2. प्रकृति में घूम कर प्रकृति का बारीकी से अवलोकन करें।

4.7.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए :

1. छितवन की छांव (निबंध संग्रह) : मिश्र विद्यानिवास, दिल्ली, लोकभारती प्रकाशन।
2. अग्रिरथ (निबंध संग्रह) : मिश्र विद्यानिवास, दिल्ली, लोकभारती प्रकाशन।
3. लगे रंग हारो.. (निबंध संग्रह) : मिश्र विद्यानिवास, दिल्ली, लोकभारती प्रकाशन।



4.8 पहला सफेद बाल

– हरिशंकर परसाई

अनुक्रम

- 4.8.1 उद्देश्य
- 4.8.2 प्रस्तावना
- 4.8.3 विषय विवेचन
 - 4.8.3.1 हरिशंकर परसाई का जीवन परिचय
 - 4.8.3.2 'पहला सफेद बाल' निबंध का परिचय
 - 4.8.3.3 'पहला सफेद बाल' निबंध का आशय
- 4.8.4 स्वयंअध्ययन के लिए प्रश्न
- 4.8.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ
- 4.8.6 स्वयंअध्ययन के प्रश्नों के उत्तर
- 4.8.7 सारांश
- 4.8.8 स्वाध्याय
- 4.8.9 क्षेत्रीय कार्य
- 4.8.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

4.8.1 उद्देश्य :

प्रस्तुत निबंध के अध्ययन के बाद आप-

- 1) निबंधकार हरिशंकर परसाई के व्यक्तित्व एवं कृतित्व से परिचित होंगे।
- 2) 'पहला सफेद बाल' निबंध के कथ्य को गहराई से समझ पाएंगे।
- 3) 'पहला सफेद बाल' निबंध के द्वारा आप यौवन के साहित्यिक अर्थ से परिचित होंगे।
- 4) 'पहला सफेद बाल' निबंध के द्वारा आप में सकारात्मक सोच का निर्माण होगा।

4.8.2 प्रस्तावना :

हरिशंकर परसाई श्रेष्ठ निबंधकार एवं व्यंग्यकार हैं। वे हिंदी के एक ऐसे साहित्यकार हैं, जिन्होंने व्यंग्य को साहित्य में प्रतिष्ठा दिलाई। उनके निबंधों से ही हिंदी में व्यंग्यात्मक निबंधों का प्रारंभ हुआ। इनके निबंध मौलिकता से परिपूर्ण हैं। 'पहला सफेद बाल' उनका श्रेष्ठ व्यंग्यात्मक निबंध है। हास्यात्मक शैली में प्रस्तुत निबंध में लेखक ने बाल सफेद होने की घटना के माध्यम से मनुष्य के मन की मानसिकता, जीवन संघर्ष और जीवन दर्शन को बारीकी से प्रस्तुत किया है। उन्होंने मनुष्य के मन की मानसिकता, उम्र की ढलान, डर, दुःख आदि को बारीकी से चित्रित किया है। विभिन्न प्रतीक, मिथक, उपमा आदि उदाहरणों के द्वारा मनुष्य के जीवन दर्शन को सामने रखा है और बाल सफेद होने का समय और यौवन के संबंधों को बड़ी मार्मिकता से उजागर किया है।

4.8.3 विषय विवेचन :

4.8.3.1 हरिशंकर परसाई का जीवन परिचय :

जीवन परिचय :

हरिशंकर परसाई हिंदी के श्रेष्ठ व्यंग्यकार एवं निबंधकार हैं। उन्होंने अपने व्यंग्य साहित्य से हिंदी व्यंग्य विधा को सक्षम बनाया है। समाज में प्रचलित सामाजिक और राजनीतिक विसंगतियों पर उन्होंने अपने व्यंग्य लिखे हैं। जिसका मूल सामाजिक विकास के साथ-साथ सामाजिक परिवर्तन ही था। अतः उनके किसी भी साहित्य को पढ़ने के लिए उनका व्यक्तित्व एवं कृतित्व पढ़ना जरूरी है। अतः उनका जीवन परिचय इस प्रकार है-

जन्म एवं जन्मस्थान :

हिंदी के श्रेष्ठ निबंधकार एवं व्यंग्यकार हरिशंकर परसाई का जन्म मध्य प्रदेश के होशंगाबाद जिले के जमानी नामक गांव में 22 अगस्त, 1924 को हुआ।

माता-पिता एवं परिवार :

हरिशंकर परसाई एक मध्यवर्गीय परिवार से आते हैं। हरिशंकर परसाई अपने माता-पिता की सबसे बड़ी संतान थे। उनके दो भाई और दो बहनें थीं। इस तरह माता-पिता और भाई-बहन मिलाकर कुल सात लोगों

का यह बड़ा परिवार था। हरिशंकर परसाई के पिता झूमकलाल परसाई कोयले के ठेकेदार थे। उनका काम जंगल में कोयला बनाना और बेचना था। इस कारण काम के सिल-सिले में वे हमेशा घूमते रहते थे। परिवार की आर्थिक स्थिति हमेशा अभावात्मक रही। पिता काम के सिलसिले में जंगल-जंगल, गांव-गांव घूमते रहे। इस कारण हरिशंकर परसाई का पालन पोषण मां की देख-रेख में ही हुआ। जब हरिशंकर परसाई 12-13 वर्ष के थे, तब उनकी माता का देहांत प्लेग की बीमारी के कारण हुआ। अपनी पत्नी की मृत्यु से भीतर से टूटने वाले हरिशंकर परसाई के पिताजी की कुछ साल बाद असाध्य बीमारी के कारण मौत हो गई और परिवार की सारी जिम्मेदारी हरिशंकर परसाई के कंधों पर आ गई। पारिवारिक जिम्मेदारी के कारण उन्होंने शादी नहीं कि वे आजीवन अविवाहित रहे। इस तरह उनका पूरा परिवार हमेशा आर्थिक अभाव में जीता रहा है।

बचपन एवं शिक्षा दीक्षा :

हरिशंकर परसाई का बचपन संघर्ष, अभाव, निराशा, डर और जिम्मेदारी निभाने में ही बीत गया। उनकी प्रारंभिक शिक्षा इटारसी में हुई। घर में आर्थिक अभाव होते हुए भी उन्होंने पढ़ना नहीं छोड़ा। अपनी पढ़ाई के प्रति होने वाली आंतरिक रुचि के कारण वह निरंतर पढ़ते रहे। नागपुर विश्वविद्यालय से हिंदी विषय लेकर उन्होंने एम.ए. पूरा किया। इसके बाद उन्होंने 'डिप्लोमा आफ टीचिंग' का कोर्स भी पूरा किया।

नौकरी :

अपने माता-पिता की मृत्यु के कारण कम उम्र में ही हरिशंकर परसाई के ऊपर परिवार की सारी जिम्मेदारियां आई थी। अठारह वर्ष की आयु में उन्होंने ही जंगल विभाग इटारसी के पास नाकू में नौकरी की। खंडवा में छः महीने अध्यापन का काम भी किया। उसके बाद मॉडर्न हाईस्कूल में अध्यापक की नौकरी की। तदुपरांत अध्यापन के काम से इस्तीफा देकर निरंतर रूप से वह लेखन कार्य में जुट गए। हरिशंकर परसाई मरते दम तक अपने और बहन के परिवार की जिम्मेदारियां निभाते रहें।

मृत्यु :

हरिशंकर परसाई की मृत्यु 10 अगस्त, 1995 को हुई। अपनी मृत्यु तक वह अपने परिवार की जिम्मेदारियां उठाते और लेखन कार्य में अंत तक जुटे रहे।

व्यक्तिगत विशेषताएं :

हरिशंकर परसाई का व्यक्तित्व आकर्षक था। विविध पहलुओं से भरा उनका व्यक्तित्व साधारण होने के बावजूद असाधारण था। उनके व्यक्तित्व में संवेदनशीलता, चिंतनशीलता, ईमानदारी, स्वतंत्रता, मुक्त विचारधारा, निडरता, सजगता, प्रतिभा आदि विशेषताएं पाई जाती हैं। जिससे उनके आंतरिक एवं बाह्य व्यक्तित्व आकर्षक और साधारण रहा है।

कृतित्व :

हरिशंकर परसाई हिंदी के एक प्रतिभाशाली साहित्यकार हैं। उन्होंने अपनी साहित्यिक यात्रा में कहानी,

निबंध, व्यंग्य, उपन्यास, रेखाचित्र, संस्मरण आदि साहित्यिक विधाओं में लेखन कार्य किया है। उनके साहित्य में सामाजिक एवं राजनीतिक विसंगतियों पर व्यंग्य, ग्रामीण संस्कृति, सामाजिक समस्या, मार्क्सवादी विचारधारा आदि का चित्रण बड़ी मार्मिकता से हुआ है। अतः हरिशंकर परसाई का कृतित्व इस प्रकार हैं -

निबंध साहित्य :

हरिशंकर परसाई ने निबंध विधा में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। वह निबंध के क्षेत्र में स्वातंत्र्योत्तर कालखंड के निबंधकार हैं। उन्होंने कुल 300 से अधिक निबंधों का सृजन किया है। सन् 1985 में इनकी प्रकाशित रचनावली में कुल 288 निबंध प्रकाशित हैं। उनके निबंधों का प्राण तत्त्व व्यंग्य ही है। उनके निबंधों में विषय विविधता दिखाई देती है। वर्तमान समय के अनाचार, आड़ंबर, मिथ्याचार, शोषण, झूठ, पाखंड, अंतर्विरोध आदि को उन्होंने व्यंग्य के माध्यम से अभिव्यक्ति दी है। उनका साहित्य सुधार की अपेक्षा परिवर्तन पर जोर देता है। अतः हरिशंकर परसाई के निबंधों में साठोत्तरी भारतीय जीवन प्रणाली के दर्शन होते हैं। इनके निबंध संग्रह इस प्रकार हैं- भूत के पांच पीछे, बेईमानी की परत, निठल्ले की डायरी, ठिठुरता हुआ गणतंत्र, शिकायत मुझे भी है, अपनी-अपनी बीमारी, वैष्णो की फिसलन, पगडंडियों का जमाना, विकलांग श्रद्धा का दौर, पाखंड का अध्यात्म और मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएं।

अतः कुल बारह निबंध संग्रह में लगभग कुल 300 निबंध संग्रहित हैं। इन निबंधों में विषय विविधता, मौलिकता, व्यंग्य, समसामयिकता, लघुता तथा व्यंग्यपूर्ण और सटीक भाषा आदि विशेषताएँ पाई जाती हैं।

कहानी साहित्य :

कहानी लेखन में भी हरिशंकर परसाई जी स्थान स्वातंत्र्योत्तर कहानी लेखन में आता है। इन्होंने व्यंग्यात्मक कहानियों का लेखन किया है। हरिशंकर परसाई की रचनावली में कुल 263 कहानियाँ संकलित हैं। वे जीवन के अंतिम दिनों तक लिखते रहे। उनकी कुल कहानी 300 से भी अधिक मानी जाती है। उनकी कहानियों में विषय विविधता भी मिलती है। उन्होंने अपनी कहानियों के माध्यम से केवल पारंपरिक ढांचे को ही नहीं बदला बल्कि संस्कृति, रुचि, संस्कार आदि में भी बदलाव लाया है। व्यंग्य ही उनकी कहानियों का प्राण तत्त्व माना जाता है। उन्होंने अपनी कहानियों के माध्यम से सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक विषयों के माध्यम से मिथ्याचार और आडंबरों का पर्दाफाश किया है। उनके कुछ कहानी संग्रह इस प्रकार हैं - भोलाराम का जीव, वैष्णव की फिसलन, सदाचार का ताबीज, मेनका का तपोभंग, एकलव्य ने गुरु को अंगूठा दिखाया, दो नाकवाले लोग, राजनीतिक बंटवारा, एक मध्यमवर्गीय कुत्ता, आमरण अनशन, गांधी जी का शॉल आदि।

उपन्यास साहित्य :

हरिशंकर परसाई ने कहानी और निबंध के साथ-साथ उपन्यास साहित्य का भी निर्माण किया है। अभी तक उनके कुल दो ही उपन्यास प्रकाशित हो चुके हैं- तट की खोज और रानी नागफनी की कहानी। इसके अतिरिक्त 'जल और ज्वाला' तथा 'रिटायर्ड भगवान की कथा' इन उपन्यासों का भी जिक्र किया जाता है।

अन्य रचनाएं :

हरिशंकर परसाई ने कहानी, उपन्यास, निबंध, स्तंभ लेखन और संपादन का कार्य भी किया है। इसके साथ ही उन्होंने रेखाचित्र और संस्मरण भी लिखे हैं। 'बोलती रेखाएं' यह उनका रेखाचित्र संग्रह सन् 1970 में प्रकाशित हुआ। 'जाने पहचाने' यह उनके संस्मरण संग्रह है। जिसमें कुल 20 संस्मरण संकलित है।

स्तंभ लेखन और संपादन :

हरिशंकर परसाई एक स्तंभ लेखक के रूप में भी प्रचलित रहे हैं। प्रहरी और परिवर्तन आदि पत्रिकाओं में वे स्तंभ लेखन का कार्य करते रहे। उनके संपादन कार्य भी प्रशंसनीय है। उन्होंने 'प्रहरी' और 'वसुधा' नामक मासिक पत्रिकाओं के संपादन का कार्य किया है।

पुरस्कार एवं सम्मान :

हरिशंकर परसाई को अपने साहित्य लेखन के लिए विभिन्न पुरस्कारों से सम्मानित किया है। सन् 1982 में साहित्य अकादमी की ओर से उन्हें 'साहित्य अकादमी पुरस्कार' से सम्मानित किया है। जबलपुर विश्वविद्यालय से 'डिलीट' से भी उन्हें नवाजा गया है। साथ ही 'उत्तर प्रदेश साहित्य परिषद पुरस्कार' से भी वह सम्मानित रहे हैं।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि हरिशंकर परसाई का व्यक्तित्व आकर्षक एवं असाधारण है। जिससे पाठक प्रभावित होता है। उनका कृतित्व भी उच्च कोटि का और सराहनीय है। जिसने हिंदी साहित्य को समृद्ध किया है।

4.8.3.2 'पहला सफेद बाल' निबंध का परिचय :

'पहला सफेद बाल' हरिशंकर परसाई का व्यंग्यात्मक निबंध है। हरिशंकर परसाई एक श्रेष्ठ व्यंग्यकार एवं निबंधकार हैं। उन्होंने इस निबंध में बाल सफेद होने की घटना को केंद्र में रखकर विचारों की गहराई को स्पष्ट किया है। इसमें हरिशंकर परसाई की वैचारिक परिपक्वता दिखाई देती है। उन्होंने सहजता से एक गंभीर कथ्य को वाणी दी है। पहले सफेद बाल दिखाने पर मनुष्य की मानसिकता और वर्तमान परिवेश का चित्रण किया है। साथ ही निबंधकार ने भावी पीढ़ी के प्रति भी अपनी आस्था प्रकट की है।

प्रस्तुत निबंध में निबंधकार अपने सिर पर दिखाई देने वाले पहले सफेद बाल को देखकर मन में उठने वाले भाव, विचार, डर, दुःख, हास्य और मनुष्य जीवन दर्शन आदि को हास्यात्मक शैली में प्रकट किया है। साथ ही अनेक उदाहरणों, प्रतीकों मिथकों के माध्यम से अपने मन के भावों को प्रकट किया है। इसके साथ उन्होंने खाली ज्ञान देने वाले मनुष्य की प्रवृत्ति पर भी कसकर व्यंग्य किया है। बाल काले करने वाले रंग और तेल आदि पर भी वह बड़ा प्रहार करते हैं। बाल सफेद होने पर मनुष्य में पनपने वाली नकारात्मक सोच को कैसे बदला जा सकता है इसी का चित्रण बड़े मनोवैज्ञानिक ढंग से किया है। निबंध के अंत में निबंधकार सकारात्मक दृष्टिकोण को सामने रखकर नई पीढ़ी के प्रति आस्था प्रकट करते हैं। उन्हें अपना भविष्य बिना किसी अपेक्षा

के सौंप देते हैं। अतः यौवन और सफेद बाल के रिश्ते को भी समझते हुए वह कहते हैं कि यौवन का संबंध शरीर से न होकर मन से होता है। मन में उत्साह, प्रेरणा, कुछ करने की धमक ही यौवन है। केवल सफेद बाल उसको नहीं मिटा सकते। अतः सफेद बाल शरीर का परिवर्तन है, मन का नहीं।

4.8.3.3 'पहला सफेद बाल' निबंध का आशय :

हरिशंकर परसाई हिंदी के प्रसिद्ध व्यंग्यकार और निबंधकार हैं। 'पहला सफेद बाल' उनका प्रसिद्ध व्यंग्य निबंध है। लेखक ने अपने सफेद बाल की कहानी व्यंग्यात्मक रूप से प्रस्तुत की है। यह केवल सफेद बाल की कहानी नहीं है, बल्कि मनुष्य के मन की उलझन, डर और जीवन दर्शन है। मनुष्य के बाल एक निश्चित समय आने पर सफेद होते हैं। मनुष्य अपने बाल सफेद होने से डरता है। बाल सफेद होने की बात पता चलने पर मनुष्य काफी दुःखी होता है। उसे लगता है कि अब हमारी जवानी समाप्त हुई है। परंतु हरिशंकर परसाई इसे विभिन्न दृष्टिकोण से देखते हैं। इसी का चित्रण लेखक ने गहराई से किया है।

'पहला सफेद बाल' इस निबंध में लेखक ने अपने सिर पर दिखाई देने वाले पहले बाल का वर्णन और मन के विचारों को प्रस्तुत किया है। यह मन में उठने वाले केवल विचार नहीं है, बल्कि एक डर, दुःख, हास्य और जीवन दर्शन है। यह सिर्फ सफेद बाल की बात नहीं है बल्कि मनुष्य की बढ़ती उम्र, वक्त का बदलाव, आत्मविश्वास और जीवन संघर्ष का चित्रण है।

'पहला सफेद बाल' निबंध के शुरुआत में लेखक बताते हैं कि आज पहला सफेद बाल दिखाई दिया। वह बाल मेरे कानों के पास 'रजत तार' की तरह चमक रहा था। उसे देखकर मन पूरी तरह हिल गया। उन्हें ऐसा लगा जैसे जीवन में कोई बड़ा संकट आया हो। वह इस पहले सफेद बाल की तुलना अचानक झाड़ी से निकले शेर, शत्रु के सिपाही की कलगी और प्रेयसी के बाप से करते हैं। वह कहते हैं कि, मेरा पहला बाल दिखाने पर मुझे ऐसा लगा जैसे वसंत ऋतु में मैं जंगल में सैर कर रहा हूँ और अचानक सामने की झड़ी से शेर आ जाए। दूसरी बात कहते हैं कि पुराने जमाने में मजबूत किले पर रात के समय में बेफिक्री से घूमने वाले किलेदार को जब बाहर से चढ़ते हुए शत्रु की कलगी (फौजी) दिखाई दी जाए। बड़े हास्यात्मक ढंग से वह सफेद बाल की तुलना प्रेयसी के बाप से करते हुए कहते हैं कि सफेद बाल देखकर ऐसा भी लगा जैसे किसी बगीचे के पौधों के बीच में कोई प्रेमी अपनी प्रियेसी राधा को गले लगाते समय उसे प्रियेसी का बाप दिखे जाने पर जिस प्रकार की हालत होती है, उसी प्रकार की हालत मेरी सफेद बाल दिखाने पर हो गई। इस प्रकार की तुलना करते हुए लेखक को लगता है कि अब बुढ़ापे का समय आ गया है। असल में कोई भी आदमी जल्दी बूढ़ा नहीं होना चाहता।

लेखक लिखते हैं कि सफेद बाल दिखाने पर मेरा मन काफी दुःखी हुआ। मुझे तो अभी तक लग रहा था कि मेरा जीवन एक कालीन (रजाई या कारपेट) है जो आरामदाई और दिखने में आकर्षक होती है। उस पर चलने से पैरों को एक राहत मिलती है। अतः कालीन मनुष्य के सुखी जीवन यात्रा का प्रतीक है। लेकिन इस पर चलते हुए मुझे इस सफेद बाल ने काटा चुभने का दर्द दिया है। आज तक मुझे अपने काले घुंघराले

बालों पर काफी गर्व था। रोज मैं आईने में इसे देखता था और इसे सहलाकर, संवारकर प्रसन्न होता था। मैं इसी बालों पर गर्व करता हूँ। उम्र को ढलता जाता था। बुढ़ापे को अंगूठा दिखता था। लेकिन आज इस सफेद बाल ने मुझे कहा, “भाई मेरे! एक बात कानफिडेन्स मैं कहूँ – अपनी दुकान समेटना अब शुरू करो।” अर्थात् अब उम्र बढ़ रही है और जीवन धीरे-धीरे ढलान की ओर जा रहा है।

यही बात लेखक को दुःखी करती हैं। लेखक बताते हैं कि सफेद बाल होने की घटना पर अनेक ज्ञानी अपना-अपना तर्क देते हैं और बताते हैं कि जो बात कल नहीं तो आज होने ही वाली है। उस बात से क्यों डरना? क्यों दुःखी होना? परंतु लेखक बताते हैं कि मनुष्य की मौत भी निश्चित होती है। फिर भी मनुष्य उसे क्यों डरता है? केवल ज्ञान हर दुःख को दूर नहीं कर सकता। बड़े-बड़े ज्ञानी और वीर पुरुष इस मृत्यु के दुःख और भय से बच नहीं पाए। जैसे मरणासन्न लक्ष्मण के सीर को अपने सीने से लगाए राम दुःख में विलाप कर रहे थे। इतना ही नहीं अर्जुन को गीता का जीवन दर्शन समझने वाले श्रीकृष्ण भी उद्धव से गोकुल की व्यथा सुनकर दुःखी हुए थे। मृत्यु को त्यौहार मनाने वाली ही सबसे अधिक भयभीत होते हैं। वे केवल अपने हृदय के भय को दबाते रहते हैं।

लेखक पहला सफेद बाल दिखने से काफी दुःखी थे। वह सर के पहले सफेद बाल को ‘सफेद कफन’ का पहला धागा मानते हैं। अर्थात् लेखक को लगता है कि धीरे-धीरे सारे बाल सफेद हो जाएंगे और यौवन समाप्त हो जाएगा। यह सब सोचकर वह काफी दुःखी होते हैं। अपने मन के दुःख के भाव से कई सवाल खड़े करते हैं? लेखक अपना सफेद बाल दिखाने वाले आयने पर भी गुस्सा होते हैं। वैसे तो वह कहते हैं कि आईना बड़ा दयालु होता है। चेहरे की विकृतियों को सुधार कर चेहरे को सुंदर दिखता है। परंतु उसने सफेद बाल दिखाकर आज क्रूरता क्यों दिखाई? क्या वह सफेद बाल न दिखाने पर उसकी इमानदारी पर कोई शक करता? वह हास्यात्मक रूप में कहते हैं कि उर्दू कवियों के आईने बड़े ही संवेदनशील होते हैं। सुंदर चेहरे देखकर टूट जाते हैं। सौंदर्य का सामना करना कोई खेल नहीं है। मूसा नामक एक मुगल सम्राट भी सुंदरता को देखकर बेहोश हुआ था। लेकिन मेरा आईना हिंदी लेखक का है, जो आज काफी कठोर बन गया। उसने मेरे सिर पर का पहला सफेद बाल मुझे दिखाया।

फिर वह कहते हैं कि इसमें आईने का कोई दोष नहीं है। दोष मेरे बालों का है। इन बालों को सिर पर मैंने जगह दी। शरीर का रस पिलाकर बड़ा किया। हजारों शिशों का तेल लगाया। फिर भी इन बालों ने आज धोखा दे दिया। इसलिए सन्यासी भी उनके सामने लड़खड़ा जाते हैं। वह कहते हैं कि आज सफेद बाल देखने से मेरा आत्मविश्वास कम हुआ। साहस बुझ गया है। अब बुढ़ापा आने में देर नहीं लगेगी।

लेखक सोचते हैं कि अब मैं क्या करूँ? बालों को सफेद होने से कैसे रोकूँ? वे बताते हैं कि मैंने सुना है कि अगर एक सफेद बाल को उखाड़ दूँ, तो वहां एक गुच्छा सफेद होता है। वह रावण जैसा वरदानी होता है। वे सोचते हैं कि अब बाल काले होने का तेल इस्तेमाल करूँ? या कुछ लोगों की तरह खिजाब (रंग) से बाल काले करूँ? परंतु उन्हें यह सब बनावटी लगता है। क्योंकि वह उसके एक परिचित बूढ़े का उदाहरण देकर

बाल काले करना और जवान होने के अंतर को भी समझते हैं। वह कहते हैं कि क्या बाल काले करने से यौवन कैसे वापस आएगा? यह केवल भ्रम है। अब यह एक सफेद बाल (शत्रु) धीरे-धीरे सभी काले वफादार बालों को अपनी ओर कर लेगा। तब लेखक को हिंदी के रीतिकालीन कवि केशवदास की याद आती है। क्योंकि उस समय केशवदास के सफेद बालों के कारण उन्हें 'चंद्रवदन मृगलोचनी' ने बाबा कहा था। जिसके कारण केशवदास अपने बालों पर गुस्सा हुए थे। आज लेखक कहते हैं कि मैं केशवदास के दुःख को भली-भांति समझ सकता हूँ, क्योंकि मुझे अभी तक किसी ने 'बाबा' नहीं परंतु 'दादा' कहा है।

लेखक कहते हैं कि पहले सफेद बाल के कारण में काफी विचलित था। आत्मप्रेम और आत्म प्रशंसा का परिणाम मुझे भी भोगना पड़ेगा यह मैंने कभी सोचा नहीं था? मुझे एक ओर कारण से डर लग रहा है। मैंने देखा है कि सफेद बाल के आते ही आदमी हिसाब लगाने लगता है। जीवन भर उसने क्या पाया? क्या खाया? आगे के लिए क्या इकट्ठा करना है? आदि हिसाब लगाने की यह उम्र बड़ी खतरनाक होती है। क्योंकि इस उम्र में आदमी समझौता करने लगता है। जो व्यक्ति पहले अपने सिद्धांतों के लिए लड़ता था। आज वह धीरे-धीरे झुकने लगता है। समझौता करने लगता है बड़े-बड़े हीरो इस उम्र में धराशाही हुए हैं। साहित्य, राजनीतिक, जन सेवा सभी क्षेत्रों के हीरो धराशाही हुए हैं। लेखक को इस बात का डर है कि मुझे भी शायद समझौता करना पड़ेगा?

आगे लेखक यौवन क्या है? इस पर सोचते हैं और खुद को समझने का प्रयास करते हैं। यौवन केवल काले बालों का नाम नहीं है। यौवन नवीन भाव, नवीन विचार, ग्रहण करने की तत्परता है। यौवन साहस, उत्साह, निर्भयता और खतरे भरी जिंदगी का नाम है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि यौवन बेहिचक बेवकूफी करने का नाम है। मैं भी बेवकूफी करता रहूंगा। इस सफेद बाल से क्या होता है? यह तो सर पर होते हैं। इसकी जड़ हृदय तक नहीं होती। क्योंकि हृदय से मन प्रसन्न रहता है और मन की प्रसन्नता ही यौवन है। अर्थात् असली यौवन मन की ताजगी, नए विचार अपनाने की क्षमता, साहस, उत्साह और जोखिम उठाने की शक्ति में होता है। जब तक मन में उत्साह और नई सोच है, तब तक मनुष्य जवान है। सफेद बाल केवल देह का परिवर्तन है। वह मन का नहीं। यही सकारात्मक सोच यौवन है। लेखक खुद को समझाते हुए कहते हैं कि बालों का सफेद होना यह द्विमुखी संघर्ष है। एक दूसरों को भ्रमित करना और दूसरा मन को समझाना। दूसरों का डर हमें नहीं है और अगर मेरा मन कमजोर नहीं पड़ेगा, तो कुछ नहीं हो सकता। अर्थात् अगर मन कमजोर नहीं है तो सफेद बाल तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ सकता।

निबंधकार सफेद बाल का दिखाना एक पर्व मानते हैं। इसे प्रमाणित करते हुए राजा दशरथ का उदाहरण देते हैं। जब राजा दशरथ ने अपने सफेद बाल दिखे, तो उन्होंने राम को राजगद्दी सौंपने का निर्णय लिया। दशरथ को चार पुत्र थे। उन्हें देने के लिए अनेक पर्याय थे। पर अब मैं किस दूँ? क्योंकि मेरा कोई पुत्र नहीं है। हां! मेरे मित्र के तीन पुत्र हैं। जिन्हें मैं अपनी जिम्मेदारी नहीं सौंप सकता। क्योंकि अभी वह दूध पीते हैं। अर्थात् वह छोटे हैं। आगे लेखक बड़े आदमियों के दो तरह के पुत्र होने का जिक्र भी करते हैं। वह आगे कहते हैं कि चलो अच्छा हुआ जो पुत्र नहीं है। अगर होता तो मुश्किल बढ़ जाती। उसे क्या देता? न मेरे पास राजपथ

है, न धन-दौलत। मेरे पास न देने के लिए कुछ है न मेरा लेने वाला कोई है। तो मैं राजा दशरथ की तरह बाल सफेद होने का पर्व नहीं मना सकता। हम महायुद्ध की छाया में पले-बढ़े लोग हैं। हम गरीबों और अभाव में गम की जिजीविषा खाकर जिए हैं। हमारी पीढ़ी के बाल जन्म से ही सफेद हैं। इसीलिए हम अपनी आने वाली पीढ़ी को गरीबी और अभाव नहीं दे सकते। हां लेकिन हमारे पास देने के लिए 'भविष्य' है। वह कहते हैं, कि मेरी पीढ़ी के समस्त पुत्रों में तुम्हें भविष्य देता हूँ! हम आपका भविष्य बनाने में लगे हुए हैं। हम नींव में डूबे हैं, ताकि तुम्हारा भविष्य सुंदर हो। अर्थात् हम अपने आप को तुम्हें सौंप रहे हैं। इस देश और समाज को बनाने में वर्तमान में अपने आप को मिटा रहे हैं। सफेद बाल दिखाने के पर्व पर यह तुम्हारा प्राप्य (भविष्य) संभाल लो! तुम्हारे भविष्य के लिए हम वृद्ध मरने के लिए तैयार हैं। हम जानते हैं काम बंद करने और मरने का समय एक ही होता है।

लेखक युवाओं को कहते हैं कि हमें इसके बदले आपसे कुछ नहीं चाहिए। हम ययाति जैसे स्वार्थी नहीं हैं। जिन्होंने अपने पुत्र की जवानी लेकर युवा हो गए थे। बाल के साथ उसने अपना मुंह भी काल किया था। हम निस्वार्थ रूप से तुम्हें ज्ञान, अनुभव और संघर्ष का कलश आपको दे रहे हैं। हमने अपने बाल सफेद होने की बात स्वीकार की है। अब हम स्थिति का स्वागत कर इसे स्वीकारते हैं। लो! अब आप हमारे ज्ञान, अनुभव और संघर्ष से बुनी नींव पर अपने सुनहरे भविष्य बनाओ।

इस प्रकार प्रस्तुत निबंध केवल सफेद बाल की मनोरंजनात्मक कहानी नहीं है। यह मनुष्य जीवन, वक्त, यौवन, संघर्ष, बुढ़ापा और भविष्य की आशा का गहरा विचार है, जो नई पीढ़ी को एक प्रेरणा देकर भविष्य निर्माण के लिए लाभदायक सिद्ध होगा। अतः लेखक ने अत्यंत गंभीर विषय को हास्य-व्यंग्य के साथ भावात्मक रूप से प्रस्तुत किया है। लेखक युवाओं को बताना चाहते हैं कि असली यौवन शरीर में नहीं होता। मनुष्य के विचार और उत्साह में होता है। इसलिए युवाओं को उत्साह बनाए रखकर अपने भविष्य का निर्माण करना चाहिए।

4.8.4 स्वयंअध्ययन के लिए प्रश्न :

अ) निम्नलिखित वाक्यों के नीचे दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनिए।

- हरिशंकर परसाई का जन्म 23 अगस्त को हुआ।
 अ) 1914 ब) 1924 क) 1934 ड) 1944
- हरिशंकर परसाई के पिता झूमकलाल जी..... की ठेकेदारी करते थे।
 अ) सोने ब) कोयला क) चांदी ड) किताबों
- हरिशंकर परसाई की मृत्यु सन्..... में हुई।
 अ) 1995 ब) 1985 क) 2005 ड) 2015

4. हरिशंकर परसाई का जन्म..... गांव में हुआ।
 अ) खुर्जा ब) जामनी क) कमानी ड) डुमरी
5. हरिशंकर परसाई हिंदी के श्रेष्ठ हैं।
 अ) नाटककार ब) कहानीकार क) व्यंग्यकार ड) उपन्यासकार
6. हरिशंकर परसाई का श्रेष्ठ निबंध है।
 अ) पहला सफेद बाल ब) विज्ञापन युग क) जमुना के तीरे-तीरे ड) दुश्मन
7. हरिशंकर परसाई पहले सफेद बाल को की उपमा देते हैं।
 अ) रजत-तार ब) सोने की तार क) लोहे की तार ड) पीतल की तार
8. पहला सफेद बाल देखकर लेखक अनायास गया।
 अ) डर ब) मर क) बैठ ड) भाग
9. मरणासन्न लक्ष्मण को गोद में लेकर विलाप कर रहे थे।
 अ) कृष्णा ब) राम क) दशरथ ड) हनुमान
10. सुंदरता को देखकर बेहोश हुआ था।
 अ) राम ब) मूसा क) दशरथ ड) कृष्ण
11. केशवदास को चंद्रवदन मृगलोचनी ने कहा था।
 अ) चाचा ब) बाबा क) दादा ड) मामा
12. साहस, उत्साह, निर्भयता और खतरे भरी जिंदगी का नाम है।
 अ) यौवन ब) बुढ़ापा क) बचपन ड) वीरता
13. सफेद बाल का दिखाना एक भी है।
 अ) घटना ब) संस्कृति क) पर्व ड) संस्कार
14. हम नींव में धंस रहे हैं, लो ! हम तुम्हें देते हैं।
 अ) फूल ब) कलश क) फल ड) किताब

4.8.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ :

- * रजत तार – चांदी की तार
- * कलगी – सैनिकों का दल

- * वरदानी – वर प्राप्त करने वाली
- * खिजाब – बालों को काला करने वाला उत्पाद
- * कालीन – रजाई, गलीचा
- * किलेदार – किले का रखवाला या संरक्षण कर्ता
- * नरसीसस – आत्म प्रशंसक
- * पर्व – एक त्यौहार

4.8.6 स्वयंअध्ययन के प्रश्नों के उत्तर :

- | | |
|------------------|---------------------|
| 1. ब) 1924 | 2. ब) कोयला |
| 3. अ) 1995 | 4. ब) जामनी |
| ५. क) व्यंग्यकार | 6. अ) पहला सफेद बाल |
| 7. अ) रजत-तार | 8. अ) डर |
| 9. ब) राम | 10. ब) मूसा |
| 11. ब) बाबा | 12. अ) यौवन |
| 13. क) पर्व | 14. ब) कलश |

4.8.7 सारांश :

1. हरिशंकर परसाई हिंदी के श्रेष्ठ व्यंग्यकार एवं निबंधकार हैं। उन्होंने व्यंग्य साहित्य को प्रतिष्ठा देने का कार्य किया है।
2. 'पहला सफेद बाल' हरिशंकर परसाई का श्रेष्ठ व्यंग्य निबंध है। जिसमें लेखक ने पहले सफेद बाल को निबंध के कथ्य का विषय बनाया है।
3. 'पहले सफेद बाल' में निबंधकार ने बाल सफेद होने की घटना के माध्यम से मनुष्य के मन की मानसिकता, मन में उठने वाले विचार, डर, दुःख हास्य और जीवन दर्शन को व्यक्त किया है।
4. 'पहला सफेद बाल' निबंध में लेखक ने सफेद बाल को अनेक उपमा, प्रतीक, मिथक और उदाहरणों के माध्यम से जीवन दर्शन प्रस्तुत किया है।
5. पहला सफेद बाल निबंध में निबंधकार कहना चाहते हैं कि यौवन का संबंध शरीर से न होकर मन से हैं। बाल सफेद होना केवल शारीरिक परिवर्तन है। यौवन केवल काले बालों का नाम नहीं है। यौवन नवीन भाव, नवीन विचार, ग्रहण करने की तत्परता का नाम है। जब तक मनुष्य के मन में उत्साह और नई सोच है तब तक इंसान जवान होता है।

4.8.8 स्वाध्याय :

(अ) लघुत्तरीय प्रश्न :

1. हरिशंकर परसाई का जीवन परिचय दीजिए।
2. 'पहला सफेद बाल' निबंध का उद्देश्य लिखिए।

(आ) दीर्घोत्तरी प्रश्न :

1. 'पहला सफेद बाल' निबंध का आशय या कथ्य अपने शब्दों में लिखिए।
2. 'पहला सफेद बाल' निबंध की समीक्षा कीजिए।

4.8.9 क्षेत्रीय कार्य :

1. 'सफेद बाल' इस विषय पर अन्य निबंध, कहानी आदि साहित्य की खोज करें।
2. 'सफेद बाल' इस निबंध का मराठी में अनुवाद करने का प्रयास करें।

4.8.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए :

1. ठिठुरता हुआ गणतंत्र (निबंध) - परसाई हरिशंकर, दिल्ली, राजकमल प्रकाशन।
2. सोने का सांप (निबंध) - परसाई हरिशंकर, दिल्ली, राजकमल प्रकाशन।
3. प्रेम प्रसंग के फादर (निबंध) - परसाई हरिशंकर, दिल्ली, राजकमल प्रकाशन।
4. हरिशंकर परसाई के व्यंग्यों में वर्ग चेतना-भट्ट आभा, इलाहाबाद, जयभारती प्रकाशन।



4.9 'हिंदी-भूषण' बाबू शिवपूजन सहाय

– डॉ. रामविलास शर्मा

अनुक्रम

4.9.1 उद्देश्य

4.9.2 प्रस्तावना

4.9.3 विषय विवेचन

4.9.3.1 रामविलास शर्मा का जीवन परिचय

4.9.3.2 'हिंदी-भूषण बाबू शिवपूजन सहाय' निबंध का परिचय

4.9.3.3 'हिंदी-भूषण बाबू शिवपूजन सहाय' निबंध का आशय

4.9.4 स्वयंअध्ययन के लिए प्रश्न

4.9.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

4.9.6 स्वयंअध्ययन के प्रश्नों के उत्तर

4.9.7 सारांश

4.9.8 स्वाध्याय

4.9.9 क्षेत्रीय कार्य

4.9.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

4.9.1 उद्देश्य :

प्रस्तुत निबंध के अध्ययन के बाद आप -

- 1) रामविलास शर्मा के व्यक्तित्व एवं कृतित्व से परिचित होंगे।
- 2) 'हिंदी-भूषण बाबू शिवपूजन सहाय' निबंध के कथ्य को गहराई से समझ पाएंगे।
- 3) 'हिंदी-भूषण बाबू शिवपूजन सहाय' निबंध के माध्यम से प्रतिभाशाली साहित्यकार 'बाबू शिवपूजन सहाय' के जीवन संघर्ष से परिचित होंगे।
- 4) 'हिंदी-भूषण बाबू शिवपूजन सहाय' निबंध के द्वारा आप बाबू शिवपूजन सहाय की चारित्रिक विशेषताओं से परिचित होंगे।

4.9.2 प्रस्तावना :

रामविलास शर्मा हिंदी के श्रेष्ठ निबंधकार एवं मार्क्सवादी आलोचक हैं। उन्होंने हिंदी साहित्य में आलोचना, निबंध, संस्मरण, समीक्षात्मक ग्रंथ आदि लिखे हैं। उन्होंने प्रेमचंद, निराला, रामचंद्र शुक्ल, भारतेन्दु, हजारी प्रसाद द्विवेदी पर स्वतंत्र रूप से पुस्तक लिखी हैं। जिसमें उन्होंने मार्क्सवादी विचारधारा के द्वारा समाज को नए-नए विचारों से अवगत कराया है। 'हिंदी-भूषण बाबू शिवपूजन सहाय' निबंध में लेखक रामविलास शर्मा ने हिंदी साहित्यकार 'बाबू शिवपूजन सहाय' के जीवन संघर्ष को बारीकी से उभरा है। जिसमें उनकी विनम्रता, सच्चाई, कठिन परिश्रम, निराला जी के संबंध और साहित्यिक संस्थाओं की राजनीति आदि का चित्रण किया है।

4.9.3 विषय विवेचन :

4.9.3.1 रामविलास शर्मा का जीवन परिचय :

रामविलास शर्मा हिंदी के श्रेष्ठ मार्क्सवादी आलोचक हैं। उन्होंने अपने निबंध और अन्य ग्रंथों द्वारा मार्क्सवादी समीक्षा को स्थायित्व प्रदान किया है। रामविलास शर्मा एक निबंधकार के रूप में भी ख्याति प्राप्त हैं। रामविलास शर्मा का जीवन परिचय निम्न प्रकार है -

जन्म एवं जन्म स्थान :

डॉ. रामविलास शर्मा का जन्म 10 अक्तूबर, 1912 में ऊंचगांवसानी गांव में हुआ। यह गांव उत्तर प्रदेश के उन्नाव जिले में है।

माता-पिता और परिवार :

रामविलास शर्मा के पिता का नाम गयादीन शर्मा था। वे झांसी में नौकरी करते थे। उनकी माता का नाम रत्ना देवी था। रामविलास शर्मा अपने माता-पिता की तीसरी संतान थे। उनका परिवार बड़ा था। उनके पांच भाई और तीन बहनें थीं। रामविलास शर्मा का बाल विवाह हुआ था। 14 वर्ष की आयु में इनका विवाह कु. कैलाश

से हुआ था। रामविलास शर्मा को भी तीन पुत्र और तीन पुत्रियां थी। अतः रामविलास शर्मा जी का परिवार एक मध्यमवर्गीय साधारण परिवार था।

बचपन एवं शिक्षा दीक्षा :

रामविलास शर्मा का बचपन गांव में बीता। बचपन में उनके ऊपर अवकाश प्राप्त फौजी बाबा लालता प्रसाद के व्यक्तित्व का काफी प्रभाव रहा। गांव में कोई स्कूल न होने के कारण बाबा के सानिध्य में ही उनकी प्रारंभिक शिक्षा शुरू हुई। वे खुद स्वीकार करते हैं कि बाबा ने ही मुझे गिनती, पहाड़ा, हिंदी लिखना और पढ़ना सिखाया था। बाद में झांसी में अपने पिता के पास रहकर उन्होंने इंटरमीडिएट की शिक्षा पूर्ण की। वहां वे पढ़ानेवाले तीन अध्यापकों से विशेष रूप से प्रभावित रहे। मास्टर रुद्र नारायण, प्रफुल्ल कुमार चटर्जी और पंडित बृजभूषण त्रिपाठी। इन तीनों के व्यक्तित्व से रामविलास शर्मा काफी प्रभावित रहे। उन तीनों के व्यक्तित्व का उन पर काफी असर रहा। उन्होंने लखनऊ विश्वविद्यालय से बी.ए. किया। यहीं पर उन्होंने अंग्रेजी साहित्य से एम. ए. की उपाधि प्राप्त की।

नौकरी और अन्य कार्य :

रामविलास शर्मा ने पीएच.डी करते समय ही लखनऊ विश्वविद्यालय में अध्यापन का काम शुरू किया था। अध्यापन और अन्य नौकरियों के साथ उन्होंने स्वतंत्र रूप से लेखन कार्य भी शुरू किया था। वह प्रगतिशील लेखक संघ के मंत्री पद पर भी कार्यरत रहे हैं। बलवंत राजपूत कॉलेज, आगरा में रामविलास शर्मा अध्यापन का कार्य करते रहे। साथ ही कन्हैयालाल माणिक मुंशी विद्यापीठ में निर्देशक के रूप में भी कार्य करते रहे और वहीं से सेवानिवृत्त हुए। उसके बाद में दिल्ली में रहकर आजीवन साहित्य साधना में जुटे रहें।

मृत्यु :

हिंदी के महान मार्क्सवादी आलोचक डॉ. रामविलास शर्मा की मृत्यु 30 मई, 2000 को हुई है।

व्यक्तित्व :

डॉ. रामविलास शर्मा का व्यक्तित्व आकर्षक एवं असाधारण था। उनके व्यक्तित्व में संवेदनशीलता, बहुमुखी प्रतिभा, शोधवृत्ति, निडरता, सजगता, स्वाभिमान, ईमानदारी, राष्ट्रीयता, मिलनसारिता आदि गुण दिखाई देते हैं। अतः उनका व्यक्तित्व आकर्षक एवं प्रभावशाली रहा है।

कृतित्व :

डॉ रामविलास शर्मा एक हिंदी आलोचक, भाषाविद्, अनुवादक, कवि और निबंधकार रहे हैं। उन्होंने अपने साहित्यिक जीवन में 100 से अधिक ग्रंथों का निर्माण किया है। डॉ. रामविलास शर्मा मार्क्सवाद से काफी प्रभावित थे। वे एक प्रगतिशील आलोचक भी थे। उन्होंने अनेक साहित्यिक आलोचना की किताबें लिखी है। जैसे - प्रेमचंद, भारतेन्दु युग, निराला, प्रगतिशील साहित्य की समस्याएं, आचार्य रामचंद्र शुक्ल और हिंदी

आलोचना, आस्था और सौंदर्य, परंपरा का मूल्यांकन, नई कविता और अस्तित्ववाद आदि। इस तरह उन्होंने भाषा, समाज और भाषा विज्ञान के संदर्भ में अनेक किताबें लिखी हैं। जैसे - भाषा और समाज, भारत की भाषा की समस्या, भारत के प्राचीन भाषा और हिंदी भाग - 1, भारत के प्राचीन भाषा और हिंदी भाग - 2, भारत के प्राचीन भाषा और हिंदी भाग - 3, ऐतिहासिक भाषा विज्ञान और हिंदी भाषा आदि। डॉ. रामविलास शर्मा ने वैचारिक लेखन कार्य भी किया है। उनकी वैचारिक लेखन से संबंधित कुछ किताबों के नाम इस प्रकार हैं - मानव सभ्यता का विकास, सन् सत्तावन की राज्य क्रांति, मार्क्सवाद और पिछड़े हुए समाज का इतिहास दर्शन, भारतीय सौंदर्य बोध और तुलसीदास। साथ ही उन्होंने 'बुद्ध वैराग्य तथा प्रारंभिक कविताएं' नामक कविता संग्रह का निर्माण भी किया है। इस तरह 'मेरे संस्मरण' नामक संस्मरण संग्रह भी प्रकाशित हुआ है।

अतः कह सकते हैं कि रामविलास शर्मा का कृतित्व उच्च कोटि का है। जिसने हिंदी साहित्य और हिंदी आलोचना क्षेत्र को काफी समृद्ध किया है।

4.9.3.2 'हिंदी-भूषण बाबू शिवपूजन सहाय' निबंध का परिचय :

'हिंदी-भूषण बाबू शिवपूजन सहाय' यह एक हिंदी साहित्यकार 'बाबू शिवपूजन सहाय' के जीवन संघर्ष पर लिखा गया निबंध है। यह संस्मरणात्मक निबंध की कोटि में आता है। इस निबंध के रचयिता हिंदी के प्रसिद्ध आलोचक रामविलास शर्मा हैं। उनके द्वारा लिखित यह निबंध केवल हिंदी साहित्यकार शिवपूजन सहाय के व्यक्तित्व का परिचय नहीं है, बल्कि उनका साहित्यिक योगदान, सत्य, निष्ठा, नम्रता और जीवन संघर्ष का दर्पण है।

निबंधकार और मार्क्सवादी आलोचक रामविलास शर्मा इस निबंध में 'बाबू शिवपूजन सहाय' के साथ बिताए कुछ लम्हे, चर्चाएं, उनके साथ विभिन्न विषयों पर किया गया पत्राचार आदि को आधार बनाकर इस निबंध का सृजन किया है। निबंध में निबंधकार 'शिवपूजन सहाय' के साहित्यिक योगदान का उल्लेख करते हैं। जिसमें शिवपूजन सहाय पुरानी पीढ़ी के एक बुजुर्ग साहित्यकार के रूप में चर्चित हुए हैं। उनकी विनम्रता, सत्यता, जीवन संघर्ष, उसे समय का साहित्यिक परिवेश और साहित्यिक संस्थाओं में राजनीति का और स्वार्थ का प्रवेश, उनके और महाकवि निराला के अनोखे संबंध और उनसे जुड़ा स्नेह, जयशंकर प्रसाद जी के साथ बिताए पल, शिवपूजन सहाय की हास्य व्यंग्यात्मक टिप्पणियां, शिवपूजन सहाय के अंतिम दिन, उनके कठोर परिश्रम और उनकी लिखावट की सुंदरता आदि का चित्रण अत्यंत संवेदनशीलता के साथ किया है। अतः प्रस्तुत निबंध एक साहित्यकार के जीवन संघर्ष को मार्मिकता से प्रस्तुत करता है।

4.9.3.3 'हिंदी-भूषण बाबू शिवपूजन सहाय' निबंध का आशय :

हिंदी भूषण बाबू शिवपूजन सहाय एक संस्मरणात्मक निबंध है इस निबंध के रचयिता हिंदी के एक प्रसिद्ध मार्क्सवादी आलोचक रामविलास शर्मा हैं। प्रस्तुत निबंध हिंदी के प्रसिद्ध साहित्यकार शिवपूजन सहाय जी के जीवन पर लिखा गया निबंध है रामविलास शर्मा ने इस निबंध में बाबू शिवपूजन सहाय जो हिंदी भूषण कहलाते

हैं उनके व्यक्तित्व विनम्रता जीवन संघर्ष साहित्यिक योगदान साहित्यिक मित्र निराला की यादें आदि का भावात्मक चित्रण किया गया है।

प्रस्तुत निबंध के प्रारंभ में रामविलास शर्मा लिखते हैं कि शिवपूजन सहाय पुरानी पीढ़ी के बुजुर्ग साहित्यकार थे। हंस में छपी एक फोटो थी, जिसमें वे, मुंशी नवजादीकलाल और निराला थे। इन तीनों में वह सबसे बड़े थे। जवान, नौजवान प्रौढ़ावस्था वाले साहित्यकार उनसे मिलने आते थे। हिंदी साहित्य जगत में उनका बहुत मान-सम्मान था। उनसे मिलनेवाले युवा और नए साहित्यकार उनके चरित्रिक आचरण से काफी प्रभावित रहते थे। क्योंकि किसी भी व्यक्ति से उनका आचरण विनम्रता, सज्जनता और शिष्टाचार से भरा रहता था। लेखक कहते हैं कि उनका रंग-ढंग अर्थात् असली स्वभाव समझ पाना काफी कठिन था।

लेखक रामविलास शर्मा हिंदी-भूषण बाबू शिवपूजन सहाय के विनम्र स्वभाव को लेकर एक बात बताते हैं कि मैं एक बार काशी में शिवपूजन सहाय को निराला जी के साथ देखा था। इससे पहले उनके इसी रूप के दर्शन कभी नहीं हुए थे। निराला के साथ वह काफी प्रसन्न थे और इस अवस्था में वह अपनी विनम्रता को शायद भूल ही गए थे। निराला के साथ उनका व्यवहार एक घनिष्ठ बचपन के दोस्त जैसा था। शिवपूजन सहाय निराला को बहुत प्यार और अधिकार से देखते थे। शिवपूजन के जीवन में निराला का एक अलग ही स्थान था। इससे मेरे समझ में आया था कि उनकी विनम्रता केवल स्वभावगत गुण नहीं है, बल्कि वह जीवन की कठिनाइयों और उलझन से बचने का एक कवच कुंडल था। लेखक आगे निराला और शिवपूजन सहाय के संबंध की बात करते हुए कहते हैं कि जब शिवपूजन सहाय का विवाह तय हुआ था, तो उन्होंने अपने विवाह का निमंत्रण निराला को भेजा था। जिसमें निराला के प्रति अपार श्रद्धा और स्नेह दिखाई देता है। इससे पता चलता है कि शिवपूजन और महाकवि निराला के बीच सच्ची मित्रता और स्नेह था। जब भी निराला से मिलते तो शिवपूजन के चेहरे पर एक विशेष प्रसन्नता हमेशा रहती थी। जिससे वह विनम्रता भी छिपा नहीं पाते थे। इस स्थिति के रिश्ते की तुलना लेखक 'गर्भवती सधवा' से करते हैं। जैसे गर्भवती सधवा चाह कर भी अपनी प्रसन्नता छिपा नहीं पाती। इस प्रकार की प्रसन्नता शिवपूजन सहाय के चेहरे पर निराला जी से मिलने पर रहती थी।

रामविलास शर्मा बताते हैं कि मैंने शिवपूजन सहाय से एक बार कहा कि आप निराला जी पर संस्मरण लिखें। परंतु मेरे अनुरोध का उत्तर देते हुए उन्होंने लिखा था कि, श्री निराला जी के विषय में मैं यदि लिखूंगा, तो हिंदी संसार उसे पसंद न करेगा। लोक-रुचि के लिए वह रोचक न होगा, सहाय भी न होगा। अर्थात् शिवपूजन सहाय जानते हैं कि साहित्य जगत में सच्चाई बोलना आसान नहीं है। सच बोलने वाले व्यक्ति को विरोध, अपमान और अनेक परेशानियों का सामना करना पड़ता है। लेखन लिखते हैं कि इस पर मैंने उनसे कहा था कि मैं आपके पास आकर संस्मरण लिपिबद्ध करता हूँ। आप जब चाहे तब प्रकाशित कर सकते हैं। परंतु इस बात पर उन्होंने कहा था कि नहीं ! मैं जैसे-जैसे समय मिलता जाएगा। मैं लिखकर आपको भेजता रहूंगा। परंतु लेखक बताते हैं कि शिवपूजन सहाय ने कुछ लिखकर भेजा ही नहीं। शायद उन्हें यह डर था कि जो कुछ लिखेंगे लोगों को सहाय न होगा। परंतु एक बात का डर यह भी था कि वे निराला जी और उस समय की साहित्यिक जीवन

के बारे में पूरी सच्चाई लिखेंगे, तो बहुत लोगों की बदनामी होगी। स्वर्गीय मित्रों की आत्मा को भी कष्ट पहुंचेगा। तभी कटु सत्य प्रकट होगा, जिससे जीवित लोग भी उनसे शत्रुता करने लगेंगे। उन्होंने कई वर्षों तक दर-दर भटककर इतना सीखा था कि सच बोलने से बढ़कर दूसरा पाप नहीं है। निराला जैसी हिम्मत उनमें न थी। क्योंकि उस समय साहित्यिक दुनियां में राजनीति, ईर्ष्या और स्वार्थ बहुत आगे बढ़ गया था। लेखक बताते हैं की विशेष कर निराला जी के निधन के बाद उन्होंने बहुत से संस्मरण लिखे। परंतु उनमें पूरी सच्चाई न होकर आंशिक सच्चाई ही थी। महत्वपूर्ण कटु सत्य न प्रकट करने में ही उन्होंने बुद्धिमानी समझी। उस समय का माहौल ही ऐसा था की सच्चाई की कोई कीमत ही न थी। बल्कि सच्चाई जीवन जीने के लिए एक आफत भी बन सकती थी।

रामविलास शर्मा अपने इस निबंध में लिखते हैं कि महाशिवरात्रि के दिन मुझे उन्होंने जो पत्र लिखा था। उसमें उन्होंने लिखा था कि निराला के संदर्भ में आप जो उचित समझे उसे लिखें। परंतु उसमें मेरी सहायता न लेंगे तो अच्छा होगा। क्योंकि ऐसे कठोर और कटु सत्य बाहर पड़ेंगे। जिससे बहुतों की आत्मा का हनन होगा। कुछ लोगों की आत्मा मुझे शाप देगी। कुछ जीवित सज्जन मानहानि के लिए मुझे कोर्ट में खींचेंगे। मैं दुनियां में बस नहीं पाऊंगा। कोलकाता वाले साहित्य और असाहित्यिक जीवन के विषय में सत्य लिखा तो मौत को बुलावा देने जैसा होगा।

यह सारी बात उन्होंने डालने के लिए नहीं लिखी थी उन्होंने जीवन में जो त्रासदी भोगी थी, गृहस्थी जीवन के भार से दबे हुए थे। उन्हें जीविका के लिए अत्यधिक मेहनत करनी पड़ती थी। अगर कटु सत्य प्रकट करेंगे तो वह सचमुच मौत को बुलावा देने जैसा था।

लेखक रामविलास शर्मा बताते हैं कि शिवपूजन सहाय हमेशा आर्थिक समस्याओं से घिरे रहते थे। अपनी जीविका चलाने के लिए उन्होंने निरंतर कठोर परिश्रम किया। उन्होंने अपने जीवन में बहुत कठिन संघर्ष भी किया। उन्होंने लगातार कड़ी मेहनत कर अपना शरीर और स्वास्थ्य खराब किया था। उनकी आंखें कमजोर पड़ गई थी। स्मरण शक्ति कम हो रही थी। बहुत अधिक परिश्रम करने के कारण मन और तन दोनों थक गए थे। आगे लेखक उनकी त्रासदी को बयां करते हुए लिखते हैं कि शिवपूजन सहाय बाहर से शांत और विनम्र दिखाई देते थे। परंतु भीतर से बहुत थके हुए और दुःखी थे। उनकी विनम्रता के पीछे उनका कठिन जीवन संघर्ष, उनकी थकान और अपार वेदना थी। जिसका जिक्र उन्होंने कभी किसी के सामने नहीं किया। उनकी आंखों के सामने पुराने दिनों की याद आती। जिसका वह जिक्र करते हैं। जैसे गंगा में नौका विहार, प्रसाद जी का साथ और निराला जी का संगीत इन बातों की याद आकर उनकी आंखें भर आती थी। लेखक रामविलास शर्मा एक सुंदर प्रसंग का वर्णन करते हुए लिखते हैं कि एक बार गंगा में नाव पर वे, प्रसाद जी और निराला जी तीनों साथ में थे। निराला जी हारमोनियम पर रामचंद्र कृपालु भजुमन गा रहे थे। जिसे सुनकर भावपूर्ण वातावरण में प्रसाद जी की आंखों से आंसू आ गए थे। अर्थात् यह प्रसंग उसे समय के साहित्यकारों के संबंध और उस संबंध की गहराई को उजागर करता है। शिवपूजन जी का निराला के साथ अपार स्नेह था। निराला जी के दर्शन और सत्संग के लिए उनके प्राण तरसते थे।

निबंधकार रामविलास शर्मा शिवपूजन सहाय के बारे में लिखते हैं कि वह एक साहित्यिक होने के साथ-साथ हास्य-व्यंग्य के लेखन में भी कुशल थे। वह 'मतवाला' मंडल के अन्यतम सदस्य थे। वह मतवाला और जागरण जैसी पत्रिकाओं में मजेदार चुटीली हास्यरस की टिप्पणी करते थे।

वह एक उच्च दर्जे के कलाकार भी थे। वे कलाप्रेमी और कलाकार का सम्मान करते थे। निराला जी की तरह उन्हें भी आनंद, उल्लास, व्यंग्य विनोद और परिहास से स्नेह था। परंतु जिंदगी की स्थिति ने उन्हें कमजोर किया था और उल्लास की जगह करुणा ने ली थी। निराशा और थकान की अनचाही परिस्थितियों में उन्हें निरंतर परिश्रम की वेदना को सहना पड़ा।

लेखक आगे बताते हैं कि उस समय साहित्यिक संस्थाओं में राजनीति और स्वार्थ बढ़ने लगा था। जिससे शिवपूजन काफी दुःखी थे। उन्होंने अपने पत्र में इसका जिक्र किया था कि साहित्यिक संस्थाएं चुनाव और अधिकार की राजनीति में फस गई है। इन सब स्थितियों से परेशान होकर अब वह अपना पद छोड़ना चाहते थे। क्योंकि अब उसे सहने की सहनशीलता उनमें नहीं बची थी।

लेखक बताते हैं कि अंतिम बार जब मैं उनसे मिला तब वह बीमार और कमजोर होने के बावजूद भी काम कर रहे थे। वह तख्त पर लेटे-लेटे प्रूफ पढ़ते थे। उनका शरीर काफी कमजोर होने पर भी काम करना उन्होंने नहीं छोड़ा था। इसी हालत में वह 10-10 घंटे परिश्रम करते थे। अत्यधिक परिश्रम से उनका शरीर पूरी तरह कमजोर बन गया था। उनसे मिलकर आने के कुछ दिन बाद ही उनके मृत्यु का समाचार मिला था।

निबंधकार लिखते हैं कि बाबू श्यामसुंदर दास की तरह उनके नाम के साथ हमेशा 'बाबू' शब्द जुड़ा रहा। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद वह आचार्य बने थे। निराला जी उन्हें पत्र लिखते समय उनके नाम के साथ हिंदी-भूषण लिखा करते थे। हिंदी-भूषण बाबू शिवपूजन सहाय का हस्ताक्षर काफी सुंदर था। उनकी लिखावट और हस्ताक्षर के संदर्भ में निबंधकार लिखते हैं कि उनकी आंखें कमजोर होने पर भी लिखावट साफ सुंदर और मजबूत थी। लेखक उनके अक्षरों की तुलना गेहूं की बलियों पर चमकते पानी के बूंद से करते हैं। अंतिम दिनों में शिवपूजन जी के अक्षरों में पहले से ज्यादा कसाव आ गया था।

अंत में लेखक लिखते हैं कि बाबू शिवपूजन सहाय पुरानी पीढ़ी के ऐसे साहित्यकार थे। जिनका रंग-ढंग अर्थात् उन्हें समझना आसान नहीं था। बाहर से शांत और विनम्र दिखने वाले शिवपूजन जी भीतर से संघर्ष, पीड़ा और सच्चाई का बहुत बड़ा बोझ उठाए थे। इस तरह प्रस्तुत निबंध में लेखक ने शिवपूजन सहाय के माध्यम से पुराने युग की संस्कृति, संघर्ष, मित्रता, साहित्यकारों की कठिन परिस्थिति को उजागर किया है।

4.9.4 स्वयंअध्ययन के लिए प्रश्न :

अ) निम्नलिखित वाक्यों के नीचे दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनिए।

1. डॉ. रामविलास शर्मा हिंदी के प्रसिद्ध आलोचक हैं।

अ) मार्क्सवादी

ब) मनोविश्लेषणवादी

क) साम्यवादी

ड) प्रयोगवादी

2. डॉ. रामविलास शर्मा का जन्म सन् ई. में हुआ था।
अ) 1912 ब) 1902 क) 1923 ड) 1921
3. डॉ. रामविलास शर्मा का जन्म उत्तर प्रदेश के उन्नाव जिले के गांव में हुआ था।
अ) लमही ब) ऊंचगांव-सानी क) दिमकी, ड) तुमरी
4. डॉ. रामविलास शर्मा की मृत्यु सन् ई. में हुई।
अ) 1990 ब) 1995 क) 2000 ड) 2001
5. 'हिंदी-भूषण बाबू शिवपूजन सहाय' निबंध के लेखक हैं।
अ) विद्यानिवास मिश्र ब) रामविलास शर्मा क) मोहन राकेश ड) हरिशंकर परसाई
6. डॉ. रामविलास शर्मा के अनुसार बाबू शिवपूजन सहाय साहित्यकार थे।
अ) प्रौढ़ ब) युवा क) बुजुर्ग ड) बाल
7. 'हिंदी-भूषण बाबू शिवपूजन सहाय' निबंध में लेखक ने शिवपूजन सहाय और के अनोखे संबंध को उजागर किया है।
अ) मोहन राकेश ब) प्रेमचंद क) निराला ड) रामविलास शर्मा
8. बाबू शिवपूजन सहाय के व्यक्तित्व की प्रमुख विशेषता रही है।
अ) विद्रोह ब) विनम्रता क) संवेदनशीलता ड) हास्यात्मकता
9. बाबू शिवपूजन सहाय जीविका चलाने के लिए किया करते थे।
अ) कसरत ब) परिश्रम क) अभ्यास ड) वकालत
10. 'हिंदी-भूषण बाबू शिवपूजन सहाय' निबंध में लेखक शिवपूजन सहाय को पर संस्मरण लिखने के लिए कहते हैं।
अ) प्रसाद ब) निराला क) रामचंद्र शुक्ल ड) भारतेन्दु
11. शिवपूजन सहाय मंडल के अन्यतम सदस्य थे।
अ) मतवाला ब) जागरण क) सरस्वती ड) हंस
12. शिवपूजन सहाय के साथ नौका विहार के लिए निराला और थे।
अ) महादेवी वर्मा ब) पंत क) प्रसाद ड) भारतेन्दु
13. शिवपूजन सहाय स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हो गए थे।

- अ) डॉक्टर ब) इंजीनियर क) साधु ड) आचार्य
14. शिवपूजन सहायक हिंदी थे।
- अ) भूषण ब) अभिनेता क) आलोचक ड) गीतकार
15. रामविलास शर्मा शिवपूजन सहाय के अक्षरों की तुलना गेहूं की बोलियां पर जमे से करते थे।
- अ) ओस बिंदु ब) कीटाकों क) धूल ड) पंछियों

4.9.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ :

- * अधबैसू – प्रौढ़ उम्र वाला व्यक्ति
- * बुजुर्ग – वरिष्ठ नागरिक या अधिक आयुवाला
- * चुटीली – हाजिर जबाबी या व्यंग्य
- * रंग- ढंग समझना – स्वभाव से परिचित होना
- * आलोचित करना – प्रकाशित करना
- * मतवाला, जागरण – पत्रिकाओं के नाम
- * संस्मरण – एक साहित्यिक विधा
- * युग प्रवर्तक – युग का परावर्तन करने वाला

4.9.6 स्वयंअध्ययन के प्रश्नों के उत्तर :

- | | |
|----------------------|----------------|
| 1. अ) मार्क्सवादी | 2. अ) १९१२ |
| 3. ब) ऊंचगांव-सानी | 4. क) २००० |
| ५. ब) रामविलास शर्मा | 6. क) बुजुर्ग |
| 7. क) निराला | 8. ब) विनम्रता |
| 9. ब) परिश्रम | 10. ब) निराला |
| 11. अ) मतवाला | 12. क) प्रसाद |
| 13. ड) आचार्य | 14. अ) भूषण |
| 15. अ) ओस बिंदु | |

4.9.7 सारांश :

1. 'हिंदी-भूषण बाबू शिवपूजन सहाय' निबंध के निबंधकार डॉ. रामविलास शर्मा एक श्रेष्ठ मार्क्सवादी आलोचक हैं। उन्होंने अपने जीवन काल के उत्तरकाल में भाषा, संस्कृति, इतिहास और वैदिक साहित्य में महत्वपूर्ण कार्य किया है। भाषा के क्षेत्र में भी उनका योगदान अतुलनीय है।
2. 'हिंदी-भूषण बाबू शिवपूजन सहाय' इस निबंध में लेखक रामविलास शर्मा ने हिंदी साहित्यकार बाबू शिवपूजन सहाय के जीवन संघर्ष और उनकी सच्चाई को समग्रता से चित्रित किया है।
3. प्रस्तुत निबंध में लेखक ने केवल शिवपूजन सहाय का जीवन परिचय प्रस्तुत नहीं किया। बल्कि पुराने युग की संस्कृति, संघर्ष, मित्रता और साहित्यकारों के कठिन परिस्थितियों का चित्रण भी किया है।
4. प्रस्तुत निबंध में लेखक रामविलास शर्मा बाबू शिवपूजन सहाय के परम मित्र निराला और उनके बीच के अनोखे स्नेहमयी रिश्ते को भी उजागर करते हैं। साथ ही तत्कालीन साहित्यिक संस्थाओं में प्रवेशित राजनीति और स्वार्थ का जिक्र भी किया है।

4.9.8 स्वाध्याय :

(अ) लघुत्तरी प्रश्न ।

1. डॉ. रामविलास शर्मा का जीवन परिचय दीजिए।
2. 'हिंदी-भूषण बाबू शिवपूजन सहाय' निबंध का उद्देश्य लिखिए।

(आ) दीर्घोत्तरी प्रश्न ।

1. 'हिंदी-भूषण बाबू शिवपूजन सहाय' निबंध का आशय अपने शब्दों में लिखिए।
2. 'हिंदी-भूषण बाबू शिवपूजन सहाय' निबंध के माध्यम से बाबू शिवपूजन सहाय की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

4.9.9 क्षेत्रीय कार्य :

1. अपने क्षेत्र के किसी साहित्यकार से बातचीत करें और उसे लिपिबद्ध करने का प्रयास करें।
2. 'हिंदी - भूषण बाबू शिवपूजन सहाय' निबंध का मराठी में अनुवाद करें।

4.9.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए :

1. निराला की साहित्य साधना (जीवनी) - शर्मा रामविलास नई दिल्ली, किताबघर प्रकाशन।
2. मेरे साक्षात्कार (साक्षात्कार) - शर्मा रामविलास नई दिल्ली, किताबघर प्रकाशन।
3. आस्था और सौंदर्य (साहित्यिक आलोचना) - शर्मा रामविलास नई दिल्ली, किताबघर प्रकाशन।